दिव्याम्बु निमज्जनम्

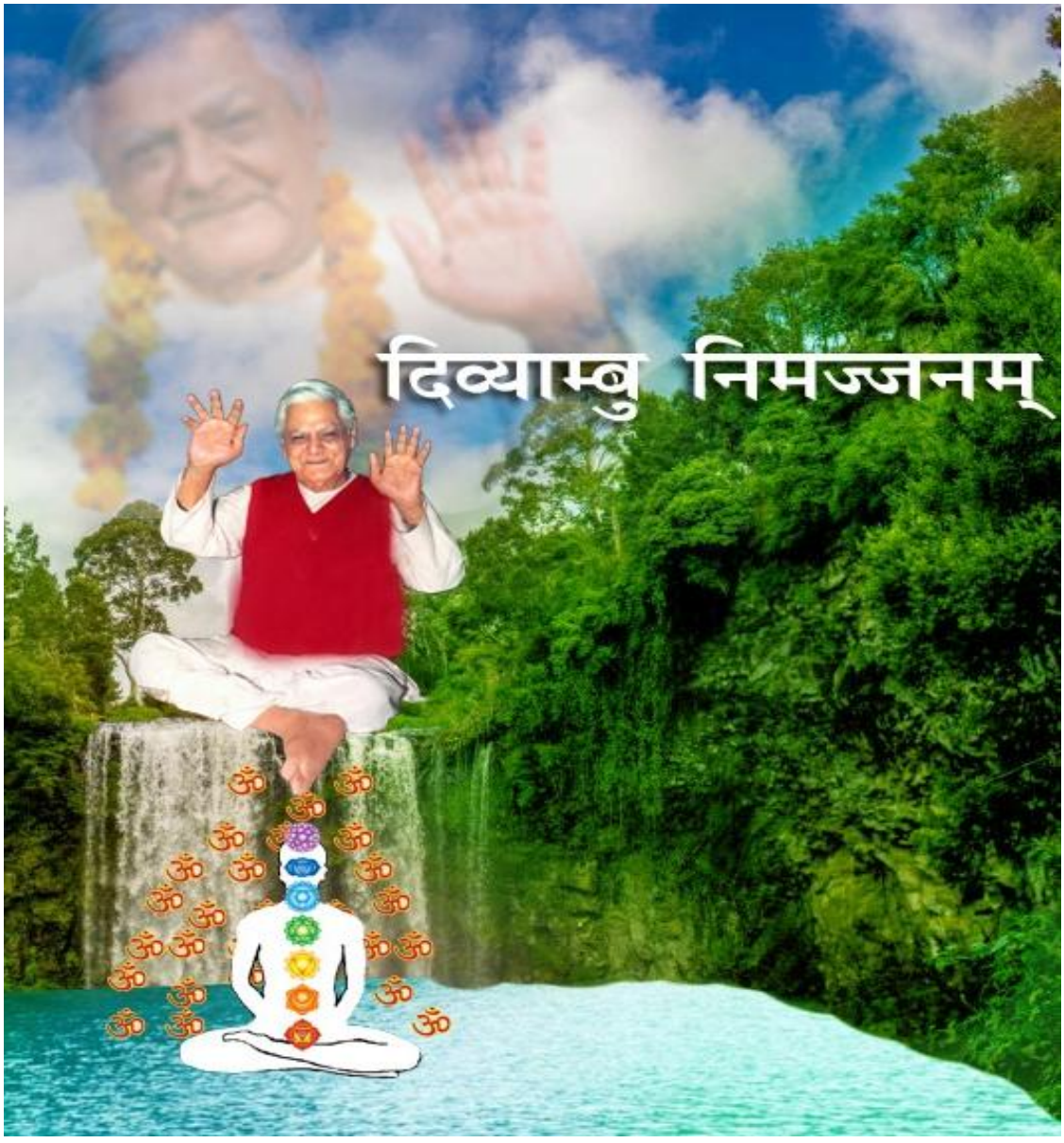

परम पू0 गुरु जी की आरती

ओम् जय जय जय गुरुजी ,

जय गुरुदेव दयानिधि, कृपासिन्धु जय हो।

जय जय करुणासागर, वासुदेव जय हो।। ओम् जय जय जय गुरुजी।।0।।

अष्टसिद्धि तव दासी, नवनिधि के स्वामी।

जन दुःख हरण–परायण, सब के सुखकामी।। ओम् जय जय जय गुरुजी ।।1।।

जन्मसिद्ध तुम योगी, नित परहित कर्त्ता।

साधक जन, पथदर्शक, शरणागत त्राता।। ओम् जय जय जय गुरुजी ।।2।।

शुद्ध, बुद्ध, तुम मुक्त भी, निश्चल अविनाशी।

सत्, चित, सुख, घन, ईश्वर, भक्त हृदयवासी।। ओम् जय जय जय गुरुजी।।3।।

गुरुजी हम पुत्रों की, तुम वत्सल जननी।

तव गुण वर्णन करते, मौन बने वाणी।। ओम् जय जय जय गुरुजी।।4।।

एक यही वर मॉंगें, हम तव चरणों में।

अविचल भक्ति तुम्हारी, सदा रहे मन में।। ओम् जय जय जय गुरुजी ।।5।।

जय गुरुदेव दयानिधि, कृपासिन्धु जय हो।

जय जय करुणासागर, वासुदेव जय हो।। ओम् जय जय जय गुरुजी।।

जय जय जय गुरुजी

दिव्याम्बु निमज्जनम

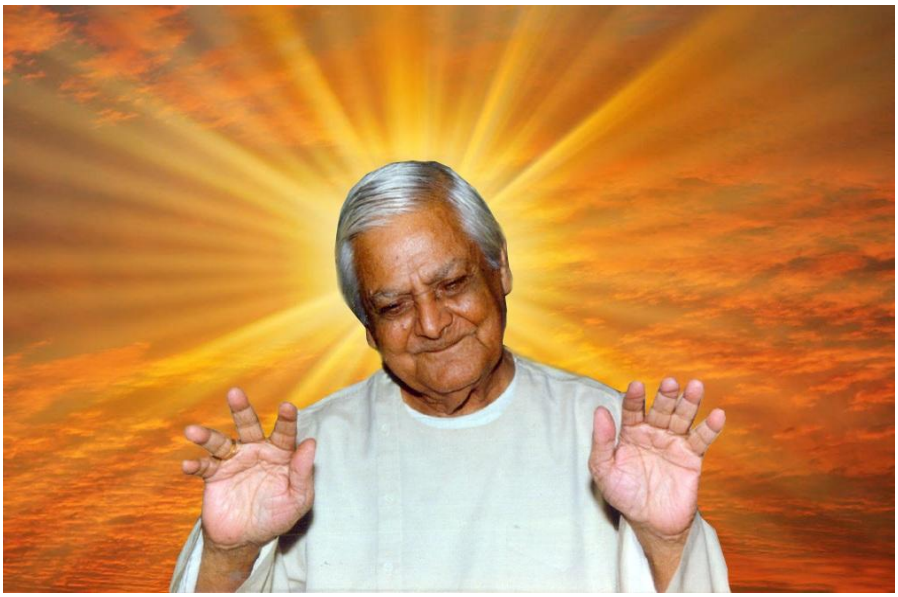

अनुवादक (संस्कृत में) – डा0 विद्याकान्त त्रिपाठी

कम्पुटर टाइपिस्ट – सदगुरू चरण रज(डा0 चन्दा रजक)

ग्राफिक डिजाइन – नमन सोनी (गुरू भाई शहडोल, म0 प्र0)

दिव्याम्बु निमज्जनम्

प्रथम संस्करण – सितम्बर, 2015

सर्वाधिकार सुरक्षित

श्री वासुदेव गुरु परिवार आत्मोत्थान न्यास

मुंगेली, जिला – बिलासपुर (छ.ग.)

सहयोग राशि –

मुद्रक –

दो शब्द

सदगुरू महिमा एवं दिव्याम्बु निमज्जन

परम पूज्यनीय गुरूजी ने श्री विद्याकान्त गुरूभाई को स्वयं निर्देश दिया था कि आप दिव्याम्बु निमज्जन का संस्कृत में अनुवाद करें । उन्होनें यह कार्य पूर्ण किया किन्तु कापियों के पन्नों में लिखा यह अनुवाद करीब 10 वर्षों तक ज्यों का त्यों पड़ा रहा। 23 जुलाई को कभी –कभी यह सुनने में आता कि परम पूज्यनीय गुरूजी द्वारा आदेशित तथा संस्कृत में तैय्यार दिव्याम्बु निमज्जन प्रिन्ट कैसे करवाया जाये ? 23 जुलाई वर्ष 2010 की बात है मुंगेली के शिवपुर आश्रम में, सदगुरू –मंदिर के सामने मैं खड़ी थी , श्री विद्याकान्त जी ने यह बात पुनः दोहराई कि दिव्याम्बु निमज्जन का संस्कृत में अनुवाद कैसे हो बहुत समय हो गया ? मेरे अन्दर से एकदम से यह जबाब निकला कि मैं टाइप करूगीं , आप मुझे वे सभी कापियॉ दे जिसमें आपने दिव्याम्बु निमज्जन संस्कृत में लिखा है । उन्होनें प्रयास कर 24 जुलाई को करीब 20 कापियॉ दी जिसमें कहीं–कहीं पर स्याही के पेन का उपयोग किया गया तथा कहीं–कहीं पर डॉट पेन से लिखा गया था। 25 जुलाई को रीवा पहुॅचकर कापियों का बंडल खोला , पूज्य0 गुरूजी को ह्रार्दिक शत–शत नमन कर , विनती की कि पूज्य0 गुरूजी कृप्या इस कार्य को आप ही को करना है , आपके द्वारा प्रदान किये गये इन हाथों का पूर्ण उपयोग हो , ऐसी कृपा कीजिये ।

श्री विद्याकान्त जी ने दो पन्नों के बीच सटी हुई जगह में भी बहुत छोटे–छोटे अक्षरों से लिखा था जिसको पढ़ पाना अत्यन्त ही कठिन था । मैनें

पूज्य0 गूरूजी से विनती की कि गुरूजी अब कैसे लिखे कुछ समझ में नहीं आ रहा है। अचानक गुरूजी की कृपा से अन्दर से विचार आया कि मैगनीफाइंग ग्लास के द्वारा इन अक्षरों कों पढ़ा जा सकता है। मेरे पास वह ग्लास था मैनें तुरन्त उसे निकाला कुछ हद तक समस्या का समाधान होने लगा।

दूसरी समस्या यह हुई कि इन्होने कापी के पन्ने के दोनों तरफ लिखा जिस पेन या स्याही का उपयोग किया था वह ज्यादातर कापी के पन्नों के दोनों तरफ अपनी छाप छोड़ दिये थे जिसके फलस्वरूप उसे पढ़ना या समझना बहुत कठिन गया, तब पूज्य0 गुरूजी की हिन्दी वाली पुस्तक दिव्याम्बु निमज्जन को खोलकर उस विशेष अध्याय को पढ़कर उसका मतलब समझकर पूज्य0 गुरूजी की सूझबूझ से टाइप करते थे। इस तरह से करीब 1 वर्ष में पुस्तक टाइप हो गई । श्री विद्याकान्त जी को प्रूफ अध्ययन के लिये टाइप की गई पुस्तक की एक कापी दी गई। उसमें बहुत सारी कमियॉ /गल्तियॉ थी , उसे मैंनें पुनः ठीक किया , इस तरह से करीब 3 बार प्रूफ अध्ययन की प्रक्रिया की गई। चौथी बार ***correct*** *करके पुनः श्री विद्याकान्त जी को दिया गया । उन्होनें उसमें अतिरिक्त पक्तियॉ जोड़ दी कई जगह पर , इस तरह से 5 बार इसका प्रूफ अध्ययन किया गया । इन सभी कार्यों में मुझे पग–पग पर परीक्षा देनी पड़ी अपने सहनशीलता की, पता नही पूज्यनीय गुरूजी की कृपा से मन में किसी प्रकार का नकारात्मक विचार नहीं आया , बल्कि ऐसा लग रहा था कि बहुत अच्छा हुआ जो कि इतना कठिन काम गुरूजी इन हाथों को दिया ,यह उनकी परम कृपा है। मुझे संस्कृत का 1 % ज्ञान था । इतना बड़ा अत्यन्त कठिन काम कैसे हो गया , यह पुस्तक पूर्ण रूप से जुलाई 2012 में ही तैय्यार हो गयी थी ।*

यह सब पूज्यनीय गुरूजी की परम कृपा से हुआ है। उन्होनें ही यह सब काम किया है। किसी ने कहा है – सद्गुरू अनन्त है, उनकी कृपा अनन्त है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने सुन्दरकाण्ड में वर्णन किया हैं जब हनुमान जी अशोक वाटिका उजाड़कर, मॉ सीता का पता लगाकर , वापस प्रभु श्रीराम जी के पास हनुमान जी ने कहा कि

सो सब तव प्रताप रघुराई ।
नाथ न कछु मोरि प्रभुताई ।।
ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल।

जब शुद्धि पत्र लेने पैठन गये, वहॉ के घर्माचार्यों ने मजाक उड़ाते हुये कहा– तुम्हारे अनुसार ईश्वर यदि सर्वत्र व्याप्त है तब तो इस भैसे के अन्दर भी होगा । संत ज्ञानेश्वर महाराज जी ने कहा– अवश्य। तब तो यह भैसा वेदोच्चारण भी कर सकता है। संत ज्ञानेश्वर महाराज जी के वेदोच्चारण के साथ–साथ भैसें ने भी वेदोच्चारण किया । कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर की इच्छा के अनुसार ही सब चल रहा है । हने अहंकार वश मैं मैं लगा रखा है । वास्तव में सब तेरा तेरा है।

जय गुरूजी/ आपकी चरण रज

डा0 चन्दा रजक, प्राध्यापक
फिजियोलाजी मेडिकल काम्लेज रीवा म0 प्र0

श्रद्धेय गुरूजी

श्री वासुदेव रामेश्वर तिवारी

एवं

सत्य के खोजियों को सादर सहित समर्पित

ॐ श्री सद्गुरुवे नम :

अनुक्रमणिका :—— पृष्टांक :

प्रथम भागः—— जीवनी

1.दक्षिण अमेरिकायां जन्मः किञ्चित्प्रास्ताविकम् 24–36

2. भारताय जल यात्रा 37–44

3.ईश्वरान्वेषणम् 45–58

4.नारायण कवचः 59–78

5.संत एकनाथेन प्रदत्त मार्ग दर्शनः 79–85

6. अयोध्यायां अनुष्ठानः 86–98

7. पूत संगमे स्नानं 99–106

8. तेल्हारायाः औषधालयः 107–118

9. भगवान प्रभु विठ्ठलस्य दर्शनः 119–125

विलक्षण उपनयन संस्कारः 126–130

.11. मजहर खानः प्रकाश पिङंश्च 131–135

12. वृन्दावने राधायाः दर्शनम् 136–151

13. तेल्हाराः संगीतः ज्योतिषविज्ञानञ्च 152–157

14. संगीत कलायाः सेवायाम् 158–172

15.परजन हिताय परिभ्रमणम् 173–180

16. परमोत्कर्षः 181–197

द्वितीयो भागः दर्शनाध्यायः

तात्विक विचारस्य 199–204

द्वितीयम् सोपानम् –शारीरिक रचनायोगश्च 205–228

तृतीयम् सोपानम् –आसनः ध्यानञ्च विज्ञानः ध्यान योगश्च 229–247

तृतीयो भागः

शिष्यानुभवः ——

1—श्री श्रीधर गंगाधर धर्माधिकारीति 251—255

2— श्री लक्ष्मणराव देशपांडे 255—257

3—श्री जानकी प्रसाद मिश्र 257—261

4—श्री विजयशंकर दुबे 261—265

5 — श्री गजानन वड्यालकर 266—269

6— श्री चित्रनाथ मिश्रा 269—271

7— श्री गुरू प्रसाद पाण्डेय 271—281

8— श्री अशोक कुमार पांडेयः 281—283

9—डा0 गिरीश पाण्डेयः 283—288

10— डॉ0 श्रीमती सुधा पांडे 288—291

11— श्री रघुनाथ दामोदर कुपटकर 291—295

12— श्री नर्मदा प्रसाद द्विवेदी 295—298

13— श्री लक्ष्मी प्रसाद मिश्र 298—299

14 — श्री भैय्यालाल तिवारी 299—301

15— श्री मती श्यामवती तिवारी 301—302

16— श्री अंजनी कुमार तिवारी 302—304

17— श्री राजेन्द्र सराफ 304

18— श्री बसंत विठ्ठलराव तकवाले 304—310

19 — डा0 वासुदेव जयकृष्ण देवरसः 311—312

20— श्री के0 एन् देशपांडे 312—313

21— श्री मती मीनीक्षी देशपाण्डेय 314—315

22— श्री मती शीला पाण्ड़ेय 315—317

23— डा0 व्ही0 ए0 शिन्दे 317—319

24— डा0 श्री मती सईदा शिन्दे 319—321

25— डा0 एम0 एस0 पंधेर 321—324

26 — डा0 श्रीमती कुलवतं कौर 324— 326

27— डा0 सी0 के0 शुक्ला 327—328

28— श्रीमती शशि शुक्ला 328—329

29– श्रीमती डा0 छाया बैनर्जी *329–*

30– श्री प्रकाश काशीकरः *329–330*

31– श्री रामकिकंर त्रिपाठी *330–332*

32– श्री रामवदन मिश्र *332*

33– श्रीमती रमा मिश्र *333*

34– श्री प्रेमचन्द्रजी पारिख *333–335*

35– श्रीमती तारा देवी पारेख *335–336*

36– सतीश पारेख *336–337*

37– श्री ज्ञानशंकर शुक्ला *337–339*

38– एक ईसाई की स्वीकारोक्ति ए. के. कुरियान *339–341*

39– श्री पी. एस. झकेरिया *341–342*

40– श्री भालचन्द्र शंकर भटजी वाले *342–343*

41– कु0 अंजूषा दिवान *343–344*

42– डा0 भानू गुप्ता *344–345*

43– श्री मती चन्द्रकान्ता गुप्ता, (धर्म पत्नी डा0 भानू गुप्ता) *345–*

44– कु0 सीमा गुप्ता *346*

45– कु0 सुनीता गुप्ता *346*

46–श्रीमती शान्ता बाई जोशी *346–347*

47– श्री वसंत खोत *347– 349*

48– श्री हिदायत अली कमलाकर *349–350*

49– श्रीधर केशव राव काण्णव (*शिक्षक, न्यू ई0 हाई स्कूल, वर्धा,)* *351–352*

50–कु0 ललिता काण्णव (काण्णव परिवार, वर्धा, महाराष्ट) *352*

51– श्री मती शालिनी काण्णव (धर्म पत्नी श्रीधर, केशवराव काण्णवः, वर्धा) *252*

52– श्री राजू श्रीधर काण्णव *352–354*

53–श्रीमती सत्यवती खरे *354–358*

54– श्री उमाकान्त कुटेमाटे *358–362*

55–श्रीमती शान्ता उमाकांत कुटेमाटे (धर्म पत्नी, श्री उमाकांत कुटेमाटे , वर्धा) *362–363*

56–श्रीमती रतन कोराने धर्म पत्नी, डा0 के0 डी0 कोराने,एग्रामामी विभागाध्यक्ष,देहरादून, 363–364

57— श्री बाबूराव लोणकर (लिपिक, वर्धा) 365—366

58— श्री चद्रिका प्रसाद मिश्रः शहापुर, रीवा, म0 प्र0 366

59— श्री उपेन्द्र मिश्रा (सुपुत्र श्री मुद्रिका प्रसाद मिश्र, सतना ,म0 प्र0) 366—367

60— श्री मुद्रिका प्रसाद मिश्रः (शिक्षक वेकंट हायर सेकंडरी स्कूल सतना म0 प्र0) 367—368

61— श्री मती मनोरमा मिश्रः (पुत्र वधु जानकी प्रसाद मिश्र,शहडोल म0 प्र0) 358—370

62— श्री प्रभाकर निलकण्ठ पाण्डेयः, एडवोकेट, वर्धा 370–371

63— कु0 अर्चना प्रभाकर पाण्डेयः (आत्मज श्री प्रभाकर पाण्डेय, एडवोकेट वर्धा) 371

64— कु0 शोभा पारिख (आत्मज श्री प्रेमचंद्र पारिख, मुंगेली, बिलासपुर छ0 ग0) 371

65— कु0 अलका प्रभाकर पाण्डेय (आत्मज श्री प्रभाकर पाण्डेय, एडवोकेट, वर्धा) 372

66— कु0 आशा पारेख (आत्मज श्री प्रेमचंद्र पारिख, मुंगेली बिलासपुर छ0 ग0) 372–373

67—श्री प्रकाशचंद्र पारिख 373—374

68— श्री मती शान्ति बाई पारिख. (धर्मपत्नी, श्री प्रकाशचन्द्र पारिख, मुंगेली) 374

69—सौ0 कांति पाण्डेयः (धर्मपत्नी, डा0 रघुनाथ प्रसाद पाण्डेय,प्रोफेसर,रीवा म0 प्र0) 374 —375

70—डा0 रघुनाथ प्रसाद पाण्डेय(प्रोफे0 फिजियॉलाजी, मेडि0 कालेज,रीवा, म0प्र0) 375—376

71— श्री मती शारदा राव 376—377

72— डा0 श्री मती ओमबाला शिन्दे,(धर्मपत्नी श्री बुआ सा0 शिन्दे,ग्वालियर,म0प्र0) 377—384

73—श्री जगदीश प्रसाद शर्मा 385—386

74— श्री विजय त्रिवेदी 386—387

75— श्रीमती अन्नपूर्णा तिवारी 387—388

76— कु0 मंदा वसंत तकवाले 388—389

77— श्री कृष्णराव ऊॅबलकर, प्रयोगशाला सहायक वर्धा 389—390

78— कु0 ऊषा द्विवेदी, (सुपुत्री श्री रामाशीष द्विवेदी, बासा, रीवा म0 प्र0) 390

79— श्री श्याम गुप्ता, (मैन रोड मुंगेली, बिलासपुर , छ0 ग0) 390

80— डा0 किरण वासुदेव देवरस, एम.बी.बी.एस. तिलकनगर, बिलासपुर, छ0 ग0 391

81—कु0 भारती पाण्डेय, सुपुत्री डा. रघुनाथ प्रसाद पाण्डेय प्रोफे0 फिजियॉलाजी,रीवा 392—394

82— डा0 विद्याकान्त त्रिपाठी, प्रोफेसर/ व्याकरण विभागाध्यक्ष 394—395

ॐ श्री सद्गुरुवे नमः

दिव्याम्बु निमज्जनम्

परिचय —:

अस्य पुस्तकस्य प्रस्तुति करणोद्देश्यः विशिष्टः। प्रथम भागे वर्णितोऽस्ति आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्तये पथगमनम्। द्वितीय भागे आध्यात्मिक घटना क्रमाणां वैज्ञानिक विश्लेषणः एवं स्पष्टीकरणस्य प्रयासकृतः। तृतीयान्त भागे परम पूज्य गुरोः औदार्यम्, संरक्षणं एवं मार्गदर्शने लक्ष्य प्राप्ति हेतोः शिष्याणां स्वानुभूतयः लिपिबद्धा कृतः। अकरोच्च ।

पुस्तकस्यास्य अध्ययनाय वयम् स्वपाठकेभ्यः पाठकान् च साग्रह निमंत्रयामः परं कथा साहित्यमिव तुल्य तत्परतया अध्ययनाय न अपितु विश्रमय। क्रमिक प्रस्फुटित घटना श्रृंखलोपरि चिन्तनं, मननंञ्च कृत्वा तस्य सन्निहित तथ्यं अचिन्तयत्। अगणितः अवसरः एतादृशः आगच्छन्ति यदा आध्यात्मिक दृष्टिः: सत्पुरुषाणाम् एवं विभिन्न देवी देवतानाम् दर्शनः भवन्ति परं पूर्णता प्राप्तिर्न भवति अभ्यासः/प्रयत्नाः प्रचलन्ति च। वस्तुतस्त्वयं विलक्षणः एवं विशिष्ट ध्यानाय उपयुक्तः।

यावत् जागृत कुंडलिनी वा दिव्यशक्ति, षष्ठ्यवस्थया भूत्वा दशांगुलिपरिमाणवन्तः प्रमष्तिष्क प्रान्तास्थायां स्थित स्वदिव्यस्थल सहस्त्रारे स्थिरः न भवति यात्रा अपूर्णः एवास्ति अस्यसत्यस्य अत्यन्त प्रभाव पूर्णवर्णनः अस्ति, अकोला स्थाने घटित घटनायां अस्मदादीनां पूज्य गुरोः अभ्यासस्य प्रयासस्य । तदैव रूपरिथितिः संभवः अस्ति।

प्राक्कथनम्

फ्रांसिस वेकन वर्णयति यत् पिलेट व्यंगेन अपृच्छत् – किं नाम सत्यंम् ? परं संतु उत्तराय न अरुधत्।

इतिहासे ईसामसीहस्य क्रूसारोपण दंड वक्तारः प्रतापी रोमन शासकः पांशियस पिलेटस्यैव तादृक् अनेक जनाः एषः प्रश्नः कृतः यत् सत्यम् किमस्ति ? एतेषु अल्पीयांसः एव उत्तरस्य प्रतीक्षाथवा अन्वेषितः। परं किंञ्चित् जनाः एव सत्यान्वेषणे अटलः स्थिरः सत्यञ्च प्राप्तः अस्मासु केचिदद्यापि प्रश्नोऽयं पृच्छन्ति यत सत्यमकिं परं सत्यान्वेषकेषु दृढप्रतिज्ञ स्थिरस्य साहसः अस्मासु कतिभ्यः अस्ति।सत्य प्राप्तये तस्य मूल्य दानाय अस्मासु कतिं तत्पराः ? सन्ति ? अस्य पुस्तकस्य भागत्रयाणि सन्ति।

प्रथम भागः– *संत श्री वासुदेव तिवारी महोदस्य जीवन वृत्तं अस्ति। एते पुत्र पौत्रैः सुसम्पन्न एकः गृहस्थः सन्ति। इयं कथास्ति पूर्ण उन्मुक्तता प्रदातारः शाश्वत सत्य प्राप्तये। अस्य जनस्य तृष्णया क्षुधायास्श्च। सत्य संप्राप्तये अस्य अथक परिश्रमस्य च तद साहसस्य कथास्ति । यद् विभिन्नकष्टान् विपत्तींश्च सहयमानोऽपि असौ जनः प्रदर्शितः कृतः। अस्याम् कथायां उल्लिखितोऽस्ति यत् दिव्य मार्ग दर्शनस्य यद ्तम् समये समये अलभत्। तथा च उपान्त्य सत्यस्य प्राप्तिः/आत्मस्वरुपः एवं सर्वशक्तिमानस्य बोध पर्यन्तं कानिचित् वर्षाणां कष्टप्रद अभावपूर्ण जीवनस्य रुपे तस्य मूल्यस्य यद् तेन अस्य हेतोः प्रदद्यात्।*

मूलतः द्वितीय भागे– *अनेन संतेन स्व शिष्यान् समये समये प्रदत दार्शनिक प्रवचनानां समावेशस्य विचारः आसीत् परं किञ्चत अपरिहार्य कारणैः प्रवचनान् न सम्मिलितः कृतः अध्याय तात्विक विचार, योगोपरि एषाम् विचारान् सुस्पष्टम् करोति यः एतेषाम् शिक्षाणां दार्शनिक सिद्धांतानां मूलमस्ति भागेऽस्मिन् शरीर रचना तथा*

योगः एवं आसन ध्यान शीर्षकस्य अध्यायानऽपि समाविष्टः कृतः । यद् डा. व्ही. ए. शिन्दें एम. एस. एनाटॉमी आचार्य; विभागाध्यक्षश्च , शरीर रचना विभागः पंडित जवाहर लाल नेहरु चिकित्सा महाविद्यालय रायपुरम् मध्य प्रदेशेन एकः वैज्ञानिक विश्लेषणः अस्ति । पाठकेभ्यः इदं अवश्यमेव रुचिकर प्रतीतः भविष्यति।

तृतीय भागे *–– परिपूर्ण आध्यात्मिकोपलब्धयः संप्राप्त शिष्याणां अनुभवान् संगृहीतः। एतेषाम् प्रमाणानां मूल्यांकन करणाय पाठकानां सुस्वागतम्। माम् खेदोस्ति यत् कतिचित् शिष्याः संकोच वशात् , स्व विपुलः एवं विविध अनुभवानां विस्तारपूर्वक वर्णनाय अनिच्छुकः आसीत्।*

भारते कदापि पुरोहितानां धर्म पुरुषाणां अवताराणं चमत्कारिकानां रज्जुनर्तकादीनां अभावम् नासीत् । वसुधेयं सदैवतः संत, नीम, हकीमाश्च मठवासिनः महंतश्च, भिक्षुकाः फकीराश्च, तथा तैः गुरुभिः ये् स्वंय ईश्वरस्य दक्षहस्तः मन्यन्ते विपुल वार्ता आसीत् अद्यापि चास्ति। भवान् एक मात्राय पस्थिष्यन्ति भवन्तं सहस्त्राधिक तथा कथित महान पुरुषाः मिलिष्यन्ति एतदतिरिक्त अत्र बहुबाल योगी , वयस्क योगी, बृद्धयोगी सदाचारी ब्हमचारिणः सन्ति। अत्र एक पादोपरिस्थिरो भूत्वोथवासिरसिवलेन स्थिरो भूत्वाथवा सिरसि भूमिगतं कृत्वा साधना कर्तारोपि सन्ति। ंते देशस्य आवश्यकतानां दृष्ट्या पर्याप्त्यपि बहुशः अभूत्। परिणामस्वरुप निर्यात आपणोऽपि पर्याप्त उन्नतिं अकरोत्। वर्तमाने विदेशान् र्नियातः किञ्चित् अवरुद्धः एवास्ति । परं सत्य निष्कपट सतपुरुषाणां गुरुणाञ्चोपलब्धिः कठिनास्ति। य सामान्च गृहस्थस्य काठिन्यजन्यविषमसमस्याभिः पूर्णतः परिचितोऽस्ति।

यान् ईश्वरस्य बोधः अभूत् एतादृशसत् संतः संख्यायाम् अल्पीयासः। परं अस्माकं मध्ये एषां अस्तित्वः अस्ति अयम् एकसुखदः सत्यम् अस्ति । अस्योपस्थितिर्ज्ञानः सर्वान् नास्ति, नैव महत् संख्यायाम् अस्य शिष्याः सन्ति एतस्य कारणमस्ति यत् अमीशांत आडऽम्बर विमुक्तं भूत्वा स्वकार्य कुर्वन्ति। आसाम् शिष्योपि

प्रचार प्रसार न कुर्वन्ति । एतादृशाः एव अल्पसंख्यक् संत सामान्य मनुष्याणां सर्वोच्च शक्त्याम् आस्था सुस्थिरं कुर्वन्ति। तथा सर्वधर्माणां मुख्याधारः अस्ति। वस्तुतस्तु एतादृशाः पुरुषाः अन्याय पूर्णेयं पृथ्वीभ्यः वरदान स्वरुपः सन्ति।

एतादृशः एव सतसंतः सद्गुरुश्चास्ति वेदज्ञाननिधान श्री वासुदेव रामेश्वर तिवारी शाण्डिल्य गोत्रीयः। न तु ते कस्मिश्चित् संप्रदाय वा पंथ पालकः सन्ति न च स्वयं कानिचित् संप्रदाय संस्थापितेच्छुकः। तेषांरुचिः मात्रास्मिन्नेवास्ति यत् सर्वे जाति धर्म ,हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, जैन, सिक्खा,दीनां, स्त्री, पुरुषाः, स्व दैनिक जीवने अध्यात्मम् अतिगंभीरतया गृहणंतु। सर्वधर्मेषु महान् सत्याः वा, शाश्वत सत्यमे्कं विभिन्न रुपेषु प्रस्फुटितः कृतः। कोऽपि जनः अस्य सर्वोच्च सत्यस्य अनुभव सत्यापनम् च कर्तुं समर्थः चेदऽस्मिन् दिशायाम् कार्येच्छुकः अस्ति। चेत् कतिचित् गुरोः मार्ग दर्शनं तथा सहायतायाश्च प्राप्तिर्भवति तदा ईदृशः आध्यात्मिक अन्वेषणे सुगमतां याति। गुरुवर्य, यस्येदं पुस्तकमस्ति यैः आध्यात्मिक योगमार्गस्य अनुसरणं कृत्वा सत्यं लब्धवान् तान् जनान् सहायता मार्गदर्शनाय च दातुं तत्पराः। येन स्वकीय धार्मिक मान्यताभिः निरपेक्षं भूत्वा सन्मार्गस्यास्य सत्याकाक्षीं सन्तिं। विभिन्न संत योगिनां जीवन वृतयः आपणे समुपलब्धाः। वर्तमान काले एतादृश पुस्तकानां वृद्धिः चरमावस्थायां गतः येषां धर्म पुरुषाणां जीवन वृत्तयः महाकार्याश्चान्यत् तेषां प्रशस्तिः एवं देवत्व प्राप्तिं प्रकाशे आनयन्ति्। एताः जीवन वृत्तयः मुख्यतः मठवासिनां ब्रह्मचारिणां चास्ति। गृहस्थ सतपुरुषाणां जीवन वृत्तयः एवं समुपलब्धयोपरि पुस्तकानां अभावः। अस्माकं श्री गुरूचरणाः: अनुसारेण गृहस्थ एव सामाजस्य अवलम्बः अस्ति। तेकथयन्ति अध्यात्मयोगस्य अयं विषयः ह्रदय अथवा अन्तः करणेन सम्बन्धितः अस्ति। अतः साधकस्य वस्त्राश्रमस्य च एतेन साकं किञ्चिदपि सम्बन्धः नास्ति। किं विश्वासमस्ति यत् केशरिया वस्त्रमात्र धारणेन मानव विकाराभिः मुक्तिं मिलिष्यति। अन्यद् विधौ तु अहं कथयिष्यापि यत् योगस्य अध्ययनः प्रत्येक गृहस्थस्य अनिवार्य

कर्तव्यः अस्ति। ऋते योगेन गृहस्थाश्रमस्य कर्तव्यः अपूर्णाः सन्ति । गृहस्थाश्रमः सर्वेषु आश्रमेषु उत्तमः अस्ति । अयम् समाजस्य आधारः अस्ति। वास्तविकार्थेस्त्वयम् मनुष्यस्य परीक्षा स्थलः अस्ति। आश्रमेऽस्मिन् वसित्वा सर्वनिर्धारित कर्तव्यानाम् पालनम ्कृतवन्तः आत्मबोधस्य पथोपरि अग्रसर भवितुम्येषः समयस्य मूलवॉञ्छास्ति। यद्ययं सत्यमस्तित्वयंअत्यावश्यकः भवति यत् गृहस्थ सतपुरुषाणां जीवन वृतिभिः एवमपुलब्धिभिः समस्त सद् गृहस्थान् परिचितं कारयेत् /कारयितव्यः वा। यैः ते प्रेरणा प्रोत्साहन मार्गदर्शनञ्च प्राप्नुवन्तु। पुस्तकस्यास्य रचनायाः अयमेव प्रथमः एवं प्रमुख औचित्यमस्ति। द्वितीय कारणः, येन महानुभावेन मामयं कार्यकरणाय प्रेरितः अकरोत् सः तुतेषांशिष्याणां उदात्तिच्छास्ति यम् स्वीयस्य उच्चाध्यात्मिक अनुभवाः लब्धाः तथा च ये स्वानुभवानन्दाञ्च स्वकीय अन्य वान्धवैः सह विभाजयेच्छुकः।

पुस्तकेऽस्मिन व्यक्तिगत अनुभवानां माध्यमेन पर्याप्त रुपेण प्रकटः कृत। परंमधिकतरं गुप्तोऽप्यस्ति याथानेक व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभवः तथा च ध्यानस्य रहस्यमयः एवं गुह्य विधयः। याः विधयः इदृक् गुह्योस्ति यत मात्रेकस्य पुस्तकस्य माध्यमेन इमाः स्पष्टीकरणं असंभवः अस्ति् एतेतु कानिचित् सदगुरुभिः शिक्षा ग्रहणं एवं श्रेयस्करः अस्ति। एतादृश आलोचकानां न्यूनतापिन भविष्यति ये अनादरपूर्ण टिप्पणयः कुर्वन्ति यत् पुस्तकेऽस्मिन् कति ईदृक प्रसंगाः अस्ति यद् विज्ञानस्य दृष्ट्या तर्क संगतः नास्ति। तथा च उत्तेजित मस्तिष्कानां मतिभ्रम प्रतीतः भवन्ति, अस्याहं मात्र इदमेव उत्तरं दाष्यामि यत मिष्ठान्नस्य स्वादःप्रतीतिस्तु आस्वादने एवास्ति। एतेषां तथ्यानां सत्यता परिक्षणे तथा च वैज्ञानिक विधिभिः परीक्षण करणाय भवदीयानां सुस्वागतमस्ति। भवतः पार्श्वे संतुलित मस्तिष्कः, सुदृढ मेरुदण्डः एवं पथ दर्शनाय सद्गुरोः समागमः आवश्यकः अस्ति अयमेव सर्वस्वमस्ति ।

पुस्तकेदं वास्तविकस्तु यादृक रुपेभवितव्यासीत् तादृक रुपे न प्रस्तुतीकरणस्य स्व असमर्थतयाऽहं पूर्णरुपेण अवगतोऽस्मि। नाहं लेखकोस्मि । सम्भंवतः लेखनस्येदं

मम् प्रथमान्तिम् प्रयासोऽस्ति। तथा च दोषाः त्रुटयः ममास्ति। पुस्तकस्यास्य सम्पूर्णः श्रेयः समादरणीय गुरुनस्ति तेषां जीवनं यदि एतादृश साहसिकः उत्कृष्टश्च न भवति तदातु वयं पुस्तकमिद कदापि न लिखिता भवति अहं श्री सद्गुरोः ऋणीअस्मि।

पुस्तकेदं समस्त शिष्याणं सम्मिलित प्रयासस्य प्रतिफलं अस्ति। तृतीय भागे कानिचित् शिष्याणां नामोल्लेखः अस्ति अहं स्व समस्त शिष्यवान्धवानां प्रति ह्रार्दिक कृतज्ञतां व्यक्तं करोमि।

परं किंञ्चिदप्यल्प पाठकानपि सत्यान्वेषणः ऋजु संकुचित द्वारोपरि उपस्थापनाय अथ च प्रवेशाय तथा च संकुचित पथोपरिगन्तु कामनया प्रेरणा एवं प्रोत्साहनः अनेन पुस्तकेन मिलति। तदातु अयमेव अस्मान् पर्याप्त पुरुष्कारः भविष्यति। श्रद्धेय गुरुजी महोदस्य शब्देषु आकाशेलक्षाधिक तारागणाः सन्ति परं रात्रौ अंधकार विनाशंकृत्वा पृथ्वीं मात्रेक चंद्रमा एव प्रकाशमानं करोति पुस्तकमिदं सत्यान्वेषकान् श्री सद्गुरोः समस्त शुभ कामनाभिः आर्शीर्वादाभिश्च सह समर्पितः।

इदम् आदरणीय गुरूदेवस्य ***A dip in divine confluences*** *हिन्दी अनुवादं अस्ति श्री गुरूदेवस्य उत्कृष्ट जीवनं उदात्त विचारान् एवं आध्यातिमक उपलब्धीन् आत्मसात् कृत्वा आत्मिक उत्थानं भवितुंसमर्थता आगमनं अनेन दृष्टिकोणेन सर्वहिन्दीभाषी अथ च हिन्दी प्रेमीबान्धवानां हेतवे इन्दी अनुवादस्य एषः प्रयासः कृतः।*

19–4–1981 ***ए. के. कुरियन, तिलकनगर बिलासपुरम्***

भूमिका

मातृभाषा सर्वजनहिताय भवति अयमेक र्निर्विवाद सत्यः अस्ति। श्रद्धेय श्री गुरुजी एवं तस्य हिन्दी भाषी शिष्याणां हार्दिकेच्छायाः साकार रुपः अस्ति तथैव सर्वभाषाणां जननी संस्कृत अस्ति इति सर्वे जानन्ति भाषा उद्गात्री संस्कृत भाषायां

अस्य पुस्तकस्य संस्कृतं अनुवादं संस्कृत प्रेमी जनानां रुचि वृद्धये एतद्मया अल्प प्रयासकृतः।

अस्यानुवादे विभिन्न नवीनताऽपि सन्ति। डा. व्ही. ए. शिन्दे एम. एस. आचार्य एवं विभागाध्यक्षः शरीर रचना विज्ञान श्याम शाह चिकित्सा महाविद्ययालय रीवा म. प्र. , महोदयः स्व अथक परिश्रमेण शरीर रचना एवं योगः वा आसन ध्यान अध्यायान् सरल सुरुचि पूर्णग्राह्य ग्राहकता सिद्धये पूर्ण प्रयास कृतः। शरीर रचना योगञ्च पाठकेभ्यः दुरुहः भविष्यत्येव पर आसनः एवं ध्यान, इति संज्ञाध्यायस्थ माध्यमेन पाठकान् वैज्ञानिक दृष्ट्या सम्पूर्ण तथ्यस्य मूल्यांकने अवश्यमेव साहाय्यो भविष्यति । योगः एवं ध्यानस्तु मात्र योगिभिः वा साधकाभिः प्रतिपादित विषयः एव नास्ति अपितु वैज्ञानिक दृष्टया सिद्ध सत्यः अस्ति। भवन्तः एषा साधकानां कपोत कल्पनेति कथयित्वा नकारात्मक उत्तरदाने न समर्थः। डा. व्ही. ए. शिन्दे महोदयः यथा सम्भवः प्रयासः अकरोत। यत् पाठक जनः तकनीकिः वा विज्ञानस्य माध्यमेन अस्य विषयस्य अवबोघनं कृत्वा प्रत्यक्ष प्रमाणिकतया वा तथ्यं वीक्ष्यन्तु स्वयं प्रयोगं कृत्वा अस्य सत्यतासिद्धिं कुरुत। प्राच्य भारतीय संस्कृतेः एवं आधुनिक विज्ञानस्य सामंज्जस्यं संस्थापितः कृतवान्। भारतीय संस्कृतौ अध्यात्मवादस्य एकः विशिष्ट स्थानः अस्ति। इमान् दैशिक कालिक एवं परिस्थित्यनुकूलः तथा अनुरुपस्य निर्माणाय तथा विज्ञानस्यनिकषोपरिः निकषस्य सिद्धि स्वरुपस्य वा प्रयास कृतः। अध्यात्मम् वैज्ञानिक दृष्ट्यापश्न् अद्य इत्थमपि आवश्यकः अस्ति यतः अयम विज्ञानयुगः अस्ति। इदानीं जागरुक जनः प्रत्येक तथ्यं विज्ञानस्य तुलायां तोलनेच्छुकः। भौतिक वादीयुगेऽस्मिन् आध्यात्मम् वास्तविक रुपे तथ्यतः ज्ञानं व्यवहारेषु आनयनं अत्यावश्यकमस्ति। श्री गुरुपादस्य ह्रदयेच्छास्तितुतस्य बुद्धि जीवी शिष्याः आध्यात्मिकतायाः विभिन्न विषयान् पथान् च विज्ञानेन सिद्ध कृर्ततस्य प्रयासाः कुरुत। डा. शिन्दे शरीर रचना एवं शरीर क्रिया विज्ञानस्य माध्यमेन ध्यानः एवं आसनेन संबद्ध कतिचित् दुरुह। प्रश्नानामुत्तरः

ममसम्मुखे स्थापितोऽस्ति। हिन्दी अनुवादस्य तृतीय भागे पूज्यपाद गुरुवर्यस्य अनेक शिष्याणां आध्यात्मिक अनुभवानपि सम्मिलितः कृतः। याननुभवान्किञ्चित् अपरिहार्य कारणात् आंग्ल संस्करणे न गृहीतः। शिष्याणां अनुभवान् पाठक बन्धुनां समक्षे प्रस्तुतीकरणस्य प्रमुखोद्देश्यः अस्ति मानव जीवने आध्यात्मस्य उपयोगिता आवश्यकतां वा अर्निवार्यतां स्पष्टीकरणस्य आध्यात्मस्तु। सर्व धर्माणाम् मतानाञ्च सारोऽस्ति। धर्मः,जातिः,पंथः, सम्प्रदायः वोच्चनिम्नस्य परिधीभिः परेऽयमस्ति। ईश्वरांश जीवः अक्षुण्णः। आत्मातु ईश्वरस्येवाशः अस्ति अस्तु। आत्मावा आत्मस्वरुपस्य साक्षातकारः एवं ईश्वरदर्शनः अस्ति। आत्मातु लघुमहत् सर्वेषु विद्यमानस्ति। अतः आध्यात्मिक मार्गे साधकस्य आयुवर्गस्य किञ्चिदपि महत्वं नास्ति। श्री गुरुवर्यस्य मधभागस्य शिष्याः समस्त आयुवर्गाणाम् संति।

आदरणीय पूज्य श्री सद्गुरोः मामुपरि असीम कृपा अस्ति माम इव अकिंचनं हिन्दी अनुवादकरूपे चयनं कृत्वा ते मम जन्मं सार्थकं कृतः। अहं कर्त्ता कर्मस्य चोभयोर्मध्यस्य माध्यम मात्र एव अस्मि वास्तविक कर्त्ता तु स्वयं श्री गुरूदेवो वर्तते हिन्दी अनुवादस्य अयम् मम प्रथम प्रयासः अस्ति। अहं स्वकीय त्रुटिभ्यः क्षमाप्रार्थी अस्मि माम् पूर्ण विस्वासोऽस्ति यत् उदार ह्रदय आदरणीयाः गुरूदेवाः अथ च पाठकगणः माम् अवश्यमेव क्षमां करिष्यथः।

अहं डा0 रघुनाथ प्रसाद पांडेय एम0 डी0 आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, शरीर क्रिया विज्ञान, श्याम शाह चिकित्सा महाविद्यालय रीवा म0 प्र0 तेषां महानुभावानां ह्रदयेन कृतज्ञा अस्मि ये महानुभावाः अनुवाद कार्यं तथा च शुद्धिकरणे मुक्तहस्तैः सहायता प्रदानं कृतवान्। अस्य पुस्तकस्य तृतीय भागस्य अनुवादे तेषां सम्पूर्ण सहयोगः आसीत्। तेषां स्नेहपूर्ण मार्गदर्शनेंनैव एषः कार्यः पूर्णतामधिगतः। अहं कु0 भारती पाण्डेय बी0 ई0 एम0 ऐ0 आई0 व्याख्याता शा0 अभियान्त्रिक महाविद्यालय

रीवां आसाम् अपि हृदयेन आभारं व्याहरामियाः अस्य अनुवादे तथा शुद्धिकरणे साहांय्यं कृत्वा स्वकीय पू0 गुरूणां प्रति एका अनुजायाः कर्तव्यं पूर्णतया निभालयते।

अनुवादस्य एषः कार्यः यथा समयपूरयितुं असम्भवम् प्रतीयते चेन्माम् डा0 श्रीमती साईदा शिन्दे, एम0 डी0 प्रवाचक भेषज गुण विज्ञान, श्याम शह चिकित्सा महाविद्यालय, रीवा म0 प्र0आसाम् मातृ तुल्य स्नेहः आर्शीवादं चेन्नप्राप्तिर्भवति। मादृशी अकर्मण्योऽपि कार्यमेष पूर्णं कृतः अस्य श्रेयः डा0 श्री मती साईदा शिन्दे मातरं एव/अस्ति/अस्य कार्यस्य कर्तव्यकाले अपेक्षित साधन सुविधाः प्रोत्साहनञ्चएवं निश्छल स्नेह ताभिः माम् दत्तः एतदर्थं अहं आजीवन तासाम् ऋणी भविष्यामि।

अध्यात्मम् प्रति मम एकः स्वस्थ दृष्टिकोणः डा0 व्ही0 ए0 शिन्दे महोदयस्य कृपापूर्ण शिक्षायाः एव प्रतिफलम् अस्ति। तेषां पितृतुल्य स्नेहः एवं अनुशासनः तथा नैरन्तर्य मिलितारः समर्थमार्ग दर्शनेनैव एषः हिन्दी अनुवादः भवताम् समक्षे उपस्थापयितुं शक्तोभवामि । अहं सदैव तान् प्रति कृतज्ञास्मि।

अहं स्वकीय परिजानानांमपि आभारी अस्मि येतासां प्रति कर्तव्यानां उपेक्षा कृतेऽपि माम् कार्यमेतत् परिपूरयितुं सहयोगः एवं शुभकामनाः प्रदत्तः।

एषः अनुवादः श्रद्धेय श्री सद्गुरोरेव कृपा फलम् असित अतः तान् समर्पित करणस्य प्रश्नः एव न समुत्थापितः। सर्वशक्तिमान् ईश्वरैः ममकरबद्धप्रार्थना अस्ति यत् आदरणीय पू0 सद्गुरोः छत्र छाया अस्मदादीनामुपरि जन्म जन्मानतरं यावत् अक्षुण्णेवा अविच्छिन्नो भविष्यति।

डा0 वी0 ए0 शिन्दे, एम0 एस0, प्राध्यापक, शरीर रचना विज्ञान

श्याम शाह चिकित्सा महाविद्याालय रीवा, मध्य प्रदेशस्थः

संस्कृत अनुवादकस्य आभारप्रदर्शनं अत्रैव कर्तव्यम्।

प्रथम भाग:

जीवनी

प्रथम भागः—— जीवनी

दक्षिण अमेरिकायां जन्मः किञ्चित्प्रास्ताविकम्

श्लोक :–

ऊँ श्री वासुदेवं नमस्कृत्य, नमस्कृत्य पितामहम् । अनुवाद कार्य प्रकुर्वीत (दिव्याम्बु निमज्जनानुवादेन) सद्गुरुं प्रणतोस्म्यहम् ।1।

अल्पज्ञोऽहमनधिकारी संस्कृतेवाऽमये सदा तथापि सद्गुरुप्रसादेन साहसोऽयं कृतामया ।2।

मम् वृत्तान्तस्य आरम्भः भवति पूर्व शताब्धायां तं अतिंम वर्षतः यदा शक्ति समर्थ ब्रिटिश साम्राज्यस्य शक्ति सामर्थ्यः किवा गौरवः चरमबिन्दोपर्यासीत्। कालेस्मिन् पर्यन्तं ब्रिटिश साम्राज्यः अर्ध संसृतौ सुदूर पूर्वे भारत वर्मादयः एवं पश्चिमें अमेरिकायाः पर्याप्त भागेषु प्रसृतासीत। अयम् तत् कालः आसीत् यदा ब्रिटेनवासी दर्पौचित्येन इयमुद्घोषणा कुर्वन्तिस्म् यत् ब्रिटेश साम्राज्ये दिवाकरः कदापि अस्तं न भवति ।

कालेऽस्मिन् ब्रिटिश शासकान् विभिन्न महाद्वीपेषु स्व आवास हेतोः नगर विस्ताराय अधिकाधिक श्रमिकानां आवश्यकताऽभूत। ईदृक् विस्तृत साम्राज्योपरि शासनाय प्रशासकस्तथा सेवाधिकारी उपलब्धिकर्तुं ब्रिटेनयद्यथा लघुदेशाय दुष्करासीत्। तस्यसर्वमहत्उपनिवेश भारतस्य जनसंख्या सर्वाधिकासीत् ब्रिटिश शासकाः अस्य जन समुदायस्य उपयोगः स्वल्प सख्यंक महाद्वीपे , आफ्रीकादक्षिणअमेरिकायाम् वा नगरान् विकासाय निर्णयः गृहीत। आवश्यकतेयंदृष्टिगतंकृत्वा ब्रिटिश शासकाः भारतीयान् श्रम्रिक रुपे नियुक्तिं कृत्वा विदेशेषु किञ्चित् कालाय अनुबंधितं कृत्वा प्रेषणारंम्भ कृतः। अनुबन्धस्य पञ्चं वर्षावधि समाप्तेसति इमे श्रमिकाः स्वेच्छया भारते प्रत्यावर्तितः आसीत्। किं वा तान्

देशेषु त़त्रस्थ नागरिकता प्राप्तिं कृत्वा कृषकाथवा व्यापारी रुपे निवास कर्तु शक्तासीत्।

दक्षिण अमेरिकायाः ब्रिटिश ग्वाइना नामधेयस्य देशस्यगन्तारः श्रमिक समूहे इलाहाबादस्य मूल निवासी कानिचित् परिवारः तिवारी ब्राह्मणानामप्यासन्। विंशति शताब्द्यां आरम्भपर्यन्तं इमे परिवारः नगरस्य राजधानी जार्ज टाउन स्थाने नागरिकताप्राप्तनिवासिनां रुपे अवसन्। एतेषु परिवारेषु एकैः श्री रामेश्वर तिवारी महोदस्य डेमेरेरा नद्यां पश्चिमी तटोपरि प्लैनटेक वाकॅ स्थाने पलाटाड.क चतुर्थोपरिनिवासं कुर्वन्तिस्म जार्जटाउन स्थाने तस्य वस्त्राणाम् हाटिका आसीत्। परिवारेऽस्मिन् त्रयोविंशति जुलाई सन् 1908 रव्रीस्ताब्दे ब्राहमेमुहूर्ते चतुर्थ वादने एकशिशो जन्मं अभवत्। यस्य नामकरणः श्री वासुदेव रामेश्वरः कृतः। नियतिः बालकस्यास्य चयनः अनेकेभ्यः एकः हितैषी दार्शनिकः एवं आध्यात्मिक गुरोः रुपे अकरोत्। भावी विवरणम् अस्य बालकस्य वाल्यावस्था, यौवनावस्था, वा प्रौढ़ावस्था पर्यन्तस्य कथास्ति। कथेयमस्ति अस्य बालकस्य सत्य व विवेकस्य अमिटतृषा अन्वेषणस्य च। तस्ययोग साधनायाः एवं तेन कृत व्यतीत दुःख क्लेशानां तथा च तां दिव्यशक्तिः येनतस्य जीवने समविषय अवस्थायां मार्गदर्शनंदत्वा आत्मानुभूतेः उपान्तय् अवस्थया ईश्वरानुभूतेः अवस्थायां प्रविष्टमकारयत्।

बाल्यावस्थायामेव बालक वासुदेवः चारित्रिक विशिष्टता असाधारणतायाः परिचयं अददत्। बालकस्यास्य प्रथम जन्म दिवसे एका आश्चर्यजनक घटना घटितः यया बालकस्यास्य आध्यात्मिक विशेषताः प्रस्फुटितः कृताः। दिनेऽस्मिन् सामान्यतः प्रसन्न एवं विनोदशीलवान् बालक वासुदेवस्य समस्त वाह्य संवेदनाः लुप्तः इव अपश्यत्।

सः स्व शैयायाम् स्थिरासीत्। तस्य हस्त पादौ शान्तासीत्। तस्य चक्षुपुतलयः ईदृश अचलाभूत यथा दृष्टि कस्मिंशिचिदेक बिन्दो परिकेंद्रितः अभूत। भयभीत पितरौ चिकित्सकम् अवाहये वा आह्वयते यद् किमपि रोगस्य लक्षणान्वेषणे असमर्था अभवत्

एतावता औषधि निर्धारणमपिनाकरोत्। सतु बालकम् उष्ण जले स्थापनस्य विर्मशोप्रदत्तः येन शरीरस्य तापक्रम स्थिरः भवति शीघ्रेव अस्य पालनः कृतः परंचिन्तामग्न पितरौ धैर्यपूर्वकं प्रतीक्षा मौनस्थितये प्रार्थनायां स्वयं समर्पितवान्। समयक्रमः चलतिस्म पलः मिनटेषु मिनटः घटिकासु परिवर्तितः अभूत। परं बालके जीवनस्य कोऽपि चिन्हन न प्रभवतिस्म। द्वादश घटिकानां पश्चात् यद्यत् शोकेनसंतप्त माता पितृभ्याम् अत्यधिक अवधिरासीत्। बालकः स्वहस्तपादयोः गति समारब्धः। यया मातापित्रोः चिन्तायाः निवारणं अभवत्। परं बालकाय किमभवत्। किं सः बालकः आत्मविस्मृति दशायां परमात्मनः सम्पर्कासीत्।

त्रिवर्षस्य आयु पूर्णात् पूर्वेव बालकः वासुदेवः मातृ स्नेहेन वचिंतोऽभूत्। तस्य पालन पोषणञ्च मातामहस्य गृहे अभवत् यत्र तस्य मातुलः मातृस्वादि, सम्बन्धयः तस्य पालने सहायता अकरोत्। तस्य प्रवेशः आंग्ल विद्यालये कृतवान्। तथा च तस्य नामांकनः बालबिहार कक्षायां कृतः। विद्यालयेपितस्मिन् स्वायु वर्गस्य अन्य बालकेभ्यः पृथक्–पृथक् एवं एकाकी वासस्य असाधारण प्रवृतिः दृष्टिगाोचरीभूत। अन्य बालकैः सदृश वार्तालापेषु क्रीडाषु चसमय व्ययः तं नारुचत्। सः स्वयमेव स्वीय स्वप्नेषवेव परम प्रसन्न प्रतीतः अभूत। सः क्रीडयावान्य बालकानां सान्निध्येन आनन्दानुभवम् नाकरोत् । अंग्रेजाः, गुरुजनाः वा तस्येत्थं संकोच विज्ञाय तं स्वीयस्य उपरिअत्यजत् , प्रियमातुः विरहः यथा तं अतंर्मुखी विनिर्मितः।

यद्यपि सः संकुचितासीत् परंमंदबुद्धिः कदापिनासीत्। सतु असाधारणः प्रतिभावान् मस्तिष्कः तथा च कुशाग्रबुद्धयाः स्वामी आसीत्। वर्ष त्रयस्य अवस्था पूर्णकर्तारन् तं शतोत्तर पञ्चाशततः द्विशतश्लोकाः यथा मंगलाचारः, देवपूजामंत्रः, हवनमंत्रादयः, कंठस्थाभूत्। पंञ्चवर्षीयत्वायु संप्राप्तिपूर्वे चाणक्य नीति, सत्यनारायणकथादीनां शतोत्तरचतुर्दशश्लोकानपि कंठस्थं अकरोत्। निस्चित रुपेण

सुकुमार अल्पवयस्क बालकस्यनेदंसाधारणोपलब्धिः किञ्चित। जनाः बहुधा तेन श्लोक पाठाय साग्रहं कुर्वन्तिस्म तथा च तस्मै पणकानांमुपहारैः उपहारयन्तिस्म।

एकान्य संघटना तदा घटितः यदा बालक वासुदेवः त्रिवर्ष देसीयासीत्। अयम् मातुः देहावसानो परान्तस्य किञ्चित मास पश्चातस्य समयः आसीत्। एकदा तस्य मातुलः नन्दकिशोर द्विवेदी प्रातः स्नानाय गन्तुकामः आसीत्। बालक वासुदेव तस्मिन काले हाटिकायामेव उपस्थितः आसीत्। गमनात् पूर्वतम् मातुलः स्व स्वर्ण पट्टिका निर्मित समय चक्रर्निदेशिका (घड़ी) सुरक्षायै अयच्छत्। सुरक्षायाः विचारेण बालकः तत् वस्त्राणां ग्रन्थिकामेकं अधः स्थापितवान्। आगमनस्य पश्चात् मातुल घटिका विषये न अपृच्छत्, भागिनेय मातुलौ च द्वयोरपि घटिकां विस्मृतं : जातः। दिवसत्रयस्य पश्चात् मातुल स्मरणम् अभवत् यत् सः स्व घटिका भागिनेयं सुरक्षायै दत्तः। सः घटिका प्रत्यानायस्य आज्ञाअददत्। बालक वासुदेवः वस्त्राणां ग्रन्थिनां अधः यत्र सः घटिका स्थापितवान् तत्र अपश्यत् तत्र तत् नासीत्। वस्त्राणां कतिपयानि ग्रथयः इतस्ततः कृत्वा सावधानतया अन्वेषितः। सर्वेभ्यः अयमेकः दुःखदाश्चर्यः आसीत्। यत् घटिका कुत्रापिनास्ति। क्रुद्ध मातुलः निर्ममतापूर्वकं बालकस्य भर्त्सना अकरोत्। अन्य अंग्रेंजाः अपि दयाविहीनं भूत्वा तं अनिन्द्यत्। अमन्यन् सर्वेयत वस्तुतस्तु किंञ्चित पणकानां लोभवशात ्वासुदेवः कश्मिश्चित अदद्यात्। तथा च घटिका स्थापन स्थानस्य विषये असत्यं भाषते। दुःखी वासुदेवः विलापकर्तारन् भूयः भूयः बलं दत्वा अकथयत्। यत सः घटिकातत्रैव स्थापितवान्। यत्र सः संकेतंअकरोत्। घटिकायाः रहस्यात्मक व्याजेन अदृश्येगतेसति सर्वेअग्रजारपि किं कर्तव्यविमूढ़ः अभवत्। घटनेयं विस्मृतातिरिक्तं ते किं कुर्वन्तिस्म। कतिचितमासाः व्यतीताः क्रिसमस ऋत्वारम्भम् अभवत्। विपणि वस्त्राणां विक्रयः तीव्रतरः असीत्। वस्त्राणां अनेक ग्रन्थायः ऊर्ध्वतः अधः विक्रयाय आनीतः क्रिसमस दिवसस्य एकदिवसेपूर्वे यदाग्राहकायवस्त्रपरिमापितः तदा स्वर्णमयी घटिकाअस्य वस्त्रस्य ग्रन्थिना निर्गत्य विपणिकायाः पटलोपरि अपतत्। वासुदेवोऽपि

विपणिएव उपस्थितः आसीत्। घटिकायाः रहस्यात्मक भेदेन पुनः प्रगटेसति बालकः वृद्धाश्च सर्वे विस्मितः अभवन्। अनेन प्रकारेण वासुदेव र्निदोषसिद्धः अभवत्। तथा च तस्य प्रतिष्ठोपरि किञ्चिदपि आक्षेपो नाभवत्। अनया घटनया वासुदेवं इत्थं विस्वासं अभवत् यत् सत्यः एव महत्वपूर्णः अस्ति। प्रशंसा वा दोषारोपणस्तु ह्येयास्ति। येन बिनापि मनुष्यः निवसति। स्वीयानुभवनेन सः अयं ज्ञापितवान् यत् अन्ते सत्येव विजयी भवति।

यदा बालक वासुदेवः पञ्चवर्षीयासीत् तदा तं एकान्य असाधरण अनुभवः अभवत्। वासुदेवस्य पितुः यत्र स्नेही आसीत् तथैव शुष्कानुशासकोऽप्यासीत् बालकम् यद् बालबिहारस्य विद्यार्थी आसीत् । अध्ययन क्रीड़ा व विश्रामस्य दिनचर्यायाः कठोरतापूर्वकं पालनम् अकरोत्। रात्रौ दश वादनस्य समयः सर्वेषां शयनस्य समयः आसीत्। परं अस्मिन् रात्रौ तं निद्रा न आगच्छतिस्म। स्वपादौ वक्ष पर्यन्तं आवर्त्य सः स्व शय्यायां स्थिरः मध्य रात्रि समये सः मूत्रोत्सर्गेच्छया उत्थितः। सः समीपस्थ द्वितीय कक्षे गतवान यत्रपितुः अवसत्। यथैव सः पितुः कक्षे प्रविशत् तथैव तं त्रिंशतिवा पन्चत्रिंशति वर्षीय भव्य तेजस्वी आसन्दिकासीन मनुष्याकृतेः दर्शनंमभवत्। अयम् मनुष्याकृतिः अनुमानतः सप्त बालिश्त/फुट उच्च प्रतीतं अभूत। तस्य मुखाकृतिना अद्भुदेकतेजोमय प्रभावः प्रस्फुटितः। तस्य देहः अत्यन्त मनोहरीप्रकाशेनदेदीप्यमानासीत्। तस्याकृतौ दैवत्वासीत् वासुदेवं तस्याम् रात्रौ मूत्रोत्सर्गेच्छया वारत्रयं उत्थाय विवशः आसीत् वा अभूत् प्रत्येककमेसः तां दिव्याकृतेः दर्शनं अकरोत्। परं वासुदेव वा सा दिव्याकृतिः एकमपि शब्दंनोच्चरितः। तस्य पितुः गहन निद्रायां लीनः अस्याद्भुत व्यक्तित्वस्य उपस्थित्या अनभिज्ञः एवासीत्। बार त्रयस्याऽयं दिव्यदर्शनः सांसारिकतायां परे ज्ञानस्य जिज्ञासां– बालकवासुदेवेतीव्रतरमकरोत्।

तस्य पितुः गृहे रामायण, महाभारत, तथा च श्रीमद्भगवद्गीतादयः पवित्र धर्मग्रंथानां पठन पाठनस्च दैनिक नियमासीत्। एतेषां महाकाव्यानां अध्ययने वासुदेवस्य गहना रुचिरासीत्। भारत भूमिम् पवित्रकर्तारः श्री राम, श्री कृष्ण तथा व अनेकानां महान् ऋषीणां जीवन वृत्तयः एवं महद् कार्याणां वर्णनं श्रुत्वा वासुदेवस्तु भावभूषितः जातः। कथेऽयंतं प्रेरणाप्रदतः। योगिनां ,ऋषीणांञ्च इव आत्मिक अनुभवान् सं प्राप्तये अदम्य इच्छा तस्य ह्रदयस्य गहनेषु प्रविश्य प्रस्फुटितः। महाकाव्येषु वर्णितः भगवत्देवतानां भूमि भारतस्य यात्रायै महदुत्कण्ठा बालकस्य ह्रदये स्व स्थानं स्थापितवान् । सः यदापिएकान्तेभवति तदा तस्य मनः पवित्र भारत भूमेः तीर्थयात्रायाम् निर्गताजातः। तस्य भारत भूमेः यद् श्री कृष्णस्य जन्मस्थली अस्ति। यत्र श्री रामचन्द्रस्य अयोध्यानगरी अस्ति, महाकवि तुलसीदासः कबीर, सूरदासादयः कवीनां जन्म भूमिरस्ति। तथा च यत्र वैदिक मुनीनां वन स्थलयः सन्ति स्वेत्थंचिन्तनशीलतया एकान्तस्य प्रति अनुरागस्य कारणेन सः यदा, कदा, स्वोच्चश्रेष्ठजनानाम् उपहासस्यपात्रःविनिर्मितः जातः। ते पितामहं कथयित्वातस्य उपहासं कुर्बन्तिस्मः।

तस्य पितुः पितामहः वान्यसम्बन्धयः अस्य चिन्तामकरोत् यत् कदाचित एकान्त वासः वा चिन्तनस्य ईदृशः स्वभावः तस्य अध्ययने बाधकः न जातः। सेन्ट स्वाधीन आंग्ल/अंग्रेज विद्यालये तस्य अध्ययनः प्रचलितः।

सप्तवर्षीयअवस्थायां चतुर्थःकदलीपथे /प्लेन्टेन वाकॅ पितृगृहे बालक वासुदेवस्य उपनयन संस्कारः अभवत्। सः स्व पित्रासहैव अवसत्। तस्य जनकः श्री रामेश्वर महोदयः विधिपूर्वकं हिन्दी संस्कृतयोश्च शिक्षारम्भः अकरोत्। पवित्र मंत्राणां लयबद्ध रोचक एवं प्रभावपूर्ण पठनोपरि बालकस्य उत्कृष्टाधिकारः अधिकृत। अयम् तस्य भविष्याय अतीवोपयोगी सिद्ध अभवत्।

नवम् वर्षस्य सुकुमारावस्थायां तस्येयंकला कीदृशः उपयोगी सिद्धः अभवत्। इति ज्ञानं गिप्सावासंभवतः पाठकान् रुचिकरः भविष्यति। घटनेयमित्थमस्ति। एकदा

प्लैन्टेन वाकॅतः किञ्चिद् दूरस्थ न्यू स्टैट कालोनी स्थले स्थितः भारतीयसमाजः तस्य पितामहः पंडित जय मंगलं द्विवेदी श्री मद्भागवतस्य पांठाय पाठकरणाय निमंत्रितं अकरोत् पाठोऽयं सप्तदिवसावधि पर्यन्तं प्रचलितारः आसीत परं दिवसत्रये कण्ठे किञ्चित् क्लेशस्य कारणात् सः स्वपाठस्य नैरन्तर्यगतिदाने असमर्थ अभवत्। सम्माननीय वृद्ध द्विवेदि महाभागस्य दशोऽयं अवलोक्य कार्यक्रमस्य आयोजकाः वासुदेवेन पठनस्य गति नैरन्तर्याय आग्रहं अकुर्वन्। अस्योपरान्ते बालक वासुदेवः पठनारम्भः अकरोत् चतुर्षुदिवशेषु च तं समापनमप्यकरोत्। इत्थं प्रशंसनीय कार्यः न केवलं धर्मग्रन्थानां प्रति तस्यास्थाश्रद्धाम् वाविकसितमकरोत्। अपितु देवी–देवतानां, महापुरुषाणांञ्च भारत भूमेः दर्शनस्य उत्कटाभिलाषामपितीव्रतरमकरोत्। वयम् अपशयम् यत् केन प्रकारेण बालक वासुदेवः पंञ्चवर्षस्य अवस्थायां दिव्यशक्तेः दर्शनेन धन्यः अभवत्। परं यत्र दिव्यशक्तिः तं दर्शनः अदद्त् तत्र पैशाचकोऽपिं स्वकृपा दृष्टिभिः अनुगृहीताय पृष्ठेनासीत्। उपनयन संस्कारस्य किञ्चित कालानन्तरेवतस्य मेलनः एकः पैशाचकेन अभवत्। एकस्मिन् दिवसे श्री रामेश्वरम् न्यूस्टेट स्थानेक विवाहोत्सवे समिलितः आवश्यकः आसीत्। अमेजानः डेमेरेराः नद्यौचसंधिकृत्वा उपनदि वा जलविस्तारिक लघुनद्योपरि उच्चेकः सेतुः आसीत्। अयम् सेतुः ब्रीदन होपः गिरिजा गृहस्य समीपे आसीत्। संत स्वाधीन विद्यालयः यत्र वासुदेव शिक्षा लब्धः संस्थानस्तु अस्य गिरिजा सदनस्य सीमानुबन्धे स्थितः। न्युस्टेट स्थाने गमनाय अस्य सेतोः लङ्ब्धनम् कर्तुरासीत्। वैवाहिक समारोहस्योपरान्ते श्री रामेश्वरमहोदयः तत् पुत्र वासुदेवश्चगृहाय प्रत्यावर्तितः। रात्रौ अनुमानतः एकवादन समयोजातः। यथैव तौ सेतोः समीपे आगच्छताम् तथैव वासुदेवस्त्वेक विशालकायः पैशाचमसेतोपरि स्थिरः अपश्यत्। पैशाचस्तुस्वेकपादम् सेतोः प्रथम भागे तथाऽपरस्तु पथस्य द्वितीय भागे दृढः अकरोत्। अनेन प्रकारेण सः मार्गावरुद्धंमकरोत्। सेतु पथतितीर्षुः जनान् पैशाचस्य पदौमध्यतः भूत्वा गमनम् सुलभः परं यस्यानुमतिः पैशाचः

कदापि न अददत्। या ददातिस्म। वासुदेवः तत्क्षणेवस्वपित्रा पुरः न गमनाय अनुरोधः कृतः। यतः पैशाचः तस्य मार्गम् अवरुदधः कृतः। यद्यपि रामेश्वरम् तस्य दुष्टात्मनः दर्शनं न अभूत। परं सतु तं दुष्टात्मनं वारणाय मंत्रोच्चारणारंभं अकरोत्। किञ्चित्क्षण पर्यन्तं उभयोरेवपक्षःसंघर्षाय एकः अपरस्य सम्मुखे स्थिरासीत्। अकस्मादेव पैशाचः स्वपादौ उत्थायध्वनिनासह उपनद्यां जले अकूर्दत्। यथैव तौ सरित तरणपथो उल्लङधनम् अकुरुताम् पैशाचस्तु जलाद् वहिरागत्यतस्यानुशरन्। तस्य गृहात् किञ्चित् शतद्वयहस्तस्य परिमाणपर्यन्त तस्यानुशरणम्करोत्। तत्पश्चात् सः स्थिरं भूत्वा अवदत् अहम् भवता अति प्रसन्नोऽस्मि भो रामेश्वरः भवान् तथा च भवदीय पुत्रः प्रथमेवईदृशः जनौ स्तः यौ अस्मभ्यम् पिशाचेभ्यः निश्चित काले सरित तरणपथोळनङघनं अकारंयेताम्। अहम् भवतः साहाय्याय वचनं ददामि। यदापिभवान् कश्मिश्चित् संकटेः समापतितः अस्तु तदा मम् स्मरणं करिष्यसि। इति कथयित्वासः पैशाचः अदृश्यः अभूत।

यदा वासुदेवः अष्टवर्षीयः आसीत तदा एकान्य घटना संघटितः। सायं बेलायां अस्ताचलगते सूर्यस्या रक्तबिम्बः प्रतीचीक्षितिजोपरिप्रसृतः आसीत्। रात्रिमयी असित आवरणः पृथिव्याः मुखमंण्डलं इदानीमपि आवरणेननाच्छादितः। रामेश्वरम् तारपत्रकैः समाचारं प्राप्तः यत् तस्य श्वसुरः रुग्णग्रस्तः अस्ति। अतः श्री रामेश्वर वासुदेवौ च रात्रि भोजनं शीघ्रतया ग्रहणं कृत्वा स् अश्वचलित स्व वाहनेन न्यूस्टेट स्थानाय प्रस्थानमकरोत् पूर्व चर्चित चर्चायां आगतः ब्रीदन होप–गिरिजा गृहस्य समीपस्थ सेतुः लंघनम तं आवश्यकः। सेत्वोपरिगच्छन् एव तुरगः अरुधत्। शब्द नादञ्च कृत्वा पृष्ठ पादयोः तिष्ठन् चेष्टयति, वासुदेवस्तुमार्जार्याः असंख्य शिशून् पथोपरिक्रीडन् अपशयत्। शीघ्रेव ते अदृश्यः अभवत् शकटःश्चाग्रे गतः। सतु आवासीय क्षेत्रं तीर्त्वा क्रोशेकयात्रानिर्जन क्षेत्रेषु कृतः। एकदा पुनः भयातुरः घोटकः अग्रे नवर्धितः। स्वाग्रतः पादौ उत्थाय सः पुनः हिनहिनेती शब्दम कृतः। वासुदेवः अपश्यत् यत् अनेकाः शव

मञ्जूषाः मार्गावरुद्धमकरोत्, रामेश्वरस्तु पवित्र प्रार्थनायाः किञ्चन्मन्त्राणां जपारम्भमकरोत्। अनुमानतः घटिकामेकम् तौ तत्रैव अरुधतम्। यतः न तु शवमञ्जूषाः अदृश्यः अभवत् नैव सरलतयातौ गमनाय पथमपि न दत्तः। परं ताः दुरितात्माः बालक वासुदेवं भयांतुरं नाकरोत्। यतः जन्मतः एवं तं दिव्य शक्तेः सुरक्षा कवचः मार्गदर्शनञ्च प्राप्तः।

कालस्तु यापितः नवम् वर्षस्यावस्थायां वासुदेवं अतीवाश्चर्यमेकमंनुभवमभवत्। एकस्यां रात्रौ सः स्वशय्यायाम् स्थितः अभवत्। निद्रानागच्छतिस्म तस्येकः असाधारणानुभूतिः अनुभूतः। एतादृश अनुभीयते यत् गुदायाः भागे शीतवायुः ऊॅर्ध्व आरोहति। तथा चोष्ण वायुः वहिः निष्क्रामति। सः अस्याद्भुतसंघटनाम् किञ्चिदाश्चर्य हर्षेण च पश्यन्। किञ्चिदेवक्षणेषु सः परमशक्ति समर्थबिन्दोः गुदायां ऊर्ध्वोत्थाय कण्ठ पर्यन्तं गमनः विशिष्ट अनुभवः कृतः। अनुभवोऽयं शीघ्रेव परिवर्तितः सः बृहदटलांटिका सागरेण आवृत अपश्यत् सः विशाल जल तरग्ङान् उत्थितः तथा च समस्त विश्वम् जलेनिमज्जितः अपश्यत्। सः जार्जटाउन नगरम् स्वगृहम् अत्रतम् यत् स्व शैय्यायाम् यस्योपरि सः शयनः करोतिस्म सागरतले निमज्जितः अपश्यत्। वस्त्रम् यस्योपरिसः विश्रमितः तमनयत् तरग्ङेषु तरितः। वीचयः कदापि तं अधः नयति कदापि उर्ध्वम् उत्थापयन्ति तथा कदापि अग्रे अवर्धयन् । स न जानातिस्म वीचयः तं कुत्र नीतव्यासीत्। नीयमानयेच्छुकः आसीत्। एषः दर्शनः एषानुभवः कृत्स्नां रात्रिं प्रचलितः उदिते सूर्येदृश्योऽयम् परिवर्तितः तथा च वासुदेवः स्वपरितः स्थित संसारस्य विषये चैतनयम् अभूत।

यामिनेः अनुभवस्मृतिः दिवसम् तस्य हृदये स्थिरासीत् सः स्व कार्यम् यथाभ्यास कार्यम् विद्यालय गमनादयः कृतवान् परं यंत्रंवत मात्रम् वा अर्धमनसि। यामिनीं यदा सः स्व शय्यायाम् शयनाय स्थितः तदा सैव दृश्यः अनुभवश्च तं पुनरभवत्। आगामितिसृषु यामिनीषु एतादृशेव दृश्यानुभवस्य च पुनरावृतिः प्रचलितः

प्रभवतिवा। सः भावसमाधिस्थित्यामासीत्। दिवसे सः सामान्य कार्यमकरोत्। परं तासामेव सीमाम् पर्यन्त यत्र तस्तु क्षपायाः तमनुभवस्य स्मृतिः तमनुमतिं ददातिस्म। दिवसावसानम् सः यामिनेः प्रतीक्षारतः अभवत्। तमनुमीयते यत् क्षणं मात्रदिव्यदृष्टयेआनन्दनुभूतये च भवति। समापित तिसृरात्रेः दृष्टिः अनुभवश्च पूर्व यामिनीनां अनुभवान् सर्वोतम समापन प्रदानः कृतः। अस्य आनन्दमयि रात्रिंतेनेक शान्त स्थिरं विशाल सागरे अपश्यत्। सः पेसिफिक पयोधि सदृशासीत्। सः गाम्भीर्य जलोपरितरितः। सः विशाल पीपल पत्रमेकं स्वदिशायाम् तीर्त्वाआगतं अपश्यत्। यदा सः तस्य समीपे आगतः तदा सः तं पत्रोपरि चमत्कृत ज्योति सौन्दर्य लावण्य युक्त मोहकः दैवी बालकम् प्रसुपूतः स्थिरः वा अपश्यत्। बालकम् परितः दीप्तिवलयमेकं विद्यमानासीत्। तस्मिन वातावरणेषु मात्र द्वावेव साकार रुपः आस्ताम्। अश्वत्थ पत्रोपरि शोभायमानः दैवी बालकः तथा च पटोपरि विश्रमितः वासुदेवः दैवी बालकः पत्रोपरि किलोलं कुर्वतः दक्षपादस्यागुड्ष्ठम् आस्वादयत्। एषः दिव्य दर्शनः रात्र्यासहैव समाप्तम् अभवत्। परं अस्याः मधुरस्मृतयः वासुदेवस्य मनसि स्थिरासीत्। ताः स्मृतयः अद्यापि नवीनाः सन्ति।

वासुदेवस्यास्यनुभवस्य पश्चादेका अलौकिक घटना संघटितः। घटनेयमपि तदा संघटितः यदा वासुदेवः नवम् वर्षेष्वासीत्। यथा हि पूर्वे विषयेऽस्मिन् अकथितः। तिवारी परिवारस्य प्लेन टेनवाकं स्थित सदने अस्तबलमेकः आसीत्। यस्य पृष्ठे जलाशयमेक आसीत्ं। अकर्मण्य गृहान्तेबासिनाः तं सरं गोमयेन मूत्रेण वान्याभिः प्रकारेण म्लेच्छतायाः असभ्यतायांः पात्रं विनिर्मितः। शीध्रेव सः तडागः दूषितः अभवत् तथा च दुर्गन्ध पूर्णं अभूत्। तडागपुंमलं उत्क्षेपकाः प्रस्तारकाः अनेकासीत् परं स्वच्छकर्त्तारः कोऽपिनासीत्। दुर्गन्धेऽयं समीपस्य निवासिनेभ्यः दुष्करासीत्। श्री रामेश्वर तथा च तस्य उपवासी अस्य तडागस्य शीध्रातिशीघ्र स्वच्छतायाः आवश्यकतया सुपरिचितासन्। तानमल स्वच्छताया निम्नः कार्य करणाय समुचित

कोऽपि वैतनिक भृत्यः नामिलन्। दिवसातीतः। रविवारे एकस्य शायं रामेश्वरः बहुधा सदृशरम्य पक्तिंषु एकम् निम्ब वृक्षस्य अधः अतिष्ठत् स्वमित्रैः सह वार्तालाप कुर्बतिंस्म सतु अन्य विषयानां पृथक अपरः वा तडागस्य त्वरित स्वच्छतायाः विषयेऽपि चर्चा चर्चितः सः युवकमेकं राजपथेन भूत्वा गृहम् समीपम् आगतः अपश्यत्। सः आगत्य गृहस्य सम्मुखे स्थिरः अभूत्। प्रश्नेकृतेसतियत् सः कोऽस्ति तथा च किंवांच्छसि सोऽकथयत् यत् तस्यनाम ईमानदारः अस्ति तथा च स कार्यान्वेषणेषुरतास्ति सः अकथयत् यत् तस्य परिवारः तं किञ्चित् कार्यम् अयच्छत् सतु प्रसन्नतां अनुभविष्यति। सः द्वाविंश चतुर्विंशः बर्षीयस्य एकः स्वस्थ युवकः आसीत्। रामेश्वरः अपृच्छत् किं सः तडागस्य स्वच्छता करिष्यति, युवकः कार्यकरणाय प्रसन्नः अभूतः। वा स्वीकृतवान। पारिश्रमिकस्य रुपेसः भोजनावासः तथा युगलमेकं बस्त्रम् बॉञ्छतिस्मः। द्वितीय दिवसेन ईमानदारः कार्यारम्भम् अकरोत् दिवसकार्यस्योपरान्ते सः स्वरिक्त समयः मोदपूर्वकं बालक वासुदेवस्य तथा तिवारी परिवारस्य, स्वान टाइगरेण सह क्रीडनेषु तथा च तयोः प्रमोदे अयापयत्। वासुदेवः, ईमानदारः, टाइगरश्च यः यथा एकः अपरस्येव विनिर्मितः।

यद्यपि टाइगरस्तु सकंर नस्लस्यासीत् परं तस्य एकः विशिष्टः व्यक्तित्वः आसीत्। तस्य व्यवहारः कुक्कुराः सदृशः नासीत् अतः तस्य चर्चा आवश्यकी। स्वानोऽयम् कश्मिंश्चित् सनातनी धर्मनिष्ठ हिन्दुसम एकादशी व्रतस्य कठोरता पूर्वकं पालनं कुर्वन्तिस्म दिवसेऽस्मिन् सः नान्नंअगृह्यत् जलं न च, ईदृशः प्रतीतः अभवत् यत तं विशिष्टेकः षष्ठेन्द्रियः प्राप्तः यया एकादश्यायाः। अवसरः विज्ञापितः। एकदा तिवारी परिवारं एकदश्यायाः स्मरणं न अभवत् परं टाइगरः अन्नं जलंञ्च न गृहीत्वा तं तिवारी परिवारं विस्मरणेनावगतं अकारयत्। किमिदं आश्चर्यजनकं नास्ति यदयं एकदश्यायां तिथौ एव मृत्युं लब्धवान्।

ईमानदारः वासुदेवः टाइगरे च अति प्रगाढ मैत्री आसीत्। ईमानदारः मांस नीत्वा पचति टाइगरञ्च भक्षणाय प्राददत्। ईमानदारं तं तडागस्य स्वच्छता कार्ये कतिपय चतुर्मासः अतीतः। कार्य समाप्तौ सः तत्रतः गमनाय स्व निश्चियं अकरोत्। रामेश्वरः तं धनमवस्त्रञ्च दातुं इयेष परं सः किञ्चिदपि ग्रहणं न स्वीकृतः तिनपरिवारेण साकंवासस्यापिसाग्रहं अनुराधः कृतः परं सः एतदपि न अकरोत्। यदा सः गमनाय उद्यतोऽभूत् तदा रामेश्वरस्य एकः मित्रः श्री सुबराती मियां महोदयः तेन् अपृच्छत सः कुतः आयातः कारणञ्च किमासीत् यत् सः अन्य स्थानापेक्षया रामेश्वर गृहस्य चयनः कृतः सोऽपि घृणित कार्य करणाय। सः एकः मुस्लिम जातीयः इति सम्बन्धेन अन्य मुस्लिमैः सह मिलित्वा नमाजं कि नादा करोति विहस्य ईमानदारः स्व तर्जन्या वासुदेवं प्रति इंगितं कृत्वा अकथयत् अहं मात्र अस्य बाल हृदय विनोदाय आगतः तथा च तत्रतः प्रचलितः। रामेश्वरः सुबरातीमियां च तं युवकं राजपथम् अगच्छत् अपश्यत् तौ अयं दृष्ट्वाचकितः अभूत् यत् अनुमानतः द्विशत् 200 गज परिमाणस्यो परान्ते तस्य दर्शनं अकस्मात् लुप्तः अभवत्। ईदृशः अनुमीयते यत् सः वायुषु अविलयत्। पथस्तु विस्तृतः ऋजुश्चासीत् अनुमानतः मीलमेकस्य परिमापतरं सरल– तया अपश्यन् वा पश्यन्तिस्म। अन्तेवासिनोऽपि तंनापश्यत्।

यथा यथा दिवसः अतीतः वासुदेव रहस्यपूर्णस्वपनेषु अधिकाधिकं गम्भीरतायां वा गह्वरे अनिमज्जयत्। वासुदेव पितुः पितामहः अन्य सम्बन्धीजनाः तस्य विलक्षण मनोदशां अथ च विशिष्ट स्वभाव विषये अत्यधिक चिन्तितं अभवत्। व्याकुल पिता तं अनेक विद्वज्जनानां धर्मगुरुणां पार्श्वे नीतवान् यस्मिन् ईसाई धर्मस्य कैथोलिकः अथ च प्रोटेस्टेटं धर्माध्यक्षाः अपि आसन् कैथोलिक–सम्प्रदायस्य धर्माध्यक्षः सुस्पष्ट रुपेण बालकस्य साहाय्यंकर्त्तुं स्वकीय असमर्थता स्वीकारं कर्त्तारिन् भारतं प्रति नेतुं परामर्शो दत्तः। येन बालकं उचित साहाय्यं अथ च मार्ग दर्शनं प्राप्तुं (अर्होभविष्यति) शक्तं भविष्यति। एकः वृद्ध मुसलमान सज्जनः अपि बालकस्य रहस्यपूर्ण प्रकृतिं वीक्ष्य तन्मतं

एव अनुमतं। ईमानदारः स्वच्छतायाः घृणित कार्यं कर्त्तुं एतदर्थं सन्नद्धः आसीत् यत् सः बालक वासुदेवस्य सान्निध्यं प्राप्तुं शक्ताः भविष्यति। इदं वृत्तं ज्ञात्वा सुबरातीमियां अस्य सज्जनस्यापि इदमेव मतं आसीत यत्। श्री रामेश्वरं स्वकीय पुत्रं यथाशीघ्र भारतं नेतव्यः। अतः पुनः प्रत्यावर्तितुं मनं न अधिगतेऽपि रामेश्वरं अंततः भारतं प्रति पुनः प्रत्यावर्तितुं निर्णयो गृहीतः ते महानुभावाः स्वकीय सम्पदाम् स्वकीय पितृ स्वस्त्रीयस्य नामक्रमे परिवर्तनः कृतः। अनेन प्रकारेण पिता पुत्रस्च भारतस्य जलयात्रार्थं सन्नद्धः अभूत्।

द्वितीय सोपानः

भारताय जल यात्रा

1919 एकोनविंशतिशतोत्तरएकोनविशंतिरव्रीस्ताब्दे अगस्त मासस्य अन्तिमें सप्ताहे श्री रामेश्वर तिवारी पुत्र वासुदेवश्च यात्री जलयानेन सतलजे जल यात्रारंभः अकुरूताम्। वासुदेवस्त्विदानीं एकादश वर्षीयः आसीत्। तस्य संक्षिप्त शिशुमस्तिष्कः पवित्रभारत भूमेः मधुर कल्पनायां लीनं अभवत्। अतः सुदूर जलयात्रायाः स्मृतयः एकत्रितं नाकरोत्। तस्याल्प स्मृतौ मात्र इदमेवासीत् यत् पोतः केप ऑफ गुडहोप पर्यन्तस्य यात्रा कृतवान् तथा चानुमानतः सप्ताहेक पर्यन्तं तत्र कृष्णखण्डखनीजानाऽयविश्रामं अकरोत्। पोतम् यदा कदा समुद्री उत्कट वातस्य संघर्षं अकरोत्। शेष यात्रा तु घटना रहितासीत्।

चतुर्थ अक्टूबर 1919 एकोनविंशति शतोत्तर एकोनविशंति विजयादशमीं पर्वे षट् सप्ताहस्य यात्रायाः पश्चात् सतलजः कलिकातायाः फोगटिस स्थले विश्राममकरोत्। भारते प्रति वर्षोऽयं पर्वः परोपकार सम्मान प्रतीकः श्रीरामचन्द्रस्य तथा च दुर्विनीतः प्रतीकन्नृपः दशाननोपरि विजयस्य स्मृतीषु सर्वे मानयन्ति अर्चयन्ति च, किमिदमात्रसंयोगासीत् यत् वासुदेवस्य पोतः भारतीय पत्तने महत्वपूर्ण दिनेऽस्मिन् आगतः किंवा एतदपि संकेतासीत् यत् शाश्वत सत्यस्यअन्वेषणे अन्तिमजयस्तु तस्यैव भविष्यति। दिनेऽस्मिन् सतलज अनुमानतः सहस्त्रयात्रिभिः सह स्वासनम् संस्थाप्य कूलेव प्रतिक्षितवान्। यतः महोत्सव कारणात् नगरे अति जनसम्मर्दः कारणेन यात्रीन् तटोपरि प्रत्यावर्तनस्य– आगमनस्य अनुमतिं न लब्धः। अक्टूबरमासस्य पञ्चतारिकां एकोनविंशति शतोत्तर एकोनविंशः रव्रीस्ताब्दम् एकादशवर्षीयः वासुदेवः स्वकीयदीर्घ तीर्थयात्रा समाप्तं कृत्वा स्व स्वप्नानां धरणी भारतोपरिस्वपादौ संस्थापितवान्। कैलिकातायां श्रीरामेश्वरः स्वपुत्र वासुदेवं बंगस्याधिष्ठात्री देवी काली मातुः

मंदिरदर्शनार्थनीयमानस्येच्छाऽभूत। वासुदेवस्तु कालीमातुः दर्शनस्य अत्युच्छुकासीत्। देव्याःप्रति तस्यागाधश्रद्धा स्नेहश्चासीत्। सतलजे कार्यकर्त्तारः बंगदेशीयमहानुभावः श्री भिखारी महोदयः तौ काली मातुः मंदिरे गमनाय प्रस्ताव प्रस्तावितः। सः उभौ कलिकातायाः मुटिया बुर्ज नामधेयोपनगरेस्थित स्वगृहे अनयन्। स्नान जलपानस्य च पश्चात् ते मंदिर प्रति अग्रसरः अभवन्। श्री भिखारी रामेश्वरौच अग्रे अगच्छताम् तैः सहैव मंदिरस्य सोपानाः अरूहन् विपणिकायां सज्जित पुष्पाणि क्रीडनकानि मिष्ठान्नैः च आकर्षणेन आकर्षितः वासुदेव पृष्ठेएवासीत्। वासुदेवोऽपि सोपानारोहणारम्भकृतः तस्य नेत्रौ च एकदृष्टिः वा सः अपलक दृष्ट्या परमपावन मंदिरस्यगर्भगृहं प्रति अपश्यत्। यत्र मॉ भगवती सिंहासनारुढ विराजमानासीत्। यथैव सः तृतीय सोपानोपरिपदमतिष्ठत् वासुदेवः मूर्तिर्नअपितु साक्षातदेवींगर्जयन्। केसरिणोपरिविराजमाना अपश्यत्। मॉ जगदम्बा केसरिणं शान्तम् भवितुं आदिशतिस्म। दिव्य दर्शनोऽयं तं आत्मविस्मृतं अकरोत् तथा चमूर्छितः भूत्वा सः सोपानेष्वपतत्। पृष्ठेआंगन्तारः भक्ता पितुः ध्यानम् पुत्रं प्रति अकारयन्। अबोधयन् वा रामेश्वरः भिखारीं च तत्कालेव मुटियाबुर्जे प्रत्यागतः। वासुदेवस्य तापक्रमः वर्धिता। तीव्र ज्वरोऽयंनैरन्तर्य दिवसत्रयं पूर्ववदेव स्थिरः। चतुर्थ दिवसे सः तं संन्निपातावस्थायां किञ्चित् शब्दकर्तारन् लब्धः। माम् प्रयागं अनयन् वा नयन्तु। अग्रदेव रेलयानेन /लौहपथगामिनी यानेन। हावड़ा स्टेशन प्राप्तेसति मम् चक्षुः विकसिष्यन्ति। यथैव रेलयानम् वहिः संकेत सूचकस्य लङ•घनम करिष्यति तदैव मम चेतना प्रत्यावर्तिष्यति। तथा च यथैव रेलः बर्दबानं गमिष्यति प्राप्स्यति। वा तदैव अहम् उतिष्ठयुपविशामिच, चिन्ताकुलतातपादः अयंनिर्णयंनाङ•गीकृतवान् यत् स्वपुत्रं यात्रायाः दुखकरक्लान्त्याम् प्रवेशयामि नवा। कदाचित् बालकस्य दशामार्गे अव्यवस्थितः तदा किं भविष्यति। कः सः सन्निपातअवस्थायां सिथत बालकस्य मनोनीत शब्दान् ईश्वरीय र्निदेशं अमन्यन्। रामेश्वरस्य अन्तर्द्वन्दं विज्ञाय भिखारी महोदयः तं बालकस्य शब्दान्

पूज्यदेव्याः पावन मुखेन निर्गत वचनंमत्वा बालकं आगामि रेल यानेन इलाहाबादम् प्रतिनीयमानाय परामर्शं प्रदत्तः। इलाहाबादगन्त्री द्रुमगामी रेलयानम् यथैव हावड़ा स्टेशनं परित्यक्तः वासुदेवस्य तापक्रमः सामान्यः अभूत्ः रेलस्यद्वितीय संकेत सूचकं तीर्त्वावेवबालकस्य चेतना पुनरागता। रेलम् बर्दबानं प्राप्तः वासुदेवः उतिष्ठ्य अतिष्ठत्। ईदृक् चमत्कारं दृष्टवा पिता स्तभितः अभूत्। सः स्वीकारंअकरोत् यत् तस्य सुतः दैवीप्रभावेणसम्पदासम्पन्नास्ति सदैव दैवीसंपदा सम्पन्नो भविष्यति च। यानस्तु इलाहाबादं लब्धः। यत्र पवित्र नद्याः गंगायमुनयोः सरस्वत्याश्च संगमः अस्तिं। यत्रतः इमाः बगंस्य कक्ष्यायै वा यात्रारम्भं कुर्वन्ति। अयम् ईदृशः पावनः अमन्यन् यत् मात्रेकमज्जनः पापिनां पापानांशमनं कृत्वा मोक्षप्रदानं कुर्वन्ति। वासुदेवः अस्य संगमस्य गुणगानः तुलसीकृत रामायणें अपठत् अतः सः अत्र स्नानाय अत्युत्सुकासीत्। रामेश्वरस्यापि पवित्र स्नानाय इच्छा आसीत् ।

त्रिवेणी समीपे पंडानां समूह आरवेटस्य अन्वेषणे तत्परासन्। यथैव पिता पुत्रौ तत्र अगच्छताम् तथैव पंडाः तौ आवृत्य तथा चं तस्य स्थानस्य महिमा गानं आरम्भं अकरोत्। यत् वारमेकं मात्र निमज्जनेन जीवने केके अनुपम् प्रभावाः आगमिष्यन्ति। तेषाम् एषः व्याख्यानः इत्थं प्रभावपूर्णासीत् यत् कोअऽपि स्वान्तः पवित्रतायाः प्रवाहस्य अनुभवं कर्तुं शक्तः आसीत्। श्री वासुदेवः तरणकलया अनभिज्ञासीत्। अतः रज्जूमेकं गृहीत्वा तस्य स्नानाय प्रबन्धः कृतवान्। वासुदेवः पवित्रतायाः परमानन्दाय च प्राप्तुं इत्थं उत्कण्ठितासीत्। यतः क्रुद्धपितु उत्तेजित आवाहनोपरान्तेऽपिसःपन्चदशमिनटं यावत् स्नानम् अकरोत्। स्नानं समाप्यसः जलाद् वहिरागतः। परं न तुतस्य किञ्चित् पवित्रतायाः अनुभवः अभवत् नैव आनन्दस्य च। अनेनास्नानेन सः न तु संतुष्टिं लब्धः नैवात्मिकोत्थानस्य अनुभूतिः। सः तुत्रिंशदधिकेवबारंनिमज्जनः तस्य पवित्र संगमे कृतः। मात्रेक निमज्जनः मुक्तये पर्याप्तासीत्। तर्हितुतस्य कतिअधिक संतोष : परमानन्दञ् मिलितव्यमासीत् परं तं मुक्तिः किं वा सौभाग्यस्य तु अनुभवः नाभवत्। अपितु पिता

द्वारा आक्रोशः अपमानञ्चैवलब्धः। वासुदेवं दृढ़ विश्वासः अभूत् यत् यथाथर्त :एवं रहस्यमय संगमम् कुतरन्यदेवास्तिः। भारतस्य आदि कवयः मुनयश्च पवित्रत्रयः नदीनांसंगमस्य व्याख्यानःकृतः सोऽयं प्रयागस्थसंगमः न भवितुमर्हति अयमेतद् संगमम् न नास्ति यस्य वर्णनम् महाकवितुलसीदासेन ईदृशः विस्तारेणाकरोत्। वस्तुतस्तुकानिचित् सत् संगमस्य कुत्रापि अस्तित्वं अभवत् तर्हि तु वासुदेवः तं अन्विष्यःतस्मिन् संगमे वास्तविक निमज्जनाय दृढ़ निश्चयम् अङ्कीकृतवान्।

निराशः परं दृढसंकल्प ह्रदये स्थिरं कृत्वा वासुदेवः स्वपित्रासहइलाहाबादमण्डलस्थ मेजा तहसीलस्य सेमरिहा ग्रामे अगच्छत्। स्वसम्बन्धिभिः सह सप्ताहमेकं व्यतीतवान्। श्री रामेश्वरः निवास स्थानस्य चयनान्पूर्वस्वसंबन्धिभिः सह मेलितुंइच्छुकः आसीत् सः सेवई ग्रामम्भगेसरम् तथा च स्व पूर्वजानांग्रामं कालूपुरे अगच्छत्। अन्तेसः सेवई ग्रामे गृह निर्माणं कृत्वा तत्रैव निवासः अङ्कीकृतवान्। कालः अतीतः वासुदेवस्त्विदानीं द्वादसवर्षीयासीत्। एषः एकोनविंशतिशतोत्तरविशति रव्रीस्ताब्दें–1920–स्य जुलाई मासम् आसीत्। ग्रीष्मावकाशोपरान्ते विद्यालयः एवं महाविद्यालयाश्च पुनरारम्भं अभवन् स्वायुवर्गस्य अन्याभिः बालकै सम वासुदेवोऽपि विद्यालयं जिग्मिषति। सः पित्रा तं काचित् विद्यालये प्रवेशाय अनुरोधमकरोत्। परं श्री रामेश्वर महोदयः तं अस्वीकारमकरोत् तथा च तं वासुदेवं क्षेत्रेषु हल संचालनाय वा पशुधनस्य रक्षायै प्रेषितः। वासुदेवः अशान्तं अभवत्। स तु ज्ञानार्जनेच्छुकासीत् अन्य विषयाणांमतिरिक्त सः संस्कृत अध्ययनाय अत्युत्सुकासीत्। यतः अस्मिन्नेव अस्यामेव भाषायां वेदाः उपनिषद् श्री मद्भागवद्गीतावान्यभारतीय धर्मग्रन्थाः अलिखन्। भाषास्य ज्ञानेन बिना पवित्र ग्रन्थानां मूलरुपाध्ययनः तथा च शास्त्रेषु निहितार्थ भावस्य च ज्ञानम् असम्भवमासीत् अस्ति च। जार्ज टाउन स्थानेस्वमातामहस्य गृहे ग्रंथानांमिमानि सस्वर पाठं सुश्रुतम् बाल्यकालेववासुदेवस्य मनसि अस्याः इच्छायाः जन्ममभूत्। वयम् पूर्वेवअपश्यम् यत्

महाकाव्येषु वर्णितः भारतीय महापुरुषाणां चरित्रेण वासुदेवः आनन्दातिरेको जातः। तस्येयंमदम्येच्छेवेव तं पवित्र शास्त्राणां भूमिः भारते अनयत्। किचित् कालानन्तरे वासुदेवः अश्रुर्पूणनेत्राभ्यां पुनः पितृमहोदयेन अनुनय विनयं चाकरोत् यत्तं वाराणसीं प्रेषयतु यत्र सः संस्कृत वेदयोः अध्ययनं करिष्यति। वाराणस्यां ईदृक संस्थासीत् अस्ति अकिञ्चनानाम् मूल्येन बिनापि भोजनवस्त्रावासतथा च मार्गदर्शनोपलब्धिं अकारयत्। वासुदेवः पित्रामात्रइदृकेववाञ्छतिस्मयत् तं वाराणसींनीत्वापरिक्त्यक्तः। सः पित्रा केनापि प्रकारेण आर्थिक योगदानं न वाञ्छतिस्म्।परं क्रोधाविष्टः पिता वासुदेवस्य पृष्ठोपरि स्वछत्रेण प्रहारं कृतवतः कुर्बन् वा अंतिम चेतावनी दत्तः। अद्यानन्तरेण अध्ययनस्य विषये शब्देकमपि न वदतु मा मावद्। रामेश्वरः स्व पुत्रेण कथंचितअस्यादेवप्रसन्नः नासीत् यतः पुत्रस्य कारेणेनैव तं स्व समृद्ध जीवनं वा दक्षिण अमेरिका स्थित स्व व्यापारं परित्यज्य ग्राम्य जीवनं स्वीकुर्वन्तः। पितुरेतदादेशेन वासुदेवः पूर्णतः अवबोधितः यत् तस्याध्ययनस्येच्छा काश्याः वाराणस्याः पंडितैः नास्ति अपितु क्षेत्रेषु गावः वलीवर्दाः महिषैश्च सेवाभावेन पूर्णा भविष्यति। आगामिवर्षत्रयं वासुदेवः क्षेत्रेषु कार्यकरणाय तथा च पशूनां संरक्षणे अयापयत्। सः गोप्येन क्षेत्रेषु विश्रामसागरः रामायणम् महाभारतम् गीतादयः पुस्तकानि अनयत् यद् सरलतया ब्राहमणानां गृहे लबधः वा अलभत्। वृक्षस्य छायायां प्रतिविंवेवा सः अपठत्ध्यानं च अकरोत्। पशवसमीपेव तृणं चर्वयन्ति च। संयोगवशादेकदा तस्य हस्ते महाराष्ट्रस्य सुप्रतिष्ठित संत स्वामी रामदासस्यजीवन वृत्तं अलभत्। उत्सुक्तया तम् अपठत् तथा चास्यवार्तोपरिध्यानं दत्तः यत् रामदासः विवाहमंण्डपादुत्थाय पलायनम् कृतः। यतः ते सांसारिक बन्धनेषु न अवध्नत् प्रसंडगोंऽयम् वासुदेवं सासांरिक प्रपंञ्चतः पृथक् स्वतंत्र वासाय प्रेरितमकरोत्। रामदासस्य सदृश उच्चकोटि आध्यात्मिकोपलब्धेराकांक्षातस्य ह्रदये जागृता।

रामेश्वरम् स्वपुत्रस्य आत्मिकाभिलाषया किञ्चिदपि सहानुभूतिर्नासीत्। वासुदेवः इदानीं पंञ्चदशवर्षीयः आसीत्। यद्यत् ग्राम्यरीत्यानुसारेण विवाहयोग्या आयुरासीत्। रामेश्वरस्तु अनया आशया सह सहमतं यत् एका युवती सुरूपा कन्यायाः उपस्थितिः परिचर्ययाभिश्च वासुदेवस्य इत्थं रहस्यात्मक पागलपनस्य निवारणं भविष्यति। तस्य परामर्शं विनैव तस्य विवाहः निश्चितम् अकरोत्। ते विवाह भोजनाय आवश्यक वस्तूनि एकत्रीकरणाय संलग्नः यतः विवाहस्तु माहमेकस्यान्तर्गतं सुसंपन्नः भवतिस्म। यदा वासुदेवम् आयोजनस्यास्यज्ञानमभवत् तदातु सः विवाहम् अस्वीकरोत्। सः स्ववार्तायाम् स्थिरः अतिष्ठत् तथा च पितृमहोदस्य क्रोधाग्नेः प्रत्यक्षीकरणायपूर्णतः सन्नद्धः अभवत्। स तु भारतं एतदर्थं न आगतः यत् एका स्त्रीं घरदृहपाटस्य तुल्य तस्य कण्ठे अवध्येत्। बध्येत्वा। परं नियतिस्तु किञ्चदन्यासीत् रामेश्वरः अकस्मादेव दिवंगतः। अत्यल्पायुषु अनाथे गतेसति वासुदेवः गाम्भीर्याघातेन घातितः। तस्य अपार दुःखस्य सीमानासीत्। अत्यन्तरालं तस्य दुःखः एवं तस्य अश्रुपातः अक्षुण्णः स्थिरः। पुत्रोचितः प्रेमः तथा श्रद्धया सहैव सहंदिवंगत पितुः अंतिम संस्कारम् सम्पन्नमकरोत्। स्वपितरम् सः अत्यधिकस्नेह कुर्वतिस्म्। तस्य आकस्मिकः एवं दुःखद निधनोपरि सः दिवसत्रयं निराहारं अश्रुपाते अयापयत् एतद् समयं सः अन्नम् जलस्य च स्पर्शमपि नअकरोत्। स्व मनोभावोपरि नियंत्रणं प्राप्य सः पैतृक संपत्युपरि स्व अधिकारं स्वकीयविमातायाः हिताय अत्यजत् तथैव गृहंपरित्यक्तः। कानिचित् वर्षाणि पश्चात् सः अस्य स्थानस्य द्वितीय बारं यात्राकृतः। इदानीं वासुदेवः स्वभाग्यस्य स्वयमेव निर्माता आसीत्।

संस्कृत अध्ययनस्यअभिलाषा तं विक्षिप्तं विनिर्मितःवा स्व शैशवावस्थया एव तं रहस्यपूर्ण अनुभवः अभूत्। शास्त्राणां अध्ययनस्य माध्यमेन सः एते अनुभवानां मान्यता सत्यतायाश्च परीक्षणे अत्युत्सुकासीत्। वासुदेवः सेवई ग्रामं त्यक्त्वा कालूपुरम् अगच्छत्। एषः तस्य पैतृकसम्बन्धिनां ग्रामम् आसीत्। तत्र सः स्व पितृस्वसा सुदमिया सह अवसत्। यया तं स्नेहं अदद्त। कालूपुरम् समीपेव बरोखरः नामक ग्राममासीत्

यत्र तस्य पितृस्वसायाः परिवारस्य कुलगुरु विद्वान् ब्राहमणः पंडित रघुवीर प्रसादः मिश्रः अनिवसत्। एतेः गायत्री पुरश्चरणपूर्णकर्तृत्व यशोलब्धः।

वासुदेवः संस्कृत शिक्षायाः इच्छया पंडित मिश्रा महोदस्य पार्श्वे उपस्थितः। पंडिंत महोदयः तं किं संस्कृत अध्यापनाय स्वीकरिष्यन्ति। सः अनुरोधं अकरोत् यतः पंडित महोदस्यअन्तेवासी अन्य कतिचित्ः विद्यार्थी अध्ययनरतः आसीत्। परं पंडित मिश्रा एतादृशः कार्य अस्वीकारं अकरोत्। तादृक् यथा रुढिवादी पक्व ब्राह्मणः शूद्रमेकं पवित्रवेद मंत्रान् शिक्षयमाणस्य विषये विचारेवकथंकर्तुं शक्तासीत् तेन विचारेण यद्यपि वासुदेवः जन्मतः ब्राहमणः आसीत्। परं समुद्र पारस्य अपरेपरदेशे जन्मंगृहीतः तथा च समुद्र यात्रां कृत्वा भारतेआगमनस्य कारणेनैव सः शुद्रोऽभूत। शूद्रमेकस्य समक्षे वेदानां पवित्र सूत्रान् प्रकटीकरणं घोरपापः अपवित्र कृत्यश्चासीत्। वासुदेवस्य अनुनयविनयेन च पंडित महोदयः मात्र एतदेव सुविधा तं प्रदत्तः ; यत् सः पंडित महोदयम् तथा च तस्य छात्रेभ्यः एकः सुनिश्चतसुदूरे उपविश्य पाठान् श्रुत्वा शिक्षणे समर्थोभविष्यति। यदि वासुदेवः अनेन प्रकारेण किञ्चिदपि शिक्षितः तर्हितु तं अध्यापनस्य पापंः न प्राप्स्यन्ति लगिष्यतिवा ईदृशः अपमानोऽपि वासुदेवंस्य संस्कृत शिक्षायाः उल्लासं न अमर्दयत्।

षट् मासस्य अवधीषुएव पंडितमिश्र महोदयः एषः सुस्पष्टम् अनुभवःकृतः यत् शूद्रवासुदेवः सुदूरे– संस्थितोऽपि तथाकथित शुद्ध ब्राहमण छात्राणं अपेक्षया पाठान् कदाचित् उत्तमरीत्या अशिक्षत् । वासुदेवः इदानीं षोडषवर्षीयः आसीत्। तस्य पितृश्वसा तथा च अन्य संम्बंधयः तं वासुदेवं विवाहाय बोधं प्रारम्भ कृतः। इन्द्रिरासा नामधेयायाः कन्या सा तस्यवधोः रुपे अचिनोत् चयनितः वा। या मात्र षट् वर्षीयासीत्। कुलगुरुः पंडित मिश्रा महोदयमपि वासुदेवं अवोधयत् यत् विवाहः तस्य ईश्वरत्व अन्वेषणस्य मार्गे बाधकं न भवितव्यम्। चेत तस्य विवाहे कृतेऽपि कन्यायाः वयस्क गते सति दशः द्वादशः वर्षस्य समयं तं मिलिष्यसि यान् सः

आध्यात्मिक अन्वेषणे सन्नद्ध करिष्यसि। यद्यप्यनिच्छयैव सत्यम् परं सः अस्य विवाहस्य हेतवे सन्नद्धः अभूत, तथा च शीघ्रेव विवाह संपन्नोऽभूत्। विवाहस्य सप्ताहमेकं पश्चात् वासुदेवः ईश्वरस्य अन्वेषणाय स्वग्रामं परित्यक्तः।

ॐ श्री सद्गुरुवे नमः

तृतीयः सोपानः

ईश्वरान्वेषणम्

विवाहः सम्पन्नः अभवत् तथा च षोऽशवर्षीयः वासुदेवःगृहम् त्यक्त्वा यात्रोपरि यात्रायां वा अगच्छत्। परं यात्रेयं पत्न्या सह मोदमयः प्रणय यात्रानासीत् तस्य तु स्वस्य सिरजनहारेण सह सम्मिलनस्य दृढ़संकल्पः आसीत्। परं कदा कुत्र च एषस्तुसः नाजानात्वा । जानात्येवनासीत्। तस्य यात्रायाः स्योतेमात्रेकं युगलवस्त्रम् ऊर्णविनिर्मितः शालम् जलपात्रम् कानिचित् पणकानि आसन्। सत्वेकः गुरोः अन्वेषणे निष्क्रान्तः यः तं ईश्वरं प्रतिप्रेषयति। परं कुत्र गन्तव्यः एष निर्णयस्तु अतीव साधरणं नासीत्। तं स्वकीय पितृव्यः पंडित परमसुख जी पाण्डेयस्य स्मरणं आगतः यद्यत् पसानस्य गोंड़ नृपस्य पुरोहितः आसीत्। पसानः मध्यप्रदेशे पेन्ड्रारोड रेलवे स्टेशनतः एकविंशति मीलस्य सूदूरे वन प्रदेशे स्थितः। वासुदेवः अनेन पितृव्येन साकं सम्मिलनस्य निश्चयम अकरोत् यतः तस्य विचारः असीत् यतः संभवतः ते तस्यविषयेस्मिन् किञ्चित साहाय्यं करिष्यन्ति। पसाने गतेसति तं ज्ञातमभवत् यत् तस्य पितृव्यः राज्ञा सह राजकीय यात्रोपरि मातिनं अगच्छत्। तस्य पितृव्यस्य एकः लौहकारःशिष्य तं भोजनं आश्रयं च अददत्।

किञ्चित् दिवसः अतीतः पितृव्यः स्वयात्रयाः न न्यवर्तयत्। वनवासु अहीर नाम धेयः एक ग्वालः पंडित परमसुखेन साहाय्यप्राप्तये पसानं आगच्छत् , पंडित महोदयस्य अनुपस्थित्यां सः अत्यन्त दुःखी अभवत् अयमपि न जानाति सः यत् साहाय्याय कुत्र गच्छामिं गच्छेतवा अयमवगते सतियत् पंडित महोदयस्य भातृपुत्रः वा भातृजेयः तत्र उपस्थितः वनवासु युवापंडितस्य सहानुभूतिं सहायता प्राप्तयेचोददेश्येन स्व व्यथाकथा

तं सुश्रावयस्य निश्चयः कृतः। वनवासू गोसेवकस्य कथा किञ्चित् कथा ईदृशः आसीत् यत् तस्य पार्श्वे अनुमानतः सहस्त्र, दुग्ध प्रदात्री गावः महिष्यः चासीत्। इमेपशवः समयेन गर्भधारणंतुः कुर्वन्तिस्म परं मासत्रयस्यावधिपश्चादेव गर्भपातारभ्भम् भवति। एतत् सर्वंइत्थं तु अतिकालातीते प्रचलितः। वनवासू तस्य पारिवारिक सदस्याश्चात्यन्तं चिन्तितासीत्। पशवः तथा च प्राप्तभवितारः दुग्धेनैव तेषां जीवनायापनस्य साधनः सम्पतिश्चासीत्। तेषां विश्वासः आसीतयत् कश्मिश्चित दुष्टात्मागर्भपातेभ्यः उत्तरदायी अस्ति। पैशचोऽयं तस्मिन् वृक्षे अवसत् यस्याधः कीलेभ्यः पशवः कीलितः अवघ्नन्। पंडित महोदयस्य अनुपस्थितः आसीत्येव। तथा च कतिचिदपि स्थानतः वनवासुं सहायतायाः संभावना नापश्यत्। अतः सः अल्पवयश्कपंडितमहोदयेनैव अनुरोधमकरोत् यत् ते सहैव चलित्वा पैशाचं पलायनस्य यत्नं कुर्वन्तु। वासुदेवः ईदृक्र प्रयोगायप्रसीदत् सन्नद्धोऽभूत् तथा च दशमीलः सुदूरस्थितः वनवासू गोधनस्य ग्रामं प्रस्थितः। वनवासू यादवस्य ग्रामे गतेसति –वासुदेवः एक द्विदिवसं तुतत् स्थानस्य निरीक्षणे अतीतः। ततः सः नव दिवसीयाः पुरश्चरणः दुर्गासप्तसत्याः पाठारम्भः कृतः। चतुर्थ दिवसैः गर्भपातः शान्तःअभवत् दुष्टात्मा च सर्वदैव कृते अन्तर्ध्यानोऽभूत। षोऽषवर्षीयःयुवा महोदयाय एषः एकः अलौकिकः असाधारण कार्यश्चासीत्। ग्रामे सर्वेऽपितं दैवत्व प्राप्त रक्षक रुपे स्नेहः, श्रद्धा चार्पितवान्। अस्य चमत्कारस्य समाचारः तीव्रतया प्रसृतः। यात्रया प्रत्यावर्तिते सति पितृव्यमपि एषा महत्वपूर्णा सूचना प्राप्ता। परं गोसेवकः वनवासू अहीरः साग्रहः प्रार्थनाकृतः यत् तस्य एषः युवा उद्धारकः तेन सह किञ्चित्कालं अवश्यमेव व्यतीतं कुरुत। कारणेनेदं वासुदेवः स्वसाधनाकर्तारन् कतिचित् षटमासं ग्रामेवनवासु अहीरेण सह व्यतीतः कृतः। होलीत्यस्यआगतेपर्वे परमसुख महोदयः वासुदेवं कालूपुरस्य निकटेस्वपूर्वजानां ग्रामे गमनाय अकथयत्। अनिच्छयापि वासुदेवः स्व पितृव्येनसहगतः। पर्वमतीते सति वासुदेवः पसानं न प्रत्यावर्तितः। क्रमेऽस्मिन् तस्य

यात्रा तं महाराष्ट्रस्य–शेगावं रेलवे स्टेशनतः पञ्चत्रिंशति मीलः सुदूरस्थ दानापुरे अनयत् यत्र तस्य अपर पितृव्यः कार्यं अकरोत्। अत्र सः स्व पितृव्य महोदस्यआतिथ्ये कतिचित् सप्ताहद्वयं अवसत्। ततः सः विशालेऽस्मिन् संसारे एकः ईदृशः सद्गुरोः अन्नेषणे पदं वर्धितः यः तस्य आकांक्षापूर्णेकृते समर्थोऽभूत्।

ततोऽधुना वासुदेवस्य पश्चिमभारतस्य पदयात्रारम्भोऽभूत वा पदयात्रारंभितः। सः प्रचलितः श्रान्ते मार्गे प्राप्तारः छायादारवृक्षाणामधः विश्रमितः। सः पूर्णतः स्वतंत्रतां अनुभवन्तिस्म अबाबील पक्षिणः इव स्वतंत्रः। साधना भ्रमणश्चैव तस्य कार्यासीत्। अपक्वान्नं मिलितेसति सः स्वयं तदन्नं पक्त्वा अखादत्। पक्व भोजनम् सः न स्वीकरोत्। सः भोजनाश्रयाय च कदापि भिक्षां न अयाचत्। सः कस्यापि गृहेऽपि न स्थितः। यदा भोजनम् न लब्धः तदा सः उपवासः कृतः। कतिधा सः पल्लवः फलानि च भुक्त्वा सीकरैः निर्झरैः कूपैः वा जलं पीत्वा स्वशरीरस्य प्राणस्य च रक्षा कृतः । मार्गेषु प्राप्तारः वृक्षतलेषु मंदिरेषु च सः विश्रामम् अकरोत्। यद्यपि वर्षा ऋतौसः अन्यस्य आश्रय स्वीकृतः। परं वर्षा पश्चादेव तत स्थानं अत्यजत्। एक स्थानतः अपर स्थाने भ्रमन् सः भुसावलं प्राप्तः। तत्रतः तस्य रेलयात्रारभमभवत् सः भड़ोचं, अगच्छत्। तत्रतः सूरत , आनंद,: गोधरा तथा च गुर्जरः वा राजस्थानस्य अन्य कतिचित् स्थानेषु गतः। सः उचित टिकिटं लब्ध्वा रेल यात्रा कृतः। परं यदा सः यात्रायाः भारवहनं कर्तुं न सक्तः तदा शाशकीय रेल वाहनस्य सौजन्येन यात्रा कृतः कतिचित् टिकिटनिरीक्षिकाः परिचालकश्च तस्य सान्निध्यस्य लाभमलभत्। एतेषु स्थानेषु वासुदेवः भारतस्य तथा कथित धर्म पुरुषान् अन्वेषितः। सः कतिपय साधवः महन्तानां तथा च वैदिक पंण्डितानां संम्पर्के आगतः। सः पवित्र शास्त्रेषु लम्बितः आख्यानम्श्रुतः परं दुर्भाग्यवशात् तं न तु कतिचित् सतगुरुः लब्धः नैवतादृश दिव्यानुभवं अभूत यथा बाल्यावस्थायां अभूवन्। एतेषु कतिपुरुषाः तु ईदृक अनुभवानां विषये श्रुतोऽपि नासीत्। एतैः ईश्वर भक्तैः तं सर्वश्रेष्ठ परामर्शमिदमेवमिलितम् यत् गच्छ तद् पुस्तकस्य

अध्ययनं कुरु ईश्वरस्यास्य पवित्र नामोच्चारणं कुरू एकः दृढ़ निश्चयेन सह वासुदेवः अग्रेवर्धितः। प्रस्थितश्च । काठियावाडः सूरतः वीरम ग्रामं भडौचं भुसावलं शेगॉवस्य च यात्रा कर्तारन् सः महाराष्ट्रस्य वारी नामकम् स्थाने गतः तत्र वारी इत्यस्य– हनुमानः इति नाम्नासुविख्यातः एकम् मारुतिदेवालयं प्राप्तः। मंदिरेणसंलग्नः महंत श्री दासबाबा महोदयस्य एक मठः आसीत्। अस्य मंदिरस्य परिसरे एषः युवा महत्वाकाक्षीं कतिचित् दिवसः ध्यानेषु अतीतः। अत्र तस्य कठोर अनुशासनस्य पूर्ण र्निलिप्तता अडिग निष्ठा तथा सत्यस्य अन्वेषणहेतवे संपूर्ण समर्पणः महतंश्री दासबाबा महोदस्य ध्यानाकर्षितः कृतः। मंहत अयं युवकं स्वशिष्यः तथा चोचितसमये स्वोत्तराधिकारी चयनस्य इच्छुकःआसीत्। एकस्मिन् दिने महंतः वासुदेवं स्वेच्छयावगतमकारयत्। वासुदेवः सत्ता वा उच्च स्थान लब्धस्य लुब्धकः न आसीत्। कारणेनेति रात्रौ यदा महंतः निद्रामग्नासीत् सः पलायनमकरोत्। महंत वासुदेवस्यास्याकस्मिक प्रस्थानेन अतीव दुःखी अभवत्। मंहतः यद्यदस्य युवकस्य योग्यतया परिचितासीत्। स्व वसीयतनामेति पत्रे व्यवस्थेयं कृतः यत् तस्योपरान्ते वासुदेवएवतस्योत्तराधिकारी भविष्यति। तत् पश्चात् श्री दासबाबा नाधिकदिवसंजीवितः परं वसीयतपत्रेदं सेठजोखीरामः सेठ छोगलाल : तथा च सौन्दालायाः श्रेष्ठिश्रीरामस्याधिकारे स्थितः।

श्री दासबाबा इतिनामधेयस्य संतस्य उत्तराधिकारी विनिर्मितेन स्व रक्षणाय वासुदेवस्य पलायन कृतेसति अनन्तरे सुरजी अंजन ग्रामम् अगच्छत–प्राप्तः वा तस्य पार्श्वे न तु धनमासीत् न तु भोजनञ्च। सः कतिचित् दिवसान् वृक्षाणां पत्रेषु निर्वाहः कृतः। सः कार्यं अन्वेषितवान् तथा च लालजी पटेलस्य कर्पासेन बीजान् निष्कासनस्य बर्हिकरणस्य संयंत्रे कार्यं प्राप्तः। पारिश्रमिकासीत् पञ्चरुप्यकाणि प्रतिमासः कालद्वयस्य भोजनस्च। न्यूयार्कस्य गोल्ड टिकट संयन्त्री या विघ्या एडीसनस्य प्रतिभां अपरिचयत् तथैवप्रबन्धक मंडल्याः दृष्ट्या युवा वासुदेवस्य प्रतिभाऽपिनाच्छुपत्। दिनमेकं संयत्रस्य तैल यंत्रस्य कार्य प्रचलनः अविरमत् वा अरुधत्। संचालने सति

तद्किञ्चित्क्षणं चलति पुनश्च विरमत्। तस्मिन् दिने संयन्त्रस्य अभियात्रिंकः श्रीराम अष्टीकरः अवकाशोपर्यासीत्। तैल प्रदातारः सहायकः पूर्णतः प्रयत्नमकरोत्। परं दोषमन्वेषणे असमर्थोऽभूत्। परिस्थित्येतां दृष्टवा युवायोगी महोदयः गति नियंत्रक पेटिकां अनावृत्य निरीक्षणस्य विमर्श प्रदतः अयमेवेकः प्रभागासीत् यस्य निरीक्षणं न कृतः। सहायक यांत्रिक तमनावृतः दोषस्तु स्पष्टदृष्टीगोचरोऽभूत्। अत्यल्पसमयेव दोष निवारणः जातः। सहायक कर्मचारिणस्तु अस्याः घटनायाः निवारणं आष्टीकरं अवकाशात्। पुनरागतेसति न्यवेदयत् प्रसन्नः अभियान्त्रिक आष्टीकरः प्रबंघक श्यामराव तालोकरस्य ध्यानं विषयेऽस्मिन् आकर्षितः। ये महानुभावाः तत्कालेव पञ्चरुप्यकाणि मासिकस्य वैतनिक वृद्धिं स्वीकृतः कृतः। आष्टीकरः एतं बालकं शिक्षितं कृत्वा अभियात्रिंक पदे प्रतिष्ठापनाय इच्छुकासीत्। परं वासुदेवं एतद् विमर्शः नारुचत्। यतः धनः वा सुखमय जीवनः तस्यध्येंयो एवनासीत्। चेत् सः सासांरिक सुखमायायेव कांञ्छति तहिर्तु तस्य पैतृक स्थाने जार्ज टाउन स्थले तस्य पार्श्वे पर्याप्त धनमासीत् यंस्य परित्यागः सः स्वेच्छया कृतः।

यदा कार्पासतः बीजानि निष्कासनस्य कालः अतीतेवासीत् तदा एकः रामलीलामंडलीसुरजी अंजन ग्रामें प्राप्तः। इयमेकापर्यटन कर्त्री नाट्य मंडल्यासीत् याघार्मिक नाट्यानां मञ्चनम् कुर्वनितेस्म अकरोत् वा विशेषस्तु रामलीलायाः। वासुदेवः अस्याम् मण्डल्यां संम्मिलितः तथा चानेनप्रकारेण स्वकीय रंगमञ्चस्य जीवनं समाख्धवान् यः कतिचित् वर्षाणि प्रचलितः। अस्याम् मंण्डल्यांमपि स्वस्य भोजन निर्माणस्यस्वकीय प्रकृतिं संरक्षितः कृतः। वा प्रकृतिस्थः कृतः। तस्याध्यात्मिकाभ्यासम् कदापि नारुधत् अपितु सः शरीर निर्माणाय व्यायाममपि आरब्धवान्। यतः उत्तम शारीरिक संगठनः रंगमञ्चस्य अभिनेता कृते सफलतायाः कुञ्जिजकासीत्। विभिन्न स्थानेषु नाटकानां। प्रदर्शनोपरान्ते रामलीला मंण्डली नागपुरमागत्य भंडारापथेस्थितः एक प्रचीन सदने सामाग्री स्थितः कृतः। अस्य भवनस्य आहाते लघुत्रयः मंदिराः

आसन्। मंदिरद्वयंतु इत्थंलध्वासीत् यत् कस्मिश्चित् व्यक्तिः तस्मिन् प्रवेशायनसक्तः। तृतीयस्तु किञ्चिंद् वृहदासीत् अन्तः व्यक्तिमेकं उपवेश्यते। उपविशतिस्म। तस्मिन् एकोच्चचतुरस्तः आसीत् यस्योपरिव्यक्तिमेकं उपविशतः विश्रमितः वाअस्वपत् एषः मंदिरः भगवान शिवं समर्पितः तथा च शंकर मंदिर इति नाम्ना सुप्रसिद्धः। अत्र रामलीला अभिनेता भ्रमणशीलः वासुदेवः एकः महत्वपूर्ण आध्यात्मिक दिव्यदर्शनम् कृतः। स्वपर्यटन जीवनस्य प्रारम्भोपरान्ते एषः तस्य प्रथमनुभवः आसीत्। एतं तस्योपरिकतमत गुह्य गंभीरः प्रभावः अभवत्। एषस्तु वर्णनातीतः। एतद् 1930 एकोनविशंति शतोत्तर त्रिशति वर्षम् आसीत्। सः पूज्य वासुदेवः द्वाविंशति वर्षीयासीत् ग्रीष्मऋतुः चरमोपर्य्यासीत् वर्षा कदापि पदार्पणे सक्तः। मंडली इतवारा क्षेत्रे रामलीलायाः नाट्य प्रर्दशनं कारितः। वा प्रदर्शितः। तस्याः रात्र्याः नाट्य प्रर्दशनं अतीतः। मंडल्याः सर्वे सदस्याः शयितः वा सुप्तासम्। कचित् मकानस्य वरॉडे केचिदन्तः च शयनः कृतवन्तः। वासुदेवः स्वविश्राम ध्यानाय च शिवमंदिरस्यचतुररत्रस्यचयनमकरोत्। अर्धरात्रावातीते अनुमानतः वादनमेकस्य समयः आसीत्। सः स्वध्यानारम्भम् कुर्वतिस्मयत्मुख्यमार्गतः परिसरं प्रति प्रस्फुटितारेण द्वारेण व्यक्तिमेकस्यागमनः तस्य ध्यानाकृष्टमकारयत्। सः किञ्चितसप्तवालिश्तोन्नतमतिमनोहरं तेजस्वी प्रकाशस्य किरणं प्रसृतयती। दिव्याकृतिं द्वारेण प्रविश्यमंदिरं प्रति आगच्छन् अपश्यत्। रम्यकुञ्चितकेशतरोऽयम् पुरुषः त्रिशत् पञ्च त्रिशतः वर्षीयः भविष्यति स्वपितामहस्य शयनकक्षे आसन्दिकायामुपविष्टः यस्य दिव्य पुरुषस्य दर्शनः वासुदेवः स्वबाल्यावस्थायां अकरोत्। एषस्तु तदेवदिव्यपुरुषःआसीत्। उत्तेजितं भूत्वा सः वरांडंप्रति अधावत् तथा च हारमोनियम शिक्षकः मुगींलालमुपविष्ट। प्रबुद्धयत्। तं शीघ्रेव शिव मंदिरं प्रति दृष्टिपाताय अकथयत् यतः सोऽपि दिव्य पुरुषस्य दर्शनं कुर्वन्तु मुंगीलालः शीघ्रतया उतिष्ठन् स्थिरः अभवत् तथा च वहिः दृष्टिपातस्य प्रयत्न कर्त्तारन तत् समये तस्य सिरः

भित्तोगत्वा ताडितः। तथा च सः दृष्टिहीनं भूत्वा अपतत्। यदा मुंगीलालः एषः अनुभवः कृतः यत् सः स्वदृष्टिंक्षीणः कृतवान। तदा तु शिकवाकर्तारन् अकथयत् त्वंमाम कथं प्रबुध्यसे अहमेकं भाग्यहीन पापात्मास्मि दिव्य पुरुषस्य दर्शनः मामयथा पापिनां कृते नास्ति। मुंगीलालः स्वभाग्यम् आकोशयत् परं प्रभात्येव तस्य दृष्टिः प्रत्यावर्तितः। रामलीला मंडली नागपुरे अनुमानतः षट्मास पर्यन्तं स्थित्वा अग्रिम यात्रायां प्रस्थितः मंडल्यिम् विभिन्न स्थानेषु यथा पांडुरानी, मुलताई, बेतूल, काटोल, वर्धा, आर्वी, पुल्गॉव, मोर्शी इत्यस्य यात्रां कृत्वा रामलीलायाः प्रदर्शनमकरोत्। तथा चान्ते वरुडं गतः। वरुडे वासुदेवं स्मरणीयद्वयानुभवंमभूत्। एकः पूर्णाध्यात्मिकः अपरश्च साधारण भौतिकः अत्रेकः संक्षिप्त विवरणम् प्रस्तुतः।

सन् 1931 वर्षम् आसीत्। वासुदेवः कतिचत स्वमित्रैः सहप्रच्छन्न स्थाने शयितः प्रभातबेलासीत् सूर्योदयोद्भूतस्यकालआसीत्। मुंगीलालः प्रबुद्धय् गृहस्यान्तंप्रचलितः। वासुदेवोऽपि प्रबुद्धितः परं सुप्तेव पूर्वी आकाशं अवलोकितः। सः विस्मयेनापश्यत्। अनुमानतः चत्वारिंशत् वालिश्त व्यासस्य वृहदिवचन्द्रः पूर्वीक्षितिजेनोद्भूतः। इत्थमाश्चर्यम्कर्तारन् यत् चन्द्रः कालेस्मिन् पूर्वे कथं दृष्टि गोचरः भवति। यथैव सः पश्चिम दिशायां अपश्यत् तस्याश्चर्यस्य सीमानासीत् यदा सः तथैववृहद्तेजस्वी चन्द्रम्पश्चिमेप्यपश्यत् पुनः सः पूर्वे दृष्टिं न्यवर्तयितः पूर्वस्य चन्द्रः स्वसमस्तोज्वलतामहिमया च सह तं प्रति गमनारम्भः कृतः। चन्द्रस्तु तेन अनुमानतः शत वालिश्तस्य दूरतः एव स्थिरोऽभूतः। चन्द्रे एक दीर्घ वृत्ताकारं रिक्तस्थानं चोत्पन्नंजातः। शीतलाः सुखदाः किरणाः परितः प्रसृतवान्। अन्तः स्वर्ण सिंहासनोपरि भगवान् श्री रामः तथा चास्यवामभागे श्री सीतामां विराजमानासीत् भगवान श्री रामस्य दक्षभागे गुरु वशिष्ठासीत्। भगवान्ः भक्ताय आर्शिवादं अयच्छत्। चन्द्रे पुनः गतिरभवत्। शिरसिभूत्वा सः उतरदिशि गत्वा अदृश्याभवत्।

ईश्वरः स्व भक्तं कदापि निराशंनाकरोत्। आवश्यकतायाः घटिकासु भक्तान् अनपेक्षितः अबोध्य मार्गैः साहाय्यं प्राप्तं भवति।भक्त वासुदेवमपि देवदत्तस्य सहायतायाः अनेकानुभवाः अभवत् वरुडेऽपि तं इत्थमेव साहाय्यं प्राप्तः यदा सः घोरावश्यकतायाः अनुभवं अकरोत्। यदा सः वरुडे एवासीत् तदा तं आवं (पेचिसं) वा अतिसारः प्रचलितः। तं कतिचित दीर्घशंकयाशंकितः। शीघ्रेव आन्त्रशूलमपि उत्पन्नोऽभूत् दिवसद्वयं अनेन प्रकारेणातीतः। तस्य दशा उत्तरोतरं प्रतिकूलः अभवत्। तस्य शरीरे उत्थितस्यापि शक्तिर्नासीत्। किञ्चिदल्पशक्ति संचयं कृत्वा गच्छन् सः एकम् जीर्णशीर्ण गृहं प्रति गमनाय सफलः अभवत्। तस्याहातस्य दीवारः कतिचिद स्थानेषु क्षत विक्षतासीत्। गृहेदम् नद्याः तटे ग्राम्यवासतः बहिरासीत्। अत्र सः धरण्यां पतितः सः इत्थं अशक्तः अभवत् यत् न तु उत्थातुं स्थितेरेसक्तासीत् नैव किञ्चित कम्पने शक्तासीत्। तस्य दशा प्रतिकूल्येवाधिगच्छति। नलेन प्रवहमान् जलः इव विसूचिका अबाधगत्या अभवत् एव। एकः रात्रिदिवञ्च अनेनैव प्रकारेण व्यतीतः। तत्र कोऽपितस्य सहायतायै नासीत्। तस्य रामलीला मंडल्याः सहकर्मी अनया सर्वथानभिज्ञासीत् यत् सः कुत्र गतः। द्वितीय दिवसे अस्यां अहाते विशति चतुर्विशति वा वर्षीयाः एकः युवकः पदार्पयत्। सः पशुसेवकः इवाभातिस्म। सः एकामहत् उष्णीषं अधारयत् तथा च दक्षहस्ते लम्बितः लगुडः गृहीतः। वासुदेवं प्रत्युपागत्यसो–अकथयत्। महाराजः भवान् ईदृशः अत्रकथंस्थिरः कृपया उत्तिष्ठतु भवान्। वासुदेवः कठिनाभिः तं युवकं स्वपरिस्थित्यावगतमकारयत्। तदा चारवाहकः स्व उष्णीषंउन्मुच्य तस्य भागमेकम् खम्भेनाअवध्नात्। वासुदेवः साहाय्यमददत् पदयोः स्थिरं अकरोत् उष्णीषं तस्य उदरं परितः लिप्त्वा स द्वितीय भागं गृहीत्वा किञ्चित् दूरेव तस्थौः वासुदेवेन दयामयीगिरां अवदत्। कृपया स्वस्वीयं अस्योष्णीषस्य साहाय्येन भागेकतः द्वितीयभागं अनेन प्रकारेण गोलाकारं परावर्तयतु येनवस्त्रेदम् उदरस्य परितः कुण्डलीव अलिप्तयत्। अनया तव उदरस्य तंत्रिकाः अन्तर्यवपरिश्रमिष्यन्ति तथा च

त्वम् स्वस्थमभविष्यसि। विसूचिका ऑवं इति नाम्ना रोगस्योपचारस्यावश्यमेव अयमेकः वैचित्र्योपायः आसीत्। यतः वासुदेवः अशक्तः आशारहितश्चासीत् सोऽपि तथैव करणस्य निर्णयः गृहीतः। किञ्चिदेव आवृत्येव तादृशः कृतेसति शूलः अमिटत्। सः मुक्तेः स्वांसम् गृहीतः शीध्रेव सः पर्याप्त शक्तिमलभत्। स्वउष्णीषं एकत्रीकृत्य चारवाहकः अकथयत्। अधुनात्वम् पूर्णतः स्वस्थः असि अस्तु स्वस्थानें प्रत्यावर्तितुं शक्तः। ससुरक्षा दीवारतः वहिः अगच्छत् पुनश्च न अपश्यत् च। तावत् अद्यावधि वासुदेवं कदापि अतिसार' पेचिश इतिरोगेण पीडितोनाभवत्।

रामलीला मंडली वरुडं परित्यज्य अमरावती , यवतमाल, पुसदस्य च यात्रा कृत्वा मंडली अकोलां प्राप्तः वा गतः। अत्र रामलीला मंडली खोलेश्वर क्षेत्रस्य राममंदिरस्य समीपे रामलीलायाः प्रदर्शनः अकरोत् मंडल्याः अत्र निवास समये वासुदेवः प्रख्यात आयुर्वेदाचार्यः डा0 नन्दलाल भारती महोदयस्य सन्निधौ आगतः। एषः सांयोगिक मेलनः अग्रेचलित्वा घनिष्ठः एवं आत्मीय साहचर्येषु परिवर्तितः यः कतिचित् वर्ष पर्यन्तं प्रचलितः। स्नेहिलोऽयं प्रथम सम्पर्कः पाठकेभ्यः रोचकं भविष्यति।

एकदा डा0 भारती महोदयः संगीत समारोहस्यायोजनं अकरोत्। समारोह स्थलः मंदिरस्य प्रथम मंजिलोपरि आसीत्। डा0 भारती महोदयस्य सप्ताष्टान्तरग्ड़मित्राः अस्य संगीत कार्यक्रमस्य श्रोतारः आसन्।

वासुदेवः अस्मिन् समये पूर्णतः स्वतंत्रासीत् सः संगीतस्यात्यधिक प्रेमी, स्नेही, आसीत् सोऽपि संगीतस्यानन्दं गृहीतुं उत्सुकः सः सोपानेषु उपविशत्। डा0 भारती कार्यक्रमस्य मध्ये चाय वितरणस्य व्यवस्थातु कृतः परं ताम्बूल धूमपानस्य कोऽपि व्यवस्थानासीत्। डा0 भारती महोदयस्य एकः निकटतम मित्रः नानूराम मिस्त्री ताम्बूलम् धूमपानश्च न प्रदत्तेसति। डा0 भारती महोदयस्य हास्यं आरभतः यथैव डा0 भारती ताम्बूलं सिगरेटञ्चआनयितुं कश्मिंश्चित् यक्तेः अन्वेषणाय बहिरागतः तदा सः एकम अज्ञात युवकं सोपानेषु उपविष्टः प्राप्तः। डा0 महोदयः तेन वासुदेवेन ताम्बूल

सिगरेटञ्चानयितुं विषयेऽपृच्छत्। वासुदेवः शीध्रेव समस्त वस्तवः आनीतः। मध्येऽस्मिन् किञ्चिदन्यपि अतिथयः आगतः। वासुदेवेनानीतं ताम्बूलानि सिगरेटाश्च आवश्यकतानूरुपं अल्पत्वंगतः। नानूराम मिस्त्री डा0 भारती महोदयस्य कृपणतायाः गुणगानांरभितः। डा0 भारती मूकेव स्थितः।

डा0 भारती ताम्बूलं सिगरेटस्य च संख्या विषये किञ्चिदपि स्पष्ट र्निदेशंनाददत्। अतः वासुदेवः कक्षोपस्थित सज्जनानां संख्यानुसारेव वस्तूनि आनीतः। डा0 भारतीं अस्यानपेक्षित चिन्तायांमपश्यदेव वासुदेवस्य नेत्राभ्यां अश्रुबिन्दुवः पतितः तथा च सः प्रच्छन्नरुपेण रुदितः। डा0 भारती महोदयः समीपे आगत्य तस्य पीठोपरि स्नेह हस्तं चालयित्वा रुदन् कारणं अपृच्छत्। डा0 भारती तस्य स्पष्टीकरणेनात्यन्तः प्रभावितः अभवत्। तथा च कार्यक्रमस्यान्तिमेतं स्व सहैव तस्थौ। कार्यक्रमस्य समाप्तौ डा0 भारती अपरिचित युवकस्य व्यक्तिगत जीवनस्य च विस्तृत विवरणं ज्ञातुमियेष। परिचीयते वा अस्मत्। प्रतिप्रश्नकर्तारन् वासुदेवः अपृच्छत्। भवान् मम् कथां केनप्रकारेण ज्ञास्यतु। सत्यमसत्यंवा अनया स्पष्टवादितया डा0 भारतीस्तभ्भितोऽभूत्ः। सः सत्यज्ञानस्येच्छुकः आसीत्। वासुदेवः तं ब्रिटिश गुआइनायां स्वजन्मतः अकोलायां दिवसेऽस्मिन् पर्यन्तस्य समस्त वृत्तान्तम् अकथयत्। सः डा0 भारती महोदयम् स्वाध्यात्मिक आकांक्षाः स्वानुभवाः तथा च दैवत्वस्य साक्षात्कार कारयितुं प्रबुद्ध गुरोः अन्वेषणस्य विषये अवोचत्। कथेयं डा0 भारती महोदयस्य अन्तर्मनमस्पृशति। रामलीला मंडली यावत् तत्र स्थितः डा0 भारती महोदयःवासुदेवश्च नियमित रूपेण संमिलितः डा0 भारतीमहोदयः स्वेनसहैव तेन भोजनाय आग्रहमकरोत्। अनेन प्रकारेणद्वयोः मध्ये घनिष्टता वर्धितः। एकस्मिन् दिने डा0 भारती वासुदेवं स्व संस्कृत धार्मिक ग्रन्थानाञ्चाध्ययनम् अवाधगत्याकरणस्य विमर्शोदत्तः। सत्वयमपि प्रस्तावितः यत् वासुदेवः अध्ययनाय वाराणसीं वान्य कश्मिश्चिदुपयुक्त स्थानं गच्छति तर्हि अध्ययन कालिक व्ययराशिं सः स्वयंमेव वहनं करिष्यिन्ति। परं वासुदेवः प्रस्तावोऽयं

अस्वीकृतवान् यतः सः ज्ञान विवेकयोः उद्गमस्यान्वेषणे आसीत्। यः सर्वोपर्यास्ति पुस्तकीयज्ञानस्तुतद्धेतोः स्वाकर्षणं अलुप्तयत्। डा0 भारती तमधीतपुस्तकानां साधनायाश्चाभ्यासस्य विषयेऽपृच्छत्। डा0 भारती तं प्रणव (बीजमंत्रः ओम्) इत्यस्य ध्यानाय अकथयत् वासुदेवः एवं स्वीकरोत्। अत्रैतदुक्तमुचितं भविष्यति यत् वासुदेवं वास्तविकार्थेषु गुरोः प्राप्तिः नत्वद्याप्याप्यभूतअतःपरमपिनाभूत। सः कदापि कतिचित् विशेष विद्याालये प्रारम्भिक शिक्षा न लब्धवान्। डा0 भारती तं प्रणवस्याभ्यासाय मतः प्रदतः अतः सः तस्मै गुरोः सम्मान अददत् तथा डा0 भारती महोदयं स्वामीजी इतिकथयित्वा संम्बोधनारम्भः कृतः। स्वामीजी महोदयस्य इच्छासीत् यत सः तेन सहैव निवासं करोतु परं वासुदेवः अयमप्यस्वीकरोत् यतः तस्य देवत्वस्य अन्वेषणः अपूर्णेवासीत्। स्वामी महोदयः तेनाकथयत् यत मम् द्वारःतुभ्यम् सदैव अनावृतः। यदा त्वम् स्व खाना बदोश जीवनेन श्रमितः तदा तवात्रस्वागतम् भविष्यति। रामलीला मंडली अकोलां परित्यज्य् वाशिमे प्रदर्शनञ्चाकारयत्। तथा च हिंगोलीं प्रस्थितः। ततः परम् सानादेड. पुनश्च हुमनाबादं गतः। हुमनाबादे वासुदेवं एकः असाधारणाध्यात्मिकानुभवमभवत्। स्थानेऽस्मिन् सः शिव मंदिरस्य चयनः स्वनिवासाय कृतः। स्वागमनस्य दिवसेवसः मध्याह्ने मंदिरस्य परिसरे एकः चतुर्वुदोपरि अर्धनिमीलित लोचनः विश्रमितः किञ्चिद् स्वपितः। सः रहस्यात्मकमेकं फुस्फुसाहटः (आप्त शब्दं) श्रुतः यदजमेरस्य ख्वाजा साहिब मोइनुद्दीनचिश्ती तद् दर्शनाय इच्छुकः। अवर्णनीय लावण्यतर देवदूतद्वौतस्य सम्मुखे उपस्थितोऽभूत्। तौ हस्ते चालनपर्यक्ङं गृहीतः, यदत्यन्तप्रभामंडिंत पुष्पैः सज्जितः। मधुर सुगन्ध्या वातावरण सुवासितोऽभूत। त्वां अजमेरं आनेतुं (आनाय्यवा) आबाम् प्रेषितः। तौ तम् अवगतमकारयत्। वासुदेवः मूकेवासीत् देवदूतौ स्वहस्तान्अग्रतमकरोत् तथा च सः स्वयं वियद् चालितपर्यक्डे. उपविष्ट प्राप्तः। वियदि आकाशे चलनपर्यक्ड.उडउीयन् तदातं परमोल्लास स्वर्ग सुखस्य चानुभूतिं प्राप्तः। तौ तं एक सुदूर स्थले नीतः तथा

चाधः पृथिव्याम् अवतरितः। तौ देवदूतौ तेनाकथयत् यत् तौ मात्रेतद्स्थानमेव तस्य प्रेषणस्य उत्तरदायी स्तः। यतः अत्र तस्य कर्तव्यस्य समाप्तिभवति। अवशेष मार्गे तस्य मार्गदर्शनं अन्यदूताः करिष्यन्ति। ईदृगाश्वासनंदत्वा तौ अद्दृश्यो अभवताम्। अकस्मादेव तत्र चत्वारो दूताः अप्रकटयन्। येः अत्यन्तेव तेजस्वी मोहकाश्चासन्। ते पालनंउत्थाप्य उड्डीयनारम्भः कृतवान्। स्वल्पसमयानन्तरं तेएकस्मिन् रेतीले क्षेत्रे अवतरितः कृपया एतदस्थानतः किञ्चिद् रेतं सिकता इतस्ततः करोतुभवान्। इत्थंकथयित्वा तेऽपि अगच्छन्। चरणाभ्यां रेतमृत्तिकामपहृतेसति एकःद्वारः सुप्रकाशित सोपान्ं प्रति प्रस्फुटितः तत्रेकः वृद्धफकीरः (इमाम्) प्रतीक्षायाम् प्रतीक्षितः। स्थिरः वा यद्यत् तं ख्वाजा साहिबं प्रति आनेतुंवाः नियुक्तः कृतः। अवतीर्य सोपानाः ते एकस्मिन् वृहदकक्षे प्राप्तः यत्रेकः वृहद् एकः लधु समाधिश्चासीत्। वासुदेवः कक्षम् परितः भ्रमणारम्भः कृतः कक्षस्येकभागे सः जलपूर्ण कुण्डं अपश्यत्। ततः सः महत् स्वर्ण खण्डं अधश्चोर्ध्वम् आगतः अपश्यत् बाह्य स्थाने स्वोपरि तत् स्वर्णखण्डः उत्थाप्य एक कोणस्य दीवारोपर्यागतः। सः स्वरमेकं वदन् श्रुतः एतं गृहाण अयम् तव हेतवे अस्ति वासुदेवः अकथयत् अहं भिक्षुकोनाऽस्मि। अत्राऽहंस्वर्णायनागतः। अहं एतंनेच्छामि् एषः तान् व्यक्तीन् यच्छतुयान् अस्यात्यधिकावश्यकतास्ति। सः अग्रेप्रस्थितः सः द्वितीय कोणे ज्वलदग्निं अपश्यत्। अग्निना पुनः एकम् स्वर्णखण्डं उत्थापितः तथा च पुनरेक स्वरमकथयत् एनं गृहाण एषः तव हेतवे अस्ति। सः पुनः अस्वीकरोत्। यथा सः तृतीय कोणं प्रतिगच्छति सः स्वरमेकं अश्रृणोत् याचनांकुरू यदिच्छास्ति्। तुभ्यम् तद् प्राप्तिर्भविष्यति। सचोत्तरं दत्तः वा सः अकथयत् नाऽहं भिक्षुकः अहंस्वयमेवात्रनागतः। अहं किञ्चिदपि नेच्छामि सः अग्रेप्रस्थितः चतुर्थ कोणतः पुनः तदेव स्वरोत्थितः याचक यद त्वामेच्छातद् त्वां प्राप्येः वा प्राप्स्यतु सः पुनरपिकिञ्चिद् अस्वीकारं कुर्वन् भ्रमित्वा समीपस्थितः फकीरंम पश्यत् फकीरः अपृच्छत्। किंत्वां ख्वाजा देवस्य दर्शनं अभूत ? प्रत्युत्तरे वासुदेवः अकथयत् अत्र समाधिभिः च ऋते अतिरिक्तं अन्य किंञ्चिदपि द्रष्टुं

नास्ति। तौ पुनरावर्त्य सोपानारोहणं कुरुतः फकीरः अपृच्छत् त्वं स्वर्णंकथंन गृहीतः। यदि त्वां नाभिलषतिस्मवा यदित्वां नाभिलषेत् तर्हित त्वं माम् यच्छतिस्म। वासुदेवः भणितः मया यदुक्तं तत् त्वं श्रुतः। यदि तवेच्छास्तितर्हि स्वयमेव गत्वा याचतु। पथं दर्शयन् फकीरः अवदत् आगच्छतु ख्वाजा साहिबः तव प्रतीक्षायामस्ति। सः तव निः स्वार्थ भावनया अत्यन्त प्रसन्नः अस्ति। उपरिगत्वा वासुदेवः सुरम्य सेवन्ती पुष्पैरावृत्तन् संगमरमरस्य चतुरस्त्र चतुर्वुदमपश्यत् अस्यां चतुरस्रे एकः पुरुषः वस्त्रावृत्य विश्रमितः तदाकृतिः लम्बितः तेजस्वी च प्रतीतिर्भवतिस्म अहमेकं बृद्धपुरुषं द्रष्टुं नेच्छामि। दिष्टया—ख्वाजा साहिबः माम् दर्शनं दातुं इच्छुकः तत्तु एकः शिशु रुपे यच्छतु। तत्क्षणेव वस्त्रे कम्पनः दृष्टः तथा च मंत्र मुग्ध कर्तारन् अतीव रम्य ग्रीवा पर्यन्तं कुञ्चित केश संयुक्त शिशु वस्त्रतः वहिरागतः। शिशु चतुरस्त्रात् अधः कूर्दितः वासुदेवं अनुसरणस्य संकेतं दत्वा पुष्पवाटिकां प्रति प्रस्थितः। सः किञ्चित् गुलदावल्याः पुष्पावचयं कृत्वा वासुदेवाय दातारन् अकथयत् इमानि गृहाण। तथा चादृश्यअभूतः। वासुदेवं पुनः संरक्षित रुपेण हुमनाबादं प्रेषयत्।

अस्य दृश्य दर्शनस्य किञ्चित्काल पश्चादेव एकः पठान युवकः अस्य समीपे आगतः। स्वपरिचयं शेरखान इतिनामधेयस्यरुपे ददन् तेनोक्तम् यत् तस्य पितामह तत् वासुदेवेन संमिलनेच्छुकः वासुदेवं कानिचिदपि संपर्के रुचिर्नासीत्। शेरखानः अकथयत् यत् सः तं बलप्रयोग्रेनापि स्व पितामहस्यः पार्श्वे नीयमानेः समर्थः परं वासुदेवः अस्य बलस्य प्रतीकाराय सन्नद्धासीत सः कश्मिंश्चिदपि संकेतेषुनागन्तारः। पठान युवकः द्वैविध्यं गतः। सः अनुभवः कृतः यत् तस्य प्रस्तावस्य विधिः दोष पूर्णासीत्। सः नम्रतापूर्वकं सुस्पष्टं अकरोत्। वास्तविक स्थितिमिंमम् यत् मम् पितामहः एकः धर्मनिष्ठः व्यक्तिरस्ति। तेइदानीं नेपथ्ये अस्ति। कतिचिद्दिवसैः ते स्वयं चयितः एकान्त वासे स्व समयं प्रार्थना ध्यानेषु च यापयन्ति। केनाप्यत्र परिवार जनानपि कक्षेआगमनस्य अनुमतिर्नास्तिं वयम् तस्य भोजनं कक्षस्य बर्हिरेव स्थापयामः। सः स्वयंमेव भवदीय

पार्श्वागमने असमर्थः अस्ति। अतः विनयोयत् भवान् मयासह पितामहेन मेलनाय गमनस्य कृपाकुरुं। वासुदेवः शेरखानेन सह वृद्ध पुरुषस्य गृहस्योपरि मंज्लिल्यां स्थितः कक्षे गतः। यथैव युवायोगी प्राविशत् तथैव वृद्ध पठानः धावित्वा फलीभूतोऽभूत्। ख्वाजा साहिबः स्वयं त्वां आमंत्र्य स्व दयादृष्टिः त्यय्युपरिकृतः अवश्यमेव त्वं देवदूतोऽसि। अहं त्वां मेलनेन हर्षानन्देन चाभिभूतोऽस्मि। वृद्धपुरुषस्य नेत्रे अश्रुरासीत्। बृद्धः पठानः स्व पुत्रं अन्य पारिवारिक जनान् च कक्षे आहूय वासुदेवस्य परिचयं ददन् स्पष्टं अकरोत यत् किमभवत् तथा च सः स्व एकान्त वासं किं समापितवान् कि समाप्यते। ते अत्यन्ताश्चर्य चकितासीत् सः तस्य समुचितादरमकरोत्। बृद्धपुरुषः दुग्ध तमालिंगनबद्धमकरोत् तस्य हस्तस्य चुम्बनं चाकरोत्। कण्ठावरुद्धभावावेशे सोऽवदत् भवदीय कारेणेनैव माम–ख्वाजा साहिबस्य साक्षात् दर्शनस्य सौभाग्यः प्राप्तः। मम– सम्पूर्ण जीवनस्य पूजा तपस्या च फलञ्चायाचत् युवा योगीम् चार्पयत्। अस्यअनन्तरे वृद्ध पठानः वासुदेवश्चाभिन्नः मित्रोऽभूत्। स्व हुमनाबादस्य निवासे सति वासुदेवः बहुधा अनेन परिवारेण मिलितः।

श्री सद्गुरु जीवन वृत संहितायां तृतीय सोपानः सद्गुरवे समर्पयामि।

ऊँ श्री सद्गुरुवे नमः

चतुर्थ सोपानः

नारायण कवचः

रामलीला मंड़ली हुमनाबादं परित्यक्तश्चान्यकतिचिद् नगरेषु यथा नादेड, देगलूर आदि स्थानस्य यात्रां कृत्वा प्रदर्शनं कर्त्तारन् मदनूरं गतः। वर्षा ऋत्वारम्भेसति मंड़लीअत्रैव स्ववासः कृतः। मध्येऽस्मिन्नेकेदृशः संघटना घटितः यद्यत् , वासुदेवस्यचरित्रोपरिप्रकाशः प्रकाशितः।मदनूरे रामलीला मंड़लीः एकस्मिन् बाडे स्वनिवासः विर्निमितः। वर्षा कारणेन रामलीलायाः प्रर्दर्शनम् सम्भवं न आसीत्। नगरस्य धनाढय श्रेष्टि जातेः कोमटी आसीत्। तस्यानुरोधेन श्री मद्भागवतस्य सप्त दिवसीय पाठायोजितः। कार्यक्रमस्य स्थलः तस्य भवनस्य एककक्षम् आसीत् यत्र रामलीला मंड़ली स्थितः। अस्य कक्षस्य पृष्ठे कार्यक्रमस्य मध्ये वासुदेवः सर्वाभ्यः पृथक एकाकी स्वसाधनायां निरतः। सः समारोहे संम्मिलितं नाभवत्, अपितु प्रसादोऽपि सः न गृहीतः। अस्याः वार्तायाः ज्ञानंयदा नगर श्रेष्ठिमभवत् तदा सः तहसीलदारः वान्य नगरस्य कतिचित् प्रतिष्ठित नागरिकानां सम्मुखे वासुदेवं आह्वयते। मध्येऽस्मिन पुजारी महोदयः वासुदेवस्य विषये अवगतमकारयत्। पुजारी जी तु तेलगू ब्राह्मणः आसीत् तथा च पुजारी पदेन सहैव भूमिलेखापालोप्यासीत्। वासुदेवस्य विषयेज्ञानंभूतेसति नगर श्रेष्ठि आर्थिक साहाय्यप्रदानस्य निश्चयमकरोत्। तेन प्रश्नः कृतः त्वं किं वांच्छसि वासुदेवः मौानेवासन् तृतीयक्रमे श्रेष्ठि पुनःप्रश्नावृतिःकृतः परं वासुदेवः मौनेव स्थितः। तृतीय क्रमे श्रेष्ठिः अत्युत्तेजितो भूत्वा अपृच्छत्—त्वं किं वॉच्छसि ? पुजारी महोदयः शीघ्रतया श्रेष्ठि जनस्य मुखं स्व हस्ताभ्यां आवृत्तयन् अकथयत्। कृपया तूष्णीभवतु। अधुनातेनाऽधिकं किञ्चिदपि न पृच्छतु। अमुनाऽहं

परिचितोऽस्मि। यदि सः भवता वा भवदीय कोषस्य कुज्जिंका तथा च भवतः समस्त संपत्ति याचित्वा भवता मात्रेककौपीनं धारयित्वा गमनस्य याचनायामवस्थितः तर्हि किं स्वीकरिष्यतिभवानीदृक्। यतः कथनोऽयं पुजारी यथा महत्वपूर्ण व्यक्तेरासीत् अतः तस्य प्रभावः अभवत्। नगर श्रेष्ठि वान्य महत्वपूर्ण व्यक्तीः वा जनान् बोधोऽभूत् यत् अजनवी वासुदेवःकस्मिंस्चिदपि भौतिक सम्पदायाः लोभी नास्ति। ते आदरेण अमन्यन् । किञ्चित्कालानन्तरे रामलीला मंड़ली हैदराबाद, सिकन्दराबाद, बेगम बाजार, अमीर पेठादयः स्थानेषु प्रदर्शनं कर्त्तारन् औरंगाबादं प्राप्तः। अत्र प्रदर्शनं समाप्तेसति वासुदेवोऽपि रामलीला मंड़ल्या :तदास्व पर्याप्त्यवधि प्रचलित संबंधस्य समापनः कृतवान्। अत्र सः कतिचिद्दिवसं रामायणस्य प्रवचनः कृतः तथा च पुनरप्यग्रेप्रचलितः यदा सः जालनांत्यक्तः तदा तस्य मस्तिष्के काचिदपि योजना नासीत् यत् सः कुत्र गच्छति। सः अग्रेव प्रस्थितः, तस्य पार्श्वे पादत्राणं नासीत्। नग्न पादाभ्याम् संचलनेन तं कष्टमभवत्। पदाधः भवितारः अस्य कष्टस्यावहेलनां कृत्वासःअवर्धदेव। तस्य पदयोः स्थूलतागतः पदतलयोः शीघ्रेव पिण्डकः आवृतः तथा च पदयोः रक्तस्त्राव भवितारः। अग्रे संचलनमसम्भवमभूत्। बाध्यं भूत्वा तं मार्गतीरे अवरुध्यतशरीरस्य तापमानोऽपिबर्धितारः। सोऽविचार यत्काश्नगरगमनाय कश्चिदपि साधनं लब्धः। किञ्चित् समयाऽतीते, मार्गे एकामहत् कारं धूम्रगन्त्रीरागतः यदा कारः तस्य सन्निकटम् गतः। तदा सोऽपश्यत्। तस्यां चालकस्यातिरिक्तं नान्यः कोप्यात्री आसीत्। सः हस्तसञ्चालनं कृत्वा चालकं रोधस्य संकेतः कृतः। चालकः किञ्चिदूरेवावरुधत् बहिरपश्यत् च। नातिसमीप्य कारणेन वार्तालापम् सम्भवंनासीत्। अस्तु असमर्थं भूत्वा वासुदेवः संकेतेनतमबोधयत् यदऽहं विपदायाम् अस्मि तथा च भवान् यदिस्व वाहनेन नगरं परित्यजतुतर्हिअहं साभारी भविष्यामि। मार्गे स्थितः अजनवी पुरुषेण साहाय्यार्थं निवेदनमिदं चालकाय नारोचत्।। सः कारं/वाहनं प्रचाल्य नेत्राभ्याम् शक्त्या दूरोऽभवत्, वासुदेवः तीव्रगत्या गच्छन् कारं अपलकमपश्यत्, संचालने तु

सोऽसमर्थासीत्। किञ्चित्क्षणेवानन्तरे तद् कारं :प्रत्यावर्त्य पुनः तत्रेव स्थितः। चालकः गवाक्षेण सिरं निष्काष्यावेशेनोक्तम् –'' ज्ञातोऽस्ति इदं रोल्सरायसवाहनं कस्यास्ति ''? एतद् निजाम महोदयस्य संबन्धी प्रमुख कार्यकारी अभियन्तामहानुभावस्यास्ति तथा चेदानीमेव विलायतः आगतोऽस्ति। त्वमेनंरोधस्य दुस्साहसः कृतस्तु कथंकृतः। महद् जनानां अग्रे पृष्ठे च व संतः वा निवासकर्त्तारः (छुट भइया) लघ्वमतिजनाः यथा दम्भी भवन्ति । तेनैव प्रकारेण सत्याभिमानेन च चालकः वासुदेवं अत्यधिकं शब्दापशब्दं श्रावयत्। वासुदेवः नम्रतयाकथत् यत् भ्रातावार्तात्वस्याकर्षक वाहनेन न करोभि वार्तात्वस्य चालनकर्ता मनुष्येन करोमि। मम करुणस्थितिंमपश्यन् किः भवान् नगरं प्रेषणस्य कृपा करिष्यिति। परं मदान्ध चालकस्तु स्व मनस्य विकारं निष्काशितः, अस्तु वासुदेवस्य वार्तां (अश्रुत्वा) वाहनं वर्धयन् चक्षुभ्यः विलुप्तोऽभूत्। किञ्चिच्क्षणे व्यतीते सति, तद् विशालकारम् पुनरागतापश्यत्। अस्मिन् क्रमे सः वासुदेवम् निकटे आगत्य अरुधत्, तथा च चालकः शान्तस्वरेण तं स्वसमीपे उपवेशनस्य आमंत्रणम् दत्तः। उपविशते सति वाहनं चालयनकथयत् भवान्– कुत्र गन्तुकामः ? वाहनस्तु औरंगाबादाय गच्छति कृमेऽस्मिन् तस्य व्यवहारः सज्जनता पूर्णासीत्। इत्थं ज्ञातेसति यत् वासुदेवराममंदिरं गन्तुकामः तं तत्र न केवलं अनयत् अपितु तस्य अवतरणकाले साहाय्यं कृतः । महन्तमाहूय सम्मेलनम् अकारयत् प्रणम्य प्रत्यावर्तितश्च। औरंगाबादस्य राम मंदिरे वासुदेवः पञ्चदश दिवसम् स्वास्थ्य लाभाय अतीतः। शीघ्रेव तस्य ज्वरः अवतरितः वा शान्ताभवत्। अथ चपिंडकाः स्वस्थाः जातःमध्येऽस्मिन् वासुदेवः रामायण प्रवचनमकरोत् येन जनसाधारणस्य आत्मोन्नतये साहाय्यमभवत् यथैव सः स्वस्थ योग्यः अभवत् तथैव मार्गे प्रचलितः गन्तव्यस्थानस्य विषये तस्य मस्तिष्के कोऽपि सुनिश्चित योजना नासीत्। सः राजमार्गस्य वहिः प्रस्थितः। यदा श्रान्तः तदा वटस्याधः विश्रमितः पूर्ण दिवसं यावत् भोजनं न कृतः यतः न तु तस्य पार्श्वे भोजन क्रीणितुं पणकं नासीत् नैव सः याचना कर्तुं शक्तः कश्मिंश्चिदपि

परिस्थितौ भिक्षा याचना न कर्तव्यः इति तस्य नियमासीत् परं क्षुधा पिपासा तं कष्टमददत्। यस्मिन् पारलौकिकान्वेषणे सः निसृतः सः आत्माम् भवतु संतुष्टम् कुरुत् परं शरीरम् तु बलिष्ठ सांसारिक खाद्य आहारस्य जलस्य चावश्यकता त्रसितवान्। इतः आत्मांमन्न जलस्य च पृष्ठे गमनायनानुमतिंमददत्। द्वन्द्वेऽस्मिन् दिवसमेकः पूर्ण निराहारेण व्यतीतः। द्वितीय दिवसे क्षुधा पिपासया च अन्य मनस्कं भूत्वा वासुदेवः पुनः औरंगाबादं प्रत्यावर्तितः। राममंदिरस्य निकटे गतेसति वासुदेवः सार्वजनिक जलकलेन संतुष्टि पूर्वकं जलंपीतः, तथा च पुनः वटस्याध विश्रमितः अनेनप्रकारेणैव षट् दिवसः निराहारः व्यतीतः। सप्त दिवसेऽपिं नलेनं जलं पीत्वा अतीव दुर्बलस्य दशायां शनैः शनैः प्रत्यावर्तितस्तुः सः अपश्यत् यत् पुरतः भवनस्य ऊर्ध्व मंजिलस्य गवाक्षः अनावृत्तः तथा च एका महिला प्रचुर भोजनं अधः राजमार्गे क्षिप्तः। निश्चिदेवेदंकस्मिंश्चित् समृद्ध परिवारस्य उच्छिष्ट वा अवशिष्टं भोजनासीत्। क्षुधा व्याकुलोदरः तर्कं कृतः यत् तस्य क्षुधा शान्तये भाग्य देवता भोजनाक्षिप्तये प्रेरणादत्तः अतः तस्य विनष्यत् पूर्वम् अविलम्बेव तं गृह्येत्। बुद्धिरपि विश्लेषणः प्रस्तुतः कृतः यत् उच्चोत्कटाध्यात्मिक विचाराणां भूतेऽपि भौतिकावश्यकताः अपरिहार्याः। शरीरं विनश्य आत्मायाः रक्षा न संभवः यतः शरीरेव आत्मायाः गृहमस्ति। तथा च शरीरेऽस्मिन्नेव वसन् आत्म साक्षात्कारः संभवः। कथितञ्चयत् शुद्ध मनः स्वस्थ शरीरेव निवसति, अतः शरीरस्य पोषणमपि न्यूनं महत्वपूर्णं नास्ति। तदा तस्य मष्तिष्के विचारोद्भूत यत् ईश्वरः प्रत्येक वस्तुषु विद्यमानोऽस्ति तथा च प्रत्येक वस्तोः अस्तित्वं ईश्वरेणेवास्ति् ईश्वरेऽस्ति् अतः भोजनमपि ईश्वरे अस्ति तथा चेश्वरः भोजनेऽस्ति तमुक्तिमेनं स्मरणमभवत् यत् अन्नम् ब्रहम्। तदा किमिति मान्यः तर्क संगतं न भविष्यति यत् तं तत्र क्षुधित स्थिरं दृष्टवेव भगवान् तद् भोजनं क्षिप्तयत्। इदं भोजनं मह्यमेवास्ति यतः अस्य कोप्यन्य अधिकृतोऽपि नास्तितर्हि तद्े ग्रहणे को हानिः कः मनीषि विश्वामित्रोऽपि प्राणरक्षायै चाण्डालैः सहंमिलित्वा मृत श्वानस्य अस्थिं नाचूसयत् तथा च सः जलं नागृहयत्

यस्मिन् जले श्वानानां अस्थयः पाचयन्तिस्म् । यदा महर्षि विश्वामित्रः चतुर्विंशति वर्षीय दुर्भिक्षस्यान्ते इदृक कर्तुं विवशः तर्हितु सः क्षिप्तान्नम् कथं न अगृहयत्। तस्य मनसिअयं ऊहापोहः प्रचलितः तदा तस्य मस्तिष्के सत्योऽयम्प्रकटयत् यत् तस्याधुनामृत्युर्नभवति। सः इदानीं अन्यकतिचिद्दिवसं जीवति। स्वास्य मानसिक द्वन्द्वस्य निवारणाय सोऽयं निर्णयः अग्ड्रीकृतः यत् सः भोजनं तदा एव गृहीष्यति यदा तंमयं निश्चयं भविष्यति यदेदं भोजनः तस्य हेतवेऽस्ति। अस्याशयस्य संकेत प्राप्तये सः स्थिरः स्थितः। क्षणानन्तरे सः पशूनः श्वानाम् च तत्र धावित्वागतम् एवंभ्च तद् भोजनं गृह्णन् अपश्यत्। एकः द्विकाकारपि तस्मिन् सम्मिलितः अभवत्। तस्मिन्क्षणे तमऽयं स्पष्ट्मभूत् यत् तद् भोजनः पक्षिपशुभ्यश्च आसीत्। तस्य हेतवे नास्ति। स्व दुर्बल शरीरे यारपि शक्तिः एकत्रीकृतः तमेकत्रीकृत्य धावितवान् सोऽतितीव्रगत्या अधावत् यथा विक्षिप्तश्वानाः तमनुधावन्ति। सः वटस्य समीपे गत्वा धराशायी अभवत्। अस्यार्धमूर्छितावस्थायां सः कतिसमयम् स्थितः अस्याकोऽपिबोधः तमनाभवत्। सिहस्यगर्जनायाः समं शब्दं श्रुत्वा सः नेत्रोन्मीलितः। तमीदृक् प्रतीनम्भवत् यथा सः पञ्च सिहैरावृत्तः। ये मन्द गत्या तस्य समीपे आगच्छन्ति। तदैव तस्य दृष्टिः पञ्च–पञ्चाशत् वर्षीयातिसौन्दर्यपूर्णा महिलायाम्पातितः। सा कतिचित् सप्तबालिश्त लम्बितः। सा सिंहान् गर्जनयावारणाय अकथयत् तथा च स्वस्थानेवस्थिरस्यादेशः अददत्। अयम् स्वेष्येकेवास्ति इति सा अबोधयत्। पुनश्च सा तस्य समीपे आगत्य ममतायुक्तवाण्यामवदत्। अद्य प्रभृतिःत्वम् कदापि भोजनाभावेपीड़ितो न भविष्यसि। तवावश्यकता याचनयाविनैव पूर्णा भविष्यिसि। तमाशीषं दत्वा सासिंहाः अदृश्याभवत्। सा अन्या न काचित् वरन् साक्षात स्वयं दुर्गादेवी आसीत् या काली माता इति नाम्नाऽपि प्रसिद्धां। ततः सः पर्याप्त्यवधिं आत्मविस्मृत्येवावस्थायां स्थिरः। यदासः सामान्यवस्थायामागतः तदा सोऽपश्यत् यत् समीपेवेकः पूर्व परिचित शिक्षकः स्थितः, तेनाकथयत् महाराज कृपया उतिष्ठतु भवान् मया सह सपीतिः (चाय) पानाय

चलतु गतसप्त दिवसेषु कच्चिदपि तमुपरि ध्यानं न दत्तः। सः नगरे जलपानाय गच्छतिस्म। ये जनाः तमजानत् तेऽऽपितं जल पीत्वा पुनरागच्छन् अपश्यत् परं केनापि तस्य कुशलमंगलं ज्ञातस्य चिन्ता न कृतः तथा नैव तं भोजनं अयच्छत्। किं सप्त दिवसस्यास्यवधेः ईश्वरः तस्य सहन शक्तेः इच्छाशक्तेश्च परीक्षा न गृहीतः। अयमेकः निर्विवाद सत्यः अस्ति यत् ईश्वरः स्वभक्तान् नानाविध्या निकषे निंकसन्ति।

औरंगाबादतः वासुदेवः पैठणं प्रति प्रस्थितः, यत्र सः स्वपरिचित श्री हिम्मत सिंहः क्षत्रियस्य गृहे रात्रिं अयापयत्। आगामि दिवसे सः प्रातः गोदावरीं गतः । यत्र सः स्वकीय स्नान ध्यानञचाकरोत् स्वपुनरागमनं प्रत्यावर्त्यसमये यदासः शाकापड़ेन अगच्छत्। अकस्मादेव सोऽनुभवः कृतः यत्कोऽपि तस्याग्ंडुलीयम् पिधास द्रावयन्तिस्म्। पृष्ठावर्त्येसति सः एकः अपरिचित व्यक्तिंहॅसमुखमुद्रायां अतिष्ठन् प्राप्तः। सः स्व परिचयं एकनाथमहाराजस्य प्रसिद्ध मंदिंरस्य पुजारी रुपे अददत्। तस्य नाम भागवत बुआ इर्त्यासीत्। मया सह चलतु तथाचेकनाथ महाराजस्य दर्शनं कुरु इति आमंत्रयन् सः तं शिखरं प्रतिअनयत् यस्यां मंदिरः स्थितः। भागवतबुआतस्य सम्मुखे भोजनं प्रस्तावितवान् तथाचाधिक समयं वार्तालापं आलापितः। भागवत बुआ वासुदेवस्य गायनं रामायणस्य प्रवचनञ्च श्रोतुं इच्छा व्यक्तः कृतः। वासुदेवः तंमेकगायनअश्रावयत् येन गायनेन प्रसन्नं भूत्वा पुजारी महाशयः संध्याम् मंदिरे प्रवचनस्य व्यवस्था कृतः। सः वासुदेवं हारमोनियम वादनस्य तथा च किञ्चित् रागरञ्जितानां शिक्षणस्य परामर्शोऽपि प्रदत्तः। यया सः रामायण पाठं संगीतेन सहैव अकारयत् कारयेत् वा सः तं संगीतस्यावश्यक पाठान्। शिक्षयमाणस्य वचनं दत्तः। अनेनप्रस्तावेनाति प्रसन्न वासुदेवः विधिवत् संगीतस्याभ्यासाय इच्छाभिव्यक्तः यतः। अत्रेकोल्लेख्यम् कारयेत् यतः वासुदेवं वाल्यावस्थयैव स्वर संगीत वाद्य संगीतञ्च उभयोरेव अत्यधिक रुचिरासीत्। विधिवत् वादित वाद्यः अथ च गायनः तं भावविभोरायपर्याप्त्यासीत्। अद्य प्रभृति तं संगीत शिक्षायाः सुयोगंमनुपलब्धं, अतः सुअवसरस्यास्य समुचित लाभार्जनस्य सः

निश्चयः कृतःसंगीतस्यऽयमभ्यासः तस्या गामि जीवने अत्युपयुक्त सिद्धः अभवत्। अस्याः परिचर्चा समुचित स्थाने करिष्यामि।

वासुदेवं प्रातः अष्ट वादनतः संगीतस्य शिक्षारंभकार्यं निश्चितः। नियोजित समयेन सः मंदिरः संलग्नं संगीत कक्षे उपस्थितोऽभवत्। भागवत बुआ तस्य समय निष्ठा श्रद्धया चातिप्रसन्नोऽभूत। सः तं रागानां हारमोनियम वादनस्य च शिक्षादानारम्भः कृतः। एकाग्र मनसा एवं चोत्कण्ठित विद्यार्थी वासुदेवः स्वपाठान् विधिवत् अग्राहयत् तथा च कतिचिदेव दिवसे सः हारमोनियम् तबलायाश्च संगत्या सह रामायण पाठं अकरोत्। सः पैठणस्य राममंदिरे प्रवचनारम्भः कृतः। शीघ्रेव तस्य प्रवचनं गायनश्च महत संख्यायाम् भक्तान् आकर्षयत् अति जनप्रियश्चाभवत्। दिवसोऽतीतः। भागवतबुआ अस्य युवाशिष्यस्य संगीतं प्रतिनिष्ठा–तस्यात्म संयमः तथा चाडम्बरहीन जीवनेनात्यधिक प्रभावितः। भागवत बुआ वासुदेवं वस्त्रयुगलं एकोष्णीषं उपानहौचायच्छत् तस्य प्रवचनानां प्रशंशकाः श्रोतागणः तं धनेनोपहारयत् यम् सः तत्कालेव मंदिरं अर्पयत्।

चत्वारिंशत् वर्षानन्तरे षष्ठिवर्षस्यावस्थायां वासुदेवः पुनः भागवत बुआ इति नामधारी जनेन मेलनाय पैठणं आगतः परं तावत् भागवत् बुआ नादसमाधिमधिष्टितः। रामायण वाचक रुपे वासुदेवस्य कीर्तिः समीपस्थ क्षेत्रेषु प्रसृतः। एकास्मिन् दिवसेकजालनावासि तं जालना स्थाने रामायण पाठाय प्रवचनाय च आमंत्रितं कृते आगतः। यया जालनायाः जनताऽपिजानलाभं प्राप्स्यन्ति। तद् व्यक्तेः मतानुसारेण जालनायाः जनता तस्य प्रवचनाय श्रोतुं अधीरासीत्। अस्मात् कारणादेवतत्रतः तं प्रेषयत्। वासुदेवः पैठणं त्यक्त्वा तद् व्यक्तिनासह जालनां प्रति प्रस्थापयत्। जालना स्थाने वासुदेवः स्वनिवास हेतवे राममंदिरं चयितः। चयनितः वा यद्काली कुर्ती इति नामांख्यातः, राममंदिरः, अस्य मंदिरस्य व्यवस्थापकः महंत भागवदाचार्योऽपि तं रामायण पाठाय प्रवचनाय च प्रोत्साहितमकरोत्। तस्य प्रवचनानां शैली विषय

वस्तुश्चानेकानां तथा स्वयं महंतस्यापि मनं संम्मोहयत् तस्य प्रवचनस्य श्रोतानां संख्या उत्तरोतरः वर्धितः। प्रवचन कर्ता रुपे तस्य सफलतायाः किं कारणं आसीत् ? तेन प्रदत्त धर्म ग्रन्थानां व्याख्यायाः लोक प्रियता एवञ्चाकर्षणस्य किं कारण आसीत् अस्य एतद् कारणमासीत्। यत् तेन प्रदत्त व्याख्या आपणे उपलब्ध विभिन्न पुस्तकेषु प्रदत्त व्याख्यानेन सर्वथा भिन्नासीत्। एतादृशः प्रत्येक मानवः येषां किञ्चिदपि काबिलियतः क्षमता अस्ति धर्म ग्रन्थोंपरिस्वपृथक्येव टीकां प्रस्तुवन्ति। ईदृक् किञ्चित् लम्बितः अवधिभुक्तारः कैदीअपि अभूत् ये कारागारे भगवत् गीतायां विद्तापूर्णः टीका लिखितः। पुनश्च तद् किमांसीत् यः असंख्य श्रोतृन् वासुदेवस्य सस्वरपाठप्रवचनस्य श्रोतुं आकर्षितः कृतः। सः विद्वान् नासीत्। सः विधिवत् शिक्षापि न प्राप्तः। संस्कृत भाषायाः तस्य ज्ञानमल्पासीत्। वासुदेवस्य जीवन गाथया अधुनाअहमयं विज्ञामि वा वयमयं विज्ञामः यत् वासुदेवस्य जीवनस्य मात्रेकेवांभिलाषादिव्य ज्ञानोपलब्धिः, तथा चाऽहमयमपिपश्यामि यदनेकवसरे तं दिव्य दर्शनोऽपि प्राप्तः। सः रामायणस्य चतुष्पादाः तथा च अन्य शास्त्राणां व्याख्याकृतस्तत्तु शब्दाः तस्य हृदयस्य गम्भीरताभिः निःश्रितः।यथातस्य स्वकीयानुभवेन ओतप्रोतोऽस्ति। काचिदप्यतिसयोक्तिबिनैव कथनीयम् यत् प्रवचने वासुदेवस्तु स्वयं न वदतिस्म, अपितु कश्मिंश्चित् दिव्यपुरुषस्य वाणी वासुदेवस्य मुखेननिश्रितः। दिव्यज्ञानस्य इमानिशब्दानि तान् श्रोतृन् ये पर्याप्तभाषणं अश्रृणोत्। गाम्भीर्यं प्रभावे समर्थासीत्। स्वप्रवचनेषु याम् शैलीं अग्ङीकृतः सा रुढिबद्धानासीत्। सः जनतायाः रुचिः तथा चावसरस्यानुकूलस्वप्रवचनानां विधि परिवर्तने समर्थासीत् तथा चेवं सः इदृक कर्तृतोऽपि। कतिचिद् श्लोकानां पाठान्ते सः श्रोता गणैः प्रश्नम् अपृच्छत् तथा च साकेंतिक शब्दान् चयित्वा सः तद् शब्दानांमुत्पत्तिः तथा चान्तर्निहित सुस्पष्टं अर्थान्तं अबोधयत्। संगीतस्य शिक्षा यद्यत् सः भागवत बुआ महानुभावस्य समर्थ मार्ग दर्शने अधिगृहीतः तस्य

प्रवचनेषुश्रोतृन् आकर्षणाय सहायक सिद्धः अभवत्। ये जनाः तां श्रुतः तेषां मनसि पवित्रधर्म ग्रन्थाय समुचित बोधः श्रद्धायाश्च विकासः अभवत्।

जालनायां वासुदेवः संस्कृतस्य प्रख्यात विद्वान् पं0 शिवकुमार शास्त्री महोदयस्य संपर्के आगतः। वासुदेवः संस्कृत अध्ययनस्य इच्छुकः तु आसीत्येव, सः पं0 महोदयेन अवकाशस्य समये संस्कृतस्य शिक्षा ग्रहणारम्भः कृतः। मध्येऽस्मिन् मंहत भागवताचार्यः वासुदेवं विधिवदवबोध्य तस्य योग्यतां प्रभावितः निकसितावा–मूल्यांकनः कृतः। सोऽपि अन्य नागरिकाश्च वासुदेवं एका रामायणमण्डल्याः स्थापनां कृत्वा विभिन्न स्थानेषु प्रवचनाय विमर्शः प्रदत्तः एवञ्च प्रोत्साहितोऽपि अकुर्वन् अनेन प्रकारेण एकस्मिन् दिवसे चत्वार सदस्यीय रामायण मंडली सुगठितेव यस्यां स्वीयस्य नेतृत्वे संगत कर्तारः बादक कलाकारः आसीत्। वासुदेवस्य रामायण मंडली भ्रमणं कृत्वा अनेक स्थानेषु प्रवचनारम्भः अकरोत्। स्वयं महंत भागवताचार्यः तं बीड़ मंण्डलस्य मंदिरे अनयत्। एषः मंदिरोऽपि महंतस्य नियंत्रणे आसीत् अत्र वासुदेवः व्याख्या सहितंरामायण पाठं मासमेकं कृतः। पुनश्च सः जालनां प्रत्यावर्तितः। अत्र किञ्चिदि्दवसमतीत्यतस्य मंडली देवलगॉव गतः तथा च बालाजी मंदिरे प्रवचनं कृतवान्। जालना पुनरागत्य पक्षमेकं तत्र अतीतः।

मंहतं भागवताचार्यः वासुदेवस्य धर्मनिष्ठ जीवन आध्यात्मिकोपलब्धयः तथा च जनताः अध्यात्मस्य शिक्षा एवं मार्ग दर्शन प्रदानस्य योग्यतया अत्यन्त प्रसन्नः अभवत्। सः तं बीड़ मंडलस्थ मंदिरस्य मंहत निर्माणाय वा महंतपदाधिष्ठितकामः। परं यथाऽहमपश्यत् यत् वासुदेवः समस्त बंधनेभ्यः मुक्तकामासीत्। तं महंत पदं न स्वीकृतवान्। मध्येऽमिन् ईदृशी घटना घटितः याः जालनात् तं शीघ्र प्रस्थानाय वाध्यमकरोत्।

वयंपूर्वेव दत्तावधानः यत् केन प्रकारेण रामायण प्रवचनकारस्य रुपे वासुदेवस्य कीर्तिः वर्धितः तथा च तस्य ग्राहयतापि अवर्धन् । वर्धितैषा लोकप्रियता प्राच्यरामायण

प्रवचनकर्त्ता पं0 शिव कुमार शास्त्रीमहोदस्य यशायोपरि च प्रतिकूलप्रभावप्रक्षेपणं आरम्भः कृतः। शास्त्री महोदयः एकस्मिन् दिनेदुःखितं भूत्वा उपालभ्भ संयुक्तस्वरे वासुदेवम् अकथयत्। यदातः त्वं स्व प्रवचनारम्भः कृतः तदातः जनाः तव प्रवचनं श्रोतुं सोत्सुकआगच्छन्ति। मम प्रवचने तु कठिनतयैव कोऽपि आगच्छति।

अस्त्वद्यहंस्वाडम्बरस्योतम् विस्तरादिकञ्च बाधित्वा स्थानंमेतत् यदि न त्यजामि तर्हि अहम् क्षुधया मरिष्यामि दिवंगच्छामि च। वासुदेवः स्व संस्कृत शिक्षकस्य मुखे विषाद चिहनमपश्य शीघ्रेवतत् स्थानपरित्यागस्य र्निणयं अग्ड़ीकृतवान्। कतिचिदिद्वसानन्तरे वासुदेवः शास्त्री महोदयस्य गृहे अगच्छत् पंडित महोदयस्य बहिरागतेसति वासुदेवः स्व समस्त सामग्रयादिकं एकतः स्थित्वा तस्य चरणेषु सादरंनमन्कर्तारन् अकथयत्। भवन्तम् जालना त्यागस्यनावश्यकता, अहं तु स्वयमेव स्थानमेतत् त्यजामि। गमनात् पूर्वं भवान् आशीर्वादं प्राप्तये आगच्छामि, आगतोऽस्मि वासुदेवस्यास्यानपेक्षित व्यवहारस्य पंडित महोदयोपरिगहनप्रभावः क्षिप्तवान् तथा च ते वासुदेवेन क्षमायाचनां कृत्वा तत्रैव वासस्याग्रहं कृतवान्। पंड़ित महोदस्य नेत्रयोः अश्रुबिन्दवः बहिरागतः। तं पुनरपि प्रणम्य स्व सामाग्रीं उत्थात्य अगच्छच्च। सः बारमेकमपि आवृत्यनापश्यत् सः औरगांबादं प्राप्तः तथा च तस्मिन्नेव राम मंदिरे निवासाय गतः यत्र सः कतिचित् मास पूर्वेऽपिआमागतः। स्थूल पिण्डकः संवृत्त पादौनीत्वा। अत्रापि सः रामायण पाठं प्रवचनञ्चारंम्भः कृतवान्। अत्र तस्य श्रोतृषु औरंगाबादस्य कतिपय प्रमुख व्यक्तयः आसीत्। यस्मिन् एकः सुसंपन्नः गुजराती श्रेष्ठि मगनलालः तथा श्री बुलाकी महाराजः विशेष करं उल्लेखनीयः। यतः तस्य सान्निध्यः वासुदेवस्य जीवने लघुः परंमहत्वपूर्णं स्थानं स्थापयति।

श्रेष्ठि मगनलाल अवगतः यदसौ युवायोगी वासुदेवः जनताभिः अर्पित धनराशि स्वोयं भोगाय न संस्थित्य स्व मंड़ल्याः तबला वादकान् एवञ्चान्य सहयोगिषु विभक्त्मकारयत्। असौ जनः श्रेष्ठिं मगनलालं इत्थं साश्चर्य चकितं

प्रभावितञ्चाकरोत् यत् सः वासुदेवं अकथयत् स्व मण्डलीं समाप्य स्व सहैव वासस्य अनुरोधः कृतः। वासुदेवः एनं स्वीकारयत्। अनेन प्रकारेण रामायण मंण्ड़ल्याः लघु जीवनः अकस्मादेव समाप्तः।

कतिचिद्दिवसं श्रेष्ठि मगनलालस्य गृहे निवासादनन्तरे वासुदेवः स्व निवास श्रेष्ठि महोदयस्य गृह समीपेव स्थित मुरली मनोहर मंदिरे विनिर्मितः। कृतः वा। तत् पश्चात् सः निकटवर्ती गायत्री मंदिरे निवसत्। मंदिरेऽस्मिन् एकं तलगृहं आसीत्। कमपि अस्मिन् तल गृहे प्रवेशस्यानुमतिं नासीत्। परं वासुदेवस्य जीवनोददेश्यं ज्ञात्वा मंदिरस्य अधिष्ठित जनाः तस्मै ध्यानाय अस्य कक्षस्य उपयोगाय चानुमतिं प्रदद्यात्। एषस्तु वासुदेवाय उचितोपयुक्तः सिद्धः अभवत्। यतः अत्र एकासनेव तस्य ध्यानः षटाधिक घटिकां स्थितः। समयोऽतीतः। संयोगवशादेकस्मिन् दिने श्रेष्ठि मगनलालस्य द्वितीय पुत्र गोविंददासः तं किञ्चिद् दूरस्थ स्व पुष्पवाटिकां गमनाय आमंत्रयत्। एषा अतीव सुरस्य वाटिकासीत् यद्यत् चत्वारेकड़ भूमौ प्रसृतः। अस्यां एक द्विमंजिली–सुरम्य छातृकी आसीत् अस्या कक्षाः अतीव वायुप्रदासीत् तथा च इमाः परितः गवाक्षाः आसन्। स्थानमेतद् अतीव सुरम्यासीत् तथा च शोभनः शान्त एकान्तं वातावरणस्य परिसरस्य वा श्रृष्टि अरचयत्। एषः योगसाधनायै सर्वथोपयुक्तः आसीत्। गोविंद दासः युवा योगी कतिचिद्दिवसं अस्यां मंण्डलाकृतिछतर्याम् वसित्वा योग साधनायै आमंत्रयत्। सः भोजनादिकं प्रेषणस्य आनीतस्थ च भारं स्वयमेवावहन्। वासुदेवः सहर्षेन प्रस्तावमेतं स्वीकरोत् यतः गायत्री मंदिरस्य तलगृहेनेषः एकः स्वागतेय परिवर्तनासीत्। अत्र तं एकः अविस्मरणीयानुभवः अभवत्। एकदा मध्याह्न काले यदा सः ध्याने निमग्नासीत् यत् तस्य नेत्रौ एकः गोलाकारः प्रकाशस्यप्रभावेन अनावृतः अस्मिन प्रकाश वृत्ते सः मुस्लिम संतस्य भव्याकृतिं स्थितः अपश्यत्। तस्यायुः पञ्चाशत् वर्षस्याधिकः प्रतीतः अभवत् तथा च तस्य लम्बितः चिबुकः आसीत्। अयम् नान्यः कोऽपि सार्ध द्विशतवर्षपूर्वं तत्रतः अनुमानतः अर्ध मील अध्वानम् दूरे जीवित

समाधिं अंग्ड़ीकृतवान्। कालेऽस्मिन्नपि तत्र लगंरस्य आयोजनं भवतिस्म यस्मिन फकीरान् दीन–हीन जनान् भोजनं अयच्छत्।

" त्वं बीजस्य अन्वेषणे तु नास्ति " ? सूफी संतः युवा यतिना अपृच्छत्।

"आम् आम् अवश्येव । अहम् बीजस्य अन्वेषणे अस्मि तथा च माम् शाखिनां पुष्पानांम्च चिन्ता नास्ति" वासुदेवः प्रत्युत्तरं दत्तः।

अवश्यमेव उचित समये बीजः तव पार्श्वे आगमिष्यति परं यावत् तव पार्श्वे तव शरीरः मनः बुद्धिश्च रक्षायै कवचं न भविष्यति, त्वं केन प्रकारेण बीजं प्राप्स्यसि ? अस्तु कवचः महत्वपूर्णः अस्ति तथा च त्वं कवचाय कासूपारक नगरखण्डे निर्मित गायत्री मंदिरे गच्छ तत्र त्वं पवित्र धर्मग्रन्थः श्री मद्भागवतं मिलिष्यति। तस्य षष्ठ स्कन्धं उदघाट्य श्लोकान् लिखित्वा तासामभ्यासञ्च कुरु एषः तव नारायण कवचः भविष्यति, अनेन प्रकारेण यदात्वं स्वकीयं सुरक्षितं अनुमीयते तदा बीजः त्वां प्राप्स्यति। अनेन परामर्शेन सह सूफी संतः अदृश्यः अभवत्।

उल्लेखनीयः अस्ति यत् भारतीय मान्यतायाः अनुसारेण बहुमुखी संरचनाभिः परिपूर्णः एषाः विश्वः वृक्षेण समं अमन्यत्। यस्यां त्वंक् शाखा पत्राणि पुष्पाणि फलानि च सन्ति। यतः अस्य वृक्षस्योत्पत्तिः बीजेनाऽभूत्। अतः शाखाभिः पत्रैः पुष्पैः एवञ्च फलैः युक्तः एषः वृक्षः सूक्ष्मरुपेण बीजे विद्यमानः अस्ति। अन्येषु शब्देषु जीवनस्य मूल तत्वः बीजेष्वेव लुप्तः। विस्तृतार्थेषु बीजेन संकेतः परम सत्यं प्रति अस्ति। यः सम्पूर्ण सृष्टेः सिरजनहारः सर्वशक्तिमान परमेश्वरः अस्ति। अये की दृशोऽयं निर्मलानुभवः यदेकः मुस्लिम दिव्यात्मा हिन्दुमेकं हिन्दु पवित्रग्रन्थं प्रति निर्दिश्य तस्यां गुप्त मर्मं प्रकाशनस्य आदेशः करोति। अस्मान सुविज्ञातं यत् वासुदेवोपरि कश्चिद् मुसलमान संतस्याऽयमनुग्रहः प्रथमेव नाभवत्। अस्य पूर्वेऽपि अजमेरस्य प्रसिद्ध ख्वाजा मोइनुद्दीन चिस्ती तं दर्शनं प्रदत्तः। ईदृक् दैव्यागमनानां किं नाम तात्पर्य किमन्तिमलक्ष्ये हिन्दु मुस्लिमः वा ईसाई जनानां मध्ये कोऽपि वास्तविकः अथ च

मूलभूतान्तरः अस्ति किं ? आम् एषोऽवश्यः यत् प्रत्येकः एकाभिन्न नियमावल्याः कर्मकाण्डस्य च पालनं करोति। इत्थमपि कथयन्ति यत् एकेन केन्द्रं गमनाय भिन्न–भिन्न पथानांमनुसरणं करोति। वस्तुतस्तु विभिन्न धर्मः एकेन परमतत्वं प्रति सुगमतया अभिवृद्धये भिन्नानिपथानि एवञ्च वातावरणोपलब्धयन्ति। एताः कीदृशीत्रासदी अस्ति यत् वयम् विभिन्न धर्मानां नाम्नोपरि एकतः अन्यतः घृणा तथा च काल करालान् कुर्वन्ति। यद्यत् वस्तुतस्तु कोऽपि मूलभूतान्तरः नास्त्येव। तात्पर्योऽयम् यत् आध्यात्मिकोपलब्धेः उच्चस्तरे बाह्याभ्यन्तरः समाप्तः अभूत् तथा चांवशेषः मात्रः परमतत्वेकता।

अस्याः चमत्कृत दृष्टेः पश्चात् वासुदेवं स्व सामान्य शारीरिक गतिशीलता प्राप्तये कश्चिद् घटिकानामबधिः अतीतः यतः विलम्बित समयं वा समयाधिक्यात् ध्यानं संस्थित्य एकेवेस्थित्याम् समुपविशन् तस्य पादौ कार्यहीनो शक्तिहीनो स्थितः। मध्याध्नानन्तरे सः कवच लेखनाय गायत्री मंदिरं प्रति प्रस्थितः परं तस्य मनः अधुनापि पेश इमाम इत्यस्थ अलौकिक दर्शनः वचनानाञ्च चिन्तने मनने वाव्यवस्थितः तमिदमपिनावबोधो अभवत् यत् सः श्री बुलाकी महाराजस्य गृहं प्रति अग्रसरः भवति। तस्य चेतना तदैव प्रत्यावर्तितः यदा सः गृहं प्राप्तः। द्वारः आवृतः तथा च कपाट रोधक/ताला सलग्नासीत् पर सः रोधक/ताला प्रति ध्यानं न दत्तः।

आगामि आगन्तारः घटनाः सम्यक् अवबोधनाय अस्य परिवारस्य एवञ्चास्य निवासस्य विषये किञ्चिद् ज्ञानं अनुपयुक्तः न भविष्यति। श्री बुलाकी महाराजः तत् परिजनस्च द्विवंशानुक्रमतः द्वि/पीढ़ी भगवत्याः काली देव्याः उपासकः आसीत्। तस्य मूर्तिः एकस्मिन् पृथक कक्षे संस्थापितः। तस्यार्चना हार्दिक श्रद्धया विध्या च भवतिस्म। श्री बुलाकी महाराजस्य पितुः देव्याः मां भगवत्याः परमोपासकः भक्तश्चासीत् तथा च तस्य कृपा पात्रोऽप्यासीत्।

एका कथातु एताद्दृशी बोधितः यत् वारमेकं वा क्रममेकं एकं ब्राहमणं धनस्यावश्यकताऽभूत्। अनेन प्रकारेणन सः स्व पत्न्याः रेशमी शटिका महत् महाराजस्य पार्श्वे बधंकं अरक्षत् तथा चायं विमर्श कृतः यत्– समयावशेषेव सः शाटिकां मुक्तं करिष्यतिं। सः ब्राहमणः शाटिकायै धनं नीत्वा एकादश वर्षं यावत् न प्रत्यावर्तितः। एकस्मिन दिवसे एकः महायज्ञस्य आयोजनः कृतः। यस्यां समुचित उपहारः उपहारयत्। अग्रज महाराजः अविचारयत् यत् बंधक स्थितः शाटिका एका उत्तमः उपहारः सत्य सिद्धः भविष्यति। यतः त ब्राह्मणस्य पुनरागमनस्य तथा शाटिका याचनायाः काप्याशानासीत् । अतः सः तंमुपहार स्वरूपं यज्ञाग्निं समर्पितवान्। परं दिष्ट्या महायज्ञस्य तृतीये दिवसे ब्राहमणः प्रत्यावर्तितः तथा च अग्रज महाराजस्य मेलनाय गतः। महत्महाराजः अत्यन्तेव भीतोऽभूत्। तस्य मेरुदण्डै कंपनस्यानुभवः अभवत् तथा च तस्य मस्तिष्कः केनचिद् ईदृगुपायस्य विषये अचिन्तयत् अमन्थत् च येन ब्रह्मणः तं नाक्लेशयत्। सोऽचिन्तयत् यत् ब्राहमणः शाटिकायाः याचना करोति तर्हि ते सत्यं प्रकटिष्यति। ते कथनेऽपि शक्तःयत् बंधकः इत्यधिकावधि हेतवेतु न विनिर्मितः। अतस्त्वं एकादश वर्ष पश्चाद् शाटिका मुक्तये आगमिष्यति अस्य नत्वाशा एवं कोऽपि कर्तुं शक्तः। अस्यां औचित्यमपि नास्ति। ते तर्क संगत रुपेण ब्राहमणोपरि दोषारोपणं कर्तुं शक्तः। परं संवेदनशीलः तथा च सत्यनिष्ठ व्यक्तित्वस्य भूते सत्याम् अस्य प्रकारस्य स्पष्टीकरणः महत् महाराजं नातोषयत्। तेः साश्चर्यं अशोचयन् यत् एक ब्राहमणः तस्य सत्यनिष्ठा विश्वसनीयतायाश्च विरुद्धे प्रचारयत् तर्हि तु तस्य प्रतिष्ठा सम्मानञ्च कुत्र अवशिष्यति। यद्ययं घटितः भवति तदयं मरणतुल्य भयावहः भविष्यिति। अतीव नैरास्य स्थित्यां अग्रज महाराजः स्व परिस्थितिं मां देव्याः सम्मुखे समाधानाय प्रस्तुत कृतः। सः ब्राहमणमंकथयत् यत् तस्य शाटिका किञ्चिदि्दवसेव प्रत्यावर्तयिष्यति। स्व कुल देवीं प्रति असीम विश्वासेन सहैव ते प्रार्थना रतः सतस्याः चरणेषु अवस्थितः।

दिवसद्वयम् सः अन्नोदकं किमपि न अग्राहयत् तथा च पारिवारिकान्य सदस्याः अपि किमपि न गृहीतः यतः सर्वे चिन्तितासीत् तृतीय दिवसे एकः चमत्कारः अभूत्। महाराजः ध्यानावस्थायां मूर्तेः सन्मुखे अधुनापि विराजितः यत् तत् शाटिका एव सुव्यवस्थितः ध्वनिनासह तस्य समक्षे अपतत् अनयाध्वनिना तस्य ध्यान भग्ड़ः अभूत्। यदा सः शाटिकामपश्यत् तदातु तस्य नेत्राभ्यां हर्षः कृतज्ञतायाश्चाश्रवः प्रवहत्। तस्य पुत्र श्री बुलाकी महाराजं स्व पित्रा इयं श्रद्धा विरासते मिलितः तथा च सः एवं पूर्ण सत्यतया अनिर्वाहयत्।

इदानी वासुदेवः बुलाकी महाराजस्य द्वार देशे स्थितः । सः द्वारम् आवृतं प्राप्तः परं उद्घरनीरोधं प्रति कोपि ध्यानं नदत्तः। अनया धारणयां सहैव यत् महाराज अन्तः एव भविष्यति अत सोऽवदत् भोमहाराजः स पुनरपि शब्दः पुनः भोमहाराजः परं किमपि प्रत्युत्तरं ना गतेऽपि सः तृतीय क्रमेऽपि आहूयते तदा कः कोभवान् सः काचिद् नारी स्वरम् अपृच्छत् अश्रृणोत्। तत् स्वरस्तु गृहस्य ऊर्ध्व प्रासादतरागतः प्रतीतः अभवत्। अन्यः कः भविष्यति कृष्ण चौरः कृष्ण चौरः अस्ति सोत्तरं अददत् तथा च द्वारानना वृत्तस्य प्रातीक्षायां संलग्नः। अन्तरतः प्रत्येक पगध्वनिनां चा ध्वन्याम्स्थाने नूपुरस्य झंकारः झंकृतः। या द्वारस्य पृष्ठम् आगत्य शान्तः अभवत्। द्वाराद्वहिः संवृत्तः उद्घरनीरोधकः अकस्मादेव तस्य चरणौ समीपं अपतत्। निरीक्षण छिद्रेण दृष्टि पाते सति वासुदेवः अत्यन्त मनोहारी भुजामपश्यत् यस्याः मणिबन्धोंपरि सुमनोहराहरित कॉच वलयः आसन् तथा प्रलम्बः पीनः अंगुलयः सम्पूर्ण नख प्रसाधनैः सज्जितः द्वारस्य उद्धरणी आभ्यन्तरतः अनावृत्तयत्। साम्प्रतम् द्वारम् आवृत्तरेवासीत् यत् सः पृष्ठतः कश्चित् आह्वयते इति अश्रृणोत्। सः परिवृत्ते पृष्ठे बुलाकी महाराजस्य मातरम् एवञ्च परिवारम् स्वपृष्ठे किञ्चिदेव दूरे स्थितः प्राप्तः ते कस्यचित् समारोहे सम्मिलते पश्चात् गृहं प्रत्यावर्तितः। वृद्धा आहूयते। यद्यपि वासुदेव श्रुतः परं सः कोऽपि प्रतिक्रिया व्यक्तं नाऽकरोत्। यतः सः आत्मविस्मृतेः अवस्थायां अवस्थितः तथा

च तस्य ध्यान अन्तरतः द्वारस्य साकंल्यनावृत्त हस्तोपरिकेन्द्रितः आसीत्। समीपे आगते सतिवृद्धा पुनश्न्चतं शब्दं दत्तः। सः हस्तः अकस्मादेव अदृश्यः अभूत्। यदा सा द्वारे आगतः तदा सा द्वारम् अनावृत्तये सांकल्यरोधकोद्घाटनाय कुञ्जिकाः निष्कासितः। अतीवाश्चर्येण सह प्राप्तः यतः सांकल्यरोधकः अधः वासुदेवस्य चरणयोः समक्षे अपतत्। किमिंदं, ईदृक कथमभवत्। साश्चर्यमयक्तयत्। समयेऽस्मिन् वासुदेवस्य ध्यानः वृद्धां प्रत्याकृष्टः अभूत यातमपृच्छत् यत् किं भूतः। यत् किमप्यभूत्ः सतभव बोधयत्। घटनायाः विवरणः श्री बुलाकी महाराजस्य मातरि इत्थमत्यधिकं प्रभावः प्रभावितः यत् सा रुदन्। तस्य चरणौ अवगाह्य सा विललाप। एषः अस्माकं दुर्भाग्यः अस्ति यत् देव्या मातुः दर्शनानां सौभाग्यः वयं न प्राप्तं कृतः। इदानीं त्वम मम सहैव निवास कुरू यया वयमपि मातुः दर्शनस्य योग्यः अभूत सा अनुनय विनयं कर्तारन्।

श्री बुलाकी महाराजः यः तत्कालेव गृहं प्रत्यावर्तितः वा गृह प्रति आगतः। स्वपरिवारैः सह सम्मिल्य तं तेन सहैव निवासाय विशिष्टं वल दत्तः। वृद्धाः तस्य पदम् तदा एव त्यक्तः यदा सः अन्ततः अवरोद्धुं सन्नद्धः सः अनेन परिवारेण सह सप्ताह त्रयं अवसत्। श्री बुलाकी महाराजस्य गृहम् प्रचीनासीत्। सन्निहिते राजमार्गे अस्मिन गृहे एकं प्रवेश द्वारम् आसीत् यस्यां देव्याः भगवत्याः मूर्तिः स्थापितः अस्य कक्षस्य एकतः ऊर्ध्व प्रसादं आनेतुं सोपानाः आसन्। एतम् कक्षम् पुरतः एकः महत् कक्षं आसीत् यत्र भजन कीर्तनः तथा च यज्ञादेः आयोजनः आयोजितः। देव्याः कक्षाद वहिः एकः दीपः अनवरतः वरामदायां प्रज्वलितः। आवर्षमयंदीपकः प्रज्वलितः विषयेऽस्मिन् अयं परिवारः अतीव सतर्कासीत्।

संध्या पूजन भोजनानन्तरे च रात्रेः विश्रामाय समस्त परिवारः ऊर्ध्व मंजिल्यां नित्य इव अगच्छत्।वासुदेवाय देव्याः कक्षस्य समीपे वरामदायां वस्त्राच्छादनस्य व्यवस्था कृता व्यवस्थेयं अस्मात् कारणात् कृतः यत् वासुदेवः निर्विघ्न ध्यानः कुरुत करोतुवा यतः सः रात्रावपि ध्यानं अकरोत् कुर्वतिस्म वा। एकस्यां रात्रौ सः परिवारः

सदैव समः रात्रौ विश्रामाय गतः तथा च वासुदेवोऽपि रात्रेः ध्यानं समाप्य विश्रामाय अगच्छत् आकाशे मेघाच्छन्न तथा च अकस्मादेव समस्त नगरः प्रचण्ड़ वायुवेगस्य मध्ये आगतः। तीव्र वायुवेगः परितः आगत्य भगवत्याः देव्याः कक्षस्य दीपकं शान्तमकारयत् समस्त गृहाणि गहनान्धकारे निमज्जितः यद्यपि वासुदेवः जागरतिस्म परं दीपकं पुनः प्रज्वालने असमर्थः आसीत्। सः तदैव श्री बुलाकी महाराजस्य मातुःहस्ते दीपकानीतः सोपानतः अधः आगच्छत् अपश्यत्। सा अधः आगतः देव्याः कक्षस्य दीपकं प्रज्वाल्य तूष्णीं ऊर्ध्वम् गतः द्वितीय दिवसे प्रातः यदा सः परिवारेण सह जलपानं करोतिस्म तदा रात्रि कालिक वायुवेगस्य परिचर्चा कर्तारन् सः मात्रा अकथयत् यदेषः अत्युत्तमः अभवत् यत् भवती अधः आगत्य भगवत्याः कक्षस्य बर्हिर्गमस्थस्य दीपकं पुनः प्रज्वालितः वास्तविकेषु वेगस्तु प्रचण्ड़ासीत् त्वंया कि कथितः दीपकः कः प्रज्वालितः साश्चर्येण मातुः अपृच्छत्। अहम्इदृशः कथं सम्भवति। त्वं विस्मृत अस्तु रात्रेः पूजन भोजनस्य च पश्चात् वयमइतः कोऽपि अधः न गच्छति। यद्यपि वयम् सम्यक् अवबोधितः यत् दीपकः शान्तं भविष्यति परंमहं वास्तविकेषु ह्यः रात्रौ त्वधः आगतारेवनास्ति। वासुदेवः साश्चर्येणाऽकथयत् यत् महद् विचित्र वार्तास्ति। परमहं तुभवतीं दीपकं हस्ते गृहीतः सोपानतः अवतरितः अपश्यत्। भवती आगत वायुवेगेन शान्तदीपकं प्रज्वाल्य पुनश्चोर्ध्वंगता। अकस्मादेव मातुः तथा चान्य पारिवारिक सदस्यान् अयं स्पष्टमभवत् यत् या महिला अधः गत्वा दीपकं पुनः प्रज्वालितः सानान्याकाऽपि अपितु स्वयं देवी माता आसीत्। हर्षेणाश्रवः तस्य नेत्राभ्याम् निश्रितः। ते देव्याः सशरीरागमनम् तथा च तस्य गृहम अनुगृहीतेन अति प्रसन्नः अभूत सा महिलारुपे देव्यासीत् यां तस्यातिथिः वासुदेवः अपश्यत् परं शीध्र विषादः तं निमग्नयत् यतः देव्याः दर्शनानां सौभाग्यः ते नाप्राप्तयत्। वैचारोऽयं एतद् विचारः तेषु अयोग्यतायाः भाव परि पूरितः अनेन तेषां क्लेशः अत्यधिकं वर्धितः। तेस्वाश्रुविन्दवान् नारुधत्। वासुदेवः महत् कठिनतया तं सान्त्वना दत्तः।

अस्याः घटनायाः पाक्षिक मेकानन्तरे श्री बुलाकी महाराजस्य गृहात् वासुदेवः सूफी संत र्निदेशानुसारेण नारायण कवचलेखनाय गायत्री मंदिरे अगच्छत्। एषः सन् 1935 – एकोनविशति शतोत्तर पञ्चत्रिशति रव्रीस्ताब्दस्य वर्षासीत्।

ॐ श्री सद्गुरुवे नमः

पञ्चम् सोपानः

संत एकनाथेन प्रदत्त मार्ग दर्शनः

स्वकीयं नारायण कवचेन संज्जितं कृत्वा वासुदेवः श्रेष्ठि मगनलालस्य शून्याकृतेछत्रे प्रत्यावर्तितः तथा च प्रगाढतम ध्याने संलग्नः यतः अधुनासः बीजस्य प्राप्तये अत्यन्त्येवोत्सुकासीत्। पूर्वसमः श्रेष्ठि मगनलालस्य द्वितीय पुत्रः गोविन्द दासः तस्य दैनिकाहार संबंधी आवश्यकतायाः पूर्ति अकरोत्।

कतिचिदिवसानन्तरे समीपस्थ गोपाल कृष्ण मंदिरे भगवान् कृष्णस्य जीवने प्रवचनदत्तस्यानुरोधः तेन कृतवान् यमनुरोधम् सः स्वीकृतवान्। तेन प्रदत्त श्री कृष्णस्य जीवन वर्णनः तथा च भगवान श्रीकृष्णस्य शिक्षायाः व्याख्या प्रबुद्ध श्रोतृन आकर्षितः कृतः कारणमिदमासीत् यत् यत्किञ्चदपि सोऽकथयत् तद्ः सामान्य नित्य नैमित्तिकस्य प्रवचनः मात्रं नासीत्। ते तानि शब्दानि यद् तस्य ह्रदयस्य गहनताभिः निःश्रितः। ये तस्यासीमाध्यात्मिक अनुभवैः समुद्भूतः । अतः श्रोतृन् अत्यधिकं प्रभावित करणे समर्थाः आसन्।

दिनेकस्मिन यदा तस्य प्रवचनः प्रचलितः तदा सज्जनौ द्वौ श्री बाबू साहेब देशपाण्डेयः, श्री दादाभीमराव जोशीश्च संयोगवशाद् तत्र आगतः ते सामान्यतः मंदिर भजन कीर्तनादिषु उपस्थितेः अनिच्छुकासीत् यतः आध्यात्मिक विषये सः इत्थंमाग्रे बर्धितः यत् मंदिरगमन परित्यागे सक्तुरासीत्। ते द्वारे युवा योगी जनस्य तान् शब्दान् श्रृपुवन्तः स्थिरः अभूत्यः भगवानकृष्णमार्जुन संवादस्य व्याख्या कुर्वतिस्म। तस्य व्याख्यायाः भावात्मकता विचार शैलीश्च तस्याभ्यन्तंरमस्पृशत् तथा च तंमित्थं प्रभावितः कृतः यत् तस्य कपोलौ अश्रुवः पतितवन्तः।

पुजारी महोदयस्य पुत्रः द्वारिकादासः श्री बाब ूसाहेब देशपाण्डेय एवञ्च श्री भीमराव जोशी महोदयेन मात्र परिचितः एवनासीत् अपितु तस्याध्यात्मिकोपलब्धीन् अपि जानातिस्म। यदा तस्य दृष्टिः भावविह्वलतेषु महानुभावेषु अपतत् तदा तु तमाश्चर्यमभवत्। सः सादरम् तामानीय प्रवचन कर्त्ता महोदयं पुरतः प्रथम पंक्तौ समुपविशेताम्।

प्रवचनः समाप्तमभवत् श्रोतागणः इतस्ततः अगच्छत् परं बाबू साहेब देशपाण्डेयः दादा भीमराव जोशीश्च तत्रैवारुधत् तथा च वक्तारम् स्वपरिचयं दत्वा तस्य विषये किञ्चिदधिकं ज्ञानस्येच्छाप्रकटयत्। सांयोगिकोऽयं मिलनः अग्रे प्रगाढ़ मित्रतायां परिणतः। यदा ते अति संन्निकटं आगतः तदा बाबू साहेबः तथा च भीमरावः एतम् युवा योगी जनम् सम्यक् रुपेणावबोधितः यत् तस्य कादिनचर्या। ध्याने कियत कालं व्यतीत यति भोजनः कियत् सामान्यः सवभावश्च कियत सरलः ऋचुश्च। मनश्च केन प्रकारेणान्तर्मुखीअस्ति। सः कियत् स्वावलम्बी निर्लिप्तश्चास्ति। तथा च कयाविध्या श्रोतृभिः प्रदतराशिः सः मंदिरम् उपहारयति। एतैः गुणैः कारणेन वासुदेवः गोलछतर्य्याम् स्वनिवासः स्थापयत् बहुधा सः स्वसध्या श्रेष्ठि मगनलालः श्री बुलाकी महाराजः, बाबू साहेब, भीमराव जोशी महोदयानां संगत्यां च व्यतीतवान्। साधारणतः भीमरावस्य गृहम् मिलन स्थलः भवतिस्म सम्मेलनोऽयम् एषां मैत्रीं अधिकमपिअदृढ़यत् तथा च तेजनाः मूर्तित्रयः रुपे प्रसिद्धमभूत। किञ्चित्कालानन्तरं वासुदेवः औरगांबादं त्यक्तः तथा पुनश्च जालनामागत्य कतिचिद्दिवसं काली कुर्ती इत्यस्य राममंदिरे व्यतीतवान्। जालनातः सः अकोला आगतः तथा चात्र कतिचिद्दिवसं स्वामी जी डा0 नन्दलाल भारत्याः सहैवावसत्। स्वामी जी एकेन प्रकारेण तस्य गुरोरासीत्। यदातः सः स्वबालिकां पत्नी तस्य पितरौ पार्श्वे त्यक्तः तथा च शाश्वत सत्यस्यान्वेषणे स्वद्युमक्कड़ जीवनारम्भः कृतः। कतिचित् एकादश वर्षाण्यतीतानि। तमनुभूतं यत्

अधुना स्व पूर्वजानां ग्रामम् कालूपुरस्य यात्रायाः समयः आगतः। एषः ई0 1930 इत्यस्यप्रारम्भकालासीत्।

सः अकोलां त्यक्त्वा भुसावलं आगतः। अत्रतः सः प्रयागाय रेलं गृहीतः गृह गमनस्य तस्य इयं रेल यात्रा स्मरणीयः यतः अस्यां यात्रायां तस्य मिलनः वामपंथी एकम् अघोरी बाबा इत्यनेनाभवत्। तृतीय श्रेण्याः यात्री संचयिकाः जनसम्मर्देनपूरितासन्। सः एके प्रविश्य मार्गे स्व विस्तरे उपविशत्। तस्य सम्मुखेव विराजमानः आसीत् अघोरी बाबा। स्वविख्यात अपवित्र पवित्रता त्राटकस्य नीयमानः अधोरी बाबा सतंपैशाचः बम्बई, कलकत्ता, अहमदाबादस्यच धनिक परिवारैरागतः शिष्यैः आवृतः। ते सर्वे प्रयागं गच्छन्तिस्म। स्व तथा च कथित पवित्र सीमा क्षेत्रे वासुदेवस्यानाधिकारः प्रवेशः बाबा जी महोदयं ईषद्मपिनारूचत् तथा च कुपितं भूत्वा सः स्वसम्पूर्णाध्यात्मिक शक्तिं संचय्य अस्य घुसपैठी जनस्य विरुद्धे मौनयुद्धं समारब्धः स्व समस्त गुप्त मानसिक शक्तिं एकत्रीकृत्य बाबा जी इति जनः अपलक दृष्टयावासुदेवं प्रति अपश्यत्। एतम् योगे त्राटकं कथयन्ति। अनेन प्रकारेण बाबा जी अस्य अपरिचित जनोपरि त्राटकस्य प्रयोगं कृत्वा तं अघोरी शक्तेः सशक्त प्रत्युत्तरं प्रदानायेच्छुकः आसीत्। यया सः भयाक्रान्तं भूत्वा तत्रतः पलायतु तथा च बाबा जी स्व शिष्येषु स्व प्रभावं स्थाप्यतेति। बाबा जी महोदयस्याभिप्रायं अवबोधने वासुदेवं नाधिकं विलम्बमंभूत् अतः सोऽपि तथापि सम्मान शक्त्या बाबा जी महोदयस्य त्राटकस्य प्रत्युत्तरं अददत्। द्वौरेव अनेन प्रकारेण एकान्यं प्रति अपलक दृष्टिं /त्राटकं कृत्वा अपश्यत्। बाबा जी तदैव युद्धं विरराम यदा ते स्वकीय मलस्य भक्षणाय गतवान् यथा अनया क्रियया स्व क्षीण शक्तेः क्षति पूर्तिः करोति। अघोरपंथी जनाः बहुधा स्वमलं अभक्षयन्। अघोरी बाबा इत्यस्य प्रतीकारेण र्निभीकः वासुदेवः अवस्थितः अपलकावलोकनस्यायमंसाधारणः कार्यः प्रचलत्येव। रेल यानम् जबलपुरं प्राप्तः। भुसावलतः जबलपुरपर्यन्तस्यास्य सुदीर्घा रेल यात्रायां बाबा अनुंभव कृतः यत्

तस्याध्यात्मिक शक्तिः अपरिचितं केनापि प्रकारेण हानिं नाधिगच्छति। तथा च तस्य शक्तेः समक्षे शक्तिहीन अभवत्। अतः बाबा जी महोदयेन विचारितः यदस्य शत्रुतां समाप्तिरेव श्रेयस्करः भविष्यति। यथा एव रेलम् जाबलिपुरे बरूधत् ते अधः अवतरितः तथा च दर्जन द्वयम् कदलीफलं क्रीत्वा स्व प्रतिपक्षीं उपहारयत्।

अनेन प्रकारेण बाबा जी आगामि यात्रा उत्तम मनोदशयासहारम्भः कृतः परं शीघ्रेव तं एकः एतादृशः आकस्मिकाघातः लक्षितः येन तस्य भविष्यस्य जीवनं परिवर्तितः यथा एव रेलः जबलपुरं त्यक्तः बाबा जी स्व स्थाने उपविशत् वासुदेवः तेन किञ्चिद् कथनस्य अनुमतिं अयाचत्। कथनं न भविष्यति यत् सहयात्रा कर्तारन् शिष्याः बाबा जी तथा चापरिचित् उभयोः मध्ये आध्यात्मिक तुलनायाः प्रगतिं ध्यानोत्सुकतया चापश्यन्। अस्य क्रमस्यान्तिमपरिणामज्ञानाय अपि ते तदेवोत्सुकासीत्। अनुमतिं प्राप्य वासुदेवः अकथयत्। भवान् गुरुवर्यः इदानी जीवितः नास्ति भवदीय एकापत्नी शिशवत्रयश्च ग्रामे सन्ति येषां परित्यागः भवान् असहाय स्थित्यां कृतवान्। अस्तु भवान् मम् विचारं मान्य पुनः तेषां पार्श्वे गच्छतु तथा च एकः सामान्य गृहस्थस्य जीवनारंभ कुरु।

बाबा जी महोदयस्यास्य गुप्त रहस्यस्य ज्ञानः तस्य विद्यमान सहयोगिनम् अपिनासीत्। अतः अनेन रहस्योद्घाटनेन न केवलं बाबा जी महोदयं अपितु तस्य शिष्यानपि आश्चर्य चकितः अकरोत्। एषः रहस्योद्घाटनः एक व्रीव प्रहार समः बाबा जी महोदयं अनुभूतः तथा च ते अतिसमयम् यावत् स्तम्भितम् अवस्थितः बाबाजी महोदयः अनुभूतः यदेषः अपरिचितः युवकः उच्चतमकोट्याध्यात्मिकसिद्धिंमुपलब्धिञ्च प्राप्तः पुरुषः अस्ति। लौहपथगामिनी उचित समयेन इलाहाबादं प्राप्तः तथा चेयं मंडली अवतरितः। बाबाजी इदानी गृहं प्रत्यावर्तितुं सन्नाद्धासीत्।

अघोरी बाबा इत्यस्य मानमर्दनानन्तरे वासुदेवः शीघ्रेव स्वपूर्वजानां ग्रामे कालूपुरे गतवान् तत्रतः समीपस्थेवास्थितः स्व श्वसुरगृहं खेतरपलिया गत्वाधर्मपत्नीं

अनयत् तथा च गोमती पितृव्यस्य गृहे गृहस्थ जीवनारम्भः कृतः। एषा फरवरी 1935 समयस्य घटनास्ति मासद्वयम् पूर्ण वैवाहिक सुखे व्यतीतवान् पर्यटनस्य कृमिः एतम् गृहस्थ योगिनम् पुनश्च डसितः सः जगतस्य गहनतम रहस्यैरावृत्तः ज्ञानस्यान्वेषणे निःश्रितुं स्वां नावरोधयत् अतः एकस्मिन् दिने सः स्वां युवतीं पत्नी पुनश्च तस्याः पितृगृहे प्रस्थापितवान् तां धैर्यपूर्वकं प्रतीक्षाय परामर्शं दत्वानाधिकं वार्ता कर्तारन् तत् स्थानं त्यक्तवान्।

सः अकोलां गतः तथा च स्वामी जी / डा0 नन्दलाल भारती महोदयस्य गृहे रुधितः पर्याप्त समयः स्वामीजी महोदयस्य संरक्षणे मार्गदर्शने च व्यतीतयत् सः पुनरपि पथमारुढन् तथा च स्व प्राच्य स्थानेषु पुनः गत्वा किञ्चित्कालं तत्रैवारुधत्। अनेन प्रकारेण भ्रमणं कृत्वा वर्षमेकमतीतः। सन् 1936 वर्षस्यारम्भकाले सः औरंगाबादे स्वचिरपरिचित मित्राणां यथा बाबू साहेब देशपाण्डे, भीमराव जोशी, श्री बुलाकी महाराजस्य पार्श्वे आगतः। अस्मिन् क्रमे निवासाय सः गायत्री मंदिरस्य समीपस्थ मुरली मनोहर मंदिरस्य चयनः कृतः।

अधिकाशं समयः ध्याने व्यतीतयत् पूर्व तुल्यैव तस्य सन्ध्याः बापूसाहेबः दादा भीमरावस्य सन्निधौ व्यतीतवतः ये इदानीं तस्यात्यधिकं संन्निकटे आगतः। बहुधा ईदृक्सम्पर्के ते स्वाध्यात्म संबंधी समस्याषु एकान्यस्य परामर्शं गृहीतः। यतः तस्य युवामित्राः वासुदेवः आध्यात्मिकोपलब्धिसु तैः अत्यधिकग्रेवर्धितः अतः ते तस्य कतिचिदेवसाहाय्यं अकरोत्।

तेषां सर्वमान्यमतैषः अभवत् यत् परम पवित्रगृहस्थ संत एकनाथ महाराजः एव एतादृश आसीत् ये– तस्यान्वेषणे साहाय्यं भवन्ति। अतः ते तं पैठणं गत्वा संत एकनाथस्य समाधौ शरणं गृहीतस्य परामर्शं दत्तः ते स्वयमपि संतस्याशीषं प्राप्तः अतः ते आश्वस्तमकरोत् यत् पैठणे तस्येच्छा अवश्यमेव पूर्णा भविष्यति। एका नवीनाशया

तथा च तदेकरुप्यकस्य सिक्कया सह यद्यत् बापू साहेबः तं धूम्र गन्त्री यात्रा व्ययाय प्रदत्तः वासुदेवः पैठणं प्रति प्रस्थितः।

पैठणस्तु गोदावर्याः तटे स्थितः। गोदावरीं दक्षिण भारतस्य गंगा इति मन्यन्ते। एतम् निर्जन शान्त उनीदे नगरम् कमपि जनाः केचिज्जनाः वा तीर्थस्थलं मन्यते, यतः अस्मिन् नगरे महान् गृहस्थ संत एकनाथ महाराजः अवसत् तथा चानुमानतः शतचत्वारि वर्षाणि/ 400 वर्ष पूर्वे समाधिस्थोऽभूतएषः ते एव संत एकनाथ महाराजः आसीत् याम् पूना निकटस्थ लघु नगर आलिन्दीं गत्वा संत ज्ञानेश्वरस्य जीवित समाधिसम्पृक्त अजना वृक्षस्य जटाः अपसारयितुं इत्यस्य दिव्य निर्देशः प्राप्तवान्। संत ज्ञानेश्वरः संत एकनाथतः शतद्वय वर्ष पूर्वम् आलन्दी स्थाने जीवित समाधिं गृहीतवान्।

मध्याह्न काले वासुदेवः पैठणं प्राप्तः अस्य नगरस्य यात्रात्रयमासीत्। परं अस्मिन कृमे सः संत एकनाथेन साहाय्यं मार्ग दर्शनञ्च प्राप्तये कृत संकल्पासीत्। तांकतमपि सुदीर्घा प्रतीक्षा कथं न सह्यमानः। एतस्मात् पूर्वेऽपि एकस्मिन् अवसरे यदा वासुदेवः अत्र आगतः संत एकनाथ मंदिरस्य पुजारी श्री भागवत बुआ महोदयः तेन मित्रवत् व्यवहारं कृत्वा संगीतस्य शिक्षा अददत्। यत्रागत्य सः चिरपरिचित ठाकुर हिम्मत सिहस्य पार्श्वे गतः यः पंसारी इत्यस्य व्यवसायं अकरोत्। कुर्वतिस्म वा।

नद्याः पूर्व तटे निम्ब वृक्षाणां सुदीर्घा पंकितरासीत् नदीं गन्तारः मार्गे एकाः ताम्बूलस्य विपणिकासीत्। एषा विपणिका श्री गुलामअहमदनामद्येय एकः पहलवानस्यासीत् यः तस्मिन् परिक्षेत्रे उस्तादस्यरुपें ज्ञास्यन्तिस्म। पहलवान् भूतेऽपि सः तीव्र स्वभावस्य न भूत्वा सह्रदयः तथा च सहायक प्रकृतेः आसीत्। एकस्मिन् दिने गुलाम अहमदः अपरिचित् वासुदेवं मार्गतः भूत्वा स्वकीय विपणिकयाः अग्रतः गच्छन् लक्ष्यं कृतः। तस्य व्यक्तित्वः तथा च मुखमंडलोपरि प्रस्फुटित कान्तिःगुलाम अहमदं वासुदेवं प्रत्याकर्षितः कृतः तंमित्र निर्माणे नाधिकं समयः अतीतः।

स्वध्यान साधनायैं वासुदेवः गोदावर्य्याः रेत संयुक्त तटस्य चयनः कृतवान्। यतः तस्यावश्यकतानुसारमत्र शान्तिः तथा चः यथेष्टेकान्तः आसीत्। नद्याः तटे एकः उपयुक्त स्थानस्य चयनं कृत्वा सः रात्रि ं स्वध्यानारम्भः कृतः। तस्य ध्यानाः घटिकाधिकं प्रचलति बहुधा काकानाम् कॉव–कॉव कायनंवा कृत्य नवीन प्रभातस्य सूचना प्रदानपर्यन्तं।

वासुदेवः अत्र संत एकनाथ महाराजेन् आर्शीवादं एवं मार्गदर्शनं प्राप्तु इति विशिष्टोद्देश्येन आगतः। अतः सः यावत् संतस्य संतः वा आशिर्वादं न प्राप्तः तावत् स्व जागरण ध्यानञ्च समारम्भस्य निर्णयः अग्ड़ीकृतवान्। गोदावर्य्याः रेतीले तटे साधनाकर्तारन् पक्षमेकं व्यतीतः। एकस्यां रात्रौ ध्यानं पश्चात् सः बालुके विश्रामं कुर्वतिस्म। तस्य बाहुः तस्मैं पिद्यानम् इत्यस्य कार्यंकृतवान्। तस्य नेत्रौ प्रवहत् जलम् एकतानतापश्यताम्।

एषस्त्वनुमानतः त्रिचतुर वादनस्यावधिरासीत्। व्यक्तिमेकस्य धवलाकृतिः या जले निमज्जितः बहिरागत वतीतमाकर्षितः कृतः एषः जनः सामान्य/ मझोले शारीरिकस्य तथा च किञ्चित् श्यामवर्णासीत्। स्नानेन निर्मलोभूत्वा धौत वस्त्रं संबन्धय–स्कन्धयोः: वस्त्रमेकं संधार्य हस्ते एकं जलपात्रं वहन्तं असौ जनःबालुके विश्रमितः वासुदेवस्य समीपे गतः। वासुदेवस्य निकटे आगत्य सः मराठी भाषायां अवदत्। अत्रागमनस्य तव कार्यम् पूणर्म् अभवत्। इदानीं त्वं अयोध्यां गच्छ तत्र तव अभीष्ट सिद्धिः भविष्यति। एतेषु शब्देषु पथं प्रदर्श्य सः वासुदेवं आशीर्वादं दत्वा अदृश्यः अभवत्। एषस्तु नान्यः कोऽपि वरन् स्वयं संत एकनाथ महाराजः आसीत्। वासुदेवः हर्षः उत्तेजनायाः अनुभवः कृतः। तस्य हर्षोल्लासस्य सीमा नासीत्। सः संत एकनाथस्य साक्षात् दर्शनं कृतवान्। तथा च तस्य आशीर्वादं लब्धवान् स्वयं संतः तं अग्रे गमनस्य निर्देशः दत्तः। तथा च तं आश्वासनमपि प्राप्तः यत् अयोध्यायां तं स्वान्वेषणे सफलता मिलिष्यसि।

प्रातः भूतेव वासुदेवः मित्रैः अनुमति गृहीतुं वा ग्रहणाय तथा च पैठणतः समयनष्टं विनैव अनुमतिं गृहीतस्य निर्णयः कृतः। यतः अत्र तस्य तपस्या पूर्णा अभूत्। अतः यथा शीघ्रं सः अयोध्यां गतः तथैवोचितः इत्थं सोऽविचारयत् सः उस्ताद् गुलाम अहमदस्य ताम्बूलस्य विपणिकोपरि आगतः तमवबोधयच्च यत् पैठणागमनस्य तस्योददेश्यः पूर्णोऽभूत् तथा च सः अयोध्यां गच्छति् गुलाम अहमदः यः यदेकः संवेदनशील सम्भ्रान्तः तथा च व्यवहार कुशलः व्यक्तिरासीत्। इत्थं ज्ञास्यतिस्म यत् तस्य मित्र वासुदेवस्य किं ध्येयमस्ति। सः तत्परतया समीपस्थेक भोजनालयात् दुग्धं कुण्डलिनी च आनय्य वासुदेवं शुभ कामनाभिः सह प्रयाणकालिक उपहारं समर्पयत् यदा वासुदेवः दुग्धकुण्डलिन्याः रसास्वादं गृहीतः तदा गुलाम अहमदः अपृच्छत्यत् सः केनप्रकारेण औरंगाबादं गमिष्यसि तं प्रत्युत्तरं प्राप्तः पदातिः। तस्मिन्नेव काले भाग्यवशाःत् एकम् कारयानम् ताम्बूल विपणिकायाः समक्षे अरुधत तथा च चालकः ताम्बूलं याचितः। कारयाने नान्यः कोऽपियात्री आसीत्। कारमिदं एकः तहसीलदारस्य आसीत् तथा च चालकः तं प्रत्यावर्तनं औरंगाबादं आनीतः। गुलाम अहमदः चालकं एकतः नीत्वा सः स्वमित्र वासुदेवं औरंगाबादं नीयमानस्य प्रार्थना कृतः। यस्मैचालकः शीघ्रेवसंन्नद्धोऽभूत्। अनेन प्रकारेण वासुदेवः गुलाम अहमदेन सानुमतिं अगच्छत्।

औरंगाबादं गतेसति चालकः वासुदेवं कासूपारक नगर खण्डे त्यक्तवान्। स्व प्राच्य मित्रैः सह वासुदेवः अयोध्यायात्रायाःयोजनायोजितः। तस्य पार्श्वे किञ्चिदपि धनं नासीत्। यतः सः स्वोत्तमवाद्य संयंत्रं हारमोनियमः श्रेष्ठि मगनलालस्य पार्श्वे सुरक्षितः स्थापितः। तदेव विक्रयस्य निर्णयः गृहीतः।

स्योतेत्रयोदशरुप्यकाणि मात्र नीत्वा मासस्य त्रयोदश दिने सः अयोध्यायै यात्रारम्भः कृतः। किम् त्रयोदशस्यांकस्य तस्मै कोऽपि विशिष्टः महत्वः आसीत्। किं वा संयोगमात्रेवायं आसीत्। स तु अस्मात् पूर्वेऽपि सः त्रयोदशतारिकां मात्र त्रयोदश रुप्यकैः सह गृहं त्यक्तवान्। यः कमपि सामग्रीं तस्य पार्श्वे आसीत् तस्मिन् वा तस्यां

मात्रेकयुगलं अधोवस्त्रैः वा धौतवस्त्रम् कानिचित् कञ्चुकानि कम्बलमेकम् जलपात्रमेकं चासीत्। अयोध्यां रेलयात्रायाः व्ययम् एकादश रुप्यकाणि अभवत् यात्रायाः मध्ये पश्चाच्च तस्यावश्यकतानां पूर्तये मात्र द्विरुप्यकेव तस्य पार्श्वे अविशष्टः। परं सम्पत्तेः अभावः तं कदापि विचलितं न अकरोतेति।

ऊँ श्री सदगुरु प्रसादात् पञ्चमः सोपानः अतीतः।

ॐ श्री सद्गुरुवे नमः

षष्ठम् सोपानः

अयोध्यायां अनुष्ठानः

वासुदेवः अयोध्या गमनाय फैजाबाद रेलवे स्टेशने अवतरितः यतः तमयं ज्ञानं नासीत् यत् ऐतिहासिक नगर अयोध्यांयामपि रेल्वे स्टेशनं अस्ति। तस्य पार्श्वे मात्र चत्वाराणकंम् पणकंमवशिष्यासीत्। एकः रिक्सा चालकः तं प्राच्ययोध्या नगरं द्विआणंकेंपणकें गन्तुं स्वीकृतवान्। अवशिष्ट राशिभिः सः स्व भोजनाय चणकंक्रीतः। संध्या समये रिक्सा चालकः तं प्राच्यनगरस्य चतुष्पथे आनीतः। सः मार्ग्रे प्रचलितः तथा च एकेन पथिकेन नगराद् बहिः सरयू नद्यां गन्तारः दिशः विषये अपृच्छत्। तस्य विचारः नगराद् बहिः नद्याः तटे रात्रिं यापनस्यासीत्। दिशा ज्ञातेसति सः संकेतिकं प्रति प्रस्थितः! नगरम् उभयतः सः द्वौ भव्य मंदिरौ अपश्यत्। यः तु मार्गस्य एकैव स्थितः।

एषु मंदिरेषु एकस्य द्वारे नन्दकिशोरासीत् यः तु पूर्वे जालना स्थाने अर्चकः आसीत् तथा च वासुदेवेन परिचितासीत्। उभयोः दृष्टिः एकसहैवापतत्। अस्मिन् अनपेक्षित संगमें उभयोः आश्चर्य तथा हर्षस्य च सीमानासीत्। पुजारी जी, वासुदेवः तीव्र स्वरेण अवदत् पंड़ित जी इति नन्द किशोरः अवदत्। उभयश्च एकान्यं प्रति धावतः तथा च स्नेहेनालिग्ड़नबद्धमभवत्। वासुदेवस्य अयोध्या यात्रायाः उद्देश्येन नन्द किशोरः शीघ्रेवावगतंमभूत्। तथा च स्व मित्राय रात्रौ आवश्यकप्रबधोपरिविचारयन्।

अयोध्यायां पं0 नन्दकिशोरः नेपाली मंदिरे अर्चकः आसीत्। एषः मंदिरः नेपालस्य राजकीय परिवारस्यासीत् वर्तमान नृपस्य पितामही स्वपरिजनैः सह तस्मिन्समये अत्र निवासं कुर्वन्तिस्म् नियमानुसारेण पुजारी महोदयस्यातिरिक्तं अन्य

काचनपि पुरुषं मंदिर परिसरे व्यतीताय इत्यस्य अनुमतिं नासीत् अत्र प्रत्येक कार्य वृद्धमहिलायाः आदेश निर्देशानुसारेण चैव भवतिस्म।

पं0 नन्दकिशोरः वासुदेवस्य स्थितिं स्पष्टः कृतः तथा च सः वासुदेवस्य रात्रौ मंदिरेव व्यतीताय महाराज्याः अनुमतिं प्राप्तेः निश्चयं कृतः। सः वासुदेवस्य उपस्थितेः विषये सविस्तरेणतं अवबोधयत् तथा चानुमतेः इच्छितः यया वासुदेवः तत्र रात्रिं व्यतीतः कृतः। अस्यामुपरि महाराज्ञीएषः आदिशत् यत् मंदिरस्य मुख्य द्वार समीपस्थ कक्षम् अपरिचितम् प्रददातु तथा च तस्मै भोजनस्य व्यवस्थातस्याः पाकशालया कर्तव्यः वा कृतः। महारानी नन्दकिशोरं एषोप्यादिशत् यत् द्वितीय दिवसे प्रातः अपरिचितः मंदिराद् बहिः सोपानानां पार्श्वे स्थितः। यदा सा मंदिरे आरती हेतोः आगमिष्यति तदा वासुदेवं दृष्ट्वा तं परीक्ष्यन्ति तदैव तस्य विषये अग्रिमादेशः आदिष्यन्ति। पं0 नन्दकिशोरः अनेन प्रसन्नोऽभूत् तथा चास्य प्रकारेण वासुदेवः स्व प्रथम रात्रिं अयोध्यायां सुखपूर्वकं व्यतीतवान्। द्वितीय दिवसे प्रातः वासुदेवः मंदिराद्बहिः सोपान पार्श्वे अतिष्ठत्। तस्य शिरः विनीतः तस्य चक्षुः मात्रस्वपदयोः केन्दितः आस्ताम्। तस्यां स्थितौ सः धैर्यपूर्वकं स्वयं राजमात्रा निरीक्षणं कृते जातस्य प्रतीक्षारतासीत्। शीधेव महाराज्ञी मंदिरं आगता, तमपश्यत् तथा च यत्किञ्चिदपि सा अपश्यत् सः तां प्रसन्नेव कृतः अस्य युवायोगी जनस्य शालीनता भद्रतांञ्च अवगते तं अल्पमपि समयो न गृहीतः। तदा ताः वासुदेवस्य संबंधे मंदिर प्रागणे पुरुष उपस्थिति सम्बन्धी नियमम् शिथिलम् कृते संनद्धः अभूत्। तथा च वासुदेवं पञ्चदश दिनम् मंदिर मुख्य द्वार निकटस्थ कक्षे निवासस्यानुमति दत्तः। तस्य भोजनम् राजकीय पाकशालया प्रदानं निश्चितमभवत्।अस्यां मध्येवतं स्वकीय निवासाय अन्यः कोऽपि प्रबन्धः कुर्वतिंस्म्।

वासुदेवः पं0 नन्दकिशोरस्व यात्रायाः उद्देश्यं अकथयत् कोऽपि एकान्त स्थानं प्राप्तकृतस्य स्वेच्छां प्रकटयत्। येन सः अधिक समयं विध्नेन बिना स्वाभ्यासं अकरोत्।

नन्दकिशोरः यथा सम्भव सहायतायाः बचनं दत्तः सप्ताहमेकाभ्यन्तरेव सः आवश्यक एकान्तः समीपस्थ श्री वेकंटेश मंदिरे अन्वेषयत्।

एषः वेकटेश मंदिरः एका प्राच्य धार्मिक संस्था आसीत्। एतम् मंदिरं अस्यानुरक्षण हेतोः एकाः महती जागीर वसीयते प्राप्तः। अनया भवितारः आयः यथेष्टासीत्। कालेऽस्मिन् महंत श्री स्वामी राम प्रपन्नाचार्यः आसीत्। यः तु अनेकानां विधानां विद्यानाञ्च विद्वान पंड़ितः आसीत्। सः रामानुज सम्प्रदायस्य प्रसिद्ध प्रस्तावकः आसीत्। वेद वेदान्तः तथा च शास्त्र व्याख्या व्याकरणे च तस्याधिकारः आसीत्। तथा च निपुणता ईदृक आसीत्। यत् तस्य कीर्तिः समस्त भारते गुंजायमाना आसीत्। सः प्रख्यात व्याकरणाचार्य वाराणस्याः पं0 शिव कुमार शास्त्री महोदस्य शिष्यः आसीत्।

पं0 नन्दकिशोरः स्वामी रामप्रपन्नाचार्य्येन सम्मिलितः तथा च तं वासुदेवस्य विषये तथा च एकः अनुष्ठान हेतोः एकान्तस्यान्वेषणस्य विषये अवबोधयत्।

कश्मिंश्चिदपिविधेः सहायतायाः वचन प्रदानात्पूर्वं स्वामी महोदय वासुदेवेन मिलितुकामासीत्। ते एकः सुनिश्चितः दिवसे मिलितः। वासुदेवः स्वामीजी महोदयं स्वकीय जीवनं तथान्वेषणस्य विषये उक्तवान्। सः तमयमपि अवबोधयत् यत् केन प्रकारेण संत एकनाथ महाराजः तं अयोध्यां प्रति र्निर्दिष्टः। कृतः यदि तं साघना हेतोः आवश्यकेकान्तस्यः प्राप्तिर्भवति तर्हि तु तं महत् प्रसन्नता भविष्यति। स्वामी रामप्रपन्नाचार्यः तस्य सत्यता गाम्भीर्येणचात्यन्तः प्रभावितः अभूत् तथा च सः तत्कालेव मंदिरस्य ऊर्ध्व प्रासादे तस्य हेतोः एक कक्षस्य प्रबन्धः कृतवान्। कृतज्ञ वासुदेवः अस्मिन् कक्षे आगतः।

वेंकटेश मंदिरस्याधिकारी जनाः मंदिरे निवास कर्तारन् भोजनोऽपि प्रदान कुर्वन्तिस्म। परमेषः नियमः अतीव शुष्कासीत् यत् भोजनं मात्रतान् एव मिलिष्यन्ति ये प्रातः सायं उभयोः काले मंदिरे भवितारः धर्मानुष्ठानेषु आरार्तिक्ये च भागं गृहीष्यन्ति

तथा च स्व उपस्थिति दाष्यन्ति एतेष्वनुष्ठानेषु अनेकाः घटिकाः समयः व्यतीताः जाताः। नव निवासी वासुदेवः कश्मिंश्चित् दिनान एतेष्वनुष्ठानेषु उपस्थितः अभवत्। परं शीघ्रेव सः लब्धः यत् एषां समारोहानां पश्चात् तस्य पार्श्वे स्वकीय साधनायै अत्यल्पेव समयः अवशिष्यति। सः शीघ्रेव इत्थं सत्यं ज्ञातः यस्तु तु यदि सः शरीरस्य भरण पोषणस्य च चिन्तायां संलग्नः तर्हि तु तस्यात्मा क्षुधितः अवशिष्यते। परं अस्य विपर्ययोऽपि तदेव सत्यासीत्। भोजनश्यैषः प्रसंगः तं क्षुब्धं अकरोत् अकारयत् वा।

कि स्व शरीराय भोजन एकत्रीकरणे तथा च उत्तम प्रसाधन युक्त जीवनाय एव सः तत्र आगतः नहि नहि कदापि नहि। अस्मात् पूर्वेपि कतिचित् दिनान् सः भोजनेन बिना यापितः। सः निर्णयं गृहीतः यत् सः पुनश्च तादृशेव करिष्यति। सः स्वामी राम प्रपन्नाचार्यस्य पार्श्वे गत्वा स्व समस्यायाः स्पष्टीकरणं कृत्वा मंदिरे उपस्थितेः मुक्तिं प्राप्य सक्तुरासीत्। परं सः अस्मै न अविचारयत्। मंदिरे उपस्थितिं भोजनस्य त्याग कृतस्य च निर्णयं गृहीत्वा सः स्व समयम् अनेकाषु घटिकासु ध्याने व्यतीतवान्।

तस्य दिनचर्या एतादृशी आसीत् यत् प्रातः सः सरयू नदीं भ्रमणाय गच्छतिस्म तथा च स्नानादिना निवृत्य अनुमानिताष्टवादनेस्व कक्षं प्रत्यावर्तितः। पुनश्च स्व कक्षस्येकान्ते सः स्व आसनं संगृह्य गहन ध्याने निमग्नोऽभूत्। एषः ध्यानः अनुमानतः षष्ठाष्टघटिकां यावत् अनवरतः स्थितः। यस्मिन् काले सः ध्यानेन निवृत्तोऽभूत् मध्याह्नस्य चत्वारिवादनोऽभवत्। अस्यानन्तरे सः किञ्चित्कालं शयने विश्रामं करोतिस्म। यया तस्य पादौ पुनश्च कार्यशीलं भवतः।

परं शरीरं आहारस्य निश्चितरुपेणावश्यकतासीत्। उपायमेकं तमवगच्छत्। पूर्वे कतिचिद्वसरेषु सः वृक्षाणां पत्रेषु निर्वाहः कृतः। इदानीं कथंन सः पुजारी महोदयेन प्रार्थना कृतः यत् भगवान शालिग्रामस्य पूजने प्रयुंक्त तुलस्याः एक द्विमुष्टिपत्राणि प्रतिदिनं मंदिराद् बहिरस्थ एकस्मिन् गवाक्षे स्थापितः। असौ जनः स्वाहार हेतवे एतानि पत्राणि गृहीष्यन्ति। पुजारी एतम् प्रस्तावं स्वीकरोतु। स्वीकृतवान्।

स्व भोजनस्य अनेन प्रकारेण प्रबन्धं कृत्वा सः प्रतिदिनं कतिचिद् घटिकायै ध्याने निमज्जितः। ध्यान समाप्तौ तं किंचित्कालं विश्रामं आवश्यकः येन तस्य पादयोः रक्त प्रवाहः गतिश्च पुनरागता। अस्मिन् समये सः तुलस्याः पत्राणि चर्वयति तथा च जलस्य पर्याप्त मात्रया सहतानभक्षयत्। अनेन प्रकारेण सप्ताहमेकं अतीतः मंदिरस्य सेवा कार्ये तस्यानुपस्थितौ अन्य जनानां ध्यानं गतः। तस्यानुपस्थित्या नियमित रुपेणागन्तारः जनेषु कथनानुकथनं भवितारः। मंदिरस्य प्रांगणे वसित्वा कश्मिंश्चिदपि व्यक्तिं मंदिरस्य कार्ये अनुपस्थितिः भूतस्य औचित्यस्य च विषये ते प्रश्नं कर्तारन्। यत् केन प्रकारेण कोऽपि निवासी सेवा कार्येण अनुपस्थितिः वासस्य भूत्वा भूतस्य च स्वतंत्रता स्वयं गृहीतः तथा च सोऽपि कश्मिंश्चित् दण्डेन बिना ? एषः कथनानुकथनःशीध्रेव शिकायतस्य रुपं गृहीतः याम् महन्तः स्वामी राम प्रपन्नाचार्यस्य ज्ञाने आनीतः। आचार्यः किञ्चित् क्षुब्धो विस्मितंस्चाऽभूत् तथा च सः प्रबन्ध अधिकारी महोदयेन वासुदेवस्य कक्षस्य विधीनां विषयेतूष्णीं ज्ञानाय अकथयत्। प्रबंध अधिकारी निर्देशानुसारेव कृतः। सः सूचितवान् यत् वासुदेवः स्वकक्षे प्रगाढ़ ध्याने निमग्नः प्राप्तः। तस्मिन् गतिस्तु लेश मात्रोऽपिनासीत्। तस्य शरीरः काष्ठ तुल्यः प्रतीतः अभवत्। आचार्य महोदयः सर्वान् निर्देशं दत्तः यत् केनापि प्रकारेण वासुदेवस्य शान्तिभंगंनकुर्वन्तु। स स्वयंमपि अस्मिन् सम्बन्धे निरीक्षिष्यति तथा चावश्यकतानुसारं कार्यं करिष्यति।

एकदा स्वामी जी स्वयं अन्वेषणाय ज्ञानाय च गतः। प्रबन्ध अधिकारी समः सोऽपि वासुदेवं प्रगाढ़ ध्याने रतः प्राप्तः सः किंचित्क्षणं तस्याबलोकनः कृतः। स्वामी जी तां बहुधा पश्यन्ति तथा च तमयं अनुभवः भवितारः यत् सः एकः भिन्न प्रकारस्य साधकः अस्ति। एकस्यां रात्रौ स्वामी जी महोदयः तं आहूतम् तथा चोभयोः अति कालं विचार विमर्शः कृतः। स्वामी जी एषः अवबोधयन्तिस्म यत् कस्य प्रकारस्य साधना सः करोतिस्म् तथा च तस्यानुभवाः के आसन्। एषु वासुदेवः सविस्तरंतं स्व साधना तथा

चानुभवानां विषये अभाषयत्। सः एषोप्यवबोधयत् यत् केन प्रकारेण स्वयं संत एकनाथ महाराजः तं तस्य महत्वाकांक्षानां पूर्तये अयोध्यां दिशां निर्देशः कृतः। स्वामी राम प्रपन्नाचार्यः तान् पूर्ण गंभीरतयाश्रुतः तथा च ते वासुदेवस्यानुभवैः एवञ्चाध्यात्मिक दर्शनैः अत्यन्तः प्रभावितः अभवत्। तदा स्वामी जी महोदयः तमग्रे अभ्यासाय रामानुज पंथस्य साधना संबन्धी कानिचित् सुरक्षित रहस्यं बोधयत्। एते गोपनीय रहस्याः मात्र तमेव प्रदाष्यन्तिस्म यः उन्नतिशीलः एवं योग्यभ्यर्थीभवतिस्म स्वामी जी अस्य प्रकारस्य साधनायै वासुदेवेन अधिकं योग्यं कश्मिश्चिदपि न प्राप्तः। स्वामी जी अस्याः वार्तायाः ध्यानं दत्तः यत् न मात्र भोजनस्य विषये अपितु परंवा अन्य समस्तावश्यकतायै तस्य समुचित परिचर्यांम कारयेत्। अनेन प्रकारेण स्वामी जी महोदस्य सह्रदयतां एवञ्च सहायताभिः आश्वासितं भूत्वा वासुदेवः एकेन नवीनोत्साहेन सह स्वप्रयत्नान् अधिकमपि तीव्रतरं चाकरोत्।

स्वामी जी महोदयेन प्रदत्त गोपनीय पद्धत्या कतिचिद्दिनानां अभ्यासोपरान्तेव परिणामः सम्मिलितः। सः परमानन्दें निमज्जितः सः रहस्यात्मकं शब्दं अश्रृणोत्। यस्याः उत्पत्तिः कुतः आसीत्। मात्रेश्वरः एवजानातिस्म पवित्र ग्रन्थानां मंत्रः तथा चोद्धरणः तस्य मानस पटलोपरि समुद्भूतः। वासुदेवः स्वामी जी महोदस्यं एतैः अनुभवैः परिचितमकारयत्। स्वामी जी महोदयाय अयं वस्तुतस्तु रहस्योद्घाटनः आसीत्। यतः तस्य विशति संख्याकाः शिष्याः अनेकानि वर्षाणि साधना कृतः परं कोऽपि ईदृगनुभवः न कृतः। स्वामी जी आश्चर्य चकितः एव्ञ्च प्रसन्नोऽभूत यतः असौ नवागन्तुकः गोपनीय साधनायाः सत्यता वैधताञ्च प्रमाणितं कृतवान्। एतादृशः तस्यकोऽपि अनुयायी न कृतः।

एतादृशः योग्य तथा चाध्यात्मिक युवां प्राप्य स्वामी जी श्री राम प्रपन्नाचार्यः अत्यधिकं प्रसन्नं आनंदितञ्च अभूत्। यत् ते वासुदेवं महन्त पदे प्रतिष्ठाप्य स्वउत्तराधिकारी रुपे प्रतिष्ठापनाय इच्छुकः अभूत्। चेत् वासुदेवः संन्यासं संगृह्य

महन्त पदं स्वीकरोषि तर्हि तु स्वामी महोदयः निवृत्तं भूत्वा योग साधना तथा च पूर्ण संन्यासी जीवनं व्यतीतयिष्यन्ति। स्वामी जी स्व एषा इच्छा वासुदेवो परि प्रकटकरणे किञ्चिदपि समयंनातीतः कः सः प्रस्तावं एतम् स्वीकरिष्यसि ?। स्वामी जी महोदयं सकारात्मक प्रतिक्रियायाः आशासीत्। परं वासुदेवः इत्थं उत्साहितं नासीत्। अस्य प्रकारस्य प्रस्तावः तस्मै प्रथमं नासीत्। वयम पूर्वेऽपि एतादृश प्रस्तावस्य उल्लेखः कृतः यम् वा सः अस्वीकरोत्। अतः सः स्वामी श्रीरामप्रपन्नाचार्यं स्पष्टः कृतः यत् सः एतम् प्रस्तावं स्वीकार्ये असमर्थः यतः सः एकः विवाहित पुरुषः अस्ति तथा च तस्य एकः पुत्रोऽपि अस्ति। अत्रायंमुल्लेखःआवश्यकः भविष्यति यत् प्रारम्भिक 1936 वर्षे वासुदेवं पुत्र प्राप्तिरभूत्। स्वामी जी तस्य विवाहित स्थितिं तर्क संगतं व्यवायंन अमन्यत्। यतः सः तं अबोधयत् यत् सः सरलतया गृहस्थ जीवनस्य परित्यागं कृत्य संन्यासधारणं कर्तुं सक्तः परं तथा च तस्य पत्नी पुत्रस्य च भरण पोषणं मंदिरस्य पर्याप्त आयेन भविष्यति यतः मंदिरं सप्त ग्रामानां महद् जागीरः प्राप्तः। बालकस्य उच्च शिक्षायाः प्रबन्धः विदेशेऽपि भविष्यति। वासुदेवमयं पूर्णतया स्पष्टं अकारयत् यत स्वामी राम प्रपन्नाचार्यः नकरात्मकं उत्तरं न स्वीकरिष्यसि। वासुदेवं महन्तः तथा च स्व उत्तराधिकारी निर्मिताय ते अत्यधिकं उत्सुकं तथा उत्साहितं च आसीत् परं वासुदेवः आमअपि कथने न सक्तः वासुदेवः पुनश्च स्वामी जी महोदयं स्पष्टः कृतः यावत् तस्य पत्नी स्वेच्छया तं संन्यासं गृहीतस्य अनुमतिंनहि ददाति। यस्य परिणाम स्वरुपात् सः स्वयमपि संन्यासिनी विनिर्मिष्यति सः तस्य इच्छा पूर्तेः असमर्थाः अस्ति। तं अकोलायाः डा0 नन्दलाल भारत्याः अनुमतिमपि प्राप्तिं करिष्यति यः एकरुपेण तस्य गुरुरस्ति।

अस्यां परिस्थितौ स्वामी रामप्रपन्नाचार्यः मात्र अयमपि कर्तुं सक्तः यत् वासुदेवेन अकथयत् यत् सः स्व पत्न्या मंत्रणां कृत्य तं अबोधयत्। यत् संन्यासः गृहीतः तर्हि कतिलाभाः भविष्यन्ति। तदनन्तरं सः शीघ्रातिशीघ्रं अस्य हेतोः डा0 नन्दलाल भारत्यापि स्वीकृतिं गृहीतः। अस्मै कार्याय वासुदेवं स्वग्रामकालूपुरे गमनं कृतः। वयम् पश्यदेव

यत् तस्य पार्श्वे किञ्चिदपि धनं नासीत्। नन्द किशोरः पुजारीमहोदयः ते पञ्चविशंति रुप्यकाणि विनियोगाय प्रदत्तः तथा च तस्य शुभ यात्रायाः कामना कृतः।

धर्मपत्नी पार्श्वे गत्वा वासुदेवः धैर्यपूर्वकं तं समस्त स्थित्यावगतमकारयत्। सः एषोऽपि अबोधयत् यत् सा तं संन्यासी विनिर्मिष्यति तर्हि सा तस्याः पुत्रश्चापि सम्पन्न सुखी जीवनं व्यतीतयिष्यन्ति। सः चित्रस्य द्वितीय पृष्ठोऽपि स्पष्टं कृतः। परं यदि सा तस्य संन्यासस्य स्वीकृतिः नददाति तदा तां कठिन अभावग्रस्तः एवञ्च कष्टप्रदजीवनं व्यतीतंयिष्यन्ति। सा पत्युःवार्तां पर्याप्तधैर्येण सह अश्रृणोत्। परं संन्यास स्वीकृतस्यानुमतिं न दत्तः यतः स एव तस्य सुखः सम्पत्तिश्चासीत् एकः सहयोगी तथा च पथप्रदर्शक रुपे पतिः यदि सह वसति तर्हि तुसा नरक यातना भोगायपिसन्नद्धासीत्। परं तं विना तु स्वर्ग सुखमपि तुच्छासीत् पुनश्चमहन्तपदः तथा च तेन सह प्राप्तारः प्रचुर द्रव्यस्य किं महत्वं।

स्ववचनानां पालन कर्त्री सा स्व पतिना सह प्रत्येक सुख दुःखे सहयोगं ददाति। तस्याः' जीवने अभावानां नैराश्यश्च अल्पतानासीत्। परं सन् 1977 वर्षे स्व मृत्यु पर्यन्तं सा असंतोषः वा दुखस्य च एक शब्दमपि पतिना नाकथयत्।

द्वितीय

सर्वदैवसंन्याससंबंधी प्रश्नस्य नकारात्मक निदानानन्तरे तृतीय क्रमे वासुदेवः एकाकी गृहंत्यक्तवान् अस्मिन् कृमेऽपि सः महाराष्ट्रे अकोलामगच्छत्। तं महाराष्ट्रेन विशिष्टानुरागासीत्। यतः अस्मिन प्रान्ते एकनाथ महाराजः रामदासः ज्ञानेश्वरः तुकारामः सदृशाः महज्जनैः विनिर्मित परंपरा अधुनाऽपि जीविता। पुनश्च महाराष्ट्रागमनस्य द्वितीय कारणमिदमासीत् यत् सः अत्र कतिचित्वर्षाणि व्यतीतवान् तथा चास्थानजनानां स्वरुपमपितस्य परिचितासीत्।

एका दुर्धर्षा समस्या आसीत् यस्याः समाधानं तंमकारयत् सासीत् जीविकार्थं साधनएकत्रीकरणस्य। यत सः गृहस्थ विनिर्मितस्य वा यतः सः गृहस्थे वसिष्यति गृहस्थवासीतिनिर्णयः गृहीतः। अतः साम्प्रतम् समयः आगतः यत् धनोपार्जनं कुर्यात् तथा च स्व परिवारं नीत्वा आगतः। अस्मिन्नुददेश्य हेतवेऽपि तं महाराष्ट्रः अन्य स्थानापेक्षया समुचितः प्रतीतः। अस्मिन संदर्भे तं डा0 नन्दलाल भारती महोदयस्य कृपापूर्ण वचनानां स्मरणं अभवत्। यः वासुदेवं आश्वासनो दत्तः यत तस्य द्वारः तस्मै सदैव उद्धृतोस्यात् वा भविष्यति ।

अनेनाश्वासनकारणेनैव वासुदेवः अकोलामागतः। मध्येऽस्मिन् महन्त स्वामी रामप्रपन्नाचार्यः वासुदेवस्य अयोध्यातः गत सत्थनन्तरे कोऽपि समाचारं न प्राप्य तस्य भार्या डा0 नन्दलाल भारतीं च पत्रं लिखित्वा आग्रहः कृतः यत् ते वासुदेवं तस्य उत्तराधिकारी पदाभिषिक्त हेतवे सहमतं अकारयत्। डा0 भारती महोदयः वासुदेवं सन्यास ग्रहणस्य अनुमति न दत्तः तथा च नैव तस्य पत्नीमपि। अतः अनन्तरे महन्त स्वामी राम प्रपन्नाचार्यः अधिकावधिं न जीवितः षट् मासानन्तरेव ते स्वर्गं गतः।

पुनः अकोलां प्राप्य वासुदेवः डा0 नन्दलाल भारती महोदयस्य गृहं गतः वासुदेवः तं स्वामी जी कथयित्वा सम्बोधयतिस्म यतः एकप्रकारेण ते तस्य गुरुरासीत्। डा0 भारती वर्षाणि पूर्वम् अनेन युवकेन स्व सम्पर्कस्य स्मरणंकृतः तथा च प्रारम्भिक प्रश्न प्रति प्रश्नानन्तरे सः वासुदेवं परामर्शो दत्तः यत् इदानीं सः तेन सहैवावसत् तथा चौषधि विज्ञानस्याध्ययनं करोतु इति।

एषः अग्रे चलित्वा तं स्वजीविकार्जने सहायकः भविष्यति। एषः प्रस्तावः वासुदेवं सर्वथोपयुक्तं प्रतीयते। यतः सः सामप्रतम् स्थिर जीवनं जीवितुं निश्चयः कृतः। यदि त्वम् मम् अति सन्निकटे निवसिष्यसि तर्हि तु मम् दोषः न्यूनतां च अन्विष्यसि इति। स्वामीजी महोदयः विनोद कर्तारन् अकथयत्। नहि स्वामी देवः कदापि नहि।

भवादृशेन मम् सम्बन्धाः एतादृशाः सन्ति यस्तु माम् भवताम् न्यूनता कदापि न दृष्टिगोचरी अभूत्। वासुदेवः दृढ़तयावद्त्।

अनेन प्रकारेण 1937 रवीष्टाब्दे वासुदेवः डा0 भारत्याः औषधालये साहाय्यक रुपे कार्यरतं भूत्वा आयुर्वेदिकः होम्योपैथिकश्च चिकित्सा प्रणाल्याध्ययनारभं अकरोत्।

डा0 भारती एकः आयुर्वेदाचार्यासीत् तथा च तस्य व्यवसायः अत्युत्तमः आसीत्। तस्यौषधालये होम्योपैथ्यारप्येकः कक्षासीत्। यस्यां तस्य सहायता एकः बंगाली होम्योपैथः डा0 झा महोदयः कुर्वतिस्म। तत्र चत्वारो सम्मिश्रकाः अपि आसन्। येः डा0 भारती महोदयस्य साहाय्यं कुर्वन्तिस्म वासुदेवः स्वकार्याध्ययनं च होम्योपैथी औषधालये समारभत्। सः डा0 झा महोदयं रोगिनां परीक्षण कर्तारन् अतीव सूक्ष्मतः अपश्यत् । रोगिणां रोगान् लक्षणान् तथा च चिकित्सकस्य निदानः औषधीनां रोगिणाञ्च प्रगत्यादीनां एकः मानसिकचित्रः सः विनिर्मितवान। स्वावकाशः क्षणेषु सः चिकित्सा विज्ञानस्य पुस्तकान्यप्याध्ययनं करोति तस्ययमवलोकनः तथाध्ययनश्च अनेन प्रकारेण गंभीरतयाभवत्। यतु एकसप्ताहेव तं आत्मविश्वासः भवितारः यत सः सामान्य रोगाणां निदानं कृत्वा औषधिदातुं शक्तः। स स्व ज्ञानोपयोगः कतिचित् रोगीषु कृतः तथा च तं आवश्यकौषधिं दत्वा प्रेषयत्। इमान् रोगीन् तत्कालेव लाभोऽभवत् यसिमन् विषये सः ते तं द्वितीय दिवसे असूचयत्। सोऽपि रोगिनां शीघ्र स्वास्थ्य लाभेन प्रसन्नतानुभवः कृतः तथा च तस्यात्मविश्वासे द्विगुणितंबृद्धिरभूत्।

यथ यथा दिवसातीताः अधिकाधिक रोगिणः वासुदेवस्य परामर्श ग्रहणारम्भं अकुर्वन्। डा0 झा महोदयस्य लोक प्रियता न्यूनाभविता यतः रोगिणां कृते लघु स्वामीरेव वास्तविकः चिकित्सकः आसीत्। ते स्नेहेन वासुदेवं लघु स्वामीति अकथयन्। तस्यौषध्यातान् शीघ्रेव रोगमुक्तता अलभन्। डा0 झा महोदयं स्व स्थिति परिज्ञाने न विलम्बः जातः तथा च शीघ्रेव सः तत् स्थानमत्यजत्।

एषाः स्थितिः केन कारेणेनोत्पना जाता अस्यानुमानः न कठिनः। स्वामी जी महोदयेन सह व्यतीतं समस्तावधौ वासुदेवं प्राप्त सफलतायः श्रेयः न केवलं औषधि विज्ञानाध्ययनं प्रति सत्यनिष्ठा सूक्ष्मावलोकनं चासित। परं तस्य गहनान्तर्दृष्टिंमप्यास्ति या तं स्वकीयाध्यात्मिक शक्त्या प्राप्ता, एतादृशाः कतिचिदवसराः आगताः यदाध्यात्मिक शक्तिः तं रोगनिदानोपचारे च सहायता कृता यया डा0 भारत्याः औषधालये आगन्तारः रोगिनः शीघस्वास्थ्यलाभोऽभवत्।

ईदृगेवेकः प्रसंगः ध्यानं दातुँ योग्योऽस्ति डा0 भारत्याधीने षट्मास पूर्णतानन्तरे शीघ्रेवेका घटना संघटिता। एकदा एकातरुणा रोगिणी अर्धायुवती अग्रजया सह डा0 भारती महोदयेन परामर्शं ग्रहीतुं आगता। तौ बहुकालं प्रतीक्षारता परं चिकित्सकः नागतः। महिलयोः अग्रंजा व्यग्रं भवितारः। एकः सम्मिश्रकः तं परामर्शो दत्तः चेत् यदिसा शीघ्रतायां अस्ति तर्हि तुसा लघुस्वामीतः परामर्श गृहीतुं शक्तः। असयोपरि अर्धायुवती वासुदेवंसमीपं गत्वा तं युवा कन्यायाः परीक्षणं कृत्य औषधि दातुं अकथयत्। वासुदेवः अनिच्छुकासीत् यतः सः स्वभाववशात् महिला रोगीभ्यः दूरेव वासस्य प्रयत्नं कुर्वतिस्म्। सः स्त्रीभ्यः पृथग्वासस्याभ्यासः अकरोत्। बस यानेष्वपि सः महिला यात्रीणां निकटे नतिष्ठति युवा कन्यायाः परीक्षणं प्रति तस्य इयमनिच्छा अग्रजां उत्तेजितः कृतवान्। सावदत्त् तदा भवानत्र केन प्रयोजनेन तिष्ठति ? किं भवान् प्रदर्शनवसतुरस्ति। यदि भवान् महिलानाम् परीक्षणं कर्तुं न शक्तः तर्हिकिं न भवान राजमार्ग कूले कश्चिद् वृक्षस्याधोभागे नापितस्य विपणिका स्थापितः। तया कटाक्ष कर्तारनकथयत्। एषस्तु नैव कटाक्षोऽस्ति अपितु चुनौतीरप्यासीत्। सः युवा कन्यायाः परीक्षणाय तत्कालेव उत्तिष्ठत्। नाडीस्पन्दनं गणयितुं तस्याः हस्तं गृहीत्वासः अन्यद्वीक्षयन् किञ्चिच्क्षणानन्तरे सः तस्याः बालिकायाः जन्मतः आरभ्य तद्दिवसस्य जीवन गाथा वर्णनांरम्भः कृतः। तस्य समस्त रहस्याः प्रकाशिताः अभवत्। अनुमानतः

अर्धघटिकां तस्याः जीवनी पठनानन्तरे सः तां आवश्यकौषधयः दत्वा आश्चर्य चकिता अवाक् एवञ्चास्तब्धास्थिता अग्रजा भगिन्यासह सम्प्रेषयत्।

अतः परं इमे महिले कदापि चिकित्सालये नागताः सः न जानाति यत् अस्य धटनायाः चर्चा सः डा0 भारत्या कृतः न वा। यदि तेन कृतः अपि तदापि स्वामी महोदयः तं एक शब्दमपि नाब्रबीत्। परं एकदा अस्याः घटनायाः अनुमानतः वर्ष द्वयमनन्तरेतं स्वामी महोदयेन सह कमपि रोगीं निरीक्षणाय गमनं कृतः। तौ घोटकं वाहने स्थित्वा गतवन्तौ स्वामी जी मार्गे अनयोः निवास संस्थाने अरुघत् स्वामी जी गृहान्तः अगच्छत् तथा च सः घोटकवाहनेव स्थितः। आभ्यां महिलाभ्यां सह स्ववार्तालापक्रमे स्वामी महोदयः अनायासेव एषः उल्लिखितः यत् लघु स्वामी बहिः घोटक वाहने प्रतीक्षारतः। अस्यामुपरि ज्येष्ठा महिला शीघ्रतया बहिरागता। वासुदेवहस्ताभ्यां गृहीत्वा गृहे अनयत् तेनसह पूर्ण शालीनता एवं मर्यादया च सह व्यवहारः व्यवहृत्तः।

समयेन सह होम्योपैथी तथा चायुर्वेदिक औषधि विज्ञाने वासुदेवस्य प्रवीणता उच्च स्तरंगतः। सः इमे एव पद्धत्योः सफलता पूर्वकं उपयोग कार्याय शक्तः वयम पूर्वेव अपश्यम् यत् तस्य हस्तयोः एक विशेष रोग नाशकः प्रभावः आसीत् रोगी उपचाराय तस्य पार्श्वे बहुलतया आगच्छन्। बहुधा विद्वान् स्वामी महोदयस्यापि ते उपेक्षारताः यस्याः ते सम्मानः कुर्वतिस्म तथा च गत अनेक वर्षैः परामर्शं अगृहयत्। स्वामी महोदस्य नियमित पुरातनः रोगीमपि अधुना मात्र लघु स्वामी महोदयेन उपचार प्राप्तुं इच्छुकः।

वासुदेवः स्व अस्य वचनं प्रति यत सः स्वामी महोदयस्य न्यूनतां कदापि न पश्यिष्यति। निरंतरं जागरुकं भूते स्वामी जी महोदयस्य अन्तरंग मित्रैः अति सावधानतया दूरं स्थितः। शिष्टाचारवशात् अति आग्रहेण प्रदत्त निमंत्रणानपि सः नम्रता पूर्वकं अस्वीकरोत। अति नियम निष्ठया सह सः शिष्यस्य गुरुं प्रति सम्मान

पूर्णं गुरुतर संबंध स्थिरः कृतः। योगस्य विषये डा0 भारत्याः शिक्षण योग्यः किमप्यधिकं नासीत् वस्तु तस्तु वासुदेवं योगाभ्यासानां किञ्चिदशुद्ध दिशानिर्देशं प्राप्तुं इतिं कारणेन एकः तीव्र मुख पीडायाः आकृमणः तस्योपरि अभवत् अतः तं एतत् प्रकाराभ्यासं परित्यक्तः।

जीवनस्य वर्षत्रयाणि एकान्यतः सान्निध्ये यापितेन डा0 भारतीं स्व शिष्य जीवनं तथा च तस्याध्यात्मिक गाम्भीर्य्यं समुचित रुपेण अवबोधनस्यावसरः मिलितः। स्वामी जी महोदयः वासुदेवं अत्यन्त प्रसन्नं भूत्वा परामर्शो दत्तः यत् तं सन्यासी महन्तं वा विनिर्मित्य रिसोड़ समीप वाशिम तहसीले भड़ जागीरस्य निरीक्षणं कर्तव्यं जागीर सम्बन्धी प्रस्तावमेतं वासुदेवस्य अनुमोदनं न संप्राप्तः। सः दृढतया परं नम्रतया प्रस्तावमेतं अस्वीकरोत्।

अस्यान्तराले वासुदेवः औषधि विज्ञानस्य स्वाध्ययनाभ्यासं डा0 भारत्याः—छत्रछायां सततं प्रचारितः। एकदा डा0 भारत्याः कश्मिश्चित् घनिष्ठ परिचितः संयोगवशात् कटाक्ष कर्तारन् अवादीत् यत् तं अधुना स्व औषधालयं वासुदेवं समर्पयेत यतः सः रोगीनां प्रेमपात्रं विनिर्मितः। डा0 भारतीं साम्प्रतं सेवामुक्तं भूत्वा सन्यासी जीवनं व्यतीतयेत् तथा च तस्य जीवन निर्लिप्तः एव त्यागमयं भवितव्यम्।

इयम् वार्ता भारती असौ विश्वासः अदद्त् यत् तस्य प्रिय शिष्यः वासुदेवः इदानीं स्वयं औषधि विज्ञान व्यवसाय रुपे समारभ्य जीवनं स्थायित्वं प्रददात्। अतः डा0 भारती वासुदेवं परामर्शयत् सः यत्रापि इच्छया इच्छितः तत्र गत्वा स्वकीय व्यवसायारम्भं करोतु। अस्य कतिचिद्दिवसानन्तरेव वासुदेवः स्व गुरुवेः अनुमतिं संगृह्य विशद् जगति निःसृतः। परं डा0 भारत्यानुमति ग्रहणात्पूर्वतं एकं प्रचण्डाघातं सहते। यस्योललेखः आगामि अध्याये कृतः।

श्री सद्गुरु प्रसादात् पूर्णेति षष्ठम् सोपानः

ॐ श्री सद्गुरुवे नमः

सप्तमः सोपानः

पूत संगमे स्नानं

डा0 भारत्याः औषधालयतः स्वकक्षे पुनरागते प्रत्यागते वा वासुदेवं नैराश्य रुपकं दैत्यः स्रंगृहीतः डा0 भारत्याः असौ कथनं यत् त्वमिदानीं सुयोग्यो अभूत् तथा च यत्रेच्छाभूः तत्र गत्वा स्वकीयं व्यवसायं आरभतु। तस्य मस्तिष्केः अनेक समस्याः जन्मंमददत्। गतवर्षत्रये डा0 भारत्याः समर्थमार्गदर्शने तं पर्याप्तात्मविश्वासं जागरितः। रोगाणां निदाने तथोपचार कर्तुंमपिसः ख्यातिं लब्धवान्।

परं प्रशिक्षणस्य समयः अधुनापूर्णजातः अद्यावधिं तस्य समस्तावश्यकतानां पूर्तिः डा0 भारत्यामवतिस्म, अस्मिन् विषये सः कदापि चिन्तितं नाभूतः। परं साम्प्रतंत धनोपार्जनं आवश्यकासीत् स्वयं कृतेव नहि अपितु स्वधर्म पत्नीं शिशुभ्यश्च कृतेऽपि इदानीं तं स्व परिवारं सहैव वासार्थं हेतवे आनीतस्य समयः आगतः सः पत्नी शिशुनां च नाधिकोपेक्षां कर्तुं शक्तः।

अधुना किं कर्तव्यम् ? सः स्वकीयौषधालय उदघाटनस्य विस्तारस्य च निर्णयमपि संगृहीतः परं तस्य पार्श्वे प्रारम्भिक व्ययाय पर्याप्त धनमपिनासीत् तस्य पार्श्वेतु निकटस्थ नगर गमनाय बस यानस्य अर्थव्यवस्थापि नासीत्। यदिसः केनापि प्रकारेण स्वकीयौषधालय स्थापितुं सफलमपि जातः अभूतवा तथापि निर्धनः एवं असहाय जनानां प्रति दयामयस्वभावकारणवशात् सः स्वपरिवारस्य मूलावश्यकतानां पूर्तयेऽपि यथेष्ट धनार्जनं करिष्यति विषयेऽस्मिन् संदिग्धासीत्।

परितः चिन्ता निराशाच तं दुःखस्यानन्तगर्ते पतितोन्मुखः कृतः प्रागेतत् सः एतादृक मानसिकं कष्टं पीडायाश्चानुभवः न कृतवान्। बाल्यात प्रभृति तद्दिवसस्य तस्य जीवनः चलचित्र तुल्यं तस्य मस्तिष्क पटले उटंकिताः अभवत्। सः मृत्यु

शय्यायां स्थिता स्वां प्रिय मातुः पीत वर्णं भूमौ तस्यान्तिम क्षणस्य तं स्मरणमभवत्। तदा सः त्रिवर्षदेशीयाः आसीत्। भविष्यति वा तदानीं सः गोल्डन मध्य वेस्ट कोरट जार्ज टाउन ब्रिटिश गुयेना साउथ अमेरिकायां स्थित स्व पितुरग्रजं गृहे अट्टालिकोपरि अक्रीडत्। मध्याह्नकालासीत् तस्य मातुः मृत्यु मुखे आसीत् तदा सः अयमपि न जानातिस्म यत् किं नाम मृत्युः। तेन वा सोस्मास्तिः यत् केन प्रकारेण उत्सुकतया सः अट्टालिकायां भ्रमन्ती पतंगं अपलक दृष्ट्याअवलोकितः तथा च केन प्रकारेण शीघ्रतया तं अधः तस्य प्रियमातुः शयन कक्षे नीतवान् यत्र तस्य स्नंब्रंधयः समीपवासीमित्राः समुपस्थिताः। तदिस्टरस्य रविवारः आसीत्। कोऽपि पवित्र ग्रन्थः तारस्वरेण पठितवान्। पठितः। तस्य पितुः अपि तत्रैवासीत्। तं तस्य मातुः पार्श्वे आनीतः यातुतमपश्यनेवरुदनंमारभत्। तस्यान्तःसमीपतरेव प्रतीतः। तस्य जनकः तेन मातुः मुखे किञ्चिज्जल निपातनाय अकथयत्। तं स्मरणमभवत् यत् केन प्रकारेण सः किञ्चिज्जलं तस्याः प्रस्फुटित मुखेक्षिप्तः। सा किञ्चिज्जलमेव अपिवत्। शेषस्तु तस्याः आननस्य कोणतः बहिर्गतः। किञ्चिच्क्षणानन्तरेवताः सावादिवंगता। तस्याः नेत्रयोः दिवंगतानन्तरेपि अश्रवः आसन्। तत् पश्चात्मातृहीन बाल्यावस्थायाः अनेकानि वर्षाणि व्यतीतानि। एतेषु वर्षेषु तं विविध अलौकिक दर्शनमपि संप्राप्तः यस्मात् कारणात् वायेन कारणेन तं अन्येभ्यः बालकेभ्यः भिन्नस्थितिं प्राप्ताः। पुनश्च तस्य मस्तिष्क पटले जार्ज टाउनतः भारतागमनाय दृश्य समागतः। भारताय जलयात्रा प्रारम्भात् पूर्वं तस्य पिता तस्य मातुलं मातुलानीं, तथा च मातामहः यथेष्ट सम्पत्तिः अथ च स्वकीय व्यापारः निः शुल्कं एव समर्पितवान् तस्य मातुलः मातुलानी तथा च मातामहः यावत् सः दक्षिण अमेरिकां त्यक्तः तस्य कदापि अन्वेषणं न कृतः भारतागमनस्य कतिचिदेव वर्षानन्तरे तस्य जनकः रामेश्वरमपि तं अनाथं त्यक्त्वा स्वर्गगतः अस्योपरान्तेऽपि अमेरिकावासी तस्य संबंधयः तस्य चिन्तां न कृतः।

तं सेवई ग्रामे पित्र्यासहयापितः स्व जीवनः स्मरितः। तस्य जनकः तं प्रति कटु व्यवहारी निर्ममश्चासीत्। तं इदमपि स्मरणं अभवत् यत् तस्य पिता अति कुद्धो आसीत् यदा सः स्व आयु वर्गस्य बालकानांसमेव पाठशाला गन्तुं स्व इच्छां प्रकटितः। स्वपित्र्या संस्कृताध्ययनाय बनारसं प्रेषयितुं अनुनयविनयौ कृते तं स्व सुकोमल पीठोपरि आधादेव असह्यत्। विद्याध्ययनं विहाय तं गावः महिष्याःसाहचर्ये क्षेत्रे जीविकोपार्जनाय प्रेषितः। यदा सः पञ्चदशवर्षीयः अभवत् तस्य पितुरपि दिवं गतः तदा आगच्छत् तस्य जीवनस्य तदल्पकालः यः सः स्व सुदमिया पितृस्वसया तं सह व्यतीतवान्। सुदामिया पितृ स्वसातं वास्तविकेषु सत् स्नेह कर्तारन् अग्रगण्यासीत्। कालूपुरे तं तिरस्कारंस्य कटुतमानुभवाः अभवत् विद्याध्ययनाय प्रार्थनां कृतोपरि कुलगुरुः तं अस्पृश्यं कृत्वा अन्यतः पृथक् दूरेव स्थापितः। यत् अन्याः जनाः अपवित्रं न भवन्ति।

विविध स्थानेषु स्वभ्रमणस्य एतादृक् प्रलम्बित वर्षाणां चित्रम् तस्य मस्तिष्के प्रस्फुटितः। तं अगणित विपत्तीनां संमुखं कृतवान् परं इत्थं अवश्यमेवाभवत् यत् तं दिव्यदर्शनं अभवत् तथा च दिव्य पुरुषाणां सान्निध्येन सः धन्यः अभवत्। अजमेरस्य ख्वाजा साहेबः तं स्वर्णेन उपहारयत् तथा च सः तस्य इच्छा पूर्तेः वर प्रदातुं अपि सन्नद्धासीत्। वा तत्परासीत्। परं सः कस्यापि उपकारं न तु इच्छितः नैव स्वीकारितः। सः अजस्रम् दृढ़ संकल्पेन सह दिव्यानंदस्य अन्नेवेषणे रतः। सः केनापि प्रकारस्य भौतिक सुखस्य चिन्त्येव न कृतः। तं दिव्यत्वं एवं परमसत्यस्यान्वेषणस्य प्रेरणा वेदोपनिषदैः श्रीमद्भागवदादिभिः संप्राप्तः। भगवान् कृष्णेन अर्जुनं प्रदत्तोदात्तशिक्षाः तं सात्वना एवञ्च धैर्य प्रदात्री आसीत्। परं दुःख निराशायाः अस्मिन् अधंकारमय क्षणेषु गीतायाः उच्च शिक्षाः अपि तं सान्त्वनां दातुं न समर्थाः सक्ताः। ईश्वरस्य शरणागतिं गृह्यतु सदाचारस्यंपालनञ्च कुरु। इमानि सर्वाणिवस्तूनि त्वया प्राप्स्यन्ते नभ चराणां अवलोकनं कुरू। ते न तु बीजानिवपन्ति

नैव क्षेत्रं कर्तयन्ति नैवं तं खलप्वां एकत्रयन्ति। तदापि तव दिव्य पिता तं भोजनं प्रददाति। किं त्वं एतेभ्यः उत्तमास्थित्यां न अस्तु। ? क्षेत्रेषु भवितारः रजनीगंधायाम् विचारं कुरु। ते केन प्रकारेण विकसन्ति न तुते परिश्रमं कुर्वन्ति नैव वस्त्रेभ्यः सूत्रं निर्भायन्ति पुनश्चाहं त्वां कथयिष्यामि यत् सम्राट सोलोमोनः स्व राजकीय वस्त्राभूषणैः सह तेभ्यः कश्मिंश्चिद् एकमपि समः सुसज्जितः नासीत्। भोः अल्प श्रद्धाभावी चेत परमेश्वरः क्षेत्रेषु भवितारः तृणमपि अनेन प्रकारेण सुसज्जितं करोति तत्तृणं यदद्यास्ति तथा चश्वः एव यः अग्नौ प्रक्षिप्यते। किं तत् त्वां नाधिकं सज्जितं करिष्यति ? सः बाल्यकाले संत स्विदिनेषु शिक्षितः बाइबिलस्यापि स्मरणं कृतः। ईश्वरीय शक्त्याशयाचोतप्रोताः इमानि शब्दानि तं रिक्ताः निरर्थकञ्च प्रतीतयत्। अनेकेभ्यः वर्षेभ्यः सः ईश्वरः तथा च परम सत्यस्य अन्वेषणातिरिक्तं किं कुर्वतिस्म ? तथा च तं प्रतिफले किं प्राप्तः ? निः संदेहादेव तं कानिचित् दिव्य आलोकाः मार्ग दर्शनञ्च प्राप्तः। परं अस्ति सत्य शान्तिः परमानन्दः कथितः तत कुतः आसीत् यस्य गुण गानः वैदिक ऋषयः सतपुरुषाः परमोत्तमम् कथयित्वा कृतः। ओह माम् कियत् कालं एषः कटु चषकः पाययिष्यते। निराशायाः अथाह समुद्रस्य खातेषु निमज्जितः तस्य हृदयः पीडया आर्तः चीत्कारितः। एतं दुःखमय जीवनं जीवितस्य किमौचित्यमस्ति ? तस्य संतप्त हृदयः उत्तरं प्राप्तुं चीत्कारितः। नास्ति किञ्चित् न किमपि। तं प्रतीतमभवत् यथा केनापि जनेन वार्तां करोति। आत्महत्याः कर्त्तुं तस्य हृदये विचारः उत्थितः। कथंन दुखःपूर्णास्यनैराश्य जीवनस्य व्यथित कष्टमय जीवनस्य अभावग्रस्त कठिन जीवनस्य अन्तं कारयेत्। कथंन पुनः पुनः हृदये उत्थितारः इमां पीडां एकबारमेव सदैव हेतवे समाप्तं कारयेत्। आत्मघातः तं अति न्यूनः लघुः। सुगम मार्गञ्च ज्ञायते। मृत्योरालिंगनं कथं करवाणि। किं सः स्वयंकीय /पाशबन्धस्य मुखतः संधारयामि विषस्य वा उपयोगं करवाणि। तं विभिन्न विषानां/गरलानां पर्याप्त ज्ञानं आसीत्। सः अति मात्रायां निद्रा आगन्तारः गोलिकानामपि सेवनं कुर्वतिस्मः यत्तु एकम् कष्ट रहितं

अन्त प्राप्तिं कारयिष्यतिस्म निश्चयादेव एतेषु कोऽपि उपायः तस्य व्यक्तिगत चिंता व्यथानां अंत कर्तुं सक्तः। परं सः चेत् आत्मघातं करोति तर्हि तु तस्य पत्नी एवञ्च बालकानां भविष्यः किं भविष्यति ? किं आत्मघात प्रयत्नः तस्य जीवनस्य समस्यानां सत्यनिष्ठा दृढ़तया च प्रत्यक्षीकरणं प्रति अनिच्छाथवा अयोग्यतायाः फलस्वरुपोत्पन्नः पलायन भावस्य परिचायक न भविष्यति किं तस्य पत्नी बालकाश्च अपमानितं न भविष्यति ? तथा च किं सः चेत् आत्मघातं करिष्यति तर्हितु तं तस्य दुष्परिणामः न सहिष्यते भुक्तवन्तिष्यते। सततोत्पादितः एतेषां कष्टप्रद विचाराणां पीडायाश्च मूल कारणं तस्य धनोपार्जनं कृत्वा पारिवारिक पालन पोषणस्य अयोग्यता आसीत् साम्प्रतं तं प्रति सः उदासीनः अभूतः। गतः वा।

परं सः अनयोर्मध्ये केनापि/ कस्यापि बहु प्रचलित विधिभिः आत्मघातं न कर्तारः आसीत्। तं योगे प्रयुक्त रेचक कुम्भक नाम्ना एका विधेः ज्ञानं आसीत् यस्यां श्वासावरोधः भवति रेचकोऽयं कमपि आत्मबोधं कारयितुं तथा च कुंडलिनी सुषुप्त सर्प शक्तिं वा जागृतयेक्षमतां स्थापयतिस्म। घोर नैराश्येनावृतः वासुदेवः एतां विधिं उपयोगेआनीतस्य दृढ निश्चयः कृतः सः नाल्पमपिश्वासं ग्रहणस्य निश्चयः कृतः। चेत् अनया मृत्युर्भवति यतः श्वासं बिना जीवनं न संभवः तर्हि तस्याः स्वागतमस्ति। परं तस्य विपरीतः चेत् अनया कुंडलिनी जागृतं भवति तत्तु अत्युत्तमः भविष्यति। वास्तविकेषुः एषस्तु तस्य जीवनस्य उददेश्य पूर्तिः भविष्यतै सः तस्यां रात्रौ रेचक कुम्भक विधिं परीक्षणस्य निश्चयः कृतः। अत्रायम् उल्लेखः करणीयः यत् वारमेकं पूर्वेऽपि नवम् वर्षस्य अवस्थायां तं कुण्डलिनी जागरणस्य अनुभवः संप्राप्तः। रात्रौ सः स्वकीयं स्वकक्षे आवृतः कृतः। सः कक्षमध्ये भित्तौ स्थितः समय चक्रिकां अपश्यत् स्थितः। प्राणायामाभ्यासेन सः शनैः शनैः प्रश्वासभिः वायुं बहिः त्युक्तुं आरभत्। यदा सः स्व फुस्फुसेषु वायुः समस्तं बहिः प्रक्षेपर्णे सफलोऽभूत् सः सन्मुखस्थित घटिकांम पश्यन् अचलं स्थितः। सः स्वासं न गृहीतुं/ग्रहणस्य च निश्चयोपरि दृढ़ः आसीत्।

तस्य ध्यानः पूर्णरुपेण मस्तके भुवोर्मध्ये उपस्थितः स्वर्णिम प्रकाशोपरि केद्रितः आसीत्। तस्य फुस्फुसे/ह्रदय संयंत्रे वायोः न्यूनता भवितारः एकैकसेकेण्डः कृत्वा एकः मिनटः व्यतीतो जातः। तस्य पूर्ण शरीरः प्राणप्रद वायोः न्यूनतायाः प्रतिक्रिया व्यक्तं कर्तारन्। एतादृक् प्रतीतमभवत् यथा शीघ्रेव मृत्युर्भविष्यति् परं वासुदेवः मात्र इच्छा शक्त्या वायुं बहिरेव स्थापितः। तृतीय मिनटमपि व्यतीतः। सः मृत्युं स्वकण्ठांवरोधस्य अनुभवः कृतः। एतादृक् प्रतीतोऽभवत् यथा सः श्वासावरोध कारणेन मृतं भूत्वा पतितः। चेत् मृत्युरेव अन्तः अस्ति तर्हितु तं आनयितव्येति, सः केनापि प्रकारेण वायुं फुस्फुसेषु ह्रदयतन्त्रेषु प्रवेशावरोधस्य निश्चयः कृतः किञ्चित् कष्टप्रदः क्षणः अतीतः। पिपीलिकाः प्रचलन सदृश्यानुभूतिः तस्य पादयोः अंगुष्ठाभ्यां प्रारभ्य मंदगत्या ऊर्ध्वं प्रति अग्रसरः अभवत् एषानुभूतिः तस्य नितम्बौ गत्वा मेरुदण्डस्य निम्नभागे प्रविष्टाजाता। अत्र तं जलबुदबुदःउत्थितस्यानुभवः अभवत् यत्तुविद्युद्धारया इव सुषुम्ना गुहातः ऊर्ध्वं प्रति विस्तृत्य ग्रीवांभागं गतवान्। तं मृत्योः आभासं अभवत्। आसन्न मृत्योः अस्य अनुभवस्य शीघ्र अनन्तरेवतं दिव्य ज्योर्तिमयचकित कर्तारः प्रकाशस्य दर्शनः अभूत्। तथा च समस्त शारीरिक संवेदनानां हासभूत्वा सः शून्यः अभूत। सः शक्तिहीनं भूत्वा भूमौ अपतत्। तस्य शरीरः काष्ठ सदृश निर्जीवोऽभवत्। तस्य चेतना शक्तिः स्व चरम सजगतायां आसीत्। आत्मानुभूतेः उच्चतम श्रेणीं तस्य चेतना गता। यथा सः पूर्वेन कदापि अनुभवः कृतः। सः स्वकीयं अपरिमित धवल आभायुक्त प्रकाशेनआवृतः प्राप्तः। यथा सहस्त्र सूर्यः तं परितः देदीप्यमानः अस्तु। सः स्वकीयं सीमा रहितः अथाह प्रकाश सागरे निमज्जितः प्राप्तः। सः स्वकीयं दिव्य प्रकाशे स्नान कर्त्तारः प्राप्तः। स्नातु प्राप्तः। अत्र सम्पूर्णं एकत्वं आसीत्। द्वैविध्यं असमानताञ्च कुत्रापि नासीत्। ताः प्रकाशस्य सन्मुखे अन्धकार इव अदृश्यंमभवत्। तस्यात्मा लोकोत्तर परमानन्दस्य अवस्थायां आसीत्। यस्यानुभवेनाभिंभूतस्तुअभवत्येव परं वर्णने जिह्वा असमर्थासीत्। एका स्वर्गीय शान्तिः तस्योपरिप्रसृता साम्प्रतं सः ईसामसीहस्य एषां वचनानां अर्थं

अवबोधितः यदहं स्वशातिं त्वां प्रददामि तं एषोऽपि बोधो अभवत् यत् यस्य दिव्य प्रकाशस्य अगम सागरे अन्यद्वा यस्मिन् दिव्यपवित्र संगमे निमज्जनमेकस्य माहात्म्यस्य गुणगानः तुलसीकृत रामायणे प्राच्य भारतीय ऋषयः तथा च प्रति युगस्य सत्पुरुषाः कृतवान् सा तु इयमेव वास्तविक त्रिवेणी अस्ति। अस्मिन् सत्ये लेशमात्रमपि संदेहोनास्ति। प्रयाग स्थित त्रीणां पवित्र नदीनां त्रिपवित्र नदी त्रिवेणी परम्पराभिः पवित्रं मन्यन्ते ततु सांसारिक प्रतीक मात्रमेवास्ति यां मात्र अज्ञानी धनलोलुपाः पंडाः सर्व साधारण मनुष्यान् धार्मिकमनोभावनानां शोषणाय प्रचारितः।

वासुदेव सर्वेभ्यः बन्धेनेभ्यः सत् युक्तेः अनुभवः कृतः। सः वास्तविकोद्धारस्य अनुभवः कृतः। अत्र सः अयमपि बुद्धः यत् ईश्वरः सर्वेषु विद्यते तथा च ईश्वरेषु सर्वे विद्यन्ते। अस्य सत्यस्य शिक्षा दानाय तथा चास्यावबोधनाय समये समये दिव्य पुरुषाः अस्मिन् भूमौ अवतरितः। अस्मिन् परमानन्देषु सः चतुरहोरा/चत्वारिघटिकां अवस्थितः। '' इयमेवावस्था वास्तविक समाधिः '' इति कथयितः।

स्वास्तित्वानभिज्ञः स्वपरितेभ्यः संसारेभ्यः अनभिज्ञः सः तत्रैवस्थितः यत्र सः अपतत्। सः परमचेतनतायाः अवस्थायां आसीत्। यदा तस्य पदयोः संवेदना प्रत्यावर्तितः तथा च मस्तिष्कः पुनः सामान्य अवस्थां प्राप्तः। सूर्यः अत्युन्नतः आसीत्। इदानीं न कापि शंका तं बाधते न कापि चिन्ता तं उद्विग्नं करोतिस्म। सोऽपश्यत् यत् सः दिव्य प्रकाश मण्डलेन सुरक्षितः। अनयाविधिनासमस्ताः चिन्ताः पराभूताः समस्ताः कष्टाः लुप्ताः जातः सर्वे मनोविकारः नष्टाः। शुद्ध मस्तिष्केन पवित्र हृदयेन च सः एकस्मिन् नूतन दिवसे नेत्रौ विकसितः लोचनोन्मीलितः वातदनन्तरं सः सदैव लोकोत्तर ज्योतिषु निमज्जितः तथा च ताषां रात्रीणां तदनुभवः अद्यापि तस्य समस्त शरीरेषुव्याप्तः। प्रातर्यदा सः स्व कक्षतः बहिरागतः तदा यत् सूक्ष्म परिवर्तनः तस्मिन् अभवत् तत्तु समस्तेषु जनेषु ध्याने आगतं बिना नासीत्। डा0 भारत्याः परिजनमपि

तस्य मुखमण्डलस्य अनया आभया कान्तिना व्यक्तित्वस्य नवोन्मेषेन अवगतमभूत्। कालोऽयम् रवीष्टाब्दः 1939 ई0 समयस्यान्तिमचरणस्यासीत्।

ॐ श्री सदगुरु प्रसादात् दि. जन्माष्टमी 1992 दि. 21/8/92 शम्/ अर्पितः।

ॐ श्री सद्गुरुवे नमः

अष्टमः सोपानः

तेल्हारायाः औषधालयः

पूर्वाध्याये यस्याः घटनायाः वर्णनः अस्ति तस्य कतिचिद्दिवसानन्तरं वासुदेवः स्वगुरु डा0 भारत्याः अनुमति प्राप्य अकोलां परित्यक्तः। डा0 नन्दलाल भारती महोदयः तं अनेकानेक शुभकामनाभिः आशीर्वादेन तथा च एक समयस्य भोजनाय पर्याप्तराशिं दत्वाबिदामकरोत्। वासुदेवः साम्प्रतंमपि दिव्य प्रकाशस्य सागरे निमज्जतिस्म । कालेऽस्मिन् तस्य शरीरः उत्तमतमः आसीत् तथा च स्योतमपि संपत्याभावः वा श्वः आगामि दिवसस्य चिन्ता तं विचलितं न कारयतिस्म। खेचराणांसमः स्वच्छन्दं उड्डीयन पूर्वकं तथा च हृदये गतिंनीत्वा सः जीविकोपार्जनाय प्रस्थितः यया स्वपरिवारस्य पालनं करोतु।

अमरावती चांदूर आपणं परतवाड़ा तथा चाकोटस्य यात्रां कर्तारन् वासुदेवःएकदा स्वकीयं तेल्हारायां एकस्मिन् वृक्षस्य तले उपविष्टाः प्राप्तः। एकः सुगठित शरीरः एवं लघु आकारस्य अपरिचितमं यस्य आभा कान्तिश्च परितः प्रसृतासीत् वृक्षतरुतले उपविष्टाः पश्य दुग्ध विक्रेता पथिकः श्री नन्दलाल तिवारी महोदस्य ध्यानाकर्षितः अभवत्। सः अस्य अपरिचितस्य निवासं तेल्हारा आगमनस्य उददेश्यं ज्ञातुं अतिष्ठत्। अनेन प्रकारेण अपरिचितस्य जीवनेन भ्रमणशीलं स्वभावेन चावगतमभवत्। दुग्ध विक्रेता तस्य निवासाय एकस्मिन धर्मशालायां कक्षस्य प्रबन्धः कृतवान्। अनेन प्रकारेणवासुदेवः एका लुब्धवती प्रातः प्रकृत्यां स्वकीयं सुखद रुपेण तेल्हारायाः एकां धर्मशालायां प्राप्तः। यथ यथा समीपवर्ती विद्यालयस्य कानिचित्शिक्षकाः तं प्रति आकर्षितः अभवत् तथा च बहुधा तेन सह संपर्कं कर्तारन् तथा तस्य परिचितानां वृत्तः प्रवर्धितः।

एतत् सन् 1940 ई0 आसीत्। किञ्चितकालं अतीतः गणेशोत्सवागमनः उत्सव ऋतु प्रारम्भस्य घोषणा कृतः। नगरस्य विभिन्न भागेषु गणेशोत्सवः उपयुक्तं रीत्या सम्मानेतुं सज्जा रंगबल्त्रिकादिभिः सज्जा तीव्र गत्या समारभत्। नगरस्य विशिष्ट वर्गाः अपि सर्वसाधारणेन सह समारोहे उपस्थिति दाने अथं च प्रबन्ध कार्येषु सहभागितारभः कृतवान्। समारोहस्य एकं भव्य समापनाय भजन कीर्तन वाद विवाद प्रतियोगितानां तथा च धार्मिक प्रवचनानां आयोजनः आकारितः। आकारितवान्। वासुदेवोऽपि स्व शिक्षक मित्रैः सह अस्य प्रकारस्य अनेन प्रकारेण वा एकस्मिन् समारोहे सम्मिलितं भवतिस्म। प्रवचनाय कस्यापि वक्तायाः प्रबन्धः न अभवत्। वासुदेवस्य एकः शिक्षिकमित्रः यः भूस्वामीअपि आसीत्। तेन प्रस्तावितः यत् धर्मशालायां निवास कर्तारन् नवागन्तुकः स्वामी श्री वासुदेवस्यैव रात्रौ प्रवचनं कर्तुं आमंत्रितः कारयेत् अन्य जनाः असय प्रस्तावस्य अनुमोदनः कृतः। तथा च ते तस्य पार्श्वे समारोहस्य शोभा वृद्धये प्रार्थनायै अगच्छन्। येतेन परिचितः तान् तस्याध्यात्मिक उपलब्धेः आभासः आसीत्। ये अपरिचिताः ते स्वामी महोदयस्य विचारपथं ज्ञातुं उत्सुकाः । आसन्।

किञ्चित् अन्य मनस्कतानन्तरं वासुदेवः सहमतमभवत्। सः नगरक्षेत्रस्य ग्रंथागारे अगक्ष्छत् यत्र कार्यकृमायोजितः। किञ्चित् कालं सः निश्चयः एव न कृतः यत् सः कस्मिन् विषये विचारं व्यक्तयति। अयमेकः तात्कालिक प्रवचनः आसीत्। यद्यपि तेन निवेदनं कृतः यत् सः रुचि अनुरुपं कश्मिंश्चिदपि विषये वदतु परं कस्यापि विशिष्ट विषये स्व विचारान् संगठितस्य समयः तस्य पार्श्वे नासीत्। वक्त्रुः स्थान ग्रहणानन्तरे सः श्रोतृषुः कक्षौ च दृष्टिपातः कृतः। तस्य नेत्रौ भगवान गणेशस्य प्रतिमायां केन्द्रितोऽभूत्यस्तु सेनानाय कस्य वेषभूषायां आसन् तथा चैकस्मिन् वायुयानोपरि अवनत् उन्मुखः आसीत्। भगवान गणेशस्य असामान्य शरीर रचना सूऽश्च तं मानव शरीर रचना विषये व्याख्यानं दातुं प्रेरितः कृतः। सः प्रारम्भः कृतवान्

अस्माकं एषः मनुष्य शरीरः अत्यन्त एव परिष्कृतः सौन्दर्यवान् च अस्ति मनुष्य शरीर प्राप्तुं उत्सुकता देवान् तथा च दिव्यात्मानः समान रुपेण आबद्धः। एषोन्मादः अयमुत्सुकता तर्क संगतः अस्ति यतः सौभाग्येन अस्मिन् शरीरे कानिचित् एतादृशी विलक्षण विशिष्टतानां संम्मिश्रणः अस्ति। या तु मनुष्यं सिद्धिनां उच्च शिखरं आरुह्य ईश्वरत्वं उन्नतः कारयति। करोतिवा। सः व्याख्याने नैरन्तर्य स्थापितः। वासुदेवः स्व शरीर क्रिया विज्ञानं चिकित्सा शास्त्र ज्ञानस्य च आश्रयो गृहीतः। तथा च योगस्य स्व व्यक्तिगत अनुभवानां प्रचुर मात्रायां उपयोगं कृत्वा स्व विचारान् श्रोतृभ्यः रुचिकरं ग्राह्यञ्य विर्निमितः।

देव दानवश्च उभौ समान रुपेण मनुष्येभ्यः ईर्ष्यति। सोऽवदत् देवाः अस्मात् कारणात् ईर्ष्या भावी सन्ति यतः ईश्वरः तेषां सृजनः स्व सेवकानां रुपे अकारयत्। तथा च तं अस्मिन्नेव रुपे अनन्त कालं यापयिष्यतेति। ते कदापि मनुष्य शरीरं प्राप्तुं न योग्यः दानवाः अस्मात् कारणात् ईष्यालवः यतः तं पाप दण्ड स्वरुपं अनन्त कालं नरके वासो विधेयः। उभावेव अनेन प्रारब्धेनत्यक्तुं न समर्थाः। सः स्पष्टयत् मात्र मनुष्यान्ेव एषा योग्यता प्रदत्ता। यत सः स्व नियतिं स्वतः निर्धारयतु स्व परितः प्रकृत्यां स्व प्रभुत्वं स्थापयतु यथेच्छं पुण्यं करोतु पापं करोतु वा सुखं भुनक्तु दुःखञ्चा वा।

मनुष्य मात्रेव मुक्तिं मोक्ष प्राप्तुं वा योग्यः अस्ति मनुष्य मात्रेव परमानन्दस्य उन्नति प्राप्तयति : शाश्वते विलीनं भवितुं शक्तः अथ च नरकवासी अपि भवितुं योग्यः अनेन प्रकारेण सः वृद्धिं गतः मनुष्यः देव दानवाभ्यां श्रेष्ठः अस्ति मनुष्यं मुक्तेः मार्ग प्रदानाय एव समये समये दिव्यात्माः अस्यां भूमौ अवतरन्ति।

मनुष्य शरीरे विशिष्ट नाड़ी केन्द्र चक्राः सन्ति येतु असीम शक्ति भन्ड़ारः सन्ति एते चक्राः संपुटितः प्रसुप्ताः सन्ति भवन्ति वाएभ्यः प्रत्येक केन्द्रः विशिष्ट शक्तीनां विधीनां वा भन्ड़ार गृहमस्ति, एते केन्द्राः सतगुरु मार्ग दर्शने योग साधनायाः

नियमिताभ्यासेन प्रस्फोटयति प्रस्फुटितः जागृतंकारितश्च सोऽवदत्। अतः प्रत्येक मानवस्य एषः कर्तव्यः विशेषाधिकारश्चास्ति यत् सः स्व आत्मस्वरुपस्य बोधाय परमानन्द प्राप्तये परब्रहमेलीनं भवितुं प्रयत्नः करोतु सः बलपूर्वकं अकथयत्।

चेत् मानवेषु मानवतायाः गुणाः सन्ति ततु सः मानवं न अपितु देवाः सन्ति अस्य प्रतिकुलं सैव मानवः स्व स्वकीयं देवता घोषितारः भवति तर्हि तु सः तुच्छः नीचः वा अस्ति मानवं न दानवः अस्ति।

" फरिस्ते मुबतिलये आजमांइस हो तो चीख उठे ये इंसा है जो देता रहा है इम्तहां अपने "

वासुदेवः सनिष्कर्ष अवदत् यत् चेत् दुःख क्लेशः देवान् आवर्तयति तर्हितु तेऽपि पीड़या चीत्कारयन्ति। परं एषः मानवः एव अस्ति यः अस्यां भूमौ निरन्तरं कष्टान् विपत्तयश्च केनापि शिकायतं बिना सहयति। यथा अनवरततं परीक्षां प्रददाति। श्रोता गणः येषु चिकित्सकः शिक्षकः अधिवक्ताः तथान्य सुसंस्कृत गणमान्याः आसन् आस्यां विस्तृत प्रवचने मंत्र मुग्धः सम्मोहितः इव अवस्थिताः ते अनेन प्रवचनेन अतीव प्रभावितोऽभूत् यस्तु मानव शरीरं यथा ऐहिक विषयेन समारब्धः परं यस्य समापनः दार्शनिकाध्यात्मिक विषयोः विषयेषु वा अभवत्। तान् अवबोधितुनं विलम्ब जातः। यदयं अपरिचितः युवकः स्व आभ्यन्तरे ज्ञानानुभवानां अपारकोशः संञ्चितः कृतः। सः तस्य विद्वता तस्य आयु लिवजेन/ सम्बन्धेन कुत्र अधिकोऽस्ति।

प्रवचनस्य समाप्तौ श्रोतागणः इतस्ततः गतः। परं केचिज्जनाः पृष्ठेवतस्थौ एतेषु डा0 घैसास श्री संत हेड मास्टरः श्री मामा भाजेकरः श्री श्री गंगाधर धर्माधिकारीयस्तु बाबूराव इति नाम्ना प्रसिद्धः जमींदारः श्री केशव राव तागड़े, श्री माटे मास्टरश्च। आस्ताम्। ते भद्र पुरुषाः युवा वक्ता वासुदेवेन अधिकाधिक परिचितं भवेयुः भवितव्यः। डा0 घैसासेनोक्तम् यत्वम् शरीर रचना क्रिया विज्ञानस्य विषये च जानात्येव तत्तु चिकित्सा शास्त्रस्य विषयेऽपि अवश्यमेव ज्ञाष्यति। वासदेवः स्वीकृतौ शिरः कंपितः।

वासुदेवेन विज्ञापितः यदहं अकोलायाः ख्याति प्राप्त चिकित्सकः डा0 नंदलाल भारत्याः मार्ग दर्शने वर्ष त्रयम् चिकित्सा शास्त्रस्य अध्ययनं कृतः अनेन कथनेन डा0 ध्घैसासः तथान्य जनान् कौतूहले क्षिप्तः यतः यावत् तं ज्ञानमासीत् तेल्हारायां वासुदेवस्य कोऽपि औषधालयः नासीत्। सः स्व समयमेंकः स्थानीय धर्मशालायां ऋते कस्यापि प्रत्यक्ष जीविका साधनं यापयतिस्म। आश्चर्य चकितं भूत्वा डा0 घैसासेन प्रश्नं कृतः परं कुत्रभवतः औषधालयः अस्ति। त्वम् तेल्हारायां केन प्रकारेण अस्तु।

सत्योद्घाटितः अधुनायाम् स्वौषधालयः उद्घाटयितव्यः। अहम् एकः उचित स्थानस्यान्वेषणे अस्मि। उपर्युक्त स्थानस्यान्वेषणेवाहमत्रागतः। वासुदेवः स्पष्टीकृतः। तस्य स्थितेः अस्य निःसंकोचाभिव्यक्तिः डा0 घैसासः तथान्य जनान् अधिकमेव प्रभावितः प्रसन्नश्च कृतः। अत्र तेल्हारायांमेव औषधालयः कथं न अनावृत्तयतु। समारभंतु सः प्रस्तावः स्थापितः। परं शीघ्रेव तस्य वार्तालापैः वस्तुस्थितं ज्ञातः यत् औषधालयोद् घाटनायै तस्य पार्श्वे सम्पत्या/धनाभावः अस्ति। तत्क्षणेव तत्रैव तेन अनावश्यकं विलम्बं बिना तं औषधालयोद्घाटनाय साहाय्यं धनएकत्रीकरणं समारंभयत्।

तत्कालेव अंश दानेन पञ्चत्रिंशति रुप्यकाणि एकत्री कृतवान्। त्वरितमेव श्री माटे मास्टरं आवश्यकौषधयः क्रयाय अकोलां प्रेषितः। माटे मास्टरः अकोलायां डा0 भारत्या संपर्कः कृतः तथा च तेन तस्य शिष्यः वासुदेवस्य विषये वार्तां कृतः। डा0 भारती महोदयः तं एकः मञ्जूषा/ पेटिका किञ्चित कानिचित् पुस्तकानि औषधीन् उपलब्धमकारयत्। तेल्हारायां वासुदेवस्य नव मित्राः एकं कक्षं अनुबन्धोपरिक्रीत्वा तस्मिन् एकम् काष्ठपीठम् आसन्दिकायाः व्यवस्था कृतः।

10 अक्टूबर 1948 दसहरा पर्वदिवसे प्रातः डा0 वासुदेवः औपचारिक रुपेण तेल्हारास्थ जनतायाः सेवायाम् स्वौषधालयः उद्घाटितः। डा0 नन्दलाल भारती विशेष रुपेण अस्मिन सुअवसरेतेल्हारायां आगतः तथा चौषधालयस्योद्घाटनः कृतः।

शीघ्रेव वासुदेवः स्वपरिवारं आनीतवान् तथा चैक गृहस्थस्य व्यवस्थित जीवनारम्भः कृतः। आगामि 20 विंशति वर्षाणि तेल्हारा तस्य कार्य स्थलः आसीत् अस्य नगरस्य नागरिकाः तं अत्यधिकं प्रेमादरं कुर्वन्तिस्म। सोऽपि तेषां निः स्वार्थ सेवा कृतः। सः तेषां मात्र दैहिक रोगस्यैव निदर्शनः दिग्दर्शनः न कृतः अपितु तेषां अत्मिक कल्याणस्यापि ध्यानः अवधारितः। कथानकेऽस्मिन् अग्रे अनेका एतादृशी घटनानां वर्णनो भविष्यति यत्तु तेल्हारा स्थानेन गाम्भीर्य संबन्धः स्थापयन्ति।

चिकित्सा व्यवसाय वशात् कारणात् स्थानीय जनैः तस्य संबन्धः प्रवर्धितः। डा0 घैसासः तथान्य ये तु औषधालय स्थापितं कर्तुं सहायकाः अभवन् प्रायः तेन आध्यात्मिकः तथान्य विषये विचार विनिमयार्थौं आगन्तारः। डा0 भाऊ भिड़े श्री गोडबोले तथा किंचिदन्यापि डा0 वासुदेवस्यान्तरग्ड़ः निर्मितः एतत् प्रकारस्य समागमे ते कस्यापि विषये विचार विमर्शं कुर्वन्ति यत्किञ्चिदपि तस्य मस्तिष्के उद्भवति। अस्य एतद् प्रकारस्य विचार विमर्शे वासुदेवस्यापि स्वयोग दानं भवति यत्किञ्चिदपि सः वदति तेन अस्य प्रकारस्य गोष्ठीषु उत्साहवर्धनं भवति। जीवनस्य विभिन्न पथे समस्यासु च इत्थं गाम्भीर्येण वाद विवादः भवतिस्म यत् केशस्य त्वचा निष्क्रामयतिस्म। साधूनांनिम्हकीमानां महंत भिक्षूनां धर्मात्मा पिशाचानां च जीवनेषु स्वछन्द चर्चा भवति। स्वकीयं महात्मा इति कथयित्वा जनाः केन प्रकारेण अबोध सरल सहजान् जनान छदमयन्तिस्म। अस्यां वार्तायां एतान् महाशयान अतीव घृणा भवतिस्म। टिड्डीनां समः प्रसृताः तथा कथित धर्मात्मां प्रति भारतीय जनतायाः अनुचित श्रद्धा एवञ्च धन दानस्य अस्याः प्रवृतीनां एते जना निन्दा करोतिस्म। एषा प्रवृतिः किं नाम धनिकः किं नाम धनहीनः तथा च किं नाम शिक्षिताशिक्षितः समस्तेषु जनेषु समान रुपेण उपलभ्यन्ते। एतेषां महाशयानां एतदपि मत मासीत् यत् ज्ञानं बिना जन साधारणस्यान्धा श्रद्धा तथा च चमत्कारान् प्रति पागलपनस्य कारणेनैव एते पाखण्ड़ निरताः धर्मात्मा छद्मवेषी कुक्कुर मुत्तानां समः विवर्धन्ते। एतेषां चमत्कारः

हस्त कौशलः सम्मोहनः तथा च सामान्य सिद्धीभ्यः वर्धित्वा न किमपि वर्तते। एते तथा कथितावतारः गोपनीय चातुर्य्रेण स्व प्रचारमपि कारयन्ति। सहैव जनताभिः पर्याप्त सुनियोजितेषु अनतरमपि स्थापयन्ति। यतः ते रहस्यमयं अवस्थितः तथा च निष्कपट जन साधारणस्य पर्याप्त शोषणं कुर्वन्तु।

द्वितीयः

कियत् सहजतया स्व उद्घोष कर्तारः एतेषां धर्मपुरुषाणां चमत्कारस्य अपवादेन सार्वजनिकोत्साहः जनोन्मादस्य सीमाम् विस्फूर्जयति एतत्तु एकस्मिन् दिवसे प्रकाशे आगतः। अस्मिन् काले अंगुलबाबा इति नाम्ना प्रसिद्धः एकः चमत्कारिकः बालकः अभवत्। उड़ीसायां अंगुल इति ख्यातः एकः स्थानः अस्ति। सोऽधुना किशोरेवासीत्। तस्य कथितोद्भुत अलौकिकः चमत्कारिक शक्तेः चर्चा वनस्य पावकइव प्रसृताः। विभिन्न सामाजिक स्थितीनां नागरिकः अंगुल बाबा महोदस्य दर्शनार्थं तथा चास्य युवावतारस्य पूजायै अनेन प्रकारेण तस्य परितः एकत्रितो जातः यथा शवम् परितः गृद्धाः एकत्रितो भवन्ति। देवानां जन्मः अस्मिन् भूमौ प्रतिदिनं न भवति अतः देवानां शरणे नम्रता पूर्वकं गमनेन प्राप्तारः पवित्र दर्शनः तथा च लौकिक पारलौकिक लाभेन कोऽपि वञ्चितः न भवितुमर्हतिस्म। अनेकाः जनाः तस्य पार्श्वे मात्र उत्सुकतावशात् गतः। तथा व अनेकाः जनाः व्यक्तिगत लाभाशयागतः। परं केनापि अस्य चमत्कारिक बालकस्य निवास वास्तविकतां वशं शिक्षा दीक्षा तथा च चमत्कार विषये अन्वेषणं प्रति ध्यानं न दत्तः अस्य भगवानस्य चमत्कारिक शक्तीनां सत्यतां परीक्षण विषये कस्यापि मनसि प्रश्नमपिनोत्थितः। अनेकाः जनाः अंगुलं प्रति तेनैव प्रकारेण धावितः यथाः येनैव प्रकारेण दन्त कथानां सः मूर्खः यः इत्थं श्रुत्वा यत् तस्य वृषभः वत्सम् अजायत्। वत्स बन्धनार्थं रज्जुमानेतुं प्रस्थितः।

अस्य भगवानस्य प्रसिद्धिः क्रियाकलापस्य च समाचारं तेल्हारायां संप्राप्तेनाधिक समयोऽतीतः। तेलहारास्थ नागरिकाः अंगुलबाबा महोदयस्य दर्शन पूजनोत्साहे कस्यापिन्यूनं नासीत्। तेल्हारायांमपि अंगुल बाबा महोदस्य दर्शनार्थं एकः दलः संगठितोऽभूत्। एषः दलः कानिचित् मूल्योपरि गृहीत बसयानेन प्रस्थानस्य निश्चयः कृतः। डा0 बाबू भिड़े अन्यच्च श्री महाजनमपि दलेऽस्मिन् सम्मिलितः।

डा0 भिड़े अस्य दलस्य अंगुल प्रस्थानात् कतिचित् दिवस पूर्वं सम्पूर्ण योजनायाः विवरणं वासुदेवं दत्तः। एतत् सोपृष्टे सति यत् भवान् अंगुलं गतवा एतम् बालकम् दर्शनाय अत्युत्सुकः किमस्ति डां0 भिड़े महोदयः उत्तरं दत्तः यदहं मात्रोत्सुकता वशादेव गच्छामि। चेन्मात्र इत्थमेव उददेश्यः तत्तु एतादृक् कष्ट सहने तथा च धनापव्ययम् कृत्वा अंगुल गमनस्यकावश्यकता ? वासुदेवः अपृच्छत् अकथयच्च! त्वम् तं स्वगृहे स्थित्वावेव निरीक्षयितुं शक्तः।

कथन मेतत् डां0 भिडे महोदयं आश्चर्य चकितः कृतः सः अवाक् अपलक दृष्ट्या वासुदेवं अपश्यत्। ड़ा0 भिड़े महोदयं वासुदेवस्य विस्तृताध्यात्मिक ज्ञान तथा चोपलब्धीनां आभासः आसीत्। अतः ते तस्य कथने अविश्वासः न कृतवान्। कीदृशः एतत् आश्चर्यजनक विचारः आसीत् यत् सः बिना अंगुलं गतेऽपि इच्छानुसारं अंगुल बाबा महोदय अपश्यत्। भिड़े स्वउत्सुकतायाः दमनः न कृतः तथा च सः प्रश्नं कृतः यत् केन प्रकारेण अहं तेल्हारां बिना त्यागेन अंगुल बाबा महोदयं पश्यामि किम् ? वासुदेवेन स्पष्टीकृतः।

चेत् सः एकः विशिष्ट योगविद्यायाः अभ्यासं करोतु तदेषः सम्भाव्यः। डा0 भिड़े महोदयः पूर्वे कदापि योगे एतस्य प्रकारस्याभ्यास विषये न श्रुतः अतः योगस्य अस्यां अद्भुत विद्यायां दीक्षितं भवितुं इच्छुकोऽभूत द्वितीय दिवसेव डा0 भिड़े दीक्षा ग्रहणम् कृतः। तं नित्याभ्यासाय एंका विशिष्टा विधिः समबोधयत् अवगतंकारितः तस्य धर्मपत्न्या तं कानिचित् नियम पालनें सहयोगदानस्यानुरोधः कृतः यया गृहस्य

वातावरणे पवित्रता अवस्थितः। अनेन प्रकारेण डा0 भिड़े प्रथम व्यक्तिः आसीत् यः तेन आध्यात्मिक माग्रदर्शनः पूर्ण गम्भीरतया प्राप्तः। तथा च अनेन प्रकारेण तेन दीक्षितः निर्देशितश्च प्रथमः शिष्यः अभवत्। अतः साम्प्रतम् एतेभ्यः स्थानेभ्यः मम अस्माकम् कथाभिः साधारण वासुदेवः यास्यति। तस्य स्थानम् गृह्यति श्रीगुरूजी। अतः परं वयं तं प्रथम नाम्नः सम्बोध्य गुरुजी इति कथयित्वा पूर्ण आदरेण संबोधयिष्यामः।

डा0 भिड़े महोदयः प्रतिदिनं प्रातः संध्याम् नियमित रुपेण ध्यानारंम्भः कृतः। तृतीय रात्रिं ध्यानावस्थायां सः स्व नेत्रयोः सन्मुखे एकस्य बालकस्य श्यामवर्णी कुरुप औदास्य घृणास्पदन्चाकृतिं अपश्यत्। यस्तु नान्यः कोऽपि अपितु उत्कलस्य चमत्कारिक बालकः अंगुल बाबा इति आसीत्। तदाकृतिः स्वल्पमपि आकर्षकं नासीत् अपितु प्रथमेव दृष्ट्या घृणोत्पन्नं कारयतिस्म। आगामि दिवसे डा0 भिड़े बिना समय नष्टं कृतवता श्री गुरुजी पार्श्वे धावितः तथा च तं गत रात्रौ पश्यन् दृश्य वृतान्तं श्रावयत्। श्री गुरुजी तं सत्यं स्पष्टं कर्तारन् विज्ञापयत् यत् दिव्य पुरुषाणां आकृतया सदैव प्रकाशः प्रस्फुटितः भवति तथा च ते स्वर्णिम प्रकाश चक्रेण आवृत्तः भवन्ति। यतः भवान् एकम् कोलतारसदृशी कृष्णवर्णी कुरुपः विभत्सश्चाकृतिः अपश्यत्। अतः अस्य चमत्कारिक बालकस्य विषये भवान् स्वयं निष्कर्ष संप्राप्तये स्वतन्त्रः अस्ति। एक सप्ताहेव बाबायाः दमकः लुप्तो भविष्यति। प्रतीक्षां कुरु पश्य च गुरुदेवेन कथितं। अंगुलं गत्वा अवतार दर्शनस्य विचारः डा0 भिड़े महोदयस्य मस्तिष्कतः काफूरः अभूत्। एक सप्ताहानन्तरेव गुरुदेवस्य भविष्य वाणी सत्यंतामेति। यदा राजदूतेन अंगुल ग्रहणस्य समाचारः तेल्हारां संप्राप्तः। अनेन प्रकारेण विलक्षण बालकस्य चमत्कारस्य नाटकः ध्वस्तः अभवत्।

क्रम तृतीयः

चेत् योग साधनानां अभ्यासः कस्यचिद् विशेषज्ञस्य मार्ग दर्शने कर्तव्यः तत्तु योग साधनायां महदारोग्यकर शक्तयः भवन्ति। एषः सत्यः डा0 भिड़े तथा च तस्य परिवार सन्मुखे अंगुल बाबा महोदयस्य विषयात्मकं घटनायाः कतिचिद् मासोपरान्ते अप्रकटयत्।

श्रीमती भिड़े स्व तृतीय गर्भावस्थायाः पञ्चमे मासे आसीत् तां उदरे पीड़ायाः अनुभवः भवितारः सा किञ्चदपि कार्यं कर्तुं अत्रत्याः यत् गमनागमनेऽपि असमर्थासीत् सा अवनतमपि न भवतिस्म तां किञ्चित् स्वस्थतां तदा अनुभवतिस्म यदा सा कुत्रचित् ऋजु भूत्वा तिष्ठतिस्म। अतः सा स्व पर्याप्त समयः एकम् लघु आसन्दिकायां स्थित्वा यापयतिस्म। एतावतायत् रात्रयः अस्यामेव स्थित्यां व्यतीतो भवतिस्म् चिन्तितः डा0 भिड़े यथा संभव चिकित्सार्थं परामर्शम् गृहीतः। सः स्व एकः अभिन्न मित्रः मेयो हास्पिटलः नागपुरस्य डा0 देशमुख पार्श्वे नीतवान्। डा0 देशमुखः सम्पूर्ण परीक्षणानन्तरे प्राप्तः यत् श्रीमती भिंड़े महोदयायाः गर्भाशयः पृष्ठे अवनताः। तथा च तस्य मुखः पुच्छास्थ्यां संलग्नः। डा0 देशमुखस्य चिकित्सा विशेषज्ञ रुपेण मतमासीत् यत् भ्रूणं तत्कालेव शल्य क्रियया निःसारयितव्यः। अन्यथा तत् मातृभ्यः शिशुभ्यः उभाभ्यां घातक सिद्धो भविष्यति एतस्यां स्थित्यां मातुः जीवनस्य रक्षा अत्यावश्यकः अस्ति। डा0 भिंड़े अतयधिकं व्याकुलं अभवत् स्वयं एकः' चिकित्सकः अस्ति इति माध्यमेन सम्बन्धेन सः जानातिस्म यत् शल्य चिकित्सातिरिक्तं नान्यः कोऽपि पथम् वर्तते।

चिन्ताभिः परिवृत्तः डा0 भिंड़े स्वस्थितिं गुरुं स्पष्टयन् परामर्शः याचितः गुरुजी स्वयं होम्योपैथी तथा च आयुर्वेदिकप्रणालीनां चिकित्सकत्वेनेति मतेन श्रीमती भिंड़े महोदयायाः विषये एतत् ज्ञातुं शक्यते यत् तस्याः सामान्य स्वास्थ्यः कीदृशः वतते तथा

च तां तत्कालेव कोऽपि क्षतिपथस्तुनास्ति अथ च किं शल्य क्रियां स्थगितं कृत्वा मह्यम सप्त दिवसानां समयः मिलेत्। डा0 भिंड़े स्पष्टं कृतः यत् कोऽपि तत्कालीन दुर्घटनातु नास्ति परं प्रसूति समयेव भयं भविष्यति। अनेन प्रकारेण आश्वासितं भूत्वा गुरुदेवः तं ध्यानस्य एकया विधिना अवगतमकारयत् तथा च ध्यान काले पाठाय एकः बीज मंत्रो दत्तः। स्व समस्त मानसिक शक्तीन् नाभौ केन्द्रितं कृत्वा तं कल्पनाकारितः यत्देवी भगवती तस्याः सहायतायै आगच्छति। अथ च गर्भाशयः क्रमशः अग्रेसरति भ्रमतिवा। डा0 भिंड़े महोदयं प्रतिदिनं भवितारः घटनायाः विवरणः गुरुदेवं अददत्। गुरुदेवः तं आश्वासनंः दत्तः यत् सर्वं उत्तमं भविष्यति। चिन्तायाः कोऽपि कारणं नास्ति।

श्रीमती भिंड़े महोदया पर्याप्त गाम्भीर्येण अभ्यासारभंः कृतवती। तां गुरुदेव शब्देषु अटल विश्वासः आसीत्। प्रथम दिनेन काचिदपि घटितः परं द्वितीय रात्रौ स्वप्ने साजलेन आवृत्तः एकम् द्वीपम् अपश्यत्।

अस्य द्वीपस्य मध्ये एकम् अशोक वृक्षम् आसीत्। यस्याधः सा एक वर्षीयाः आयुवयस्य अनेकान् शिशून् क्रीड़ारताः अपश्यत्। दृश्यमेतत् तस्याः मनं मुह्यतिस्म अथ च सा अतीव प्रसन्ना अभवत्। सा इमान् शिशून् क्रीड़न् पश्यतिस्म यत् एकः शोभनः बालकः ठुमुकयत् तां प्रति आगतः तथा च तस्यांके अतिष्ठत्। आगामि दिवसे प्रातः डा0 भिंड़े अस्य स्वप्नस्य विवरणम् गुरुवे दत्तः। गुरुदेवः तं प्रत्यवोचत् यत् साम्प्रतं सर्वं उत्तमं अस्ति। माता पुत्रस्य च जीवने न कापि दुर्दैव स्थितिः तथा चं श्रीमतीभिड़े निश्चित समये, पुत्र जन्मदात्री भविष्यति।

श्रीमती भिंड़े महोदयां तृतीय रात्रौ अत्यधिकं उत्साहबर्धकं अनुभवः अभवत्। सा अपश्यत् यत् एक अंड़ाकारः प्रकाश चक्रः तस्यां कुक्षौ प्रविष्टः जातः। तथा च भ्रूणं परितः एकरक्षा कवचम् विनिर्मीयते।

एषः नीलवर्ण प्रकाशवलयः प्रसव कालं यावत् तत्रैव स्थितः एक पक्षेवश्रीमती भिंड़े महोदयायाः स्थितिः सामान्याभवत्। सा गमनागमने समर्थाजाता तथा च बिना पीड़ानुभवं कृत्वा स्वकार्ये संलग्ना जाता। सा स्व बालकानां रक्षाकर्त्री प्रकाश चक्रं पश्यतिस्म अथ च प्रसन्ना अवस्थिताः। निश्चित समये तां पुत्रोऽभवत्। सः अतीव शोभनः आसीत् परं तस्य शरीरस्य वर्णं सामान्यनीलवर्णः आसीत्। एषः असामान्यवर्णः डा0 भिड़े महोदयं चिन्ताजनक अनुभूयते यतः चिकित्सकं भूतेसति तस्य विचारःआसीत् यत् एषः वर्णः कस्यापि रोगस्य संकेतः अस्ति अथ च एतादृशाः बालकाः नाधिक समयं जीवति। सः अत्यधिकं चिन्तितः आसीत् यत् प्रसूति कालतः दिवस त्रयानन्तरंमपि सः गुरुदेव पार्श्वे न गतः नैव तं अस्मिन् विषये सूचितः कृतः। यतः तस्य चिकित्सा पुस्ताकनितं तस्यास्य चिन्तया प्रत्यावर्तने न साहाय्यं कृतः सः पुस्तकानि क्षिप्तः अथ च गुरोः सविधे धावितः। अस्यां स्थितौ विनोदं कर्तारन् गुरुदेवेन कथितं यत् किमेतत् आवयोः एव अनुभवः न यत् रोगतः मुक्तिं प्राप्यनन्तरे कोऽपि चिकित्सकं न पृच्छति। सः डा0 भिंड़े महोदयं आश्वासितः कृतः यदेतत् नीलवर्णः असामान्यः अस्ति तथापि चिन्तायाः न कापि कारणं वर्तते यतः। एषः कस्यापि रोग दोषस्यवा संकेतः नास्ति। समयेन सहैव वर्णोऽपि सामान्यो भविष्यति।

बालकस्य नामकरणं कर्तुं विशेषाधिकारः श्री गुरुदेवं समर्पितः। सः तस्य नाम मुकुन्दः इति स्थापितः एषः बालकः साम्प्रतं कर्ण नासिका कंठ विशेषज्ञः डा0 मुकुन्द भिंड़े अस्ति।

ऊँ श्री सद्गुरु प्रसादात् तत् सत्।

ॐ श्री सद्गुरवे नमः

नवमः सोपानः

भगवान प्रभु विठ्ठलस्य दर्शनः

भारत भूमौ पदार्पणादेव सन् 1919 स्त्रीष्टाब्दे फोगटिस स्थाने /तटे बालक वासुदेवः प्रथम कार्यम् देवीकाली मातरं स्व श्रद्धा समर्पर्णस्य कृतः। वयम्अपश्याम्ः यत् केन प्रकारेण प्रसन्नादेवी तं स्व दर्शनेन कृतार्था कृतवती। स्व पूर्वजानां ग्रामे गच्छन् रामेश्वरः वासुदेवौ च प्रयागे स्थित्वा गंगा युमुना सरस्वतीनां पवित्र /त्रिवेणीषु त्रिवेण्यां वा पुण्यस्नानमपि कृतः परं सर्व बन्धनात् मुक्ति दायकः ज्ञातारः एतत् त्रिवेणी संगमस्य स्नानः बालक वासुदेवं न संतुष्टः कृतः। तस्य हृदयं आसुः न कापि आनन्दानुभूतिः अभवत् न मात्रस्नानं अपितु अन्याः अपि धार्मिक अनुष्ठानान् प्रति एका घृणा एका तुच्छतायाः भावः समाविष्टः। अतः परं कदापि श्री वासुदेवः स्वकीयात्मिक लाभाय कोऽपि धार्मिक अनुष्ठानं न कृतः। यद्यपि स्वदीर्ध भ्रमणकारी जीवने सः मंदिराणां प्रागणें अवसत्। अवश्यमेव मंदिर कार्यक्रमेषु सः सम्मिलितः अभवत् तथा च सः विभिन्न मंदिरेषु प्रवचनोऽपि कृतः। परं असौ ईश्वरप्रसन्नाय वा कस्यापि लाभप्राप्त्याशया न अपितु समयापेक्षाः तथा च जन सामान्यं धर्मग्रन्थानि सम्यक् बोधयितुं इतिदृष्टया कृतवान्।

दिव्यशक्तयः तं स्वेवमत्वा दर्शनोदत्तः वयम् एतादृशाः कतिचित् दिव्य दर्शनानां उल्लेखः कुर्मः। यतु तं बाल्यावस्थयादेव अभवत्। जार्ज टाउन स्थले स्व पितामहस्य शयन कक्षे तथाचानन्तरे नागपुरे दिव्यपुरुषस्य दर्शनः कलिकाता औरंगाबादे च देवी काल्याः दर्शनं। मदनूर स्थाने भगवान श्री राम सीता तथा च गुरुवशिष्ठस्य दर्शनः अथ च अजमेर स्थित ख्वाजामोइनुद्दीन चिस्तेः दर्शनः कानिचित् उदाहरणाः सन्ति। समान शीलेव्यसनेषु सख्यम्उत्युक्त्यानुसारेण न केवल भौतिकं अपितु आत्मिकस्तरेऽपि

समजनानां मध्ये घनिष्टता भवत्येव। एतादृशेव एकं कथानकं साम्प्रतम् अहं लिपिबद्धं करिष्यामि्।

सन् 1956 एकोनविंशति शतोत्तर षष्टपञ्चाशत् वर्षस्य धटना अस्ति गुरुदेवः सन् 1940 वर्षतः स्व समयं तेल्हारायां एकः चिकित्सकस्य रुपे व्यतीतयतिस्मेव सहैवाध्यात्मिक ज्ञानाकांक्षिभ्यः आध्यात्मिक पथप्रदर्शकस्य रुपेऽपि व्यस्तः आसीत्। एकदा प्रातः सूर्यादयात् पूर्वं मातरं स्वप्नं दृष्टः। गुरुदेवस्य भार्यां प्रेमादरेण जनाः मॉ जी कथयित्वा संबोधितः करोतिस्म। कुर्वन्तिस्म वा। तां किञ्चित् लघुकाय तथा च किञ्चित् श्यामवर्णयोः उभौ जनौ अपश्यताम्। उभौ तौ सहोदरौ समवयस्कौ इव प्रतीयते तथा च प्रकाश बलयेन परिवृत्तः आसीत्। को भवान् ? तथा च कथमागतः। अपरिचितागमनेन आश्चर्यचकिता माता अंपृच्छत्। पंढरपुरवासिनोऽहं अथ च पंडित महोदयं पंढरपुरम् आनेतुं आगच्छामि। सोऽवदत्। केचिज्जनाः गुरुवर्य्य पंडित जी कथयित्वा संबोधिष्यन्तेस्म। मातावदत् यत् पंडितजी तुकस्मिन् ग्रामे रोगी परीक्षणाय गतः। इति श्रुत्वा आगन्तुकोऽवदत् बाढम् यदा सः प्रत्यावर्तेत् तदा तु कृपया तं मम संदेशः प्रददातु तथा च आगन्तारः आषाढ़ एकादशीं पंढरपुरं गमनाय निवेद्यताम्। इति कथयित्वा सः गतः। मातरं एषः स्वप्नः एकादशीतः मासद्वयात् पूर्वं आगतः।

गुरोः गृहगमने सति माता स्वप्न चर्चा कृता सा समस्त कथावृतं वा अश्रृणोत। यतः वस्तुतः एकादशीद्विमासानन्तरं आसीत् तस्य पार्श्वे पंढरपुर यात्रायाः विषयेनिर्णयं गृहीतुं पर्याप्त समयः आसीत्। कतिचिद्दिसेव ते इमां घटनां विस्मृतं जातः।

यदा एकादश्याः दिवसः आगतः ते पंढरपुर यात्रायाः रहस्यमयं आमंत्रणम् विस्मृतं गतः। अस्मिन् दिवसेऽपि सः स्वसामान्य दिनचर्यायाः पालनं कृतः। प्रातरौषधालयं गतः तथा च मध्याह्ने गृहमागतः। स्वरीत्यानुसारेण अस्मिन् दिनेऽपि सः भोजनात् पूर्वं स्नानाय गतः। यथैव सः शरीरे जल प्रक्षेपणारंभ कृतः। तथैव च बाह्यतः एकं अपरिचितं स्नान गृह दिशायां आगतः अपश्यत्।

सः मध्यम उन्नतः तथा च किञ्चित् श्यामवर्णः आसीत्। तस्य स्कन्ध्योः एकं कंबलः शिरसि उष्णीषः हस्तेचलगुडः आसीत्। यदा अयम् अपरिचितः किञ्चित् मात्र मपि संकोचं बिना स्नान गृहे प्रविष्टः जातः तथा च सः सामान्य भारतीय पद्धत्यानुसारेण गुरुं नमस्कारः कृतः। गुरुदेवः किंकर्तव्यविमूढः एवञ्च विस्मितः अभवत्। गुरोः क्रोधः लुप्तं गतः तथा च सः नम्र स्वरेणाकथयत्। भवन्तः– माम् स्नान समयेपि एकाकी न त्यजन्ति। पश्य भवान् केन प्रकारेण वेपथुः जातः। अहम् तु एतस्मादेव विशेष रुपेण आगतः। निः संकोचं उत्तरं ददन् सः गुरोः सम्मुखे सुखासने संस्थितः। उत्तमम् चेतेतादृशीवार्ताअस्ति तत्तु भवान् इच्छानुसारं स्नानं करोतु गुरुणा उक्तम्। तथा च अपरिचितं सम्यक् स्नानमाकारितम्। उभौ सहैव मिलित्वा प्रेमपूर्वकं स्नानं कृतः। गुरुदेवःस्नानानन्तरं भोजनं गृहणातिस्म। सः स्व अतिथिना अपृच्छत् यत् किं भवान् भोजनं गृहीष्यति। अतिथिना उक्तम आम्। दुर्भाग्यवशाद् भोजनं मात्र एकैवजनाय पर्याप्तः आसीत् अथ च गुरुदेवः तद् भोजनम् स्व अतिथिं परिवेषितम् तथा च स्वयं उपवासः गृहीतः। बिना संकोचेन एषः असाधारण अतिथिः अतिष्ठत् तथा च भोजनानन्दः गृहीतः। अथ च गुरुदेवः तं प्रसन्नता पूर्वकं अपलक दृष्टया दृष्टः। अतिथेः भोजन समाप्तौ उभौ औषधालयं गतः। किञ्चित् कालानन्तरे अतिथि अपृच्छत् कि भवान् माम् अर्धाणकी (50) पञ्चाशत पणकाः दातुं कृपा करिष्यति। अहं भगवान् पंढरीनाथाय एकम् पुष्पहारम् क्रीणितुं कामये यथैव भगवन्तं पुष्पहारम् समर्पितो भविष्यति भवान् विदितो भविष्यति। तदा गुरुदेवः काष्ठफलकोपरिपणकेभ्यः अपश्यत्। सौभाग्यतःतत्र मात्राष्टाणकी एव सिक्का आसीत्। भवान सौभाग्यशाली प्रतीतः भवति। अद्य मात्र–एतदेव–मम पार्श्वे–वर्तते। कथयन् गुरुदेव तम् सिक्कां अर्पयत्। गमनाय उत्थन् अतिथिः गुरुदेवंआतिथ्थ पणकेभ्यश्च धन्यवादोऽदत्त् अकथयच्च अद्येवभगवान पंढरीनाथं माला अर्पितं कारयिष्यते। अथ च भवान् अस्य अनुमानं भविष्यति। उत्तमम् नमस्करोमि एषः विचित्र अतिथिः पुनश्च मार्गे प्रचलितः अनुमानितः पञ्चविंशति

/गज परिमितं अध्वनं पश्चात् सः अदृश्यः अभवत्। तदा अकस्मात् गुरुं स्मरणं अभवत् यदद्यस्तु आषाढ़ीएकादश्याः दिवसं अस्ति। तं स्व पत्न्याः स्वप्नमपि स्मरणं जातः। यस्यां तं पंढ़रपुर यात्रायाः निमंत्रणं प्राप्तः। तं एतदपि बोधोऽभवत् यत् आगन्तुकः नान्यः कोऽपि अपितु साक्षात् भगवान् पंढ़रीनाथः एव आसीत्। गुरुदेवः इमाम् घटनां विस्मरणवशात् पंढ़रपुरं नागच्छत् परं स्वयं भगवान पंढ़रीनाथः आगत्य दर्शनदानें न विस्मृतः। कालक्रंमानुसारेणोक्त घटना सन् 1957 वर्षे अघटत्। स्वास्य कथनस्य पुष्टये यतः यदाकदा दिव्यपुरुषोऽपि स्व सदृश मनोवैचारिक मनुष्याणां सान्निध्यस्य आनन्दं गृहणाति। वयम् स्व वर्णनं कानिचित् वर्षाणि अग्रेषुवर्धितः। साम्प्रतमहं पुनः 1940 वर्षे गच्छामः अथ च गुरोः नित्यजीवनंसमस्याः अपश्यामः।

सन् 1940 रव्रीष्टाब्दस्य प्रारम्भ काले यूरोपे द्वितीय विश्वयुद्धः प्रवर्तितः। सामान्य जनाः सुदूर यूरोपे प्रवर्तित युद्धेन नाधिकं उद्विग्नः आसीत् परं अनेन युद्धेनोत्पन्नार्थिक संकटस्य दैनिक जीवने प्रक्षिप्त प्रभावेन ते नैवनिवारितः। अनिवार्योपयोगी वस्तूनि यथा गोधूमः तुण्डुलः तैलसिता द्विदलानि वस्त्राणि च आपणतः लुप्तं भवितारः। अनैतिक व्यापारीणांन्यूनतानासीत्। ये दुर्लभः वस्तून् अत्यधिकं दुष्प्राप्यः कृत अथच तानि उच्च मूल्योपरि कृष्णपणे विक्रयः कृतः। समस्त वस्तूनां मूल्यः प्रवर्धितः। गोधूमः चतुर्थ पञ्चरुप्यकाणि प्रतिकिलोन्मानपरिमितं विक्रीतः। यदन्नम् सरलतया उपलब्धः आसीत्। तथा च रसद् आपणतः वितरितः कृतः तत्तु अमेरिकी माइलो नाम्नः न्यूनतरः कदन्नः आसीत्।

वस्तुतः यस्य कस्यापि अयं उपयुक्त नोपयुक्तः वा वर्तते परं सामान्य जनान् अस्योपरि निर्वाहः कुर्वन्तिस्म। गुरुदेवः स्वप्रकृत्यानुसारेण गृहस्थ्याः नित्यागन्तारः समस्याभिः दूरेव वसतिस्म स्थितः वा। सः यतकिञ्चिदपि धनार्जनं करोति स्व भार्यां समर्पयतिस्म। गृहस्थ्याः आवश्यकतानां पूर्तिः तदेव धनेषु निर्वाहः विधेयः इति तस्याः उतरदायित्वः आसीत्।

एतदल्पायस्य उचितोपयोगः कृतस्य साप्रयत्नं कृतवती। गुरुदेवः धनोपार्जनाधिक्ये असफलः आसीत्। यतः सः स्वरोगिभिः धनाय कथनोपकथनं न कदापि करोतिस्म। तस्य शुल्कः नाम मात्रं भवतिस्म अथ च निर्धनान् असहायान् सः प्रायः निः शुल्कौषधयः ददातिस्म्। तस्य अस्याः उदार प्रवृत्तिः तद् गृहस्थ्यां सदस्यानां संख्या अधिकाधिकं प्रवर्धितः अथ च तेषां भरण पोषणमपि तस्य पत्न्यावेव करणीयः आसीत्। मातरम् अस्य श्रेयः मिलितव्यः एव यत् सास्व सम्पूर्ण प्रयासं बिना कस्यचिद् तर्क वितर्केण /औलाहं कृता। अथ च स्व समस्त प्रवीणता गोधूमस्य संग्रहे संनिहितः यानि तस्य पार्श्वे अधिक कालं प्रचलितः। सा स्वयं अथ च शिशवः माइलो एतन्नामकं कदन्नेन निर्मित भोजने निर्वहन्तिस्म अथ च गुरुं गोधूमस्य रोटिकाः परिवेषिताः। एतस्मादेव कारणात् सः अतिकालं गृहस्थ्याः वास्तविक स्थित्या अनजानेव स्थितः।

परं यदा कदा प्रत्येक वस्तूनि समाप्तं भवति एव। तस्याः गोधूम संग्रहमपि समाप्तम अभवत् तथा च स्वल्पमपि गोधूमः प्राप्तये सकल प्रयत्नाः असफलाः अभवत् अतः एकदा यदा गुरुदेवः भोजनाय अवस्थितः मातरम् अतिकष्टमनुभूतेऽपि माइलो एतन्नामकं अन्न विनिर्मितं करपट्टिकाषि विवशता वशात् परिवेषितम्। एतद्रक्तवर्णस्य रोटिकायाः ग्रासमेकंतु तेन कव्रितः परं तस्य कण्ठादधः नानीतः। सःएतत् विचित्र पदार्थं जलस्य पर्याप्त मात्रया सह कण्ठादधःनीयमानस्य प्रयत्नं कृतः। परं सः एतादृशमपि न कृतः। अथ च तस्य वमनः ष्ठीवनः कृतवान्। भोजनं त्यक्त्वा उत्थितः। साम्प्रतमयं कष्टदायकं अनुभूतिः तमभवत्। यत् केन प्रकारेण तस्य धर्मपत्नी अथ च शिशवः वसन्तिस्म। सः तु स्वयं विविध प्रकारेण अभावान् भुक्तवान्। सः वृक्षाणां पत्रेषु अपि र्निवाहः कृतः। अथ चायं सम्यक् जानातिस्म यदोदरोक्तस्य अवज्ञानभवतिस्म। स्व अबोध शिशवः तथा च पत्न्याः अनया मौन वेदनया तस्य ह्रदयः दुःखितोऽभूत्। पू0 माता एवञ्च शिशवः यत् साहसोदारतया विपत्तीनां प्रत्क्षीकरणः कृतः। तेन गुरुं तेषां

भविष्य विषये अन्याच्चापि अधिका चिन्ताऽभूत्। स अरुदत् रुदितः वा। प्रचलिताधिकमूल्यानां एवञ्चोचितखाद्य पदार्थानां अनुपलब्धिषु तस्य चक्षुभ्यां अश्रुनिःसृत्य कपोलौवेपथुर्गतः।

सोत्थितः अथ च ऋजु पथे तत् कक्षं प्रति गतः यः औषधालयाय प्रयुक्त भवतिस्म अस्मिन् कठोर सत्ये यत् तं अद्य बुभुक्षितः अवस्थितः दुःखाय माता एकाकी स्थितः। किं करणीयम् तस्याः मष्तिष्कः एकः शोकं गतः। तं ईश्वर विधाने आस्था संस्थितातिरिक्तं अन्य कोऽपिमार्गं न प्राप्तः। औषधालये सः प्रसृताः एकम् वस्त्रम् अस्वपत् '' योगक्षेमं वहाम्यहम् '' भगवद् गीतायाः ऐते शब्दाः तस्य मस्तिष्के प्रस्फुटितः। सः विश्रम्यध्यानारम्भः कृतः तथा च निश्चयः कृतः यत् यावद् तस्य कष्टदायक खाद्य समस्यायाः समाधानः न अन्विष्यते सः नोत्तिष्ठति।

अनुमानतः एक घटिकानन्तरे कस्यापि तारस्वरेण नारायण रावः इति कथयित्वा संबोधनेन तस्य ध्यान भंगः अभवत्। सम्बोधन कर्तारः सज्जनः कक्षे आगतः। सः गुरुदेवस्य परिचितः एकः धनिक कृषकः श्रेष्ठि बद्रीदास पाड़िया आसीत् कि भवतिः ? श्रेष्ठि बद्रीदासेन अपृच्छत्। न किमपि अहं स्वल्प विश्रामं अकुर्वम्। गुरुदेवेनोत्तरं दत्तः। कृपया उत्तिष्ठतु अथ च मया सह प्रचलतु। अति आवश्यकः कार्यः वर्तते। श्रेष्ठि बद्रीदासेनानुरोधः कृतः। गुरुदेवस्य ध्याने विघ्नस्तु उपस्थितः एवासीत्। अतः सः उतिष्ठतिस्म अथ च बद्रीदासेनसह तस्य गृहेगतः।

स्व गृहे बद्रीदासः दुग्ध मिष्ठान्नञ्चानीत्वान् गुरोः सन्मुखे स्थापितः तथा च तेन एतदल्पाहार ग्रहणस्यानुरोधः कृतः। सः अनिच्छुकः आसीत् यतः तस्य नेत्रयोः सन्मुखे क्षुधितः अथ च दुःखी स्व शिशूनां पत्न्याश्च प्रतिबिम्बः आसीत्। यत्र तस्य अल्प वयस्कः शिशवः क्षुधितः अभवन् सः मिष्ठान्नैः स्व उदर पूर्तिविषये न विचार कर्तुं समर्थः। तस्यानिच्छा तथा च संकोचं वीक्ष्य बद्रीदासेन आग्रहः कृतः यत् ते स्व सन्मुखे परिवेषित मिष्ठान्नं सम्यक् खादतु तस्य शिशुभ्यः अपि पर्याप्तं वर्तते। सः आश्वासयत्।

बद्रीदासस्य प्रसन्नतायै गुरुदेवः दुग्धं अपिवत् तथा च मिष्ठान्नस्य एकांशं गृहीतः। इतस्ततः विषयेषु वार्तालापं कर्तारन् बद्रीदासस्य गृहे घटिका द्वयं अतीतः। तदा गुरुदेवः गृहं प्रत्यागच्छत्। बद्रीदासः तेन सहैवासीत्। यथैव गुरुदेवः स्वगृहे चरणौ स्थापितः सः एक क्विंटल परिमितं गोधूमस्य सनपुटः द्वारे भित्तिकाश्रये स्थितः अपश्यत्। गोधूम सनपुटस्यास्य आश्चर्य जनकः एवञ्च स्वागत योग्य उपस्थितिं शीघ्रेव श्रेष्ठिं बद्रीदास पाड़िया महोदयेन स्पष्टीकृतः। श्रेष्ठि महोदयेन एषोपि आश्वासनो दत्तः यत आगामि कृषि पर्यन्तं तस्य पार्श्वे गोधूमः नियमित रुपेण प्रेषयिष्यते।

दिव्य हस्तः एकदा पुनश्च संकटे तस्य साहाय्यं कृतः। बाइबिल इति ग्रन्थस्य एते वचनाः सत्यसिद्धाः अभवन् यत् त्वं ईश्वरीय व्यवस्था एवञ्चन्यायस्य श्रद्धापूर्वकं अनुसरणस्तु करोतु त्वां इमानि वस्तूनि अनायासेव प्राप्तं भविष्यन्ति।

ऊँ श्री सद्गुरु प्रसादात् नवमम् सोपानम्।

ऊँ श्री सद्गुरवे नमः

दशमम् सोपानम्

विलक्षण उपनयन संस्कारः

गुरुवर्य महोदस्य जीवनः एतादृशः असंख्य प्रसंग्ड़ेन परिपूर्णः अस्ति यस्मिन् दिव्य हस्तः तस्य व्यावहारिक जीवनस्य समस्यानां समाधानाय अग्रसरः अभवत् अत्र एतादृशः एव एकान्यः प्रसंगः प्रस्तुतः।

यदा गुरुवर्य महाभागस्य ज्येष्ठ पुत्रः 'बाबा' इति नामधेयः नवः वर्षस्य आयुः पूर्णं कृतः तदा ् परिवारस्य समक्षे तस्य उपनयनसस्कारस्य प्रश्नः उपस्थितःअभवत्। यज्ञोपवीतस्तुः एकः धार्मिक संस्कारः अस्ति यद् प्रत्येक ब्राह्मणबालकाय द्विजनिर्माणाय आवश्यकः अस्ति। संस्कारोऽयम् ईसाई जनानां वपतिस्मातुल्यः अस्ति। महाभागस्य द्वितीय पुत्रः 'बच्चूरपि' दीक्षेयं योग्यायुषु प्राप्तः।

पृथक्–पृथक् उपनयन संस्कारस्य आयोजने भवितारः व्ययस्य मितव्ययिता दृष्ट्या निर्णयोऽयं गृहीतः यत् द्वाभ्याम् बालकाभ्याम् एकैव सहैव दीक्षितम् कारयेताम्। यतः परिवारस्य अयम् प्रथमुपनयन समारोहारम्भःअभवत्। अतः मातुः इच्छासीत् यदयं यथा संभवः हर्षोललास पूर्वकं मन्यन्ताम्। परं प्रश्नोत्थितः यत् अर्थः कुतः अलभत्। परिवारस्य पार्श्वे किञ्चिदपि शेषराशिः नासीत्। यस्योपरि ते निर्भरं भवितुमर्हति। गुरुवर्यस्य दैनिकआयः मात्रं परिवारस्य मूलावश्यकतांनांपूर्तिः तथा च नित्यागन्तारः अतिथीन् भोजनाय एव पर्याप्तम् भवतिस्म। अतः व्ययम् यथोचित सीमायाः अन्तस्थेव स्थापनाय पर्याप्त चिन्तनोपरान्ते र्निणयोऽयं गृहीतः यत् मात्र परिवारस्य अन्तरग्ड़. मित्राण्येव निमंत्रयेयुः।

परंकम् आत्मीय जनस्य रुपे गणयितुम् निर्णयोऽयमपि न सुकरः आसीत्। यतः गुरुवर्यस्य अन्तरग्डं. मित्राणां सीमोऽपि स्वीयेषु सम्मर्दकेन हीना नासीत्। अन्ततः

मातागुरौ मध्ये इदं सुनिश्चितमभवत् यदनुमानतः षष्ठिततः संप्ततिः परिवाराः प्रार्थनया सह आमन्त्रयेयुः यत् मात्र परिवारस्य प्रमुखेव कार्यक्रमस्य शोभां वर्धयन्तु इत्यिथा सम्भवम् मितव्ययितया सहोपि व्ययस्याकलनम् शत रुप्यकाणि समीपमभवत्। यद्यपि राशेऽयंमपि परिवाराय अत्यधिकासीत् परमन्यच्च न्यूनता असम्भव प्रतीतिरभूत्।

मौखिक निमंत्रण दानस्य प्रथासीत्। निमंत्रण दानस्य कार्यभारः परिवारस्य नापितम्र्पितः अतः अम्बादास नापितम् चयनितपरिवारान् निमंत्रयाय नियुक्तः कृतः। नापितः निमंत्रण संप्रेषणारम्भम् कृतवान् यस्मिन् परिवारेषु सोअगच्छत् ते : तं असूचयत यदमात्र परिवारस्य प्रधानः एव न अपितु सर्वे। सदस्याः कार्यक्रमे संम्मिलितं भविष्यन्ति शीघ्रेव संमाचारोऽयं नगरे प्रसृतः तथा च सहैवास्य जनेषु एकं अद्वितीयोत्साहं उत्पन्नमभवत्। ते सर्वे यान् गुरुवर्यस्य परोपकारितां ज्ञानस्य अवसरं लब्धः। अन्यच्चये गुरुम् प्रेमवशात् पड़ितजी इति कथयित्वा संबोधितमकुर्वन्। निमंत्रणं मिलितः नवा कार्यक्रमे सम्मिलितं भवामः इति निश्चयमकरोत्। उपनयन संस्कारे सम्मिलित संभावनायाः उमंगस्य विषये बोधनानन्तरे गुरुवर्यः माताश्च स्वयं भाग्योपरित्यक्तः तथा च मात्र शत रुप्यकाणि व्ययस्य लक्ष्यं दृष्टिगतं कृत्वा व्यवस्था सन्नद्धितां व्यवस्थितंकृतः।

निधारितं दिवसागतः अयम् एकःअप्रैलः आसीत्। विधिपूर्वकं कार्यक्रमारम्भमभवत् अगणित परिवाराः सम्मिलिताः। यत्र षष्ठितः/60– सप्ततिः/70 अतिथीनांमाशाकृतः तत्रानुमानतःसमीपतर षट्शतोत्तरजनानां सम्मर्दासीत्। ईद्दृग्नुमीयते मन्यते चयत् जनाः स्वप्रिय पंड़ित महोदयम् अप्रैलफूल विनिर्मितः।अनिमंत्रित जनेषु नगरस्य प्रसिद्ध व्यक्तिः तथा च तस्य–परिवारः आसीत्। जनसमूहेऽयं गुरुजी महोदयस्य पारिवारिक वातावरणेषु किञ्चित् ईदृक् संपृक्तः यथा दुग्धेषु जलम्। तत्र नकापि विसंगतिरासीत् आवश्यक प्रबन्ध कार्याय पाकशाला कार्येष्वपि प्रत्येकः जनः बिना संकेतेन स्वहसतं आवंटयत्। असौ जन समूहः मातरम् वास्तविक रुपे चिन्तितमकरोत्। इमान् अतिथीन्

कीदृक व्यवंहारं वर्तितव्यर्म् ? किमपि भोजनेन बिना वाल्पाहारस्य कथं प्रत्यावर्ततेः ? मात्र पञ्चसप्तति जनेभ्यः विनिर्मित भोजनम् केन प्रकारेण षट्शतोत्तरं जनान्परिवेषितव्यम् वितरितः ? मातुःपार्श्वे द्रौपद्याः प्रसिद्ध अक्षय पात्रमपि तु नासीत्। ताम् किं कर्तव्यम्। अस्याः समस्यायाः समाधानम् तस्याः सामर्थ्यात् परे आसीत्। सा स्वयं नवजात शिशुशिशोः तुल्यः निस्सहायानुभवं अनुभूयते। अश्रुपूरित नेत्राभ्यां सास्वचिन्तां पतिना व्यक्तमकरोत्। सः तान् धैर्यपूर्वकम् अश्रुणोत् तथा च स्वय स्थितेः गम्भीरतां अनुभवन् तां धैर्य धारणाय परामर्शो प्रदत्तः प्रतीक्षां कुरु एवं पश्य च किम् भवति विधाता स्वयं प्रबन्धम् करिष्यन्ति इति तेन आश्वासनं दत्तः। द्वादशवादनान्तगत धार्मिक क्रियाः समाप्ताऽभूत्। अधुनाइदानीं वा अतिथि भोजनस्यानन्दाय तत् परासीत् सभासदने भोजन वितरणस्य व्यवस्था कृतः। पञ्चाशत समूहे जनाः भोजनस्यानन्दानुभवम् समारब्धः। भोजन वितरणः एवं व्यवस्था भोजन ग्रहणस्य व्यवस्थायाः कार्यः संध्यापर्यन्तं प्रचलितः। अनुमानतः षट्शतोत्तर आगन्तुकाः समारोहे भोजनंम् अकुर्वन। तथा च पूर्ण संतुष्टि प्रसन्नतया च सह स्व स्वगृहाय गन्तुं अनुमतिं प्राप्तः। मात्रेश्वरेव जानातियत् केन प्रकारेण पञ्चसप्तति जनेभ्यः निर्मित भोजनम् अनुमानतः षट्शतोत्तर जनान् संतुष्टः कृतः। रात्रेः दश वादने यदा अतिम अतिथिः गमनाय आज्ञा गृहीतः तदा गुरुजी एकः राजपुरुषः उपनिरीक्षकः श्री मान् महाजनः एवं श्री भैय्या जी पांड़ेयेन सह भोजनाय उपविशत्। श्री महाजनः यद्यत् आद्यतः पूर्ण समयेन कार्यक्रमे उपस्थितासीत्। स्वोत्सुकतां नारुधत तथा च सः टिप्पणी करणाय गुरुवर्यस्यानुमतिं अयाचत्।

अहं प्रातरेव समस्त घटनायाः अवलोकनम् करोमि। श्री महाजनः कथनारम्भः कृतः। अहम् अत्यन्त प्रभावितः विस्मिताश्चास्मि यत् कया विधया एतेधिक स्त्री पुरुषाः शिशवश्च अनिमंत्रितेन उत्सवे संकोचरहितं उत्साहपूर्वकं सम्मिलितः तथा च केन

प्रकारेण यस्यापि साहाय्यं तेदातुं शक्तः तं साहाय्य प्रदाने स्वयं स्फूर्त उमंगोल्लासस्य च प्रदर्शनम्। अकुर्वन्।

एतादृशेव कार्यक्रमः तु यंदि कस्मिंश्चित् आढ्य परिवारेषु भवति तर्हि तु अत्यधिक धन व्यय कृतेऽपि आगत जनेषु ईदृकः इति वा रुचि उमंगश्चनोत्पन्नं करिष्यन्ति यथाचात्र दृष्टः। अनेन सुस्पष्टं भवति यत् प्रत्येक व्यक्ते ह्रदये भवदभ्यः स्थानमस्ति। तेल्हारा भवान गृहमस्ति निवासस्य स्थान मात्रंनास्ति। तेल्हारा नगरस्य जनतायाः इत्थं आदर स्नेह प्रदर्शनोपरि पू0 गुरुवर्यः भावावेशेनाभिभूतोत्थितः तस्य चक्षुश्चं अश्रुपूरितोऽभूत्।

आश्चर्यजनकोत्सवस्य भव्य समापन अवधिस्तु अभवदेवनासीत्। द्वितीय दिवसे प्रातः गुरुवर्याः समारोहस्य क्रीतःखाद्यसामग्र्याः मूल्य प्रदानाय श्री मगनलाल गडोदियामहोदयस्य विपणिकायां गतः। मगनलालः स्वयमपि गुरुवर्यस्य गृहे कार्यक्रमे उपस्थितः आसीत्। तथा च यत् किञ्चिदपि न्यूनता तस्य सूक्ष्मनिरीक्षणः कृतः ते अत्युत्तमरीत्या जानन्तिस्म् यत् यद् खाद्य सामाग्री सः उपलब्धम् अकारयत् स तु मात्र शतरुप्यकाणि मूल्यस्येवासीत्। कल्पना रज्जुः कत्यपि शिथिलः कृतः परं कोऽपि इमाम् सामग्रीं कतिभ्यः शतोत्तरजनानां भोजनाय पर्याप्तं न अमन्यन् आमनन्तिस्म् मगनलालस्तु इत्थं सर्वं स्व नेत्राभ्यां अपश्यत् दृष्टवा अतः तस्य हेतवे अयम् प्रकारेकैकं चमत्कार एका दैवी कृपायाः उदाहरणं आसीत्।

मगनलालस्य मस्तिष्के एतादृश विविध अवसरः आक्षिप्तः यदा सः ऋजुः धनहीनश्च पंड़ितेन विनोदं अकरोत्। अवसरेऽस्मिन् गृहीत स्वतंत्रतोपरि तंअनुतापम् आरम्भः सः अधुना अयं ज्ञातः कृतः यत् प0 महोदयः दिव्य शक्तिभिः युक्तोऽयं पुरुषः तथा च सदैव दैवी सुरक्षायाम् वसन्ति। धार्मिक भावनाभिः ओतप्रोतः चकितश्च मगनलालः गुरुणा अपृच्छत्। माम् आज्ञापयतु वदंतुवा प0 महोदयः मात्र शत रुप्यके क्रीत सीमित सामग्र्या एतेधिक जनाः केन प्रकारेण तृप्ति पूर्वकं भोजनम्करोत्। अहं

न जानामि यदऽयं केन प्रकारेण अभवत् परं यत किञ्चिदपि घटितः भवान् स्वयमेव दृष्टः गुरुवर्यः उत्तरं अददत्।

पंड़ित प्रवरः कृप्या माम् क्षमाकुरु यदऽहंमयंकथनस्य धृष्टता करोमि यतकिञ्चिद्पि घटितः सः ऋते कश्मिंश्चित् दैवी हस्तक्षेपेन संभवः नाआसीत्। पंसारी अकथयत् यदा ईश्वरः ईदृगुदारतया सर्व अयच्छत् तर्हि अहम् स्वल्पमप्यस्य रसदस्य पणकं ग्रहणाय लज्जामनुभवामि मम मनमस्ति यत् भवता धनः ग्रहणः ईश्वरस्य तिरस्कारः भविष्यति। मगनलालः भुक्तान राशिग्रहणं अस्वीकरोत् गुरुवर्यः रसदस्य मूल्यः यत् शतरुप्यके आसीत्। तद्मूल्यस्य भुक्तानं करणोपरिबलं दत्तः। सः शत रुप्यके विपणिकायाः पटलोपरि स्थिरी कृत्यप्रस्थितंश्च।

मगनलालोऽपि निष्क्रियः नाभवत् सोऽपि स्व विपणिका परित्यज्य गृहं गतः यतः तस्य मनसि एका योजनासीत्। स्व सहैव सः गुरुणा परित्यक्तपटलोपरिशतरुप्यकमपि अनयत्। सः स्व पत्नीं आहूय विषयेस्मिन् विचार विमर्शं अकरोत् तथा च द्वयोरपि निर्णयः गृहीत् यत् धनमिदं उपनयन संस्कारस्योपलक्ष्ये मात्रम् उपहारयतु। एतत् सर्वम् गुरुणा अज्ञाते कुर्वतिस्म।

समयावधिं व्यतीते बिना पंसारी महोदयस्य पत्नी स्व लक्ष्यस्य पूर्तये प्रस्थितः। किञ्चित काल पर्यन्तं सा मात्रा सह वार्तामकरोत् पुनश्च सामात्रा तस्याः शाटिकायाः भागमेकं किञ्चित अग्रे करणाय प्रार्थनां अकरोत् अनया माता किञ्चित द्वैविध्ये निमज्जितः। तां का भविष्यति अस्याः अनुमानं नासीत्। सा मातस्तु पंसारी महोदयस्य धर्म पत्नी प्रार्थनानुसारेण च शाटिकायाः क्षोरमेकं पुरतः कृतः। पंसारी महोदयस्य पत्निः शत रुप्यकाणि स्थापयित्वा मात्रा निवेदनम् अकरोत् यत् राश्येयं उपनयन संस्कारस्य अवसरे उपहार रुपे स्वीकरोतु तथा च बिनाधिकं वार्ता कृतेव सा गृहंप्रति प्रत्यवर्तितः।

ऊँ श्री सद्गुरु प्रसादात् दशमम् सोपानम्।

ऊॅ श्री सद्गुरवे नमः

एकादशम् सोपानम्

मजहर खानः प्रकाश पिङंश्च

उर्दू शालायाः प्रधानाध्यापकः श्री मजहर खानः तेल्हारायां वा स्थाने गुरोः आत्मीय जनेषु एकासीत्। ते सर्व प्रथमम् एक रोगी रुपे आगच्छत्। गुरुणा बहुधा भवितारः मेलने मजहार खानः गुरुवर्यास्याध्यात्मिक प्रकृत्यां ध्यानं प्राददत्। यतः स्वयमपि तस्याध्यात्मिकं प्रति निष्ठा आसीत्। अतः गुरुवर्यः तन्मध्ये च एकः घनिष्टः आध्यात्मिक समन्वयः क्रमिकःप्रस्फुटितः।

यदापि ते कस्यचिद् विषये विचार विमर्श अकरोत् यथा विश्वयुद्धःराजनीतिः सामाजिकः पारिवारिकश्च विषयेकिंवा मात्र नित्यं प्रति जीवने आगन्तारः समस्याः अन्ते विचारविनिमयमेते सहजेवेकः दार्शनिकस्तरोपरि समाप्तिर्भवति। वार्तालापे दार्शनिकतायाः निरन्तर समावेशेनैवं मजहर खानः स्वाश्चर्य नारुधत् तथा च सः दिनेके अपृच्छदेव यत् तस्य परिचर्यायाः अंतस्तु सदैव दार्शनिकतायामेव कथं भवति। गुरुणोक्तम् यत् वा गुरुवर्यः उत्तरं दत्तः यत् प्रत्येक वस्तूनामारम्भः अंतश्च परमात्मानएव भवति। यथा यत् समस्त ब्रह्माण्डे व्याप्तोऽस्ति तथा चास्यज्ञानमेव दार्शनिकताऽस्ति अतः परिचर्यायाः अंतः दर्शनेन बिनान्यत् कुत्र भवितव्यः। मजहर खानः गुरोः समीपे आगच्छत् तथा च स्व मस्तिष्के द्वैध मन्थारः क्लिष्ट समस्यानांम् समाधानाय साहाय्यं मार्गदर्शनञ्च् प्राप्स्यामि्। खानं स्वपवित्र ग्रंथ कुरानस्य उत्तम ज्ञानं आसीत्। सैषः दत्तावधानः आरम्भयत् यत् स्व व्यक्तिगतऽनुभवैः यस्य कस्यापि वार्तायाः गुरुवर्यः विस्तार पूर्वकं निरुपणं कुर्वन्ति। तत सदृशोदाहरणं पवित्र कुराने अवश्यं मिलन्ति।

दिवसेकस्मिन् मजहर खानः यदा स्वकक्षस्य स्वच्छता कुर्वतिस्म् तं धूल धुसरितम् एकम् प्राच्य पुस्तकम् प्राप्तः। तं पुस्तकं सः अपश्यत् वापठच्च ईदृक तं स्मरणं नाभवत्। पुस्तकस्यरजमपहाय बिना केनापि विशेषुत्सुकतायाः सः किञ्चिदपि पत्राणि इतस्ततः कृतः मात्रेत्थं ज्ञात्वा विस्मयमभवत् यत् फारसी भाषायां विलिखितः पुस्तकेदं कानिचित् प्रमुख सूफी संतानां जीवन वृत्तीनाञ्च संकलनासीत्। तस्योत्सुकता जागृतः अभवत् तथा च सः यथा शीघ्र तं पुस्तकम्पठत्। तं शीघ्रेबेषः बोधोऽभवत् यत् एतेषां सूफी संतानां तथा च गुरोः अनुभवेषु दर्शनेषु चातिसाम्यः विशिष्टस्तु गुरुणाप्रदतः नूरं वा दिव्य ज्योतेः स्पष्टीकरणे ते अत्यधिकं प्रभावितः अभवत्।

मजहर खानस्य दृष्टयाम् गुरुवर्यैः अत्युन्नतोत्तिष्ठति। तथा चाप्यत्यधिक श्रद्धया सह खान तस्मिन्नेव दिने गुरोः सविधे प्राप्तः गतवा सः स्व सहैव पुस्तकमपि आनीतः। पुनश्च विचार विनिमयः अध्यात्मस्य विषये अगच्छत्। खानः अत्यधिकं प्रभावितोऽभूत्ः यत् सः गुरुणा अध्यात्मस्य गहन–गहन अभ्यासाय पथ प्रदर्शनाय चाग्रहं अकरोत्। गुरुवर्यः तं उचित समये पूर्ण साहाय्यं मार्गदर्शनस्यचाश्वासनं दत्तवान्।

ततः मजहर खानः स्वावकाशस्य समयम् गुरोः सन्निधये अयापयत् शनैः शनैः खानं गुरोः उर्दूभाषायामाधिपत्यं पवित्र कुरानस्य च विस्तृत ज्ञानस्य बोधोऽभवत् कुरान सरीफः तथा च सूफी पुस्तकस्य अस्पष्टः उदाहरणानां व्याख्याकरणे गुरोः प्रावीण्यता विश्लेषणस्य च सरलतम विधिः तथा च तस्य व्यक्तिगतानुभवानां दृष्टान्तस्य प्रचुरमात्रायां समावेषः एते सर्वेमजहर खानं स्वधर्मः अत्युत्तमः तथा च हितकर रुपे अवबोधने पालनस्य च कृते साहाय्यं कृतः।

सूफी पुस्तकोपरि विचार विमर्शस्य। कतिचिद्दिवसानन्तरे गुरुम् पूर्वे अभूत अनुभूतिना एकः भिन्न प्रकारस्य दर्शनः अभवत् अस्यानुभूतेः नूतनता ध्यानायोपयुक्तः। एकस्थां रात्रौ गुरुवर्यः स्वकक्षे आसन्दिकायां स्थितः तथा ध्यान मग्नः अभवत्।

किञ्चित्क्षणानन्तरे गहनध्यानस्य स्थित्यां तस्य भृकुटयोः मध्ये एकोद्दीप्तः प्रकाशः अप्रकटयत्। शीघ्रेवेषः प्रकाशः एकस्य चक्रस्य रुपं अधारयत्। अस्मिन् चक्रे कुरान सरीफस्य पत्राणि एकतः अनन्तरमेकः अपश्यत्। अस्यां कुरानस्य दुरुहः जटिलश्चायताः तस्याः गूढार्थैः व्याख्याभिश्च सह अपश्यत्।

द्वितीय दिवसे मजहर खानः गुरुणा सम्मिलितः। कुरान शरीफस्य अध्ययनेन यत् किञ्चिदपि संदेहोत्पन्नोऽभूत् तस्य स्पष्टीकरणायते आगतः। यथा मजहर खानः उपविशत् गुरुवर्यः तत् विषये कथनं स्पष्टीकरणञ्चारम्भः कृतः। यस्यामुपरिते विचाराय आगतः। सः स्थित्वा एकाग्र चित्तेन श्रुतवान् सः नावबोधयत् मात्राश्चर्यं कर्तारन् वा कृतः यत् केन प्रकारेण यस्य प्रसंग्ड़.स्य स्पष्टीकरणाय सः आगतः तदेव प्रसंग्ड़. गुरुवर्याः अचिनोत् स्पष्टीकरणेन तुष्टः मजहर खानः गृहं प्रत्यावर्तितः तेन अनुमीयते यत् मात्र संयोग वशादेव गुरुवर्याः तस्य बिना प्रश्ने कृतेव तस्यैव प्रसंग्ड़. स्य सविस्तर विवेचनः कृतः।

द्वितीय दिवसे पुनः श्री मजहर खान महोदयः कानिचित् आयतानां स्पष्टीकरणाय आगतः दिवसेऽस्मिन्नपि तेन प्रकाशेन सुखद सुकोमल रश्मयः प्रस्फुटितः तमनुभवमभवत् यत् ते अस्मिन् प्रकाश पिण्ड़े अवस्थितः। पिण्ड़ेः तीवगतिः अजायत् तथा च तस्य मुखे प्रविश्य कण्ठतः भूतम् वा गच्छन् अधः गतः। तस्य देहः तत्कालेव इत्थं पारदर्शी अभूत यत् ते स्वान्तरिक अवयवान् कार्य कर्तारन् पश्यन्तिस्म। ते ह्रदयास्पन्दनम् तथा च फुस्फुसानां श्वासोच्छ्वासस्य क्रियामपि दर्शनेशक्तुरासीत्। तं स्वर्गीय शान्तिं सुखस्य चानुभवमभवत्। अनुभवैषः ईदृक स्फूर्तिदायकः तथा चोत्साहवर्धकः आसीत्। तथा चास्य ज्ञानोदयस्य हर्षे ते ईदृक गहने निमज्जितः यत् पुनः सांसारिक धरातलोपरि पुनरागमनस्य नेच्छुकः। वस्तुतस्तु एषः तं रुचिकरं अनुभूतः नवा परं ध्यानस्य निर्धारित कालस्य समाप्तिं पश्चात् तं पुनः स्व परितः संसारस्य बोधोजातः।

दिवसेऽस्मिन्नपि अस्य पूर्वयत् खानः स्व प्रश्न कर्तुं उत्सुकः यत् तद् पूर्वेव गुरूवर्य्याः तदेवोद्धरणोपरि वक्तव्यम् स्पष्टीकरणञ्च आरम्भः कृतः। अनेन क्रमेण सप्ताहमतीतः श्री खानस्य समस्त शंकानांबिना पृष्टेव समाधानमभूत् साश्चर्येण ते अभिभूतोऽभूत् इदानींते इमम् मात्र संयोगं नामन्यत् स्वोत्सुकतां अधिकञ्चनसंकुचनस्य कारणेन सः गुरूणा अस्य रहस्यं अपृच्छत्। तदागुरूवर्य्याः अवगतमकारयत् यत् कया विध्या रहस्यमय रूपेण पावन कुरानस्य आयतानां प्रत्यक्ष दर्शनमभवत् तथा गूढार्थज्ञानमभूत्। श्री खानः इत्याधिक्यं विस्मितं प्रभावितञ्चाऽभूत् यत् तत्क्षणेवते धर्मस्यास्यरहस्यमय मार्गे दीक्षितं भूतस्य इच्छा क्रियमाणः। तस्योत्साहेन गुरोरपि प्रभावितः जातः तथा च गुरूवर्य्याः तं द्वितीय दिवसे दीक्षा प्रदानस्य वचनं दत्तः। आगामि दिवसे प्रातः मजहर खानः अध्यात्मस्य गूढ़मार्गस्य च दीक्षा ग्रहणाय पूर्ण गम्भीरतया उपस्थितः। सः गुरोः सम्मुखे अवनिकृतजानुः श्रद्धया आदरेण आशया च सहैवअवस्थितः गुरूचरणाः तं अध्यात्मस्य किञ्चित् विधयः संबोधयत् यद्यत् इस्लामेन चयनितः तथा च पवित्र कुरानोपर्य्याधारितः आसीत् गुरूवर्य्याः ध्यानस्य आसाम् विधिनां पालनाय सविस्तारेण निर्देशोऽपि दत्तः। मजहर खानः गुरूणा आध्यात्मिक मार्गदर्शनः एवञ्चदीक्षाग्रहणकर्तारः प्रथम मुस्लिम शिष्यः विनिर्मितः केचिदन्यजनोऽपि अस्यानुसरणः कृतः।

द्वितीयः

दीक्षा ग्रहणकरणस्य कतिचिदेव दिवसानन्तरे एकस्मिन्दिने मजहर खानः ध्यानं प्रकाशस्येकः विशालपिण्डः तस्य सन्मुखे अवतरितः अभूत्।

असौ ध्यानं दातुं योग्यः यत् योगस्य अभ्यासी स्वाध्यानारंभकरणस्य मानसिक घट्यां ध्यानाय यद्वधिः नियतं करोति तस्य समाप्तौ ध्यानं स्वतः एव समाप्तिः अधिगच्छति। ध्यान समाप्तिं भवत्येव सः गुरोः सविधे अधावत् तथा च कृतज्ञतया

ओतप्रोतं भूत्वा तं अस्य दिव्यानुभवस्य विवरणः श्रावयत्। ध्याने प्रगतिभूत्येव सहैव मजहर खानं एतादृशाः कतिचिदनुभवान् अभूत्। अस्य सहैव गुरोः आध्यात्मिक महानतया अभिभूतं भूत्वा सः गुरुणा कुरान शरीफस्य कश्मिंश्चिदपि सरल भाषायाम् अनुवाद कृतस्य आग्रहः कृतः याम् जन सामान्योपि तस्यां सन्निहित परम सत्यं अवबुध्यत्।

मजहर खानमयं विश्वासः अभूतयत् यस्यां समये महानसम्राट् अकबरः दीनइलाही धर्मस्य स्थापना कृतः। तत् समये गुरुवर्य सदृशः उदारसंतः उद्भूतः तर्हितु विभिन्न धर्मावलम्बिषु पारास्परिक सद्भावः आदरस्य च विकास अभूत तथा चाद्य धर्मस्य ब्याजे यद्द्वेषः अत्याचारश्च प्रचलन्ति तेनोत्पद्यन्ते।

ऊँ श्री सद्गुरुवे नमः

ऊँ श्री सद्गुरवे नमः

द्वादशम् सोपानम्

वृन्दावने राधायाः दर्शनम्

प्रत्येकः मनुष्यः इतर जनानां स्नेहपात्रः प्रशंसितः एवञ्च चर्चितभूतस्य इच्छुकः अस्ति वयम् पृथक पृथक मात्रायाम् स्व अहंकारस्य तुष्टिः आत्माभिमानः एवञ्चात्मविश्वासस्य वृद्धये नाम कीर्तेश्च क्षुधितः सीमाभ्यान्तरे मानव स्वभावस्यैषा विशिष्टता असत्यमपि नास्ति। परं कानिचित् एतादृशः संतः पुरुषः अवश्याः सन्ति ये स्वदर्पं अजयन्। तथा च ते गर्वतः पराभूतः मात्राध्यात्मिक श्रेष्ठता सम्पन्न व्यक्तिषु एव जन समर्थनः प्रशंसायाश्चेच्छा नहि भवति। आभ्यः व्यक्तिभ्यः यीशुः अकथयत्–'' चेत् यद्यपि त्वम् अस्मिन संसृतौ वसति, त्वमस्यसंसारस्य नास्ति '' । श्री कृष्णानुसारेण – ''एते जनाः जलेविकसितपंकजपत्रतुल्यास्ति'' । जले विकसितं भूत्वापिनार्द्रं भवन्ति। अमीकानिचित् धर्मपुरुषान् त्यक्त्वा वयम् आत्म प्रदर्शनस्य इच्छुकाः सन्ति। प्रदर्शनोऽयं अस्माकं सम्पत्तिः वास्तविकः बा द्दद्मगुणाः तथा चास्माकं शारीरिकं मानसिकं वा कौशलः कस्यापि भवति वा भविष्यति। अस्मासु कतिषु स्व समाजे स्व महत्ता प्रत्यक्ष रुपेण अप्रत्यक्षंरुपेण वा स्व प्रदर्शनस्य एकोप्यवसरं न परित्यजन्ति। अनेन प्रकारेण वयमियंचेष्टा कुर्मैः यत् अन्य जनाः माम् श्रेष्ठंअवबोधयन्ति। अनया भावनया किं प्राप्तिर्भवति एषस्त्वहं न जानामि।पंरम् वयं इमेजानन्ति खलुयत् अनया वयं अपूर्व संतोषोल्लासः तथा चात्माभिमानस्यानुभूतिः भवति। इच्छयातु इमाः कत्यपिक्षणिकोभूः।

गुरुवर्यस्य सुपरिचिते किञ्चिदस्यप्रकारस्य प्रदर्शन प्रियः जनाः अपि आसीत्। एतेजनाः गुरोः सविधे कश्मिश्चिदपि आध्यात्मिक लाभायनागच्छन्तिस्म परं ते ईदृगवसरस्य प्राप्तये आगतः। यदाते गुरो यथा पवित्र पुरुषैः स्वधनिष्ठतायाः प्रदर्शनम् अकारयत्। कतिचिद् एतादृगपि जनाः आसन् ये गुरोः पार्श्वे स्वज्ञान गुणधनस्य च

प्रभाव प्रदर्शनाय आगच्छन्तिस्म। गुरुम् केनापि सहवैमनस्यं नासीत् ते स्व श्रेष्ठता प्रदर्शन कर्तारन् आत्मप्रशंसक जनेषु स्वमन्दहास्यं प्रकटयत्। बिना अप्रसन्नता प्रकट कृतेव अति निपुणतया ते अवदन् यत् तस्मै सासांरिकोपलब्धिः यथा सम्पदा सत्तायाश्च कोऽपि मूल्यः नास्ति। तं सद्गुणान् चरित्रवान्पुरुषान्प्रति श्रद्धासीत्। यथा ते कति साधारणः वा दीनहीनः किं न भवतु। तेल्हारा स्थाने गुरोः घनिष्ट मित्रेषु एकासीत् श्रीधर गंगाधर धर्माधिकारी यान् स्नेहेन जनाः बाबूराव इति अकथयन्। ते नगर निगम अधिसूचित क्षेत्रस्य सचिवः तथा च स्वच्छता निरीक्षकोऽप्यासीत् ते गुरोः अति निकटे आसीत् तथा च गुरोः आध्यात्मिकोपलब्धिभिः योगशक्तिभिश्च सम्यक् परिचितवान्। स्व मित्रेषु संबन्धिशु च ते बहुधा गुरोः आध्यात्मिकोपलब्धिनाम् प्रसंशन्तिस्म तं व्यक्तिगत रुपेण स्वयं गुरोः आध्यात्मिकः दिव्यशक्तीनाञ्चनुभवाः अभवन्। अहम् एतादृश एकः द्वि प्रसंगस्य चर्चा करिष्यामि। अत्रायं उल्लेखः कर्तव्यः यत् श्री धर्माधिकारी एवञ्च तस्य परिवारः स्व कल्याणाय स्वास्थ्याय च गुरोः साभारंमासीत्। एतादृशी काचित् घटना क्रमाणां अस्य पुस्तकस्य तृतीय भागे स्वयमेव श्री धर्माधिकारी महोदयः अवर्णयत्।

यस्याः घटनायाः इदानींमहंवर्णयिष्ये सा 1958 ई0 रव्रीस्ताब्दे संघटितः। कालेऽसिमन् श्री बाबूराव धर्माधिकारी खामगॉव इति स्थाने नियुक्तः यद्यत् तेल्हारा नगरतः विस्तृतः नगरम् अस्ति। सः स्व स्थानान्तरणं खामगॉव अस्माद्धेतोः कारितवान् यदास्मिन् नगरे महाविद्यालयमसीत् यत्र तस्य बालकः बालिकाश्च उच्च शिक्षा प्राप्तिं कुर्रीतिस्म्। अत्र बाबूरावः गुरोः प्रशंसा स्व मित्र श्री मधुकरराव देशपान्डेयेन कृतः। ते साखर खेड़ी ग्रामस्य यः तु फत्तेखेर्ड़ोऽपि कथयतिस्म्। धनाढ़य कृषकासीत स्वधन संम्पदायाः गर्वः तस्मिन् न्यूनं नासीत्। मधु काका इति नाम्ना प्रसिद्ध मधुकर रावः बाबूरावस्य माध्यमेन गुरुणा परिचितमभवत् यतः बहुधा गुरुवर्य्याः खामग्रामं गत्वा बाबूरावेन सहवसतिस्म। गुरुणा कानिचित् संपर्कानन्तरेव मधु काका गुरुम् फत्तेखेर्ड़ा

स्थित सवगृहे निमंत्रणारम्भ कृतः। ते गुरुम् ग्रामे स्वसमाजिकार्थिकीं प्रतिष्ठाम् च प्रदर्शयामास गुरुवर्याः प्रत्येक क्रमे अत्यन्त नम्रतया निमंत्रणं अस्वीकरोत्। एकदा यदा मधुकाका गुरूणा स्व ग्राम गमनस्य महदनुरोधः कृतः तदा तु प्रत्युत्तरे गुरुणा उक्तम् वाढम् मधुकररावः परं यावत् भवदीय पारिवारिक जनाः आध्यात्मिक साहाय्यं मार्ग दर्शनञ्च नहि इच्छेयुः मम फत्तेखेड़ा आगमनस्य किं प्रयोजनं मात्र यदि भवान् सम्पर्कस्यास्ति तत्तु अयमुददेश्यस्तु अत्रैव पूर्णः भवति। अहं भवान् आश्वासयामियत् यदापिभवान् खामगॉव आगमिष्यसि अहं चर्तुविशतिं घटिकानामाभ्यन्तरेव भवतंमिलिष्यामि। तथा च स्मरणे ईदृक्कृते असफलमभवत् तर्हितु अहं फत्तेखेड़ां आगमिष्यामि।

अनेनाश्वासनेन मधुकररावस्य शरीरे मष्तिष्के च एकः नटखट मुस्कानः प्रसृतः। इदानीं तं पूर्ण विश्वासमभूतयत् कस्मिन्नवसरे सः गुरुं परिवृत्य स्वात्मसंतुष्टि हेतोः स्वग्रामे आनयिष्यन्ति। बाबूरावः यत्तु तत्र उपस्थितः अस्मिन्नाश्वासने चकितोऽभूत्। मधुकाका, बाबूरावं पूर्व सूचनया बिनैव खाम ग्रॉमं आगच्छत् गच्छतिस्म च तं विश्वासमभवत् यत् ते सरलतया गुरुं तमेव शब्देषु गृहीष्यन्ति। तं स्व सफलतायाः विश्वासम् आसीत्। यतः सः असोचयतयतु खामगॉमम् पञ्चत्रिशति मीलः दूरस्थ तेल्हारा स्थानस्य निवासी असौ पंड़ितजी महोदयः केन प्रकारेण समयात् पूर्वमेव तस्य खामगॉव आगमनस्य विषये ज्ञाष्यन्तिं येन तस्य खाम गावॅ आगमनः सम्भवः भविष्यति ? मघुकाका इति जनस्यविचारावगतं भूत्वा गुरुवर्य्याः स्वास्वासनं पुनश्चाकथयत् स्वखामगॉव आगमनस्य चतुर्विंशति घटिकाभ्यन्तरेव भवान् माम् अत्रैव प्राप्स्यसि। चेदहं अनेन प्रकारेण मेलनेन विस्मरिष्यति तर्हितु अहं अवश्यमेव भवन्तः ग्रामे आगमिष्यामि।

द्वितीय क्रमस्याश्वासने प्राप्तेसति मधुकाका अति प्रसन्नः अभवत् यतः ते निश्चिन्तासीत्। यत् ते अवश्यमेव गुरुं स्व वचनानां पालनं न कृतेसति ते गृहीष्यन्ति। पुनश्च तं स्वग्राम फत्तेखेड़ा नीत्वा इत्थं प्रदर्शयिष्यन्ति यत् तस्य प्रभावः ग्रॉमे कीदृशः

अस्ति। या क्रीडाते क्रीडनेच्छुकासीत् तस्याः कल्पनायाः उत्तेजितं भूत्वा सः गुरोः आश्वासनं स्वीकृतवान् तथा च स्व ग्रामे गतः।

द्वितीय दिवसे ते अनया आशया कर्तारन् खाम गॉवं प्रत्यावर्तितः यत् पंड़ित महोदयः तेल्हारां प्रत्यावर्तयिष्यन्तिस्म तस्याश्चर्यस्य गणना न आसीत् यदा मधुकाका गुरुं बाबूरावेन सह खाम ग्रामेव प्राप्तः। ते पुनश्च स्व ग्रामं प्रत्यावर्तितः। तृतीय दिवसेऽपि सः खाम ग्रामस्य यात्रा कृतः तथा च गुरुं तत्र प्राप्य अत्यधिकं विस्मितंमभवत्। अस्यानन्तरे यदाअपि मधुकाका खाम गॉवं आगतः निरपवादेव सः गुरुं बाबू राव धर्माधिकारी महोदयस्यः गृहे लब्धबान्। एकदा अनुमानतः चतुर्थ मासानन्तरे यदा मधुकाका नागपुरतः पुनश्च स्वगृहं आवर्तितः वा आगच्छन्तिस्म सः पंड़ित प्रवरं नावगतेव गृहीतस्य विचारः कृतवान्। अतः अप्रत्याशितेव सः खाम ग्रामे अवतरितः। यदा ते बाबूरावस्य निवास स्थाने गतः गुरुवर्य्याः तत्र नासीत्। सः अति प्रसन्नतोल्लासस्यानुभवः कृतः यतः वारमेंकं पुनः तमयं विश्वासः अभूत यत् सः पंडित महोदय पराजितः कृतः तथा च तं स्ववशे अधिगृहीतः तस्येंयं प्रसन्नता क्षणिकेवासीत्। कालेऽस्मिन् गुरुवर्य्याः तेल्हारायां स्वौषधालये आसीत् सः औषधालये स्व सम्मुखे मधुकाका इति जनस्याकृतिं तिष्ठति वा स्थितः अपश्यत्। अस्यार्थं विज्ञाय तत्कालेव सः खाम ग्रॉमायप्रस्थानमकरोत्। यथैवते बस/धूम्रगन्त्रीन् विश्राम् स्थले गतः खाम गॉवस्य बसम् प्रस्थितवती आसीत्। घटिकाद्वयस्ययात्रां कृत्य ते खामगॉवं प्राप्तः गतःवा। संध्यां गुरुवर्य्याः बाबूरावस्य गृहे मधुकाका इति महानुभावं विस्मयेउपस्थितः अभूत्। मधुकाका महोदयं नम्रं भूत्वा एतम् सत्यम् स्वीकृतःएवकृतः, यत् असौ पंड़ित महोदयः सामान्य पोंगा पंड़ितम्नास्ति। माम् न प्रतीतिर्भवति यदहं भवान् कदापि फत्तेखेर्डा नेष्यामि। यावत् भवान् स्वेच्छया आगन्तुं नहि इच्छेत्। मधुकाका मात्रेत्थंमेव अकथयत् तु श्री बाबूरावः सम्यक् बोधयत् यत् वयम् पंड़ित जी महोदयस्य अति

संन्निकटे वसित्वाऽपि तस्य गहनतायाः पारं न प्राप्स्येम। पुनश्च भवान तु पंड़ित जी महोदयस्य महानतया परिचितोऽपि नास्ति तम् उत्तेजितं न कृतेव बुद्धिमत्वं अस्ति।

प्रत्येक क्रमे ईदृक कथं अभवत् यत् मधुकाका खाम गॉव यात्रायैः योजनायोजितः तथा च गुरुं तस्यागामि ज्ञानमभूत्। गुरुवय्यार्ः स्पष्टयत् यत् यदापि मधुकाका खाम गावॅ गमनस्य विचारः कृतः तस्य छाया गुरोः निकटे प्रत्यक्षे अप्रकटयत् तथा च सः खाम ग्रामाय प्रस्थितः येन मधुकाका महोदयेन सुनियोजित सम्पर्कं करोति। अनेनायंनिर्विवाद रुपेण सिद्धः भवति यत्तेन जनेन यद्यत् अहंकार परिधेः बहिरस्ति तथा च ब्रहमाण्डस्य तरंगैः सामंञ्जस्यम् संस्थापितः लोके परंलोके चोभयोः किञ्चिदपि न लुप्तः। सर्वं प्रकटितः एव।

तेल्हारास्थ सेठ हनुमानदास मल्लः गुरुणा प्रायः सम्मिलितारेषु एकासीत्। यः दर्शनशास्त्र आध्यात्मिक विषयेषु च गुरोः प्रवचनानां आनन्दं गृहीतः। हनुमान दासः स्वयमपि अध्यात्म ज्ञानस्याकांक्षी आसीत् तथा चैकः सम्मानित गुरुः यद्यत् वृन्दावने वसतिस्म तेनैव दीक्षा गृहीतः। एकदा गुरुणासह विचारविनिमय काले हनुमानदासः स्वगुरोः आध्यात्मिक सिद्धिनां प्रशसा कृतः। वृन्दावने सः एवेक मात्र सत्पुरुषः अस्ति। हनुमानदासेनोक्तम् च यत् गुरुं गुरुणा सहैव चलित्वा तस्य गुरोः दर्शनाय आमंत्रणं दत्तः। गुरुवर्याः अस्योत्तरेमात्र इत्थमेवाकथयत् यत् तस्य वृन्दावन गमनम् अस्यां वार्तायां निर्भरं करोति यत् कः जन कं आकर्षयतेति।

अस्य वार्तालापस्य एक मासानन्तरम् एकस्यां रात्रौ गुरुश्रेष्ठः स्वकक्षे ध्यान मग्नासीत् सः द्वार समीपे एकः सप्ततिःवर्षीयः वृद्धय् अपश्यत् सः शनैः—शनैः वा गुरुं प्रति अगच्छत्। सः मध्यम तनुः अवनत स्कन्धौ शिथिल भुवौ शुष्क कपोल संयुक्तासीत्। तस्य केशः धवलितः। सः धौतवस्त्रं धारितः तस्य शरीरस्योर्ध्व भागं प्रच्छन्नासीत् तथा च सः यज्ञोपवीतंमपि धारितः। तस्य पादयोः अंगुलयः कुरुपः

कुटिलासीत्। तस्य गतिः वदक तुल्यासीत्। नतु तस्य शरीरः प्रकाशेनावृत्तः न च तस्य शरीरेण प्रकाशः विकिरणः एव भवतिस्म। दर्शनोऽयंतं भृगुवासरस्य रात्रौ अभवत्।

रविवारीय संध्यां गुरोः मिलनः हनुमानदासेनाभवत्। ते हनुमान दासस्य गृहं पुरतः कक्षे स्थितः विभिन्न विषयेषु विचार विमर्शं अकरोत्। अनुमानतः अष्टवादनस्य समयासीत् वार्तालापस्य मध्ये गुरुवर्यः हनुमानदासमवबोधयत् यत् वृन्दावनस्य तस्य गुरोः दर्शनः तं ध्याने अभवत्। हनुमानदासं विश्वासो नाभवत्। तदा गुरुश्रेष्ठः सविस्तरं अवर्णयत्। पूर्णविश्वासाय हनुमानदासः गुरुणा अपृच्छत् यत् वृद्ध पुरुषः केन प्रकारेण प्रचलितः। गुरुणा तं अवबोधयत् यत् ते बदक तुल्यं प्रचलितः। तेनोक्तम् यत् तस्य पादयोः त्वचा चकाशते तथा चाग्ङु.लयः कुटिलासीत्। तस्य पदतलः रेशम तुल्यश्लक्षणः वा सुकोमलासीत्। तथा च सः कृशपाद संयुक्तः आसीत् हनुमानदासमिदानीं कोऽपिशंकनासीत् यद् वर्णित वृद्धपुरुषः तस्य वृन्दावनस्य गुरुरेवासीत्।

हनुमानदासः स्वगुरुं तेल्हारास्थितस्य पंड़ितजी विषये तथा च तस्याध्यात्मिकोपलब्धि विषये लेखने किञ्चिदपि विलम्बंन कृतः कतिचिद्दिवसानन्तरेव तं वृन्दावनस्थ गुरुणा उत्तरं प्राप्तम् यत् तेल्हारास्थ पंड़ित महोदयः वास्तविक रुपे एकः उच्चाध्यात्मिकस्थितेः पुरुषः सन्ति तथा च तं हनुमानदासं तेषां प्रति व्यवहारः तस्यादरः तस्य सेवा च एकः गुरुरुपेव कर्तव्यः तं तस्य सान्निध्येन प्राप्तारः आध्यात्मिकलाभस्य एकमप्यवसरं न त्यक्तव्यः। त्यजेत्वा हनुमानदासस्य वृन्दावनेएकम् गृहम् आसीत्। अनेकधा स गुरुवर्यम् तेन सह वृन्दावनं गत्वा कतिचिद्दिवसं तत्रातीतस्येच्छा कृतः। एषु अवसरेषु गुरुश्रेष्ठः गन्तुकामोनासीत्।

सन् 1959 एकोन विंशति शतोत्तर एकोनषष्ठि वर्षे दीपावल्याः एक पक्ष पूर्वम् ध्यानमग्न गुरुः श्रेष्ठि हनुमानदासस्य गृहम् निरीक्षितुं वृन्दावनस्य यात्रा कृतः। सः यमुनानद्याः शिकता तटे गतः तथा च तं तीर्त्वा मूलमार्गे आगतः किञ्चिद्दूरम् मुख्य

मार्गे संचालनानन्तरम् सः दक्षतः एकम् प्रखण्ड संकुचित पथे प्रविष्टः। अस्मिन् पथे किञ्चिद्दूरे गतेसति गुरुः प्राप्तः यदेतद् मार्गम् एकः अश्वत्थवृक्षस्य पार्श्वे गत्वा समाप्तः अभूत्। अस्य वृक्षस्य पार्श्वे हनुमानदासस्य गृहम् आसीत। गृहद्वारे उद्घरिनी रोधकः संवृतः।

क्रम द्वयम्– 2

राधायाः नामस्मरण मात्रेण प्रत्येक भारतीयस्य मस्तिष्के राधाभवगवानश्री कृष्णस्य च सर्वोत्कृष्ट स्नेहं तथा च तयोः रासलीलायाः चित्रः सजीवोऽभवत्। राधा स्निग्धस्य प्रतिमूर्तिः भक्ति पराकाष्ठायाः उपान्त्यवस्थानां प्रतीकः अस्ति। स्व प्रियतम भगवान श्री कृष्णाय तस्य सनेहः स्व स्वामी प्रियस्य च सान्निध्याय तस्योत्कण्ठाव ललकश्च यः दुःख घोर व्यथा संतापश्च स्व प्रियस्य वियोगे ते भुक्तः तथा च केन प्रकारेण कृष्णस्य दर्शनेभूतेसतिताः हर्षोन्मादाभिभूतः नृत्यन्तिस्मः। एतेषु सवर्षु उपाख्यानेषु अमरः अस्ति। गोपीनां सा सर्वप्रथमा सर्व श्रेष्ठाचासीत्। यया ऋते गोपालस्य कल्पनाऽपि कोऽपि न करोति। वा कल्पना कर्तुन शक्तः। स्व स्वामिंप्रति सम्यक् समर्पणे कश्चिदपि तस्य समकक्षे नास्ति। भक्ति पथस्य सा अन्तिमः प्रतिमानः अस्ति। ईश्वरस्य सद् भक्तः कस्य प्रकारस्य केन प्रकारेण भवेयुः अस्याः सा उदाहरणः प्रतीकः वा। तस्याः नाम पदस्य स्मरणः प्रत्येक भारतीयस्यमुण्डे भक्तिमयः उत्तम विचाराणां उत्पत्तिः करोति। तस्याः पूतस्नेहस्य स्मरणः अनेकान् भक्तान् अलौकिकानन्द स्वर्ग सुखेन च भावविह्वलं करोति। तदा यदि कोऽपि तस्या दर्शनैः धन्यः भूतः तथा च यदि कोऽपि तस्याः उपस्थितिः एवं कृपया च कृतार्थः अभूत् तर्हि तु तस्य भाग्यस्य किं कथनम् ?

अस्माकं गुरोः तयोः दर्शनैः न केवलं वारमेकं अपितु क्रम त्रये धन्योऽभूत्। प्रत्येकः दर्शनः सौन्दर्यानन्द शाश्वत सुखप्रदाने अपरतः महत्तममहत्तरासन्। गुरुः यद्यपि समस्त सांसारिक समस्याभिः तथा चायव्ययोः चिन्ताभिः आवृत्तः गृहस्थ जीवन अव्यतीतयत् तथापि ते आन्तरिक रुपेण एतं विक्षिप्त कर्तारः संघर्षानां संमर्दैः सर्वथापरे आसन् एषस्तु निश्चित रुपेण कथनं सक्तः यत् यद्यपि ते अस्मिन् जगति वसतिस्म परं ते संसारी नासन् सः तेषु जनेषु नासीत् यः नेत्रहीनं वसन्ति। यस्तु कर्ण भूतेऽपि वधिरः भवति। तस्य पार्श्वे नेत्रौः आस्ताम् तथा च सः मात्र संसारस्य नितान्त व्यग्रतायाः अनित्यकीडा एव न अपितु अस्मिन् माया संयुक्त संसारस्य परे सत्यम् वास्तविकताञ्चापि अपश्यत्। तस्य पार्श्वे कर्णासीत् तथा च सः अलौकिकं संगीतं अश्रृणोत् यस्तु तस्यात्मायाः भोजनासीत्।

पुनश्च स्वकथामुपरि आगच्छामि रव्रीस्ताब्द 1959 काले दीपावल्याः दिवसम् आसीत्। दीपावली दीपानां उत्सवः अस्ति यस्तु सम्पूर्ण उत्तर भारते अत्युल्लासेन सह मन्यन्ते अस्योत्सवस्य संबंधे किंवदन्तिद्वयं स्तः प्रथमात्विदमस्ति यदस्य दिवसे भगवान श्री रामस्वअर्धांगिनी जानकीं भ्राता लक्ष्मणैः सह चतुर्दश वर्षस्य वनवासं समाप्य अयोध्यां प्रत्यावर्तितः। अयोध्यायाः हर्षित जनाः स्व ईश्वर तुल्य सम्राटस्य स्वागतः दीपकं प्रज्वाल्य कृतः। द्वितीया अस्ति यत् दीपवल्याः रात्रौ समृद्धेः देवी लक्ष्मी जनानां गृहस्य निरीक्षणं करोति यं गृहम् तां प्रसन्नं कुर्वन्ति तत्र ताः निवासं कुर्वन्ति तथा च धन सम्पत्ति, समृद्धि, सुखउञ्च प्रददाति। अतः अस्मिन् पर्वे स्वगृहाणां स्वच्छता रंगरोगनः तथा च तस्य सौन्दर्य वर्धनाय निर्धनाः धनिकाश्च युवा वृद्धौ च सर्वे समान रुपेण एकः अन्यं प्रति प्रतिस्पर्धां कुर्वन्ति।

समस्तेषु गृहेषु परितः रात्रौ दीपकं प्रज्वालितः यया कदाचित् ईदृक न भूः यत् चाञ्चल्या लक्ष्मी अन्तः आगमनस्य मार्गमेव विस्मृतः विस्मरेत् वा।

दीपावल्याः प्रातः गुरुदेवः हनुमानदासस्य गृहे संमेलनाय गतः। तत्र तस्य समुचितः सत्कारः अभवत् तथा च तं गृहस्योपरिछतस्य, प्रासादस्य च एकस्मिन् कक्षे समानीतः। गुरुदेवं ससुविधां संस्थित्य हनुमानदासः किञ्चित् दुग्ध स्वल्पाहारमानेतुं गतः। अगच्छत् वा। एकाकी तिष्ठन् गुरुदेवः समाधि अवस्थायां अवस्थितः। समाविष्टः वा। यदा हनुमानदासः दुग्धं नीत्वा प्रत्यागतः तदा सः गुरुं रिक्त हस्तेन स्वकीय शरीरे हस्त संचालितः अपश्यत्। सः मौनं स्थितः तथा चेमं दृश्यं महद् रुचिना अपश्यत्। यदा गुरुदेवः सामान्यावस्थायां प्रत्यावर्तितः हनुमानदासः अपृच्छत् भवान् किकरोतिस्म। अकरोत वा ? अकुर्बनवा गुरुणोक्तं यत् सः यमुना नद्याः सिकतायां स्नानं करोतिस्म। तथा च यस्मिन् वातावरणें ते आसन् तस्य पूर्ण वर्णनः अर्कुबन् कृतवान वां हनुमानदासः जानातिस्म यत् गुरुदेवः वृन्दावनं परितः क्षेत्रस्य वर्णनं करोति।

अस्यां रात्रौ गुरुवर्यः ध्याने निमग्नः आसीत्। स स्व सम्मुखे भूम्ना कानिचित् षट् वालिश्त उपरि एकम् अण्ड़ाकारं प्रकाशपुंज अपश्यत्। क्षण मात्रेव सम्पूर्णः कक्षः शीतल सुखद प्रकाशेन अपूरयत्। क्रमशः अस्य प्रकाशस्य मध्ये एकानार्याकृतिः यस्तु परितः प्रकाशेन कदाचित् अधिकतरा धवलासीत्। प्रतिबिम्बः प्रकटितः वा/उपरिआगतः तया एकाः अनिर्वचनीयाः दीप्तिः सौंदर्यश्च प्रसृताः प्रस्फुटितश्च। सा श्री राधासीत्। तस्याः श्याम केशाः उन्मुक्तः तथा च भूमिं संस्पृशतिइति अनुमीयते वा इति प्रतीयते। तर्स्यां रुप सौंदर्यः रक्ताभसंयुक्तः आसीत्। तथा च सा श्वेत वस्त्रधारी आसीत्। तस्याः नेत्रौ सुखद संतोषं अनुरागश्च प्रददाति इति प्रतीयते। गुरुवर्यः स्वकीये एकः अपूर्व प्रेमं व्यापयन् अनुभवः कृतः। तथा च सः अवाक् स्थितः। किंचित्कालानन्तरे इदं दृश्यम्व्यलुप्तयत्। तथा च गुरूदेवः मात्स्नेहस्यमहिमायां निमज्जितः गुरुश्रेष्ठः सदैव तदस्थानस्य यात्रा अकरोत् यत्र यस्य स्थानस्य अधिष्ठाता देवता वा देवी तं

स्वदर्शनेनानुगृह्यत्। यतः राधा तं दर्शनम् दत्तः तथैव वृन्दावनं गन्तुकामाः अस्याप्यवसरमपि तं तत्कालेव संप्राप्तः।

द्वितीय दिवसे प्रातः गुरूवर्याः हनुमानदासं गतरात्रावभवत् श्री राधायाः दर्शन विषये अवोचत्। हनुमानदासः तदा गुरु महोदयेन तेन सह वृन्दावनं प्रतिप्रस्थानाय आग्रहं कृतः। तस्मिन्नेव दिने सायं तौ वृन्दावनाय प्रस्थितौ रेलयात्रांकृत्वाभुसावल इति स्थानकं लड़ध्यतौ द्वितीय दिवसेव वृन्दावनं संप्राप्तः।

वृन्दावने हनुमानदासः गुरु श्रेष्ठस्य निवासाय व्यवस्था तस्मिन्नेव भवने कृतः यं सः क्रीतः। रात्रौ गुरुदेवः नाधिकं समयं अस्वपत्। तस्य मस्तिष्कः श्री राधायाः दर्शनस्य स्मृतौ तथा च तत्रस्थ पवित्रस्थानतः संपृक्तः अन्यत् पवित्राख्यानानां संस्मरणेन परिपूर्णः आसीत्। विलम्बित रात्रौ यदा ते अन्ततः निद्रामग्नोऽभूत् तदा एकः विचित्र, वैचित्र्य वा दृश्यः तस्य सम्मुखे आगतः। एकः बृह्दिव मुहर संलग्नः लिफाफा पत्रम् तस्य सम्मुखे अप्रकटयत्। तत् तु स्वयमेव प्रस्फुटितः तथा च तस्याभ्यन्तरतः दस्तावेज त्रयं निःसृतः एषुं इतरेषु वा प्रत्येक दस्तावेजः क्रमिकः प्रस्फुटितः तथा च अनेन प्रकारेण गुरुदेवस्य सम्मुखे आगतः यत् सः तेषामाभ्यन्तर विषयं पठने सक्तः यथैव गुरुदेवः पठनम् समाप्तः कृतः इमे दस्तावेजाः पुनश्च लिफाफा पत्रे संपुटितः। अस्यामनन्तरेन्तस्य पुरतः तेल्हारा स्थित सेठ हनुमानदासस्य गृहं अप्रकटयत्। अस्य एकस्मिन कक्षे लौह विनिर्मित पञ्च मञ्जूषां स्थापितः तथा च एवम् तृतीय मञ्जूषायां दस्तावेज सहितं इदं लिफाफा प्रविष्टः।

द्वितीय दिवसे प्रातः गुरूदेवः हनुमानदासं संबोधयत् यत् वृन्दावनस्थित तस्य गृहस्य अन्यद्वे सहभागी जनौस्तः। एतद् वचनं श्रुत्वा हनुमानदासं महदाश्चर्य चकितमभवत् तथा च सोऽपृच्छत् यदस्य ज्ञानम् गुरुदेवं केन प्रकारेणाभवत् तदा गुरुदेवः तं रात्रेः दृश्य विषये बोधयत् अकथयच्च यत विक्रय पत्रम् सुरक्षित रुपेणं

तस्य तेल्हारा स्थित लौह मज्जूषायाम् स्थितः अतश्च हनुमानदासः अवाक स्थिरः स्थितवा।

अल्पाहारानन्तरे गुरुदेवः हनुमानदासेन सह तस्य गुरुणा सम्मिलने आश्रमं प्रति अगच्छत्। यतः सः महंत महोदयः यमुना स्नानाय गतः अतः उभौ बैठककक्षे प्रतीक्षारतः। भित्तिषु कतिचित् चित्राणि सन्निहितः। समययापनाय तौ चित्रं अपश्यताम्। गुरुदेवः एकस्मिन् चित्रस्य सन्मुखे स्थितं अभवत् तथा च सः हनुमानदासं अवबोधयत् यदेषः तस्यैव पुरुषस्य चित्रम् अस्ति। यं सः तेल्हारा स्थाने ध्यान समये अपश्यत्। हनुमानदासः पुष्टिः कृतस्तु तद् चित्रः तस्य गुरोरेवासीत्। सः वृन्दावने टोपीकुंजस्य महंतइति ख्यातः आसीत् यदा ते स्नानं कृत्वा प्रत्यावर्तितः गुरुदेवतः तस्य परिचयं अकारयत्।

आगामी कतिचिद्दिवसेषु टोपीकुंजस्य महंतः गुरुं वृन्दावनस्य कतिचित रहस्य पूर्ण स्थानानां यात्राः अकारयत्। परं महंतस्य वा परं महंताश्चर्यैस्य स्थैर्यं नस्थिरः यदा अस्माक गुरुदेवः तद स्थानाभिः संपृक्तःइतिहासाख्यानानां विवरणं अनेन प्रकारेण प्रारभत्। मान्यः यत् सः केनापि पुस्तकेन नैरन्तर्यं पठति। एकदा महंतः गुरुं एकस्मिन् समाधि स्थले आनीतः अनयत् वा। यत्र महंत गणः समाधिं गृहीतः। अगृहयत् वा। द्वयोः समाधिद्वय समाधयोः पार्श्वे नीत्वा महंत गुरुणा अपृच्छत् यत तु तेन किमपि वीक्ष्यते। गुरुदेवः तत्कालेव उत्तरं प्रदत्तः यत् एतयोः एकः समाधि स्थलः रिक्तः वर्तते तथा च द्वितीये एकः युवकः समाधौ स्थितः। सः उत्तम शारीरिक परिमाप संयुक्तः गोधूम वर्ण इव अस्ति। तस्य केशाः कृष्णवर्णः प्रलम्बरचास्ति तथा च ते पद्मासन मुद्रायां अवस्थितः। महंतः आश्चर्ये निमज्जितः। असौ जनः एषोऽपि स्वीकृतः यत् समाधौ अवस्थित पुरूषः तस्य गुरूः अस्ति। सः एषोऽपि स्वीकृतः यत् ते वृन्दावने अद्यावधिं कश्मिश्चिदपि ईदृक व्यक्तेः सम्पर्के नागतः यः तेल्हारास्थ असौ पंड़ित महोदय समः अस्ति। आसीत् वा। आश्रमे पुनरागत्य महंतः पुजारी महोदयं निर्देशो

दत्तः यत् गुरुदेवं कश्मिंश्चिदपि समये कमपि वस्तुं यदि इच्छेत् तर्हि तं उपलब्धमकारयत्। कतिचिद्दिवसेव तेल्हारावासी एष ऋजुः स्वभावी गृहस्थः वृन्दावन वासकर्तारः आध्यात्मज्ञान पिपासु तेषु आकांक्षिजनेषु गहनः प्रभावः अंकितः कृतः। ये साधनायाः विभिन्न स्थितीषु अगच्छन्। एतेषु केचिज्जनाः गुरुं प्रति विशिष्टाकर्षितंमभवन। एतेषु महंत टोपीकुंज्जस्य शिष्यः प्रतापचन्द्र चांडकः आसीत्। युवकः प्रतापचन्द्र चांडकः गुरोः आध्यात्मिक शक्तिभिः अत्यन्त प्रभावितः आसीत्। तथा च स्व अधिकाधिकं समयम् अस्येश्वरदूतेन सह व्यतीष्णुः आसीत्। अस्य कृते आग्रह्म् कृत्वा सः स्वगुरुं महंत महोदयेन अनुमतिं प्राप्य गुरुणासहावसन्।

हनुमानदासं गुरुदेवौचवृन्दावने गते सप्ताहमेकमतीतः। एकस्यां रात्रौ यदा समस्त वृन्दावनः शान्तिपूर्वकं निद्रायाः अंकेआसीत्। गुरुदेव स्व स्वभावनुसारेण ध्यानं अकरोत्। तदैव तं एकं दर्शनम् अभवत्। सः प्रकाशस्नाता एकारम्यां उपत्यकां अपश्यत् दृष्टवान वा। अस्मिन् पर्वतं शिखरे प्रकाशेनदेदिप्यमानम् एकम् भव्यंराजमहलम् सोऽपश्यत् ते पर्वते आरुह्य राजमहलं प्रति अगच्छत्। तं अत्यन्त प्रसन्नतानुभूतिः भवतिस्म। यथैव ते प्रवेश द्वारम् प्राप्तः तथैव, तस्य दृष्टिः श्वेत वस्त्र धारयन्ती (केसरिया) भगवां रंगतयुती एकस्यां युवत्यां क्षिप्तः। तस्याः सघनः प्रसृतः प्रलम्बः केशाः आसीत् तस्याः दक्ष हस्ते हीरा जडित केश प्रसाधनिका आसीत। ईदृक् प्रतीयतेस्म यथा श्रृंगारकर्त्री वा श्रृंगारकृतवताः मध्येव उत्तिष्ठागता। एषारम्या तरुणी वस्तुतस्तु नान्यकापि परं भगवान् श्री कृष्णस्य प्रियतमा राधा एव आसीत्। यस्याः दर्शनेन तेल्हारा स्थाने सः परमधन्यम् अभवत्। देव्याः पूतसुखदायकोपस्थितीषु गुरुदेवः मंत्रमुग्धः स्थितः। गुरूदेवः श्री राधा च एकान्यतः अपश्यत् स्थितः अश्य मध्ये अष्टः दशः वा कुमारिकाः भवनतः बहिरागता। ताः राधायाः परिचायिकाः आसन्। ताः अनया वार्तया अप्रसन्ना प्रतीयतेस्म् यत् तासाम् स्वामिनी स्व श्रृंगारं अपूर्णकृतेव शीघ्रतया बहिरागता। स्व स्वामिनीं एकेन अपरिचित जनेन सह वीक्ष्य ताः आश्चर्य चकिताः

अभवन् कोऽयम् जनः ? ताः। ज्ञानाय ज्ञातुं वा समुत्सुकासन्। मातृशक्ति राधा उत्तरं दातुं एव यथा गुरोः हस्तं स्वहस्ते गृहीतः अकथयत च एषः अस्मासु एकः अस्ति। अहम् अस्य निरीक्षण संरक्षणाय एव अधोरागतोऽस्मि। अधुना ते एषः वा मया सहैववसिष्यति। तथा च सा राजमहलं अगच्छत्। पुनश्च समस्त दृश्यः व्युत्नुप्तयत्। अवशिष्ट रजन्यां क्षमायां वा गुरूंनिद्रानागता। स्व पृथक् अस्तित्वं विस्मृत्य सः स्वकीयं राधया तया परिचारिकाभिः सह एकसारमभवन् अनुभवः कृतः।

अन्येद्युः प्रातः गुरुदेवः महंत प्रतापचंद्रचांडकः हनुमानदासञ्च कथां श्रावयित्वा, बरसाने यत्र राधा पृथिव्याम् स्वजीवन काले निवासः कृतः। तत्र गमनाय् इच्छांम् अव्यक्तयत्। गुरोरनुभवः तौ अतिप्रभावितः कृतवान्। ते द्वितीय दिवसैव बरसाने गमनं स्वीकृतः, ते तस्मिन्नेव दिने गन्तुं न शक्तः यतः तं अत्यावश्यकं व्यक्तिगतं कार्यं पूरयितः। प्रतापचंद्र चांडकः हनुमानदासस्य मातुलः आसीत्। ते मध्य प्रदेशे रायपुर, बिलासपुर नगरयोः मध्ये लघु नगरभाटापारस्य निवासी आसीत्।

गुरवे गुरुं वा बरसाने गमने 24 चर्तुव्रिशति घटिकाविलम्बमपि अत्यधिकमासीत्। जीवने प्रथम क्रमे सः ईदृक् अत्याकुलतायाः अनुभवः कृतः। स्वप्नस्मृतिः तस्य मस्तिष्के नवीनासीत्। महद काठिन्येन सः आगामि चतुर्विशति घटिका व्यतीतयत्। द्वितीय प्रभातोप्यागतः तस्य प्रस्थानम् किञ्चित विलम्बेन अभवत्। अनेन विलम्बेन गुरुदेवः चिन्तितवान्। यत् ते आरती प्रसाद वितरण समये च बरसानं प्राप्श्यसि नवा शीघ्रैव गुरुदेवः हनुमानदासः प्रतापचन्द्रेन च सह धूम्रगन्त्री बसयाने अतिष्ठत्। चालकः तमाश्वासयत् यत् यानः उपयुक्त समये बरसाने प्राप्श्यसि। बरसानतः अनुमानितं एकः मील पूर्वैव यानमवरुद्ध जातः। गुरुं अनया बाधया दुःखमभवत् यतः आरार्तिक्यकालो सन्निकटः आगतः। तथा च तं विलम्बस्य संभावना संजाता। चालकः बहिःनिसृत्य यंत्रे त्रुटिज्ञानाय अपश्यत् तदा गुरुदेवः तमवबोधयत् यत कार्बुरेटरे किञ्चित अवरोधकः

अस्ति यः पेट्रोलस्य प्रवाहंरोधयति। तब पार्श्वे वायु प्रवाहकः पम्पः अस्ति तं निःसृत्य कार्बुरेटरं स्वच्छं करोतु यानम् प्रचलितः, ते गन्तव्य स्थले उपयुक्त समये गतवन्तः।

गुरुदेवः यानतः अवतरत् समस्त प्रकृतिः तथैवासीत् यथा सः अपश्यत्। हर्षाश्रवः तस्य नेत्रयोः सम्पूरितः तथा चाश्रुधारा प्रवाहितः। भावनाभिभूतः गुरुदेवः सोपानारोहितुं पदमपिनोत्थापने शक्तः। हनुमानदासः प्रतापचंद्रौच साहाय्येन सह ऊर्ध्वमारोहति तथा च पवित्र मंदिरस्य गवाक्षेन संवृत्य स्थितः। अनवरताश्रु प्रवाहेन तस्य वस्त्राणिवेपथुर्जातानि।

मंदिरे पूजनम् भवतिस्म देवी राधां राजभोगाः अर्पितः कृतः तथाचारार्तिक्यः विधिवत् सम्पन्नाकृताः। पूजन समाप्त्यां समाप्तौ वा पञ्च षट्वा मंदिरवासिनी युवत्यः गुरोः समीपे आगता। ताभिः ते किञ्चिदपि उपहार प्रदानाय आग्रहं कृतवत्यः यं प्राप्तिं बिना ताः गुरुदेवं न गमनादिशतिवा न गमनादिशतिवती। गुरोः पार्श्वे काचिदपिराशिर्नासीत्। सः स्व हस्तं स्योते प्रक्षिप्तः येन इमाः कन्याः अवबोधयत् यत् तस्य पार्श्वे किञ्चिदपि नास्ति। परमाश्चर्यः तं एकरुप्यकस्य पत्रम् स्व लेखन्या सह संवृतः प्राप्तः। शीघ्रेव सः तत् लघुसिक्कासु पणकेषु वापरिवर्त्यपरितः। प्रसृतः। व्यावर्तयत् वा यथा पक्षिणः अन्नकणेषु आक्षिप्तः। इमाः परिचारिकाः पणकानि धावित्वा गृहीताः प्रसन्न चितञ्च भूत्वा इतस्ततः अगच्छत्।

तदनन्तरं मंदिरस्य प्रधान पुजारी बहिरागत्य गुरुं तथा चान्यमित्रान प्रसाद अददत्। प्रसादं गृहीत्वा ते पर्वतादवरुह्य प्रतापचन्द्रस्य परिचित जनेन मिलितुं अगच्छत् यस्य गृहे गतेसति सः प्रसादं अगृह्यत् अधुनापि गुरोः कपोलयोः अश्रवः निःसृत्य तस्य वस्त्रम् जलमग्नः करोतिस्म। प्रसाद ग्रहजानन्तरेव अश्रुप्रवाहः रुद्धः। शान्तः अभवत् वा सः तत्रैव रात्रिंमयापयत् तथा च द्वितीय दिवसे वृन्दावनं प्रत्यागत्य मार्गे सः गोवर्धनस्यापि यात्रा कृतः वृन्दावनं समागत्य प्रतापचंद्रः इत्थं भाव विभोरोऽभवत् यत् सः गुरोः सम्मुखे एषः स्वीकारः कृतः यत्तु सः गत द्वादश वर्ष सः

टोपी कुंजस्थ महंतस्य आध्यात्मिक मार्गदर्शने सान्निध्येच एकः शिष्य रुपेण अतीतः। परं तं कदापि कश्मिंश्चिदात्मिक उन्नतेः अनुभवं नाभवत्। तं तु बारमेकमपि कापि द्विव्यनुभूतिः नैवाभवत्। तावत् कालं समयः अनेन प्रकारेण व्यर्थमेव गतः। अस्य कृते ते विलापम् कुर्बन् गुरुणा साहाय्यं मार्ग दर्शनं दातुं चानुरोधः कृतवान्। गुरुदेवः प्रतापचंद्रस्य निष्कपटसत्यभावनांञ्चो द्बुध्य वीक्ष्य वा तं सः योग्याकांक्षी प्रतीतः। सः अस्मिन् अनुबन्धे तं साहाय्य प्रदानं स्वीकृतः यत् तस्य यः संबन्धः स्व गुरु महन्तेन सह अस्ति तस्योपरि तत् सम्बन्धोपरि किमपि दोषंनानीतव्यः।

गुरुदेवः तं ध्यानस्येकाविशिष्ट विधि अशिक्षयत् या विधिः कतिचिद्दिवसेव फलदायी भवितारः। चतुर्थ दिवसेव राधायाः दर्शनस्य तस्येच्छा पूर्णाभूत्। एषः अनुभवः प्रतापचद्रं ईदृक् अत्यधिकं प्रभावितः कृतः तस्येच्छाजाताहि यत् स्व जीवनं गुरुणा सहैव व्यतीतं कर्तुं समुत्पन्ना। परं गुरुदेवः एतादृशः कथमपि निर्णयस्य समर्थनम् न कृतः। सः अस्यां वार्तायां बलो दत्तः यत् प्रतापचंद्रः महंतस्य सान्निध्यं न त्यजेत् तथा च पूर्ववत् तस्य सेवा कर्तारन् वा कुर्वन् नूतनशिक्षित प्रकारेण ध्यान साधनां करोतु इति।

अस्माकं गुरोः ख्यातिः वृन्दावने द्रुतगत्या प्रसरिष्यति तथा च फल स्वरुपतः अधिकाधिकः आकांक्षी जनाः तम् परितः सम्मर्दन पूर्वकं आगन्तारः। तस्य नाम प्रभावः संस्कृत महाविद्यालयमपि गतः। यस्य प्रधान महंत टोपी कुंजस्य गुरुबन्धुरासीत्। अस्य महाविद्यालयस्य केचिच्छात्राः गुरोः समीपे साहाय्यार्थं पथ प्रदर्शनस्यचेच्छया आगतः। ते किञ्चित् कालं नियमित रुपेण तस्य सान्निध्ये यापितस्यानुमति वाञ्छेयुः वाञ्छितः वा। सः तान् ईदृक कथयित्वा निरुत्साहितः कृतः यत स तु एकः गृहस्थः अस्ति। तस्य पार्श्वे न तु आश्रमः अस्ति नैव मंदिरं नैव कोऽपि संस्थास्ति तथा च निर्वाहाय कोऽपि साधनमपि नास्ति। यदि ते तस्य पार्श्वे आगच्छन्ति तर्हिते स्वनिवासस्य कुत्र केन प्रकारेण च व्यवस्थां करिष्यति। ते उत्साही छात्राः तत कालेव उततरं दत्तः यत

यत्र सः वसिष्यति तत्रैव तेऽपि वसिष्यनित। तान्तुं वृक्षस्याधो भागेऽपि निवासाय आतुराः।

गुरुदेवः द्वितीयापत्तिं प्रकटयत् यत् किं तान् स्व मातृभिः पितृभिश्च आवश्यक अनुमतिं प्राप्तः। सोऽपृच्छत् किं ईश्वरान्वेषणेऽपि एतादृशी अनुमतिः आवश्यकी। तें प्रति प्रश्नः कृतः।

गुरुं अनुभूतःयत् ते वृन्दावनेव अवसत् तर्हितु महंतेन सहतेषु मधुर सम्बन्धेषु प्रतिकूलतायाः आशंकास्ति अतः सः वृन्दावनं त्यक्तुं निश्चयः कृतः गुरुदेवः तेल्हारां प्रत्यागतः। सः कतिचित् पंच दश दिवसेषु वृन्दावने अवसत् परं एतेसु दिवसेषु ते क्षणमपि न सुप्तवान् यतः सम्पूर्ण काले ते भाव समाधेः अवस्थायां अवस्थितः।

ऊँ श्री सद्गुरवे नमः

ॐ श्री सद्गुरवे नमः

त्रयोदशम् सोपानम्

तेल्हाराः संगीतः ज्योतिषविज्ञानञ्च

वयम् पूर्वेपि उल्लेखः अकुर्म यत् गुरुदेवः संगीतानुरागी आसीत्। गायनः वा वादनस्य मधुर ध्वनिना गुरुदेवः आनन्दातिरेक अवस्थायां प्रविष्टः भवतिस्म्। येषु दिनेषु ते रामलीलामंण्डल्यां आसीत् तदा तस्य संपर्कः कानिचित् संगीतज्ञैः सह अभवत्। अतः परं पेठणस्य पंडित भागवत बुआ महोदयः तं संगीतस्य प्रारम्भिक ज्ञानम् अकारयत्। यस्य सदुपयोगः सः रामायणस्य सस्वर प्रवचनाय कृतः। अस्मात् कालादनन्तरे संगीताभ्यासं सः कदापि गंभीरतापूर्वकं न गृहीतः। नैवास्यावसरं तं लब्धः।

ख्रीष्टाब्द 1945 वर्षे संघटिता एका लघुरिव संघटना तं शास्त्रीय संगीतस्य अध्ययनं गंम्भीरतापूर्वकं ग्रहणाय, गृहीतुं प्रेरितवान् तेल्हारा वासिजनेभ्यः गणेशोत्सव समारोहः अत्यन्त सामाजिक महत्वपूर्णासीत्। प्रत्येक वर्षेसः अस्मिन् पर्वेस्वसम्पूर्ण कौशलस्य प्रयोगं करोतिस्म। तस्योत्सवस्य कार्यक्रमे विद्वज्जन प्रवचनानां, भजन, कीर्तन शास्त्रीय स्वल्प संगीतस्य समावेशः भवतिस्म। ख्रीष्टाब्द 1946 वर्षे उत्सवसमये श्री सकलकले यत्तु अकोला स्थानस्य एकः प्रख्यात संगीतज्ञः आसीत्। भारतीय शास्त्रीय संगीतस्य एकम् कार्यक्रमम् प्रस्तुतये आमंत्रितः कृतवान्। रात्रौ कार्यः क्रमानन्तरे द्वितीय दिवसे प्रातः संगीतज्ञ श्री सकलकले महोदयं, श्री बाबूराव धर्माधिकारी चायम् उष्णपेयाय आमत्रितः अन्य आमत्रितेषु डा0 भिड़े, श्री संत श्री तागड़े गुरुदेवश्चासीत्। सर्वे कार्यक्रमस्य प्रशंशा कृतः तथा एता दृशः सुरम्य प्रस्तुतिकरणाय तं हार्दिक धन्यवादो दत्तः।

परं आभारं शालीनतया न स्वीकुर्वन् संगीतज्ञः अशिष्टता कृतघ्नतापूर्श्वकञ्च कटाक्षः कृतः यत् तस्य श्रोतागणाः तेल्हारास्थ ते एव निवासी आसन् यान् उत्तम संगीते किञ्चिदपि रुचिर्नासीत्। बाबूरावः तथा चान्यज्जनाः अस्योपरि स्वकीयं अति अपमानितानुभवः कृतः परं किमपिनावदत् गुरुदेवः अस्यावश्यक कटाक्षस्य गहनतमनुभवः कृतः। यतः असौ तेल्हारास्थ समस्त जनान् अपमानितम् कुर्वतिस्म। गुरुदेवः सकलकले महोदयस्य ध्याने इयम् वार्ताआनीतः यत् ज्ञानावबोधनं बिना प्रत्येक तेल्हारावासीं अपरिष्कृतः नीरसश्च कथनं महद् धृष्टतास्ति यतः श्रोतृषु के कीदृशाः सन्ति। सः एतम् केन प्रकारेण ज्ञास्यसि। तथा चेतिअल्पसमये ते श्रोतृणाम् योग्यतां केन प्रकारेण तोलयन्ति–इति। गुरुदेवः सकलकले महोदयं चुनौति दत्तः। यत् ते आगामी गणेशोत्सवे तेल्हारा आगमिष्यन्ति तर्हितु ते तं प्रदर्शितं करिष्यन्ति यत् तेल्हारायाम् अपि तस्य संगीत प्रतिभा समकक्षं तुल्यः कोऽपि अस्ति इति।

श्री सकलकले महोदयः एतादृशः प्रत्युत्तरस्याशान कृतः। एषा स्पर्धा अवश्यमेव तस्य प्रवर्धितम् अंहकारं किञ्चित न्यूनम् करिष्यति वार्ता प्रवर्धिते विनैव सौम्यतया तेल्हारा परित्यक्तः।

श्री धर्माधिकारी आदयः अनेन अत्यन्त प्रसन्नोऽभूत् यतः गुरुदेवः संगीतज्ञस्य दर्पम् चूर्णतापूर्वकं विदार्य तेषां तस्यात्मसम्मानं तथा च तेल्हारायाः प्रतिष्ठां पुनःरस्थापितः कृतः। द्वितीय पक्षे गुरुदेवः शास्त्रीय संगीत शीक्षितुं अवसरस्यान्वेषणे तत्परः जातः यतः तं अकोलायाः संगीतज्ञं प्रदत्त वचनं अपश्यत्। नातीताधिक कालेवउत्सुकतया प्रतीक्षितावसरः तं संप्राप्तः। शीघ्रेव एकः संगीतज्ञः हारमोनियम वादकः श्री भागवत बुआ पंढरपुरकरः यं अस्मिन् क्षेत्रे सुपर्यापत प्रसिद्धिः प्राप्तः स्व एकशिष्यः श्रेष्ठि मणिलालशाहस्य गृहे तेल्हारा आगतः। श्री पंढरपुरकरस्य वाद्य स्वर संगीतोपरिचाधिपत्यः गुरुं अतिप्रभावितः कृतः। द्वितीय दिवसेव गुरुः असौ संगीतज्ञस्य समीपे गत्वा शास्त्रीय संगीतं शिक्षितुं स्वइच्छया तमवगतमकारयत्। श्री पंढरपुरकरः

गुरोः संगीतज्ञानस्य प्रारम्भिक परीक्षणानन्तरे तं शिष्य रुपेण स्वीकारयत्। संगीताभ्यासः पूर्णोत्साहेन सह आरभत्। श्री पंढरपुरकरः प्रतिदिनं किञ्चित् कालाय गुरोः निवासे अगच्छत्।

प्रत्येक दिवसस्य संगीत पाठः मात्र त्रयमिनटावधिं भवतिस्म। यस्मिन् गुरुः विभिन्न राग प्रकाराणां ज्ञानं तमंशिक्षयत्। दिवसावशिष्टकाले शिष्यः या शिक्षागृहीता तस्याभ्यासं कुर्वन्तिस्म। यत् किञ्चिदपि गुरुं शिक्षयत् तम् सर्वम् पूर्ण रुपेणोदबुध्य सत्यरुपे प्रस्तुतीकरणस्य विशिष्ट क्षमतायाः ते धनीरासीत् परंमतःपरमपि ते पूर्ण समर्पितंविद्यार्थीरुपेण घटिकांः स्थित्वा अभ्यासं अकरोत्। अनेनानवरताभ्यासेन एकस्मिनवर्षेव यत् किञ्चिदपि ते शिक्षितः तस्य सार्वजनिक प्रदर्शनाय सुपर्याप्तात्मविश्वासः तस्मिन् जागृतासीत्। आगामि वर्षस्य गणेशोत्सवे ते सकलकले महोदयतः प्रतिस्पर्धायै पूर्ण रुपेण सन्नद्धासीत्। श्री सकलकले महोदयस्य गमनान्तरे गुरोः गायनम् अभवत्। ये नैषः प्रमाणितोऽभूत् यत् तेल्हारास्थ ऋजु जनाः नीरसं नास्ति।

एतस्मिन्नेव मध्ये गुरुजी तथाचान्य जनानां सहायतया श्री पंढरपुरकरः तेल्हारा स्थाने संगीत विद्यालयस्य संस्थापनायै सफलोऽभूत येनान्यजनेभ्योऽपि प्रशिक्षणो दातव्यः।

गुरुदेवः रवीष्टाब्द 1947, 48, 49 वर्ष त्रयं श्री पंढरपुरकरस्य योग्य मार्ग दर्शने शास्त्रीय संगीताध्ययनः कृतः। कालेऽस्मिन् गुरुदेवः किञ्चित् सीमितरागानां अध्ययनेव स्वध्यानम् केन्द्रितः कृतः। वर्ष त्रयावधि मात्रराग त्रयमेव शिक्षितः। स्व स्वभावनुसारं सः प्रत्येक रागस्य गाम्भीर्येऽव गाह्य एषः अवबोधनस्य प्रयत्नं कुर्वतिस्म यदेषः रागः केषु सिद्धान्तेषु आधारितः तथा च ताः कतिपय विभिन्न रुपेषु प्रस्तुतं कारयेत् असौ प्रशिक्षणः तं संगीत गांम्भीर्य्यं गमने तथा च श्रवणन्त्परे आन्तरिक संगीतस्य दिव्यलयात्मकतां च उद्बुद्धये सहायताकारितवान् । तस्य योगः

आध्यात्मिकोपलब्धयश्च संगीतेन सह समवेत्य महाकवि कीट्स महोदयस्य एतेषां शब्दानां सत्यतां प्रमाणिता यत् श्रुत संगीतः मधुरं भवति। परं तेनापि मधुरतरः तद् संगीतम् भवति यदश्रुतः अस्ति।तस्य विचारासीत् यत् संगीतस्य चिकित्सायां एकाणकमेव महत्वं विद्यते। तथा च शीघ्रेव सः एतम् व्यावहारिकोपयोगेन सत्यापितंकृतस्यावसरं संप्राप्तः। तस्य मित्रःशिष्यञ्च डा0 भिंड़े महोदयंएकदा अतितीव्र शिरोवेदनाभवत् यः स्वकीयस्य तथा च तस्य चिकित्सक मित्राणां औषधिना न स्वस्थतामलभत्। दिनद्वयम् तस्य शिरोवेदना तथैवासीत्। तृतीय दिवसे गुरूदेवः यदा डा0 भिंडे महोदयतः मिलनाय अगच्छत् तदा डा0 भिंड़े महोदयः असहनीय वेदनया गुरुणा किमप्यौषधि प्रदानस्य प्रदानाय वा प्रार्थना कृतः। गुरुणा उक्तम् यत् ते पूर्वपथात् विभक्त्य एका पृथक् औषधि प्रयोगं करिष्यति। ड़ा0 भिन्ड़े किमपि कर्तुं सन्नद्धः अभवत्। गुरुदेवः तदा डा0 भिंड़े महोदयं तस्मिन् कक्षे आनीतः यत्र भिंड़े महोदयः स्व वाद्य यन्त्रम् स्थापयतिस्म। वाद्यः संगीतः डा0 भिंड़े महोदयस्यरूचिरासीत्।

डा0 भिंड़े महोदयस्य सम्मिश्रकः श्री पुंडलीक इंगोले उत्तम तबला बादकासीत् गुरुदेवः तमाहूयं तबलोपरि एकः ताल बादनाय भाषितः। गुरुदेवः स्वयं हारमोनियमम् नीत्वा स्थितः अतिष्ठत् वा तथाचैकः रागविशिष्टस्य स्वरं वादयिष्यन् यस्तु विलंबितः एवं शान्तिदायकं आसीत्। द्विएकम् वा मिनटेषु एव तस्य तीव्रशिरोवेदना शीघ्रेव न्यूनतमा जाता यथा कोऽपि चमत्कारः जातः। डा0 भिन्ड़े नवीन स्फूर्तेः अनुभवः कृतः तथा च स्व गुरुं प्रति तस्य कृतज्ञता द्विगुणाभूत्। शिरो वेदना विषये गुरोः मतम् आसीत् यदेषः नाडीकोषानां अतिसक्रियतया भवति। एषांतिसक्रियता मंद संगीतलयेन शान्तिमधिगच्छति। संगीतेन मानसिक तनावः क्रमशः न्यूनतमः भवति तथा च शिरो वेदना दूरं प्रणष्टः। डा0 भिंड़े महोदयस्य असौ उपचारः विचारेतं सिद्धःकृतः।

द्वितीयः

गुरोः विद्यालयीन शिक्षा तथैवा उतेवासीत् यथा अमर कविः शेक्सपियरस्य परं शैक्सपियरेव तुल्यः गुरुदेवः जीवने नित्य प्रति आगन्तारः उन्नतावनतौ मध्ये वसित्वेवैषाविद्वतार्जिता। प्रसिद्ध कवि समानेव गुरोः ज्ञानमपि बहुक्षेत्रीयासीत्। गुरुजी समीपं सम्पर्के आगन्तारः तस्य विवेकानुभवानाञ्च गहने आश्चर्य चकितभभवन्। ज्योतिर्विज्ञानस्यापिं तं पर्याप्तज्ञानमासीत्। यथा तु संगीत शिक्षा विषये अभूत प्रताड़ितेव सः ज्योतिष शिक्षां गम्भीरतापूर्वकं गृहीतः। तेल्हारायां कानिचिदाबासानन्तरे 1944–45 वर्षे तं ज्योतिष शास्त्र शिक्षार्थं उत्कटेच्छा जागृता। यया पन्ड़ितैः कृत महद्दर्पादीनां सत्यतां परीक्षा परीक्षितः अतः गुरुदेवः निर्णीतं यत् तें कमपि ज्योतिषीसुपगम्य प्राथमिक ज्ञानं लप्स्यतेति।

सौभाग्यवशात् तस्य अनुवासी प्रतिवासी पार्श्वे वा। श्री काटे सहायक पंजीयक राजस्व अधिकारी वसतिस्म। यस्तु ज्योतिषे अति दक्षासीत्। ज्योतिष सम्बन्धि ज्ञानानां गणनानाञ्च विपुलकोशः तस्य कृते हस्तामलकवत् आसीत्। अस्तु ते ज्यौतिषे दक्षगणकरुपे प्रसिद्धः आसन्। एक दिवसे गुरुपूज्यः काटे महोदयतः सम्मिल्यज्योतिषस्य प्रारम्भिक पाठ शिक्षितुंविनतीकृतः। श्री काटे महोदयः गुरो इदृक आगमनं नान्वमन्यत् तथा च व्यंगकर्तारनवोचत् ज्योतिषाध्ययनं तथा ऋजुनास्ति यथा त्रयः चत्वारो बोतलः संस्थाप्य होम्योपैथी व्यवसायः। कोऽपि प्रत्युत्तर दानं बिना गुरुदेवः स्वऔषधालयं प्रत्यागच्छत् श्री काटे महोदयस्य इत्थं असंगत अपमानजन्य शब्दान् तस्य जामातः श्रुतः यस्तु समीपस्थेव पंच गौहान नामक स्थाने अध्यापकासीत्। तथा च गुरुं सम्यक् जानीथस्म्।

आदरणीय पंड़ित महोदयं प्रति स्वश्वसुरस्य असौ निन्द्या चरणे तं अतीव दुःखमभवत् सः स्व श्वसुरं इत्थं बोधयत् यत् सामान्य प्रतीतारः एषः पंड़ितप्रवरः

वस्तुतस्तु असाधारणः अस्तितेईश्वर कृपापात्रेषु एकः अस्ति। अतः तं अपमानितं कार्यम् नोचितः। द्वितीय दिवसेव श्री काटे गुरुं उपगम्य तं ज्योतिं शिक्षयितुं स्वीकार्य प्रारम्भिकाध्ययनाय चत्वारि पुस्तकानि केतुं अवदत्। गुरुदेवः इमानि पुस्तकानि आनीतः तथा चैनप्रकारेण अस्य प्राचीन विज्ञानस्याध्ययनारम्भः अभवत् किंञ्चित्कालानन्तरेव सः अस्योपरि अधिकारः अधिगृहीतः। सः व्यपारिक ज्योतिषमपि अध्ययनः कृतः येन कतिचिद्वसरेषु व्यापारिक जनान् स्व आदान प्रदाने अतिलाभोऽभवत्।

ऊँ श्री सद्गुरु प्रसादात्ेति ।

ऊँ श्री सद्गुरवे नमः

अथ चतुर्दशम् सोपानम्

संगीत कलायाः सेवायाम्

1960 वर्षारम्भे गुरुदेवः स्वौषधालयं अवरूद्धय तेल्हारा स्थानतः सम्मानं संगृह्य कमपि उपयुक्त स्थाने गमनाय निर्णयो गृहीतः। इत्थं निर्णय ग्रहणं नसहजासीत् परं बाध्याय कारणं सुपर्याप्तमासन्। विंशति वर्षावधिं सः अत्र यापयतिस्म। तेल्हारास्थवासी जनाः तं स्नेहादरं च दत्तः प्रत्यादाने सोऽपि तान् अत्यन्त स्नेहासिक्तः कृतः तथा च तेषां सेवाऽपि कृतवान्। तेल्हारा स्थाने तस्य जीवनः विभिन्न पक्षतः महत्वपूर्णः आसीत्। उपनिरीक्षकः श्री महाजनस्य शब्देषु तेल्हारा तस्य कृते मात्र निवास स्थानंमेवनासीत्यपितु तस्य वास्तविक सदनासीत्। परं यदा कदा तु प्रत्येकोत्तम वार्तायाः अंतस्तु भवत्येव।

तेल्हारा परित्यक्तुं बाध्य कर्तारः प्रमुख कारण द्वयमास्ताम्। प्रथम कारणस्त्विदमासीत् यत् तस्य शिशवः अधुना संबंधितः तथा च तेल्हारास्थलघुनगरेभूतेसति आजीविकानां सम्भावनाः न्यूनासन्। अस्मिन् क्षेत्रे कोऽपि उद्योगः फलीभूतोनासीत्। द्वितीयस्तु सः एकः सफल होम्योपैथीचिकित्सकः आसीत्। स्वरोगिनां सेवां कृत्य तान् रोगमुक्तमपिकृतः। परं आर्थिक दृष्ट्या तस्य अयम् व्यवसायः धनोपार्जने अपर्याप्तमासीत्। सः एकः अत्यन्त उदार हृदय चिकित्सकः भूते सत्येव सफल धनोपार्जकः नविनिर्मितः। बहुधा सः निर्धनानां निः शुल्क चिकित्सा एव न कृतः अपितु तान् भोजनमपि आकारितवान्। अतः अस्मिन् कोऽपि आश्चर्यस्य वार्ता नासितयत् सः अतः स्वकीयंदिवालियासंप्राप्तः। आसुपरिस्थितिषु अनेन ऋते कोप्यन्यः विकल्पः तस्य पार्श्वे नासीत्। यत् कश्मिचिदेदृक स्थानस्यान्वेषणः कर्तव्यः यत्र तस्य शिशवः लाभकारी आजीविकां प्राप्स्यन्ति तथा च स्वकीयं संस्थापनार्थ शक्तः वा

स्वकीयं संस्थापने अर्हतामधिगच्छति कृतः। स्व परिवारं तेल्हारा स्थानाद स्थानान्तरितः कृते पूर्वे तं उपयुक्त स्थलानां सर्वेक्षणः आवश्यकासीत्। अतः अस्थायी रुपेण सः स्वकीयं ज्येष्ठ पुत्र बाबा महोदयाय आजीविकायाः व्यवस्था कृतः। स्वपरिवाराय कतिचिद्दिवसानां प्रबन्धः कृतः तथा च एक दिवसे तेल्हारांत्यक्त्वा नूतन स्थानान्वेषणे प्रचलितः।

सः कलकत्ता आगतः यत्र तस्येक शिष्यः महावीर प्रसादः शर्मा अवसत्। महावीर प्रसाद बेलधारिया कलिकातायां कार्यम् कुर्वन्तिस्म तथा च साःखिया स्थाने अवसत् यत्र् गुरुदेवः महावीर प्रसादेन सह कतिचिदिदवसं मनोविनोदे यात्रायां च व्यतीतवान्। कलकत्तास्थानतः महावीर प्रसादः गुरुं कटक आनीतः यत्र तस्य कानिचित् संबन्धयः वसन्तिस्म। अत्र स सेठभालू महोदयेन सह पञ्चदशदिवसंमतीतः। अतः अनन्तरे सः भालूग्रामं भूत्वा वानपुरं प्राप्तः। यत्र महावीर प्रसादस्य कानिचित् परिचिताः आसन्। एषु परिचितेषु डा0 मदनलालः, बैजनाथ गुप्ता तथा च तस्य भ्राता हरिरामः आसीत्। अमीपञ्चजन समूहः तीर्थ यात्रा तथा च पर्यटन दृष्ट्या जगन्नाथपुरी गमनस्य निर्णयः गृहीतः। दिवस त्रयं जगन्नाथपुरीं व्यतीतानन्तरे ते वानपुरं आगताः। प्रत्यागतानन्तरे । नागपुर विश्वविद्यालयीय स्नातक बैजनाथ गुप्ता पत्रकारः आसीत्। तथा च योगभ्यासे रुचि स्थापयतिस्म। महावीर प्रसादः इत्थं ज्ञात्वा तं गुरुदेवस्य योग संबंधी उपलब्धीनां विषये ज्ञापयत्। बैजनाथः दोषदर्शी आसीत्। सः स्पष्टतया स्वदृष्टिकोणः विज्ञापितः। यत् भारते योगी कथयिष्यमाणः असंख्याः सन्ति एते वास्तविकेषु न योगिनांछद्मवेशे कपटी मानवाः सन्ति। एतादृशः प्रतीतः भवति यत्कस्यापि सत्यनिष्ठ विशेषज्ञेन मार्गदर्शनःसंप्राप्तिषुसः पूर्णरुपेण असफलभूतेसति नैराश्यभावंगतः। गुरुदेवः यत्तु योगिनां विरुद्धं एतदुत्तेजना पूर्ण वार्तालापं श्रुतः। अस्य युवकस्य योगे सद्रुच्या अत्यन्तः प्रसन्नः अभवत्। अथ च नम्रतापूर्वकं तं संबोधयत् यत् कपटी मनुष्याः बहुतायताः सन्ति परं सतगुरुबोपिसन्ति। यद्येते गुरवः संख्यासुअल्पतराः

सन्ति परं योगस्य कठोरानुशाशनस्य आकांक्षी शिष्याः एतेनापि न्यूनतराः वर्तन्ते। गुरुदेवः तं दीक्षितं कृत्वा योगमार्गे आनेतुं सन्नद्धाः आसन् चेत् बैजनाथः गंभीरं भूत्वा शिक्षणाय अथचाभ्यासाय तत्परोअभूत्। बैजनाथः शिक्षणाभ्यासाय च इच्छुकः आसीत्। एकोचित दिवसे तं योगस्य रहस्यमय जगतः दीक्षादत्तः। तथा च ध्यानस्य एका विशिष्टा विधिं एकनिश्चित समये अभ्यासाय निर्देशो दत्तः। तस्मिन् दिवसे बैजनाथः उत्साहपूर्वकं स्वाभ्यासारम्भः कृतः। कतिचिद्दिवसेव तं अनुभवाः भवितारः यत् किञ्चित् रहस्यमय शक्तयः तं वशे कृत्वा निर्देशः ददातिस्म कतिचिद्दिवसानन्तरं तं मेरुरज्जोः आधारेण प्रकारमेकस्याः संवेदना उत्पन्नः भूत्वा अनुभवं समागता एषा क्रमशः मन्द गत्या ऊर्ध्वं मेरुदण्डेन अग्रसरं भूत्वा ग्रीवायाः आधारे विशुद्धि चक्रे स्थिरं भूत्वा पुनश्च ऊर्ध्वं गता शीघेव बैजनाथः एकः ज्ञान सम्पन्नः युवकः अभवत्। अभूतवा।

बैद्यनाथस्य पदचिह्नानां अनुशरणं कृत्वा तस्य भ्राता हरीरामः तथा च तस्य भार्यापि गुरुदेवेन दीक्षा ग्रहणः कृतः बैजनाथः तथा चान्य जनानां इच्छासीत् यत् गुरुदेवः तैः सह वृन्दावनं अगच्छन्। अनेन प्रकारेण गुरुदेवः वृन्दावनस्य द्वितीयक्रमे यात्रा कृतः। निवासाय एकोपयुक्त स्थानस्यान्वेषणे गुरुदेवं तेल्हारात्यजन् सार्धेकमासादधिकं समयः अतीतः। साम्प्रतं येषां स्थानानां यात्रा तेन कृतः ते उपयुक्ताः स्थानाः न प्रतीयते। रोचते। तं एतादृशं प्रतीयते यदन्वेषणम् पुनः आरम्भस्य समयः आगतः। अतः गुरुदेव वानपुरतः प्रस्थानं कृत्वा भिलाईः गच्छन् पुनः गृहं प्रत्यावर्तनस्य निर्णयः गृहीतः। समयेऽस्मिन् भिलाई स्थाने इस्पात संयंत्रः स्थापितः। यः विविध प्रकारैः श्रमिकान् आजीविकोपलब्धये सक्षमः आसीत्।

तेल्हारा स्थानतः संबन्ध स्थापितारः श्री काशीराम अग्रवालः यः गुरुदेवस्य घनिष्ठः आसीत्। गुरुदेवस्य भिलाई स्थाने स्वागतः कृतः तेन सह गुरुदेवः कतिचिद्दिवसं व्यतीतयत् अथ च तेल्हारां त्यक्त्वा काश्मिंशिचिदपि अन्य स्थाने निवासस्य स्व इच्छां प्रकटयत्। काशीरामः गुरुं नागपुरं गत्वा तस्य श्वसुरः श्री एस0

के0 गुप्ता महोदयेन संपर्कस्य परामर्शः दत्तः यः पुनर्वासे संभवतः तस्य सहायतायै शक्तः आसीत्। गुरुदेवः एतत् परामर्शं स्वीकार्यः कृतः अथ च श्री एस0 के0 गुप्ता महोदयेन संपर्काय नागपुरं प्रस्थितः।

श्री एस0 के0 गुप्ता नागपुरे आर्य समाजस्य सचिवः आसीत्। अथ च एकः प्रभावशाली व्यक्तिः आसीत्। सः पूर्वपरिचितेषु एकः आसीत् अथ चैकदा गुरुदेवस्य रोगीअपि आसीत्। गुरुदेवः केन प्रकारेण श्री गुप्ता महोदयस्य संपर्के आगतः। अस्यापि मनोरंजनकं कथा वर्तते। एषा सन् 1949 वर्षस्य घटना अस्ति। समये अस्मिन गुरुदेवः तेल्हारां होमियोपैथ्याः चिकित्सकः आसीत्। अहमेतत् जानामियत् गुरुदेवः अकोलायाः डा0 नन्दलाल भारत्याः मार्गदर्शने आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धतौअपि पर्याप्त्यधिकारः प्राप्तः कृतः। इत्थं ज्ञात्वा तेल्हारायां गुरुदेवस्य शुभ चिन्तकाः गुरुं परामर्शो दततः यत् तं स्वकीयं आर्युर्वेदिकः एवञ्च यूनानी पंजीयन समितौ एकः चिकित्सकस्य रुपे पंजीबद्धः कारयेत्। एषा समितिः तत् काले नागपुर सचिवालय भवनेस्थितः। अत् सन् 1949 वर्षे एकदा गुरुदेवः पंजीयनाय नागपुरं आगतः नागपुरमागत्य तेल्हारा वासी श्री राम अग्रवालः यस्तु श्री एस0 के0 गुप्ता महोदयस्य संबंधी आसीत्। गुरुं अनया आशया श्री गुप्ता महोदयस्य पार्श्वे नीतवान्। यतः पंजीयनः तस्य सहायतयां शीघ्रेव भविष्यति श्री गुप्ता समयेऽस्मिन् अस्वस्थः आसीत् अथ च शैय्याग्रस्तः आसीत्। ते मेयो चिकित्सालयस्य बरिष्ठ चिकित्सकैः अथ च कानिचित् प्रतिष्ठित व्यक्तिगत चिकित्सकैः नियमनस्य उपचारः कारयतिस्म। एतैः चिकित्सकैः श्री गुप्ता महोदयस्य रोगं संग्रहणीं ज्ञात्वा तदनुसारं चिकित्सा कृतः गुरुं श्रीराम अग्रवालः रुग्णस्य कक्षे परिचयाय अनीतः। तस्मिन् समये कक्षे श्री गुप्तायाः एकः द्विव्यक्तिगतचिकित्सकावपि उपस्थितः आस्ताम्। पंजीयन्स्येच्छुकः आयुर्वेदिक चिकित्सकस्य रुपे गुरोः परिचयं प्राप्य श्रीगुप्तामहोदयः विचारं कृतः यत् आयुर्वेदिक चिकित्सकस्य रूपे आगतः असौ पंड़ित महोदयस्य ज्ञानपरीक्षणस्य एषः उत्तमः अवसरः

अस्ति। एलोपैथ्याः उपस्थित चिकित्सकावपि एतदेव चिन्तितः। विचारितः। गुरुदेवेन अपृच्छतयत् किं सः श्री गुप्तायाः रुजं परिचीय तस्योपचार कर्तुं शक्तः। गुरुदेवः परीक्षांदानं स्वीकृतः श्री गुप्तां भूयो भूयः मल त्यागं अकरोत् गुरुदेवेन मलस्य निरीक्षणं कृत्वा प्राप्तः यत् तस्मिन् कस्यापि हरित शाकस्य तन्तवः आसन्। तदा गुरुदेवः स्वविचारं प्रकटयत्। यत् श्री गुप्तायाः रुजः संग्रहणीनास्ति परं अतिसारः अस्ति। गुरुदेवेन तदा औषधयः ज्ञापयत् यस्तु औषधि निर्माणाय आवश्यकः आसन्। सीतावर्डी स्थलस्य श्री गिरधारीलालः औषधयः उपलब्धं कृत्वा औषधि निर्माणाय स्वीकृतः। श्री गुप्ता कतिचिद्दिवसेषु पूर्णरुपेण निरोगी अभवत्।

अनेन प्रकारेण प्रभावितं भूत्वा श्री गुप्ता महोदयः पंजीयन प्राप्त्यर्थं गुरुदेवस्य सहायता कृतः। श्री गुप्ता महोदयः गुरुं एतद् वचनमपि दत्तः यत् यदा भवान् गृहस्थाश्रमतः निवृत्तः भवेत् तदा कृपया मया सह मिलितव्यम्। अहं भवते नागपुरे होमियोपैथ्याः औषधालयः उदधाटयिष्यामि। यतः गुरुदेवः गृहस्थाश्रमतः निवृत्तये सन्नद्धः आसीत्। श्री काशीराम अग्रवालः भिलाई नगरे गुरुदेवं परामर्शो दत्तः यत् श्री गुप्तां तस्य वचन विषये स्मरण दातुं न कोऽपि हानिः वर्तते। अनेन विचारेण गुरुदेवः नागपुरं आगतः परं यथा नियतिं स्वीकारः आसीत्। संपर्के श्री गुप्ता पूर्व वर्षे प्रदत्त स्व वचनानुसारं औषधालयोद्घाटने स्व असमर्थतां प्राकटयत्। सः द्वितीयं विचारं गुरुदेवस्य सन्मुखे विचारार्थः स्थापितः यत् दुर्ग स्थित तुलाराम आर्य कन्या महाविद्यालये सहायक संगीत शिक्षकस्य एकम्पदम् रिक्तः वर्तते। चेत् गुरुदेवः इमम् कार्यम् स्वीकरोतु तत्तु सः साहाय्यार्थं शक्तः। गुरुदेवः पदेऽस्मिन् नियुक्तये स्व स्वीकृतिं दत्तः। यदा ग्रीष्मावकाशानन्तरे सन् 1960 वर्षे महाविद्यालयः पुनः आरभत्। गुरुदेवः स्वकीयं संगीत शिक्षकस्य एकः नवरुपे प्राप्तः। अस्मिन् आर्य समाजस्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वत्याः सराहनीय साहाय्यः वर्ततेस्म। अनेन प्रकारेण गुरुदेवः जीवनस्य एकः नूतन अध्यायः दुर्गे आरब्धः यस्तु 14/ चतुर्दश वर्षम् अचलत्। सहायक संगीत

शिक्षक रुपेयः वेतनम् गुरुदेवः अलभत् तत्तु 72 द्विसप्तति रुप्यकाणि प्रतिमाहस्याल्पराशिः आसीत्। एषाः राशि तस्य परिवारस्य भरण पोषणाय अपर्याप्तः आसीत् । अतः गुरुदेवः अवसर संप्राप्ति एव शीघ्रातिशीघ्रं दुर्गे स्वकीयस्य संगीत विद्याालयारंभ विषये गंभीरतापूर्वकं विचारवान्। चिन्तितः।

दिवसेष्वस्मिन् गुरुदेवः दुर्गे सर्वोदय आन्दोलनस्य प्रधान श्री चद्रिका प्रसाद पांडेयस्य संपर्के आगतः। देशे सर्वत्र एते दिवसाः आचार्य विनोवाभावे महोदयस्य सर्वोदय तथा च पदयात्रा आन्दोलनानां चरमोत्कर्षस्य आसीत् गुरुदेवस्यान्य परिचितेषु श्री नारायण भाई शाक सब्जी विक्रेतारः आसीत्। उभावेतौ सज्जनौ गुरुदेवस्य संगीतविद्यालयोद् घाटनस्य इच्छां ज्ञात्वातं प्रोत्साहितः कृतः एवञ्च साहाय्यं कृतवान्। एतेषां सज्जनानां प्रयत्नैः गुरुं सन्1961 वर्षे दुर्ग स्थित महात्मा गॉधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयभवने एकम् कक्षम् प्राप्तः।

अनेन प्रकारेण गुरुदेवः दुर्गे स्वकीय संगीत विद्यालयारम्भः कृतः। सः स्व परिवारं महाराष्ट्रराज्यस्य तेल्हारातः मध्यप्रदेश स्थित दुर्ग आनेतुं सफलोऽभवत्। संगीत विद्यालयस्य प्रारम्भिक अवस्थायां स्वपरिवारं दुर्गं स्थानान्तरितं करणात् पूर्वे गुरुदेवः स्व भोजनं विज्ञान शिक्षक श्री राजेन्द्र गुप्ता महोदयेन सह करोतिस्म। रात्रौ भोजनं अष्ट वादने गृहीत्वा पुनः विद्यालयं आगत्य द्वितीय संगीत सत्रारंभ कर्तुम् तस्य नियमः आसीत्। तस्य छात्रेषु आसन् गजानन सोनी चित्रनाथ मिश्रः, चंद्रप्रकाश अग्रवालः, देवराय अफोतकरः येषां एकः एक पृथक्–पृथक् दलम् आसीत्। बिलक्षण परिस्थतौ गुरोः निकट सम्पर्के आगत्यतान् एषः ज्ञातमभवत् यत् तेषां संगीत शिक्षकः अतीत देवतुल्य अत्युन्नत व्यक्तिः अस्ति। अथ च सामान्य शिक्षकैः सर्वथा भिन्नः अस्ति।

विद्यार्थी समुदाय विषये एतत् सर्व विदितमस्ति यत्ते स्व शिक्षकानां परिहासः कुर्वन्ति तस्मिन् छिन्द्रान्वेषणं कुर्वन्ति। तेषां विधीनां अनुकरणं अवतारयन्ति

वार्तालापस्य तस्य विशिष्ट विधिनां आचरणस्य च अनुकरणं कुर्वन्ति। संबन्धेऽस्मिन गुरोः संगीत शिष्याः अपि अपवादंनासीत्। गुरुदेवः यदा स्व भोजनाय गच्छति ते तस्य परिहासं कुर्वन्ति तथा च तस्य पृष्ठे तस्योपरि टीका टिप्पण्यादि कुर्वन्ति निरपवादः रूपेण गुरूदेवः स्वानुपस्थितौ कृतः विनोदः तथा च कटाक्षानां उत्तरः प्रत्यावर्तने स्वछात्रान् ददाति। आरम्भेतु छात्राः असौ मात्र संयोगः एवमन्यन्तेस्म। परं गुरुदेवः प्रत्येक बारं स्वउपरि कृत विनोदानां समुचित उत्तरं अददत्। तर्हि तु छात्रान् अनुभवः भविता यत् असौ मात्र संयोगं नास्ति अथ चैकदा ते निः संकोचं तेन अपृच्छत् एव यत् तं तस्य अनुपस्थितौ यत्किमपि कथ्यन्ते तस्य अनुभवः केन प्रकारेण भवति। अथ च तेनैव प्रकारेण स्पष्टरुपेण गुरुदेवोऽपि तान् अवबोधयत् यत् केन प्रकारेण तेषां कटाक्षान् अनुभूयते साम्प्रतमेते छात्राः स्व शिक्षकं अधिकतरं श्रद्धा आदरदृष्ट्या अपश्यन्। समयानुसारेण योगस्य दीक्षा गृहीतुंइच्छा तेषु बलवती भविता योगस्य गुप्त रहस्यान् विज्ञातुं ते गुरुणा दीक्षा मार्ग दर्शन दातुं प्रार्थना कृतवन्तः। तेषां सत् सलग्नेन प्रसन्नं भूत्वा गुरुदेवः तान् तस्य संकुचित द्वारेण संकीर्ण पथेन गन्त्रीं दीक्षा दत्तः येन तांन् चरम सत्यम् प्राप्नुवन्ति।

समयेन सहैव गुरुदेवस्य संगीत विद्यालयः उत्तरोतरं उन्नतिंपथं प्राप्तः। अवकाश सदुपयोगाय किवा संगीतस्य विभिन्न परीक्षासु साफल्याय अधिकाधिकं छात्राः तस्य विद्याालये प्रवेशं भवितारः। गुरोः विद्यालयः संगीते उपाधिं अपि प्रदानं कर्तुं कारणेन संगीत महाविद्यालय इति कथ्यते छात्र समूहैः सह आध्यात्मिक मार्ग दर्शनप्रापताराणां संख्यापि प्रवर्धितः। एतादृशाः कतिपय अवसराः आगतः यदा गुरु तेषां विषये पूर्वमेव ज्ञानं अभवत्। यः भविष्य काले तस्य शिष्यं भूत्वा आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्तुं अभिलाषी आसीत् गुरोः संगीत विद्यालयेन संबंधित एतादृशेव एका रोचक घटनायाः अहम् उल्लेखं करिष्यामि।

दुर्ग आगमनात् पञ्च विंशति वर्ष पूर्वम् गुरुं विशिष्ट दृश्यानुभूतिः प्राप्तः। तस्मिन् काले ते सत्यान्वेषणे परिभ्रमतिस्म। अनेक स्थानेषु परिभ्रमन् सः नान्देड जनपदस्य मदनूर नगरं प्राप्तः। एतेषु स्थानेषु गुरुदेवस्य निवासानुभवानां उल्लेखः अहम् पूर्वेऽपि कृतम्। मदनूरेसः एक मंदिरस्येकान्ते साधना करोतिस्म। एकदा ध्यानकाले तं आकाशे एकाः उज्जवल प्रकाशदीप्तिः अपश्यत्। प्रकाशेऽस्मिन् एका अल्प वयस्क बालिका स्थिता। सा किञ्चित् ईषत् धूम्रवर्णस्य प्रियदर्शिनी आसीत्। क्षणमात्रेव एषः दृश्य लुप्तः जातः। परं कतिचिद्दिवसानन्तरे पुनश्च एतद्देव दृश्य अवलोक्यते अथ च गुरुदेवस्य मस्तिष्के बालिकायाः मुखाकृतेः गहन प्रतिबिम्बं अत्यजत्।

अनुमानतः 30 त्रिशत् वर्षाण्यनन्तरे एका शिक्षिका कु0 कृष्णा गुप्ता गुरोः संगीत विद्याालये छात्रा रुपेण आगता। वर्तमाने इयम् दुर्ग समीपस्थित डोगरगढ़े कन्या माध्यमिक विद्याालयस्य प्रधानाध्यापिकास्ति। अनया प्रथम बारं साक्षात्कारेसति गुरुं 30 त्रिसति वर्ष प्राच्याल्पवयस्क बालिकायाः दर्शनस्य स्मरणं अभवत्। उभौ आकृतिः एकेव प्रतीयते। गुरुदेवः तं अस्य पूर्वाभासस्य विषयेअपि अविज्ञापयत्।

योगे रुचिः वर्तते, इति कारणेन कुमारी गुप्ता गुरुदेवेन मिलनात् पूर्वमपि अनेकैः वर्षैः अभ्यासः करोतिस्म। अधुना गुराः छात्रा निर्मितेन तां गुरोः आध्यात्मिकोपलब्धीनां अथ च योग जीवनस्योत्तमावबोधनं प्राप्तः। सा अविचारयत् विचारितायत् किं तस्य अध्यात्म संबंधयः आकाक्षाः अस्य संगीत शिक्षणस्य माध्यमेन पूर्णो भविष्यति। केनापि प्रकारेणाध्यात्मिक मार्ग दर्शनं प्राप्ति करणात् पूर्वं सा प्रार्थना माध्येन उपयुक्त आध्यात्मिक गुरोः चयनार्थ दिव्य मार्ग दर्शनं प्राप्तवती। कानिचित् दिवसं उपवासं कृत्वा सा प्रार्थितवती। अंतेतां स्वकीयाभ्यन्तरतः। आगच्छन् स्व उपास्य स्वामी विवेकानन्दस्य स्वरं अश्रृणोत्। तत् स्वरं आसीत्। अहमेव सोऽस्मि तस्याशीर्वादं प्राप्नोतु। संपूर्णास्थितिः तां स्पष्टमभवत्। कापि शंकानावशिष्टा। अपरे दिवसे एव गुरोः

सविधे गत्वा सा स्वकीयानुभवं अश्रावयत्। अथ च अति शीघ्रमेव दीक्षा ग्रहणस्य इच्छा प्रकटयत्। तां विधिवत दीक्षा प्रदत्तातावत् कालतः सा पर्याप्त उन्नतिः कृता। गुरुदेवस्य इच्छावर्तते यत् सा अन्य महिलानां आध्यात्मिक जीवने साहाय्यं करोतु।

अन्तरालेऽस्मिन् दुर्गस्य विजय शंकर दुबे महोदयः गुरोः संपर्के आगतः अथ च तस्याध्यात्मिक जीवनेन प्रभावितं भूत्वा दीक्षा ग्रहणस्य इच्छा प्रकटितः। तमपि योगस्य आत्मिक पथस्य दीक्षा प्रदत्ता। तावत् एषोऽपि उत्तमोन्नतिं कृत्वा अनेकानुभवाः प्राप्तं कृतः। दुर्गे गुरोः संपर्के श्री के0 के0 द्विवेदी महोदयोअपि आगतः। यस्तु तत्काले अतिरिक्त जिलाधीशः आसीत्। एतद् संपर्कः संयोग वशात् श्री द्विवेदी महोदयस्य न्यायालये अभवत्। यत्र गुरुदेवः एकम् प्रमाणपत्रम् प्राप्तये गतः। श्री द्विवेदी स्वयं संगीतस्य पारखी आसीत्। अतः एतदाकस्मिक संपर्कः तं अत्यन्त्येव प्रभावितः कृतः स च गुरुदेवेन मित्रता कृतः। तावत् सः निरन्तरं एकान्यतः समीपे आगच्छतः। पश्चात् श्री द्विवेदी महोदयस्य स्थानान्तरणम् बालाघाटं अभवत्। गुरुदेव बालाघाटं गच्छति। गत्वा च तेन सह कानिचित् कालं यापयतीति।

यद्यपि गुरुदेवः सांसारिक प्रपञ्चेषुव्यस्तः आसीत्। यथा संगीत महाविद्यालयः अथ च गृहस्थाश्रम् संचालनः अध्यात्म महत्वाकांक्षीनां मार्ग दर्शनः। पुनश्चापि योगस्यविभिन्नमार्गे सः निरंतरं प्रयोगं कृत्वा तेषु अधिकार प्राप्तिः करोतिस्म। ऐते प्रयोगाः सः मात्र स्वकीयानुभवानां वृद्धेः दृष्ट्या न अपितु अस्य पथस्य इच्छुकप्रार्थीनां लाभाय अपि करोतिस्म। सः सदैव परमानन्दे अनिमज्जत्। यथा कमलदलः जलेवसित्वाअपि जले नलिप्यते सः सांसारिक प्रपञ्चैः आवृत्तं भूत्वापि तैः अलिप्तः आसीत्।

अस्मिन् दिने गुरुं एकः एतादृशः उल्लेखनीयः अनुभवः अभवत् येन तस्य पूर्वस्य बहुमूल्यानुभवेषु बृद्धिः कृतः। एकदा दुर्गे रेलवे स्थानक समीपेव स्थापित दीपकनगरे कंठसंगीतस्य आयोजनः कारितः। गुरुरपि अस्मिन् समारोहे आमंत्रितः। संगीत प्रेमीति

कारणात् सः प्रसन्नता पूर्वकं अस्यायोजनस्य आनन्द लाभाय अगच्छत्। अनुमानतः घटिकामेकां सः संगीतस्यानन्दः गृहीतः। पुनश्च तं अनुभवः अभवत् यदेका तीव्र संवेदना किं वा प्रकंपनः तस्य गुदाभागेनोत्पननं भूत्वा कमशः मेरु दण्ड़ मध्यतः भूत्वा उपरि अग्रसरः भ्वति। पूर्वमपि कतिषु अवसरेषु एतत् प्रकारस्य अनुभव जनित कारणेन सः सम्यक् जानातिस्म यत् तस्य परिणामः किं भविष्यति स्वस्थानतः उत्तिष्ठ मेजवानेन क्षमां याचित्वा सः शीघेव गृहं प्रति प्रस्थितः। सः अतिशीध्रं गृहं प्राप्तिं वाञ्छतिस्म। अतः यथा संभवं तीव्रतरं चलतिस्म। सः धावतिस्म एव गृहतः किञ्चिद्दूरेव पिंड़ली पर्यन्तं तस्य पादौ अथ च गुल्फतोऽधः हस्तः संज्ञा शून्यं भूत्वा काष्ठवत् अभवत्। स्वसमस्त शक्तिं एकत्री कृत्य अन्ततः सः गृहं प्राप्तवान्।

शीघ्रतया हस्त पादौ प्रक्षाल्यसः स्व शय्यायां अवस्थितः। साम्प्रतम् एषः कम्पनः तस्य पादाग्डुल्लीभिः आरभ्य तीव्रगत्या ऊर्ध्वं प्रर्वधितः। ततु मेरुदण्डे प्रविष्टः मेरुदण्ड मध्ये उभयोः पक्षयोरपि तं एषः कम्पनः अनुभूयते। एषः कम्पनः मण्डूकस्य कूर्दन इव आसीत्। तं परिवृत्य स्थिततस्य परिजनाः एतत् सर्वं अपश्यन्। सः स्व ज्येष्ठ पुत्रं ग्रीवायाः अधोभागे पृष्ठोपरि संम्मर्दनाय अकथयत्। येन एष कम्पनः अधोगच्छति। बाबा महोदयस्य संमर्दनेन एषः कम्पनः नीचैस्तु गच्छति परं हस्ताधःगतेसति पुनः उपरि प्रचलतिस्म। अनेकधां अधोगत्वा प्रत्येक बारं एका नवीन तीव्रतया सह उपरि आगच्छति। अनेनव्यायामेन श्रमित्वा गुरुदेवः बाबा महोदयेन तेलसेवावरुध्य कम्पनमेतत् तस्य नियत स्थाने गमनाय अकथयत्। सः स्वपरिजनान् संबोधयत् यत् किञ्चिदपि भविष्यति परं ते चिन्ता न कुर्वन्ति। चेत् सः अचेतनं भवति तर्हितु तं शय्यायां स्थापयित्वा वस्त्रेण आवृत्तयन्तु कानिचित् कालानन्तरेण दर्व्याः तं जलं पाययेत् अथ च तं शान्ति पूर्वकं विश्रमेत्। विश्वासं अददन् सः अकथयत् यत् चिन्तायाः न कोऽपि कारणं वर्तते। निश्चित समयेन सः सामान्यावस्थायां आगमिष्यति। इत्थमादिश्य गुरुदेवः पृष्टबलेन अवस्थितः कानिचिदेव क्षणेषु सः परा चेतनायां अनिमज्जत्।

स्वपरितः गतिविधीनां तं पूर्णबोधः आसीत्। परं तस्य हस्त पादौ जड़ः संज्ञाशून्यं चासीत्। सः सक्रियसहभागी न भूत्वा एकः उदासीन दर्शक इव आसीत्। कालस्य तस्मै न कोऽपि महत्वं आसीत्। एतादृशः प्रतीतं भवतिस्म यथा कालोऽवरुध्यते अथ च सः अस्य स्थूल संसारस्य सीमातः परे अस्ति। गुरुदेव परं सत्येलीनः तथा च परमानन्देन ओत प्रोतः तत् सर्वोच्च परा चेतना अवस्थायां यां सत् समाधि कथयन्ति दिवस त्रयं अवस्थितः। अन्तरालेऽस्मिन् तस्य स्वास्थ्यं प्रतिचिन्तितः परिजनाः एकं चिकित्सकं आहूयते। सम्यक् परीक्षणानन्तरे चिकित्सकः संबोधयत् यत् गुरु केनापि प्रकारस्य रुजं नास्ति। अतः उपचारस्य प्रश्नः एव नोत्थितः। यतोहि अस्यां अवस्थायां कोऽपि किञ्चिदपि कतुं न शक्तः। एतावता गुरोः निर्देशानुसारं तस्य परिजनाः धैर्यपूर्वकं प्रतीक्षा करणीयम् इत्थमेवोचितः बुध्यते।

दिवस त्रयानन्तरे गुरुदेवः सामान्य अवस्थायां आगतः। अस्यां चेतनावस्थायांमपि सः तत् परम तत्वेन सम्बद्धः आसीत् यः सर्वस्य आद्यन्तश्चास्ति। समयः न कस्यापि प्रतीक्षते गुरोःदुर्गे निवासानन्तरेण दशकमेकं व्यतीतः। मध्येऽस्मिन् तस्य बालकाः लाभकारी वृत्तिं प्राप्यतेस्म। विवाहानन्तरे कानिचित् कालेव सः व्यवस्थित रुपेण अवसत्। साम्प्रतम् गुरुदेवः परिवारस्य पोषणाय धनार्जन भारेण मुक्तम् अभवत्। संगीत विद्यालये अधिक समयंयापना तस्मै दुस्तरमभवत्। संगीत बाद्यानां ध्वनये सः एतदधिकं संवेदनशीलः अभवत् अजायत वा यत् कानिचित् मिनटभिः स्वल्पमपि संगीतः अश्रृणोत् चेत् तस्य गुदया शक्तिशाली कम्पनम् आरभ्य विविधनाड़ी केन्द्रान उततेजितं करोति। एषः कम्पनः मेरुदण्ड़ेन ऊर्ध्वं गत्वा प्रान्तस्थायां प्रविश्यवा प्रविशति। यस्य परिणाम स्वरुपं सः समाधि स्थित्यां गतवान्।

मध्येऽस्मिन् उपायुक्तः श्री के0 के0 द्विवेदी सेवा निवृत्तं भूत्वा बिलासपुरे अवसत्। अथ च न्याय कार्यरतः श्री द्विवेदी महोदयस्य निमंत्रणे गुरुदेवः कानिचित् दिवसं बिलासपुरे यापितवान्। अत्र श्री लक्ष्मी प्रसाद मिश्रः यः शासकीय कोषागारे

लिपिकः आसीत्गुरोः संपर्के आगतः। श्री मिश्र महोदयः हठयोगाभ्यासस्तु करोतिस्म एव सहैव गुरुणा चैतन्य योगाभ्यासाय दीक्षां प्रापयितव्यतेस्म। दीक्षा ग्रहणं कृत्वा ***श्री मिश्रः बिलासपुरे गुरोः प्रथम शिष्य अभवत्।*** *बिलासपुरे एव वन विभागे लेखाकार रुपे कार्यं कर्तारन्। श्री नर्मदा प्रसाद द्विवेदी गुरोः द्वितीय शिष्यः अभवत्। अस्यानुकरणः श्री हरीश चन्द्र त्रिपाठी महोदयः कृतः यस्तु वन विभागे अधीक्षकः आसीत्। गुरुणा तस्य परिचयः श्री लक्ष्मी प्रसादेन अकारयत्। श्री त्रिपाठी गुरुणा निश्चितेव अत्यन्त प्रभावितः अभूत्। परं तस्य दीक्षा अत्यन्त्येव रोचक विधिना कानिचित् दिवसानन्तरे अभवत्।*

श्री के0 के0 द्विवेदी महोदस्य सान्निध्ये किञ्चित्कालं व्यतीत्य गुरुदेवः दुर्गं प्रत्यागच्छत्। श्री हरीश चन्द्र त्रिपाठी, श्री लक्ष्मी प्रसाद मिश्रश्च एकदा दुर्गं प्राप्तः। गुरोः प्रशंसक हरीश चन्द्र त्रिपाठी अथ च शिष्य लक्ष्मी प्रसाद मिश्रः सम्मानप्रर्दशनाय तस्य निवासस्थाने गतः।

संपर्केऽस्मिन् त्रिपाठी महोदयः आध्यात्म मार्गस्य दीक्षा ग्रहणस्य इच्छां प्रकटयत्। त्रिपाठी महोदयः भूयो भूयो आग्रहं कर्तारन् अस्यां वार्तायां कृत संकल्पोऽभवत् यत् सः गुरुणा आध्यात्मिक अनुभव प्राप्तं बिना न गमिष्यति। यावत् गुरुदेवः तस्य प्रार्थना नाग्ड़ीकृतः सः तस्य निरोधाय सन्नद्धोऽभवत्। अस्यो परि गुरुदेवः तेन ध्यान पूजायाः समये प्रयुक्त कृत आसन विषये अपृच्छत्। त्रिपाठी महोदयः गुरुं स्वाभ्यास विधिं प्रदर्शनाय आसन ग्रहणः कृतः। तथा च नेत्रं निमील्य अवस्थितः कानिचित् मिनटानन्तरे त्रिपाठी महोदयः नेत्रं उन्मील्य गुरुं विज्ञापयत् यत् अद्याावधि यत्किञ्चिदपि तेन कृतवान्। ततु निरर्थकः आसीत् अथ च सम्यक् प्रयत्नानन्तरेऽपि तं कस्यापि प्रकारस्य आध्यात्मिक अनुभवः न अभवत्। यावत् गुरुदेवः तं आध्यात्म ज्ञानं कारयित्वा कृतार्थः न करिष्यन्ति सः तस्य गृहं न त्यागयिष्यति किञ्चित्क्षणं मौनअनन्तरे गुरुदेवः तस्य प्रार्थना स्वीकृतः। गुरुदेवः तं एकः विशिष्टासन

विषये संबोधयत्। त्रिपाठी महोदयः तत्परतया आसन ग्रहणं कृतः अग्रे गच्छतु तस्य पृष्ठ भागं संस्पर्शयत्वा संमर्दयन् गुरुदेवेनोक्तम्।

किञ्चित्क्षणानन्तरेव त्रिपाठी महोदयः गुदाभागे कम्पनानुभवः कृतः यः मेरुदण्ड़ मध्यं भूत्वा ऊर्ध्वं प्रवर्धितः। तं स्व शरीर समीपस्थस्य च किञ्चिदपि बोधं न आसीत्। अनुमानतः विंशति क्षणान् अचलं भूत्वा सः बाह्य जगत्या दूरमभवत्। परं अन्तर्जगति सः पूर्ण सचेतः आसीत्। वाढम् नीचैः आगच्छ कथयित्वा गुरुदेवः पुनः तस्य पृष्ठ भागं संस्पृशेत्। त्रिपाठि महोदयस्य चेतना तं सामान्य अवस्थायां आनीतः।

गुरुदेवः त्रिपाठी महोदयेन तस्यानुभव विषये अपृच्छत् प्रफुल्लितः त्रिपाठी महोदयः गुरुं विज्ञापयत् यत सः एकम् स्वर्णिम् त्रिभुजम् अपश्यत्। अति उत्तमः। अधुना तत् स्वर्णिम् त्रिभुजस्य ध्यानाय प्रयत्नं कुरु यावत् सः भवान् सन्मुखे प्रकटः न भवति मम पुनः संपर्कं यावत् अस्मिन् त्रिभुजे ध्यानं केन्द्रितः स्थापयतु गुरुदेवः तं संबोधयत्।

श्री त्रिपाठी महोदयाय एषः एकः अदृश्य अश्रुत आत्मिक अनुभवः आसीत् यथा सः स्वप्ने अपि न चिन्तयतिस्म। इत्थं सुदीर्घ कालं कृत आध्यात्मिकाभ्यासः तं नीरसः अर्थहीनश्च प्रतीतोऽभवत्। अधुना तस्य सन्मुखे एकः एतादृशः नवीन मार्गम् आसीत् यः परमानन्दप्राप्तिं कारयतिस्म। त्रिपाठी महोदयः चिन्तामग्नः अभवत् यत केन प्रकारेण अस्याद्भुत अनुभव कर्तारः गुरूं गुरोः प्रति वा स्वकृतज्ञतां ज्ञापयेत्। सः स्वकीयं गुरुं समर्पितं कृत्वा तत्क्षणेव दीक्षा ग्रहणस्य निश्चयः कृतः। गुरुदेवः तस्य साहाय्यं कृत्वा तत्क्षणेव मार्गदर्शनप्रदानः स्वीकृतः। श्री त्रिपाठी महोदयः विधिवत् दीक्षाग्रहणम् कृतः। पथ प्रदर्शक गुरुं संप्राप्तेः प्रसन्नतया संतोषेन च परिपूरितः त्रिपाठी लक्ष्मी प्रसाद मिश्रा च गुरुणा सह भोजनानन्तरे बिलासपुरं प्रत्यावर्तितः।

गुरुदेवः पुनः बिलासपुरं आगतः। समयेऽस्मिन् बिलासपुरे रामकृष्ण मिशनस्य एका शाखायाः आरम्भः आकारितः। श्री के0 के0 द्विवेदी रामकृष्ण सेवा समितेः प्रमुख

सदस्यः आसीत्। तथा च गुरुं अस्याश्रमस्य प्रधानः पद धारकः इति निर्माणाय इच्छुकः आसीत्। श्री द्विवेदी महोदयस्य विचारः आसीत् यत् विद्वान् आध्यात्मिक अनुभवानां धनिकः गुरुदेवः आश्रमस्य प्रधानत्वे विनिर्मितेशताधिक आकांक्षिनां मार्गदर्शनम् करिष्यति। परं तस्य कामना न पूर्णा जाता यतः रामकृष्ण मिशनस्य नियमानुसारेण एकः गृहस्थः मठवासिनां आश्रमस्य प्रधानः भवितुं न शक्यतेस्म। गुरुदेवोऽपि अस्य पदस्य उत्तरदायित्वेन बन्धनस्य इच्छुकः नासीत्। गुरुदेवः गूढाध्यात्मिक विषयेषु एकः प्रवचनो दत्तः यः मठवासीन् उपस्थित जन साधारणञ्च उभावेव प्रभावितः कृतः।

उपस्थित श्रोतृषु ठेकेदारः श्री लक्ष्मण राव देशपांडे अपि आसीत् अस्मिन् पुरातन ज्ञानोपरि गुरोः अधिकारः तं अति प्रभावितः कृतः श्री देशपांडे गुरुणा द्वितीयावसरे अवकाश प्राप्त सत्र न्यायाधीशः श्री काले महोदयस्य निवास स्थाने अमिलत्। श्री काले गुरुं देशपांडेयञ्च रात्रि भोजने आमंत्रितः कृतः। वार्तालाप मध्ये श्री देशपांडेयः गुरुणा अपृच्छत् यत् समाधेः कि नाम सुखं ? भवान समाधेः सुखंप्राप्तिंवॉछसि वामात्रपरिभाषा ज्ञातुं इच्छसे गुरुदेवेन प्रति प्रश्नः कृतः। श्री देशपांडे उभावेव आप्तुं इच्छसे। एतदुपरि गुरुदेवेन अपृच्छत् यत् किं सः कस्यापि अधिकृत गुरुणा दीक्षा प्राप्तः सति गुरुदेवतं पूर्वं कस्यापि गुरुणा दीक्षा प्राप्तये न वा नकारात्मकोत्तरं संप्राप्ते सति परामर्शो दत्तः। दीक्षितानन्तरेव तं समाधि सुख प्रदातुं शक्यतेस्म।

अनुमानतः माहमेकं श्री देशपांडे गुरुणा संपर्कः स्थापितः परं सः दीक्षान गृहीतः। अंते समाधि सुखस्यानुभवं कर्तुं तस्य इच्छा एतादृशी बलवती अभवत् यत् सः गुरूणा दीक्षा दातुं अनुरोधः कृतः। श्री देशपांडेयः विधिवत् दीक्षा गृहीतः। दीक्षा कालेव समाधि सुखस्यानुभवम् कर्त्तुं तस्य इच्छा पूणा जाता। गुरुदेवः तंध्यानस्य एका विशिष्टा विधिं ज्ञापयत् यस्याः अभ्यासः सः पूर्णं गंम्भीरतया आरंभः कृतः तावत् स्वसाधनायां सः असाधारण प्रगतिः कृतः अथ च पश्चात् किञ्चिद वर्षतः सः परमहंस इति नाम्नः

ज्ञातारः आध्यात्मिकावस्थायां अस्ति। तस्य विभिन्नानुभवाः अस्य पुस्तकस्य तृतीय भागे लिपिबद्धाः सन्ति।

ऊँ श्री सद्गुरु प्रसादात्ेति ।

ऊँ श्री सद्गुरवे नमः

पञ्च दशोऽध्यायः

परजन हिताय परिभ्रमणम्

वयं जानामः एव यद गुरवे संगीत महाविद्यालये किञ्चित् मिनटतः अधिकं समयो अतीतःकठिनंमभवत्। यतः संगीत स्वराणां कम्पनेन तस्य शरीरेऽपि तेनैव प्रकारस्य कम्पनः उत्पन्नः अभवत्। एषः कम्पनः तस्याति संवेदनशील नाड़ी केन्द्रान् उत्तेजितः करोति। येन गुरुदेवः समाधेः अवस्थायां प्राप्तः। अस्याः अवस्थायाः अनेकधा पुनरावृत्तिः अभवन् अथ च गुरोः एतस्यै संस्थायै उपयोगिता समाप्तप्रायो अभवत् अतः गुरुदेवः अस्मिन् महाविद्याालयतः स्वसंबंधःत्यागाय निश्चयः कृतः। अतः सन् 1961 ख्रीष्टाब्दे संस्थापित अस्मात् विद्याालयात् सन् 1971–72 ख्रीष्टाब्दतः स्व संबंधं समाप्तमकरोत्।

माता बालकैः सहवासः अरुचत् यस्तु सम्प्रतिकालं विवाहितं भूत्वा जनकोऽपि विनिर्मितः। अतः गुरुदेवः एकदा पुनः भ्रमणाय निश्चितः कृतः। परं अस्मिन् क्रमेशः ज्ञानान्वेषणे उत्सुक अध्येतायाः रुपे न अपितु एकः गुरोः रुपेज्ञान वितरणाय निः सृतः यः सः महद् मूल्यं दत्वा अर्जितः कृतवान्।

श्री के0 के0 द्विवेदी महोदयस्य निमंत्रणे गुरुदेवः पुनः बिलासपुरं आगतः अथ च किञ्चित् दिवसं अतीतः। सेवा निवृत्तानन्तरे श्री द्विवेदी अधिवक्तृ कार्यैः सलग्नाः आसन्। अतः गुरुदेवः अत्यधिक समयं एकाकी एव अवसत्। अस्य समयस्य सदुपयोगाय गुरुदेवः एकस्मिन् दिने एकदा संगीतस्य अनन्तः शक्तौ प्रयोगाय निश्चयः कृतः। यः सहजेव कस्यापि समाधि अवस्थायां प्रापयितुं शक्नोति। तस्य पूर्व प्रयोगाः तं एषः शिक्षितः यत् संगीते मात्र कानिचित् रोगाणां उपचारस्य एव शक्तिर्नास्ति अपितु तत् अत्यधिकं सक्रियः अथ च अशान्त मश्तिष्कं पूर्ण शान्ति प्रदाने शक्तः। सः स्व

व्यक्तिगत अनुभवेन एतद् जानातिस्म यत् ध्वनिना मानवः बीज मंत्र ऊँ ऊँकारं /प्रणवं प्राप्य परमतत्वं अधिगच्छति।

श्री द्विवेदी महोदयोऽपि संगीत प्रेमी आसीत्। अथ च तस्य पार्श्वे अनेकानि वाद्यानि आसन् एकस्मिन् दिने श्री द्विवेदी महोदयस्य न्यायालय गमनानन्तरे गुरुदेवः हारमोनियम्म्गृहीत्वा अवस्थितः। उपर्युक्त योगासनं गृहीत्वा हारमोनियमेन सह गीतारंभः कृतः। गुरुदेवः जानातिस्म यत् योगस्य किञ्चिदासनाः सरलतया लक्ष्य प्राप्तौ सहायकाः भवन्ति। कतिचिदेव मिनटेषु तं एषादृशः अनुभवः जातः यत् सः भारहीनः भवितु मर्हति। अथ च एक पक्षस्य इव भारहीनः अभवत् तथा च कस्यापि काले पवने उड्डीयते तत्कालेव तं भोजनाय आहूतः अथ च सः अत्रत्याः अग्रे अनुभवः न प्राप्तः।

द्वितीय दिवसेऽपि हारमोनियम्म्गृहीत्वा सः पूर्व दिवस इव संगीताभ्यासः कृतः। किञ्चित् कालेवतं मेरुदण्डाधारेण उत्पन्ना अभवत् सुखदानुभूतिः जाता यः मेरुदण्डस्य विभिन्न केन्द्रान् प्रति प्रवर्धितः। एषानुभूतिः चतुर्थ पञ्च केन्द्रेषु असाधारणरुपेण शक्तिशाली आसीत्। एषानुभूतिः प्रान्तस्थां गतः। तस्य शरीरः स्व संतुलनं विस्मृतं गतः। अस्मिन् दिनेऽपि भोजनाय आहूयते अतः सः अग्रे अनुभवः न कृतः।

तृतीय दिवसेऽपि स्वानुभवैः उत्तेजितं भूत्वा पुनः प्रयोगे रतः। काठिन्येन अर्ध घटिका एव अतीतो भविष्यति यत् साएव अनुभूति मेरुदण्डस्य अधोभागतः आरंभं भूत्वा प्रान्तस्थां गतः। शरीरः संतुलनः समाप्तमभवत्। एकादिव्य ज्योतिः तस्य दक्षवाम भागयोः प्रकाशिता जाता। सः संज्ञा शून्यं अभवत् तं एतादृशः अनुभवः अभवत् यत् सः विदेहं भूत्वा पारलौकिक जीवने प्राप्तः। एवञ्च प्रशान्ति परमानन्दस्य च सागरे निमग्नः जातः। अनेका घटिकानन्तरे सः सामान्य अभवत्।

एत द्दिवसतः गुरुदेवः यथा बाह्य जगते लुप्तो अभवत् अधुना तं चरम पारलौकिक परमानन्दस्य अवस्थां प्राप्तये हारमोनियमः वा संगीतस्याश्रयः न गृह्यते। तस्य पादाः काष्ठ इव संज्ञाहीनः अभवत् सः बिना कस्यापि आश्रयंस्य उत्थितोपविष्टुं अपि न समर्थासीत्। तस्य क्षुधा समाप्ता जाता। अन्नजल ग्रहणमपि कष्ट प्रदोऽभवत्। सम्पूर्ण काले सः स्वकीयं तत महान् दीप्तेः अर्णवे निमज्जितः प्राप्तः। पुनश्च तत् प्रकाशः लुप्तः जातः।

एषा अपार शून्यता रिक्ततायाश्चावस्था आसीत्। प्रकाशः पुनः प्रकटितः। प्रकाशः शून्यता च क्रमेण गतागतः यद्यपि तस्य शरीरः संज्ञाहीनः शक्ति हीनश्चा भवत् सः पूर्ण रुपेण सजगः आसीत्। अनेन प्रकारेण किञ्चित्कालं वसत्यनन्तरे तत् प्रकाश पुनः लुप्तोऽभवत् अधुना सः तत् आद्य स्थितौ प्राप्तवान् या अनेन प्रकाशेनापि परे आसीत्।

अत्र किञ्चित् विषयान्तरः अनुज्ञेयः अस्ति सर्वेषु प्रमुख धर्मेषु ईश्वरस्य प्रत्यक्ष स्वरुपः प्रकाश रुपे अभिव्यक्तः अस्ति। याशु जनानां पवित्र बाइबिल ग्रन्थे सृष्टि विषये अकथयत्।

आरम्भे ईश्वरः पृथ्वी स्वर्गस्य च सृष्टिः कृतः। अथ च पृथ्वी आकारहीनः रिक्तरश्चासीत् परितः गहनान्धकारः आसीत्। ईश्वरात्मा जल स्तरतः ऊर्ध्वं उत्थितः। सृजनारंभकृते सति ईश्वरः प्रथमं अकथयत्। प्रकाशं भवितुमर्हिष्यते अथ च गृहणातु। परितः प्रकाशोऽभवत्।

नवविधाने वयं पुनः पठामः यत् ईशामसीहः स्वपरितः जनैः अकथयत् अहं प्रकाशोऽस्मि अहं जीवनः अथ च अहमेव मार्गम् अस्मि माम् गतेबिनाकोऽपि परमपिता परमात्मांनं न प्राप्यति। अथवा न प्राप्तुमर्हति।

इस्लामस्य शिक्षा अस्ति यत् दयालु अल्लाहः प्रकाशः अस्ति। खुदानूरः अस्ति अथ च खुदा इत्यस्य नूरः मोहम्मदः अथ च अनेन नूरेण समस्त संसारः रचितः/ अरचयत् वा।

(हिन्दू) सनातन धर्म ग्रन्थानुसाराणामपि एकः ''ज्योतिर्मयपिण्ड़ः'' एकः असीमित अगम प्रकाशस्य सागरः श्च पारव्रह्मः अस्ति यः स्वयं ज्योतिरस्ति अथ च आर्याः यदा प्रातः सूर्य पूजनं कुर्वन्ति तदा ते सूर्यं ईश्वरस्य रुपे न परं ईश्वरस्य प्रतीक रुपे पूजयन्ति यतः ईश्वरः स्वयं प्रकाशोऽस्ति।

पारसी अग्नि पूजकाः सन्ति अत्र अग्निरपि प्रकाशः पवित्रताश्च प्रतीकः अस्ति। पारसी धर्म संस्थापकः जरथुष्ट्रस्य अति पूर्वतः एव अग्नि पूजायाः अस्तित्वः अस्ति आर्यः अपि अग्निं पवित्रंमानन्ति पारसी जनेभ्यः अग्नि ''अहूरा माज्दा'' प्रतीकः अस्ति। आदिम मानवाः धर्मश्चापि सूर्यं ईश्वरः मानन्तिस्म। मेक्सिको निवासी सूर्यभोजनाय नर बलिं ददातिस्म यया भोजनाभावे सूर्यक्षीणो न भवेत्।

चेदहं प्रमुख धर्माणां शिक्षाः तर्क संगत रुपेण अपश्यामः तत्तु वयम् एतद् अपरिहार्य निष्कर्षोपरि गमने विवशो भविष्यति यत् प्रकाशः एव तन्मूल पदार्थः अस्ति यतोहि कियन्मात्रमपि सूक्ष्मः जटिलः अस्तु वा यया येनवा सम्पूर्ण सृष्टेः रचना अभवत् अथ च अस्योर्थो भविष्यति यत् ईश्वरः वा परं शक्तिः न प्रकाशः परं प्रकाशतः ''परे किञ्चिदन्यः'' एवास्ति। गुरुदेवः प्रकाशतः परे अस्मिन् ''किञ्चिच्चान्येव'' लीनोऽभवत् अस्मिन् काचिदन्य विषये एव उपनिषदेषु अकथयत् :–

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते,
येन जातानि जीवन्ति
यत् प्रत्यभि संविशन्ते
तद् विदि विजिज्ञाशश्वतद् ब्रम्हम् ।

–तैत्तिरीयकउपनिषद्–3

(" स किञ्चिदन्यः" एव ज्ञातुं योग्यः अस्ति येन समस्त सजीव निर्जीव वस्तूनां अस्तित्वः अस्ति येन जीवनः उत्पन्नो भवति तथा च तस्मिन् समाप्तमपि भवति एतदेव ब्रहम इति कथयन्ति। मात्र एतदेव ज्ञातुं योग्यः अस्ति।)

पूर्ण सप्त दिवसान् गुरुदेवः समाधौ अवस्थितः ऐहिकः लौकिकः तथा च अनिवार्य आवश्यकतानां बोधे तं सुदीर्घ कालो लगितः। न किमपि आश्चर्यं यत् सर्वोच्च पवित्रः तथा च परमानन्दस्य स्थितीभ्यः पुनः भौतिक जगति आगते सति गुरुं एषः अपवित्रः कुरुपः नीरसश्च प्रतीतोऽभवत्।

संसारिक जीवने पुनः प्रत्यावर्तने गुरुं स्मरणं प्रदत्तः यत् तं रामकृष्ण सेवा समिते सदस्येभ्यः एकम् प्रवचनम् ददातिस्म। परं तत्काले या मानसिक अवस्था तस्यासीत् तस्मिन् तस्या वा प्रवचन दानं न सम्भाव्यतेस्म। गुरुदेवः श्री के0 के0 द्विवेदी महोदयस्य द्वितीय पुत्रः गिरीशंकुमारस्य साहाय्यं गृहीत्वा हर्षचन्द्र त्रिपाठिं शहडोले दूर संचार प्रेषितः। श्री गिरीशं कुमार द्विवेदी एम. एस. सी. पी. एच. डी. तस्मिन् काले बिलासपुरस्य शासकीय इंजीनिरिगं महाविद्यालये गणितस्य व्याख्याता आसीत् अनन्तरे सः रामकृष्ण मिशनस्य सदस्यता गृहीतः साम्प्रतं सः एकः मठवासी अस्ति श्री त्रिपाठी बिलासपुरं आगत्य गुरुं स्वकीयेन सह शहडोलंनीतः।

शहडोले गुरुदेवः अनुमानतः पञ्चदश दिवसान् समाधौ अवस्थितः त्रिपाठि महोदयः अहर्निशं। तस्य सेवा पूर्णसजगतया अकरोत्। दिवसे स्वकार्यालय गमन काले सः रामसमझ पांडेय महोदयं गुरोः कार्यभारः समर्पयत्। एकदा रामसमझ पांडेयस्य गृहे गुरुदेवः पर्यक्ड.ोपरि विश्रमितः अस्वयत् तथा च समीपेव भूमौ अवस्थित पांडेयः एकम् पुस्तकं पठतिस्म गुरोः सन्मुखे एकः बृहदिव प्रकाश पिंडः प्रकटितः जातः अथ च किञ्चित्कालानन्तरे अदृश्योऽभवत्।

गुरुदेवः सप्ताह त्रयं श्री त्रिपाठी महोदयेन सह शहडोले अवसत्। कालमेतत् तस्मै अतीव कष्ट पूर्णः आसीत्। तं स्वकपाल मध्ये तीव्र तापस्य अनुभवः भवितारः। तं एतादृशः अनुभवः भवतिस्म यत् भुसुण्डीनां गोलिकाभिः इव तीक्ष्ण वस्तवः तस्य कपाल अस्थिषु आभ्यन्तरिक पक्षतः तीव्र प्रहारंकरोतिस्म तापः पीड़ा च एतादृशः तीव्रः आसीत् यत् एतादृश लगतिस्म यत् तत् वस्तु तस्य कपालतः बहिः आगमनाय मार्गं अन्विष्यति। तं एतादृशः अनुभवः अभवत् यत् तस्य मस्तकः खण्ड–खण्डं भूत्वा प्रसृतो भविष्यति। एषानुभूतिः मध्यरात्रि समीपे अत्यधिक गतिशीलं प्रबलश्च भवति तथा चानुमानतः घटिका त्रयं यथा तथैव निर्मिताजाता। कस्यापि प्रकारस्य औषधिः तं विश्रामं न प्रदर्शितः। अल्पाधिक्यं विश्रामः तदा एव मिलति यदा सः स्वशिरं नलस्याधः स्थित्वा जलं सततं शिरसि पातयति शिरं नलस्याधः स्थापितस्योपायः तेन पूर्वमपि अकरोत् यदा बिलासपुरे श्री द्विवेदी महोदयस्य गृहेऽपि तं तत् प्रकारस्य अनुभूतिः अभवत् शहडोलेऽपि अधुना सः अस्यैव प्रयोगः कृतः। यतः नलस्य जलेन उपचारः सर्वकाले संभवः नासीत् सः एकस्मिन् सुदीर्घपात्रेजल संचयं कृत्वा स्व समीपे एवस्थापितः येन आवश्यकतानुभवोपरि सिरं वेपथुं जल सिञ्चनं कारितः।

अस्यानुभूतिं शान्ति लाभे तस्य हस्तपादौ सामान्यभूते कतिदिवसाः लगितः परं पुनश्च सः अति कठिन्येन प्रचलतिस्म तदा सः स्व पुत्राय दुर्गं संदेश प्रेषितः स्व पुत्रागमनानन्तरे सः इलाहाबाद मण्डलस्य खेतरपलिया नामकः मातुः पूर्वजानां ग्रामे गतः। माता कालेऽस्मिन् अत्रैव वसतिस्म। सप्ताहद्वयं अत्र अतीत्य सः मातुः अथ च पुत्रेण सहदुर्गं प्रत्यागतः। दुर्गेऽपि गुरुदेवः समाधौ एव अवस्थितः तं पूर्णतः सामान्यं भवितुं अनुमानतः अष्टमासाः लगितः।

यदा सः शहडोलं आसीत् कानिचिदन्याध्यात्मिकआकांक्षीजना तेन मार्गदर्शनम् दीक्षां च प्राप्तः एतेषु उच्चतरमाध्यमिक विद्यालयस्य प्राचार्यः श्री जानकी प्रसाद मिश्रः यः अधुना सेवा निवृत्तं भूत्वा होमियोपैथी चिकित्सकरुपे कार्यम् करोति, माध्यमिक

विद्यालयस्य प्रधानाध्यापकः श्री हरनारायण दुबे, शिक्षा विभागस्य लिपिकः श्री भैय्यालाल तिवारी अपि आसीत्।

अन्य स्थानमिव शहडोलेऽपि गुरोः शिष्याणां संख्या क्रमिकः परं सततं प्रवर्धिता अतीव अल्प काले आध्यातिमकोपलब्धीनां उच्च स्तरेषु प्राप्त कर्तारः आसीत् विद्यालय व्याख्याता श्री गुरु प्रसाद पांडेयः यस्य दीक्षा अतीव नाटकीय परिस्थित्यां अभवत्।

सन् 1974 वर्षस्य ग्रीष्मे गुरुदेवः पुनः बिलासपुरं आगतः तथा च श्री द्विवेदी महोदयेन सह किञ्चित् कालंव्यतीतः कृतः। समयेऽस्मिन् श्री द्विवेदी महोदयस्य अंतरंगमित्रः लोक अभियोजकः श्री रामखिलावन मिश्रः गुरोः संपर्के आगतः। सोऽपि गुरोः आध्यातिमकोपलब्धिभिः अत्यन्त प्रभावितः अभवत् सः गुरुं स्वगृहं आगत्य कानिचित् दिवसाः वासस्य निमंत्रणम्दत्तः। श्री द्विवेदी महोदयस्य गुरुणा श्री मिश्रा महोदयस्य निमंत्रणं स्वीकार्य तेन सह निवासे न कोऽपि आपत्तिः आसीत्। श्री द्विवेदी महोदयः अकथयत् यत् घनिष्ठमैत्रीं वशात् तयोः गृहे न पृथकाः स्तः। परं एकैवगृहेद्वार द्वयं इव अस्ति। अस्योपरि गुरुदेवः श्री रामखिलावनमिश्रायाः निमंत्रणः स्वीकृतः अथ च शहडोलतः प्रत्यावर्तने तेन सहवासायसन्नद्धोऽभवत्। यतः श्री हर्ष चन्द्र त्रिपाठी तं शहडोल आनेतुं आगतः। गुरुदेवः तेन सह अगच्छत्।

शहडोलं प्रत्यागतेसति गुरुदेवः श्री रामखिलावन मिश्रया सह अवसत्। अस्मिन् निवास काले अत्र एका एतादृशी घटना संघटितायया गुरोः भविष्ये भवितारः घटनानां पूर्व ज्ञानस्य शक्तेः ज्ञानं अभवत्।

श्री मिश्रा महोदयस्य पुत्री स्व प्रथम प्रसूतये गृहं आगता। प्रसव पीड़ारंभे तां शासकीय चिकित्सालयस्य प्रसव कक्षे प्रवेशं आकारितः साहाय्यार्थं तस्याः माता तया सह अवसत् घटिऽका व्यतीतयत्। सातीव्र पीड़ायाः अनुभवः करोतिस्म या समयेन सह तीव्रतरा भवतिस्म परं शीघ्र प्रसवस्य कोऽपि प्रतीकः न आसीत्। आ रात्रिः सा पीड़ायां व्यतीतः कृतः। पितरौ अपि चिन्तितोऽभवत्। अन्येद्युः सहृदया सक्षमा स्त्री रोग

विशेषज्ञा डा0 कु0 यमुना काले महोदयायाः परामर्शो गृहीतः। डा0 तं कानिचित् अधिक समयं धैर्य पूर्वकं प्रतीक्षायाः परामर्शं ददन् अकथयत् यत् चेत् अस्यानन्तरेऽपि सामान्य प्रवसो न भविष्यति तत्तु सा सीजेरियन आपरेशनं करिष्यति। किञ्चिदधिकं कालं अतीतः। अनुमानतः द्विवादन पार्श्वे श्री मिश्रां आपरेशनतः पूर्व किञ्चिदावश्यक कार्गदेषु हस्ताक्षरं कर्तुं आहूयतेस्म चतुर्थ वादने श्री मिश्रा गृहं प्रत्यावर्तितः। सः निराशः चिन्तितश्चापश्यत्। गुरुदेवः तस्य चिन्तायाः कारणं अपृच्छत्। मिश्र महोदयः सम्यक् स्थितिं तथा चापरेशनस्य विषये विज्ञापयत्। मिश्रां सान्त्वनां ददन् गुरुदेवः बोधयत् यत् सः स्वाभयन्तरेण एकम् संदेशं प्राप्तम् यत् शिशोः जन्मः एक वादने भविष्यति चिन्तायाः आवश्यकतानास्ति गुरुदेवः मिश्रां परामर्शो दत्तः यत् चिकित्सालयं गत्वा चिकित्सकेन प्रार्थनां करोतु यच्चेत् पुत्र्याः शारीरिकअवस्थांसामान्यं अस्तुतर्हि आपरेशनं अवरोधेयम्। कालेऽस्मिन् मध्याह्नस्य चतुर्थ वादनं जातः अत एव गुरुदेवः यत्समयं संबोधितः तत् मध्यरात्रेः एव भवितुं शक्यते।

शीघ्रेव चिकित्सालयं आगत्य श्री मिश्रः स्वपत्नीं पुत्री चिकित्सकं च गुरोः संदेशं ज्ञापितः। यतः चिकित्सिका बालिकायाः शारीरिक अवस्थया संतुष्टासीत् अतः सीजेरियनं न कृत्वा एक वादनं यावत् प्रतीक्षाकरणस्य निर्णयः गृहीतः। चिन्तामुक्तं भूत्वा पुत्री माता पिता च धैर्य पूर्वकं प्रतीक्षां रतः।

मध्याह्न चायार्थं गुरुदेवः एतेषु दिनेषु श्री काले महोदयस्य गृहं गच्छतिस्म श्री लक्ष्मण राव देशपांड़ेयः अधुना तस्य शिष्यः अस्ति तेन सह गच्छतिस्म। दिनेऽस्मिन्नपि गुरुदेवः श्री देशपांड़ेयेन सह श्री काले महोदयस्य गृहं गतवान्। चाय ग्रहण काले वार्तालापं कर्तारन् गुरुदेव तैः जनैः अपृच्छत् यत् किं शिशु शब्देन कस्यापि विशिष्ट लिंगड़.स्य बोधो भवति। श्री काले देशपांडेयेन च उत्तरं दत्तः यत् शिशु शब्दः उभाभ्यां लिग्ड.ाभ्यां प्रयुक्तं भवितुं शक्यते। मिश्रायाः गृहं पुनः प्रत्यावर्तिते सति

गुरुदेवेनोक्तं यत् शिशु कस्यापि लिंग्ड.स्य भवेत् यतः यत् स्वरं गुरुणाश्रुतः तत् विशिष्ट रुपेण ''शिशु'' शब्दस्य प्रयोगः कृतवान्।

चिकित्सालये सर्वे घटिकां गणयन् उत्सुकतया एक वादनस्य प्रतीक्षां अकरोत्। एक वादनात् पञ्चदश मिनटपूर्वं शिशु जन्मस्य प्रथम लक्षणः अपश्यत् अथ च बालिकां प्रसूति गृहे प्रेषितः। नूनं एकवादने सरलतया पूर्वकं कन्या शिशोः जन्ममभवत् एषा घटना मिश्रा परिवारं चिकित्सकं च उभावेव आश्चर्य चकितः प्रभावितश्च कृतः। मिश्रा परिवारः अत्यन्त कृतार्थः अभवत् अथ च सदैव कृते गुरोः कृतज्ञः अभवत्। कालमेतत् बिलासपुरे कानिचिदन्यदीयजनाः अपि गुरुदेवेन दीक्षा गृहीतः। एतेषु आसन् आयुर्वेदिक चिकित्सकः एवं स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय डा0 देवरसः अथ च तस्य परिवारः बालाप्रसाद त्रिपाठी, रघुनाथ कुपटकरः परिवारश्च बाला साहेब देशपांडे, डा0 गिरीश पांडे, डा0 कु0 सुधा व्यासश्च।

डा0 गिरीश पांड्रे स्व विद्यार्थी जीवनेनैव गुरुदेवेन परिचितः आसीत्। गुरुदेवः तस्मिन् काले दुर्गे स्वसंगीत महाविद्यालयम् संचालयतिस्म। डा0 पांडेयस्य अग्रजा अग्रजा पतिश्च अस्मिन् काले तत्रैववसतिस्म अतः डा0 पांडे बहुधा दुर्गं आगच्छति गच्छतिस्म च। गुरुदेवोऽपि तेन परिचितः आसीत्। अथ च पांडेयस्य अनुजां संगीतस्य शिक्षा ददातिस्म एषः पारस्परिक मेलनः प्रत्यक्ष दर्शनाः डा0 पांडेयम् गुरोः निकटे आनीतः तथा च गुरोः आध्यात्मिक जीवनेन आकर्षितं भूत्वा सोऽपि दीक्षा ग्रहणस्य इच्छां प्रकटयत्। तस्मिन् समये गुरुदेवः अस्वीकारं कृत्वा चिकित्साध्ययनसमाप्तेसत्येव दीक्षा दानस्य वचनं दत्तः।

1974 वर्षे दीक्षितानन्तरतः डा0 पांडेयः आध्यात्मिक पथे उल्लेखनीय प्रगतिः कृतः तथा च गुरुदेवः तं दीक्षां दत्वा शिष्याणां मार्गदर्शनं कर्तुम् अधिकारोऽपि दत्तः। अधुना तस्यापि अनेकाः शिष्याः सन्ति।

यदा गुरुदेवः श्री रामखिलावनमिश्र महोदयेन सह अवसत्। तिलक नगरबिलासपुरस्य एकः अधिवक्ता श्री यादव अमृतराव गोवर्धनः तस्य पार्श्वे आगतः। तं वीक्ष्य गुरुदेवेन अकथयत् यत् सः प्रेषितः अस्ति अर्थात् सः स्वयं स्वेच्छया गुरोः पार्श्वे न आगतः परं कश्चिदन्येन तं प्रेषितः अस्यां टिप्पण्यां श्री मिश्रा तथा च श्री गोवर्धनः उभावेव चकितोऽभवत।

एतम् सत्यम् श्री गोवर्धनः अनन्तरे उजागरः कृतः कानिचित् वर्षैः श्री गोवर्धनः पत्र–व्यवहारेण तमिलनाडु अरुणाचलम् स्थानस्य प्रसिद्ध रमण महर्षेः शिष्येण आध्यात्मिक विषयेषु मार्ग दर्शनः प्राप्तं करोतिस्म। यतः अरुणाचलम् महात्मा समाधिं गृहीत्वा स्व सांसारिक जीवनं समाप्त कृतस्य निर्णयः गृहीतः अतः श्री गोवर्धनः एकेन पोस्ट कार्डेन एष परामर्शः दत्तःयत् चेत् सः इच्छुकः अस्तुतर्हि अग्रे दुर्ग मण्डलस्य वेमेतरावासी श्री वासुदेव तिवारी महोदयेन मार्ग दर्शनं प्राप्तुं शक्यते। गुरुदेवस्य द्वितीय पुत्रः वेमेतरायां वसतिस्म यत्र तस्य (रेडियो) इत्यस्य विपणिका अस्ति। गुरुदेवः यदा कदा तस्य पार्श्वे गत्वा वसतिस्म। अनेन पत्रेण निर्देशप्राप्त्यनन्तरेव श्री गोवर्धनः गुरोः पार्श्वे आगतः। अथ च एतावता गुरुदेवः टिप्पणी कृतः यत् सः प्रेषितः। सः गुरोः पूर्वज्ञानेनआश्चर्यचकितासीत्।

बिलासपुरतः गुरुदेवः उत्तर पूर्वी मध्यप्रदेशे उड़ीसायाः समीपस्थित नगर रायगढ़े गतः। अत्र तस्य शिष्यः श्री नर्मदा प्रसाद द्विवेदी अवसत्। यदा गुरुदेवः द्विवेदी महोदयस्य गृहं प्राप्तः सः तस्य पुत्रीं गम्भीरदशायां शय्याग्रस्तं प्राप्तः। सा टायफाइडज्वरेण पीड़ितासीत् तथा च तां तीव्र ज्वरः आसीत्। शक्तिशाली एंटीबायोटिकस्य प्रयोगेण ज्वरः 104 तः 94 पर्यन्तं आगतः तस्याः तनुः अतीव शीतः अभवत्। श्री द्विवेदी अतीव चिन्तितः आसीत्। विधुर भवितुं कारणात् तस्य मानसिक काठिन्यं कोऽपि वा विभक्तारः अपिनासीत्। कन्यायाः दशा विषये ज्ञानान्तरे गुरुदेवः काफीं निर्मयित्वा विनिर्मिय तां दातुं अकथयत्। गृहे काफी उपलब्धानासीत् तदाहि

गुरुदेवः चायं र्निमयित्वा तस्यै दातुं अकथयत्। द्विवेदी महोदयः शीघ्रेव चायं निर्मयित्वा एकः प्याली गुरु दत्तः तथा च द्वितीया पुत्रीं दत्तवान् वा। अपिवत्। चमत्कार इवचायं गृह्णन् एव तस्याः शरीरस्य तापक्रमः प्रवर्धितः तथा च कानिचित् मिनटेषु एव सामान्यः अभवत्। आश्चर्य चकितः जनकः पुत्रीं अतीव विश्रामं प्राप्तः।

गुरुदेवः कानिचित् दिवसं रायगढ़े श्री द्विवेदी महोदयेन सह अतीतः। एकदा तं पूर्वाभासः अभवत् यत् शहडोले कोऽपि तेन आध्यात्मिक मार्ग दर्शन प्राप्तये उत्सुकतया प्रतीक्षते। चतुर्दिवसान् सततं तं तदैव पूर्वाभासः भवति। एषः नवम्बरस्य मासः आसीत् गुरुदेवः तत्कालं शहडोलगमनस्य निर्णयः गृहीतः। सः बिलासपुरं आगच्छत् तथा च रामखिलावन मिश्रा महोदयेन सह रात्रिं व्यतीतयत्। अपरे दिने श्री के0 के0 द्विवेदी महोदयेन सह मध्याह्नस्य भोजनं कृत्वा संध्यां सः लक्ष्मीप्रसाद मिश्रया सह शहडोलं प्रस्थितः। शहडोले श्री हरनारायण दुबे महोदयः तस्य स्वागतम् कृत्वा गृहंनीतवान्।

स्वगुरुं प्रति आदर व्यक्तये अथ च तेषां वचनान् श्रोतुं गुरोः अनेकाः शिष्याः द्वितीय दिवसे संध्यां श्री दुबे महोदयस्य गृहे एकत्रितः अभवत्। एतेषु एकः विद्यालयस्य व्याख्याता श्री गुरु प्रसाद पांडेयोऽपि आसीत् यः साम्प्रतम् गुरोः शिष्यः न आसीत्। असौ युवकः गुरोः उपस्थितेः आनन्दं प्राप्तुं तथा च ज्ञानपूर्णतस्य वचनान् स्वीकारं (आत्मसात्) कर्तुं उत्सुकः आसीत्। सः शान्त्या पृष्ठतः एकस्मिन् कोणे तिष्ठन् गुरोः वचनान् आत्मसातः करोतिस्म। गुरुदेवः अस्मिन् युवकोपरिध्यानं दत्तः। तथा चैतत् विज्ञातं यत् एष एव सः युवकः अस्ति यस्य साहाय्यार्थं सः रायगढ़तः शहडोलं आगतः।

गुरुदेवः एकत्रित जनैः उपयुक्तः आध्यात्मिक विषये परिचर्चा कृतः रात्री अभवत् अतः प्रवचनानन्तरे श्रोतागणः अगच्छन्। परं गुरु प्रसाद पांडेयः अवस्थितः एव यतोहि गृहगमनस्य किञ्चिदपि इच्छानासीत् सर्वेषांगतेसति सः नम्रता पूर्वकं गुरुणा एकम् प्रश्नम् पृष्टस्य अनुमतिः याचितः। गुरुरपि अनेन युवकेन वार्तालापाय उत्सुकः

आसीत्। अतः तत् कालेव तं अनुमतिं दत्तः गुरु प्रसादः नम्रतया शान्ति पूर्वकञ्च प्रश्नं कृतः गुरुदेवः अहं स्वकीयं केन प्रकारेण ज्ञाष्यामि। एष एकः असाधारण प्रश्नः आसीत् यः द्विसहस्त्रवर्ष पूर्वम् ईसामसीहेन तस्य शिष्येण पृष्टः प्रश्नस्य स्मरणः सूचयतिस्म। पूज्य गुरुदेवः अहं तद् किं सद्कर्मकरोमियेन मां शाश्वत जीवनः प्राप्यते। निश्चयः एव एषः एकः असाधारण प्रश्नः आसीत् यत्तु इतिहासे दृढ़तापूर्वकं एतद् प्रश्नं पृष्टारः अल्पतरः न्यूनः एव जनानां उल्लेखः अस्ति अथ च पांशियस पीलेटेन भिन्नाः मनुष्यास्तु अतीव अल्पतराः अपि सन्ति। ये अस्य उत्तरं प्राप्तुं प्रतीक्षा कृतवान्।

असौ युवकः तथा च तस्य प्रश्नेन अत्यधिकं प्रभावितं भूत्वा गुरुदेवः तस्य नाम अपृच्छत् सः स्वनाम गुरु प्रसादः इति विज्ञापयत्। त्वम् वास्तविकेषु गुरु प्रसादः अस्तु गुरुदेवेन कथितं। कृपया त्वंश्वः सायं आगच्छतु चेत माम् उत्तरः मिलितः तर्हि अहं त्वां अवश्यं दाष्यामि अन्यथा नास्तीति कथयिष्यामि।

द्वितीय दिवसे सायं स्वप्रश्नस्य उत्तरं प्राप्तिकरणस्य पूर्ण उत्सुकतया आशया च गुरु प्रसादः गुरोः समीपे आगतः। अनेकैः वर्षैः सः स्व आभ्यन्तरेण अयमेव प्रश्नः करोति आगच्छतिस्म यदहं केन प्रकारेण स्वकीयं ज्ञाष्यामि ? परं तं कोऽपि उत्तरं न प्राप्यतेस्म। गुरुजनाः धर्म पुरुषाश्च तं आकर्षितः न कृतः। पिलेटस्य विपरीतं सः उत्तराय अन्वेषणः प्रतीक्षा प्रार्थना च अकरोत्। तं अस्मिन् सायं तदुत्तर प्राप्तेः पूर्ण विश्वासः आसीत्। मध्येऽस्मिन् गुरुदेवश्च अन्तर्मनसि अपेक्षित उत्तरम् प्राप्यतेस्म। यदा गुरु प्रसादः आगतः गुरोः पार्श्वे उत्तरः उपस्थितः आसीत्। गुरुदेवः गुरु प्रसादं दीक्षां दत्वा तं ध्यानस्य एका विशिष्टा विधेः निर्देशो दत्तः येन सः स्व स्वरुपं जानातिस्म।

सर्व शक्तिमान् दयालु परमात्मा तत समस्त इच्छुक आकांक्षिजनान् साहाय्यं प्रेषयति यः सन्मनसा अस्मै प्रयत्नम् कुर्वन्ति। एषः एकः सहज सत्यं अस्ति। परं विधेः विधानं किञ्चित् एतादृशः अस्ति यत् अल्पतराः जनाः अस्य महत्वं अवबोधयन्ति। एषः ईश्वरीय साहाय्यः एकः सत् गुरोः रुपेऽपिमिलितुं शक्तः या दीक्षा वा पथ

प्रदर्शनेन अध्यात्ममार्गेण ईश्वर प्राप्तिं कारयति। ईसा मसीहेनोक्तम् दिव्य जीवनं नेतारः (नीयमानः) द्वारम् ऋजुः संकुचितः अस्ति अथ च मार्गः अतीव कृशतरः अस्ति एतम् तरितुं अतीव कठिनः अस्ति परं लक्ष्य प्राप्तेः एतदेव अति लघुमार्गम् अस्ति। गुरु प्रसादः इव एव आकाक्षी व्यक्तिः स्व पथ प्रदर्शकः तथा च गुरुं प्रति प्रेरितः भवति।

गुरु प्रसादं अनवरतं चत्वारि दिवसान् स्वगुरोः मुख मण्डलस्य दर्शनम् अभवत्। यं तत् अस्य कृशतर आध्यात्मिक मार्गे नीतवान् नूनम् चतुर्षु दिवसेषु रायगढे गुरुं शहडोलं गत्वा गुरु प्रसादस्य साहाय्यार्थं पूर्वाभासः अभवत्। गुरु शिष्यस्य संपर्कः एकः शिष्येण अन्यस्य गुरुणा परिचयः क्रियमाणस्य माध्यमेनापि भवितुं शक्यते।

दिव्यगुरुः अर्थात् सर्वशक्तिमान् ईश्वरः स्वयमपि आकांक्षीनां मार्गदर्शनः बिना केनापि मानवीय गुरोः कर्तुं शक्यते। एतादृशः दक्षिण भारतस्य प्रसिद्ध रमन महर्षि रामकृष्ण परमहंसः अस्मभ्यम् गुरुणा सह जातः यस्य जीवनी एतद् पुस्तकम् अस्ति। रहस्यमय गूढ आध्यात्मिक मार्गस्य च दीक्षा मात्र स्पर्शेण सतगुरोः निर्देशेन किं वा सतगुरूणा आकांक्षी जनेषु दृष्टि पातेनापिभवितुं शक्यते। अस्योदाहरणः अस्ति प्रसिद्ध नाग महाशयं रामकृष्ण परम हंसेन प्रदत्त दीक्षा स्वप्न दर्शनेनापि च गुरूः देवपुरूषाः दीक्षां दातुं शक्यते।

अत्र एषोल्लेखः रुचिकरः भविष्यति यत् दीक्षायाः पञ्च प्रकाराः सन्ति ऐते सन्ति :—

1— कूर्म दीक्षा *– वस्तुतः कच्छप इव। एतादृशः कथ्यते यत् मादा कच्छपः स्व शिशून् भोजनं न खादयति सा स्वयं भोजनं खादति अथ च उदर पोषणनन्तरे सा विचारयति यत् तस्य शिशवोऽपि अखादन् अथ च संतुष्टोऽभवत्। अनेन प्रकारेण सतगुरुः अपि स्व शिष्यान् विचार प्रेषणेन दीक्षा दातु शक्तः।*

2– स्पर्श दीक्षा

3– दृष्टि पातेन दीक्षा

4– स्वप्न दीक्षा

5– मंत्र दीक्षा

गुरु प्रसादः गुरुणा निर्दिष्ट विधिना पूर्ण गम्भीरतया ध्यानारम्भः कृतः अथ चाल्पकालेव तं आत्मानुभूतिर्भवत् यस्य तं इच्छा आसीत्। सः साधनायाः अस्मिन् अवस्थायां प्राप्तः यत् बहुधा सः समाधौ परमहंस अवस्थायां च अवस्थितः।

कालेऽस्मिन् गुरुदेव श्री हरनारायण दुबे महोदयेन सह अवसत् श्री मती दुबे ह्रदय रोगेण ग्रस्तासीत् सा गुरुणा मिलित्वा स्व श्रद्धा व्यक्तये अधीरः आसीत्। परं दुबे तं बोधयत् यत् गुरुदेवः''ब्रहमचारी'' अस्ति अथ च स्त्रीदर्शनम् किं वा ताभिः चरण स्पर्शं न अरोचत्। एषा सूचना तं गुरुणा मेलनाय अथ च तेन वार्तालापैः अरुधत्। तां गुरोः दर्शनप्राप्ति इच्छायाः दमनं आकारितः।

कालेऽस्मिन् सा ह्रदय पीड़या ग्रस्ताभवत्। चिकित्सकः नियमित रुपेण तस्य परीक्षण करोतिस्म शनैः शनैः सा स्वास्थ्यलाभं कृत्वा गृहस्थ्याः कर्तव्य पालनांरभः अकरोत्। एकदा संध्यां यदा तस्य पतिः गुरुणा सह आसीत् सा सन्निकट कक्षस्य द्वारे आगत्य अनेन प्रकारेण अवस्थिता यस्मिन् गुरुं न अपश्यत् अथ च संकोचेन गुरुणा सा अपृच्छत्। यत् किं सा दर्शनं कर्तुं शक्ताः ? 'आम् , आम् ! कथंन भवती ? ''दर्शनं कर्तुं शक्ताः '' गुरुणोक्त। साप्तदा गुरोः सन्मुखे उपस्थिता जाता। अथ च स्व सम्मानम् व्यक्तः कृतः। सा गुरुणा अवबोधयत् यत् सा तस्य दर्शनाभिलाषी आसीत्। अथ च यावत् सः गृहमागतः तं प्रति स्व आदर व्यक्तं कर्तुम्इच्छतिस्म। परं तं स्व इच्छायाः दमनः कारितः यतः पतिः तं सबोधयतिस्म यत् गुरुदेवः ब्रहमचारी अस्ति अथ च स्त्रीदर्शन न रोचते नैव ताः चरणस्पर्शानुमतिं ददति। गुरुदेवः अति प्रसन्नोऽभूत् तां संबोधयत्। यत् सः ब्रहमचारी नास्ति परं गृहस्थः अस्ति अथं च तस्य

पत्नी शिशवोऽपि सन्ति सः महिलाभिः मिलनस्य विरुद्धं नास्ति समाजे एकः गृहस्थ रुपे वसित्वा सः स्त्रीन् दर्शनम् कथंरोद्धुं शक्तः। एतत् सत्यं ज्ञात्वा श्री मती दुबे अतीव प्रसन्नाभवत। सा अवदत् यत् तस्या अवस्थतायाः काले गुरुं या अपि असुविधाः अभवत्। तानि सा दूरीकर्तुं प्रयत्नः करिष्यति। अथ च साम्प्रतं तस्य सुविधायाः ध्यानम् स्वयं दाष्यति।

कानिचित् दिवसानन्तरे पुनः तां ह्रदय पीड़ा अभवत् सैव चिकित्सम तस्याः उपचारः कृतः। क्रमेऽस्मिन् गुरुदेवः तस्य रोग विषये अपृच्छत्। तस्याः रोगं ज्ञात्वा गुरुदेवः ताम् सप्तसत्याः एकम् अनुष्ठानारंभाय अकथयत् तथा चाहर्निशं जप करणाय मंत्रोऽपि दत्तः तां प्रत्येक एकादशीं व्रतमपि स्थाप्यतेस्म। सा निष्ठा पूर्वकं निर्देशानां पालनकर्त्री अनुष्ठानारंभ कृता। एकादशी त्रयानन्तरे सा एकः उज्जवल प्रकाशम् अपश्यत् यस्यानन्तरतः एकम् कमलम् प्रकटमभवत् अथ पवने उड्डीयन् तस्याः दक्ष हस्ते आगतः । अकस्मादेव यथा चमत्कारः अभवत् अथ च तस्य ह्रदय पीड़ा दूरमभवत्। तावत् सा ह्रदये कस्यापि पीड़ायाः अनुभवं न कृता।

गुरुदेवः अधुना मध्य प्रदेश महाराष्ट्रयोः व्यापक रुपेण भ्रमणारभं कृतः। अथ च एतयोः प्रान्तयोः विभिन्न स्थानेषु तस्य अनेका शिष्याः सन्ति। महाराष्ट्रस्य यात्रा क्रमे नागपुरमपि आगतः यत्र तस्य बहुशः शिष्याः प्रशंसकाश्च सन्ति। तस्य शिष्येषु कार्यकारी अभियन्ता श्री पांड़ेयोऽपि आसीत्। सः विशेषोल्लेख पात्रः अस्ति यतः एतत् पूर्वं सः पूनायाः एकः प्रसिद्ध महात्मा महोदयेन टेलीफोनेनः दीक्षा ग्रहणः कृतः असौ महात्मा यस्तु इदानीं नास्ति दूर दूर स्थित स्थानेषु स्व शिष्यान् टेलीफोनेन दीक्षां अददत्। ददातिस्मवा। महात्मा महोदयेन संबोधित साधनायाः अभ्यासे कृतेसति किञ्चत् शारीरिक विकृतयः दृष्टीगोचरीभूताः जाताः यान् चिकित्सकः नलाभं प्रदत्तः शारीरिक मानसिक पीड़ायाश्च चरम सीमायां सः गुरोः विषये श्रुतः च तथा तत्कालेव

तस्य आर्शीवादः सहायतां च प्राप्तवान्। गुरुदेवः तं दीक्षां प्रदत्तः अथ च शीघ्रेव तस्य शारीरिक विकृतयः दूरो अभवत्। तथा चाध्यात्मिक क्षेत्रे सः उत्तमोन्नतिः कृतः।

नागपुरतः गुरुदेवः वर्धां गतः यत्रापि तस्य कानिचित् शिष्याः आसन्। अत्रत्याः ते अकोलां, अमरावतीं तथा च एतेषु अनेकेषु स्थानेषु गतः। यत्र सः पूर्वमपि अवसत्। यत्रापि सः गतः अल्प परं सत् आकाक्षीं तस्य पार्श्वे आध्यात्मिक मार्ग दर्शनं गृहीतुं आगच्छत्। उदार हृदयः गुरुदेवः तान् जटिल चैतन्य योग मार्गस्य दीक्षां दत्वा मार्गदर्शनो दत्तः।

सन् 1975 वर्षस्य उत्तरार्धे देशे आपातकालः समापतितः। देशे कानिचित् राजनेतारः कारागारस्य कष्टान् उपालम्भान्। उत्थापितः एतेषु राजनीतिज्ञ अपराधिषु वर्धायाः अधिवक्ता श्री बंसत विट्ठल तकवालेऽपि आसीत्। तं नासिक कारागारे स्थापितः सः एकः सक्रियः उत्साही राजनीतिज्ञश्च भवितुं सहैवाध्यात्म तथा च योग साधनायाः क्षेत्रेऽपि तेनैव तुल्यं अत्यधिकं उत्साही आसीत्। अध्यात्मेवरुचिं ज्ञात्वा तस्य एकः मित्रः तं गुरोः तथा च तस्य आध्यात्मिक श्रेष्ठतायाः विषये ज्ञापयत् अनया सूचनया श्री तकवाले महोदयस्य मस्तिष्के असौधन्यपुरुषेण मिलित्वा दीक्षाः ग्रहणस्य तीव्र उत्कण्ठां अजायत् (जन्मंदत्तः)।

पुत्र्याः अस्वस्थता वशात् अगस्त–सन् 1976 वर्षे तं पेरोलेपरि मुक्तः कृतवान् सः समय व्यर्थं न कर्तारन् शीघ्रेव गुरुणा अमिलत् यः अस्मिन् काले अमरावती स्थाने आसीत्। अस्मिन् प्रथम संपर्के एव श्री तकवाले दीक्षां गृहीतः। अस्यानन्तरे श्री तकवाले महोदयस्य जीवने यः परिवर्तनः आगतः सः तेषां शब्देषु अस्य पुस्तकस्य तृतीय भागे लिपिबद्धः अस्ति।

यथा–यथा समयः अतीतः अन्याः अपि अनेकाः जनाः वर्धायाम् गुरुणा साहाय्यं मार्गदर्शनञ्च गृहीतुं आगतः। वर्धा साम्प्रतम् तस्य शिष्याणां एकम् महत्वपूर्ण केन्द्रम् अस्ति तेषां समस्तानां नामोल्लेखः न संभवः।

जून 1977 वर्षे आदरणीया माता स्वर्गं गता। तस्याः स्वर्ग वासेन गुरोः सांसारिक बन्धनैः प्रमुख संबंधः विच्छिन्नः जातः अनन्तरे गुरूदेवः स्वभ्रमणं अत्यधिकमपि व्यापकः कृतः। येन देशस्य विभिन्न स्थानेषु अवसन् /वसन् स्व शिष्याणां आध्यात्मिक साहाय्यं कर्तुं शक्तः। मध्यप्रदेशः, महाराष्ट्रस्य चातिरिक्तः सः पठानकोटः, जममू, श्रीनगरः मेरठः देहरादूनादयस्यापि यात्रा कृतः। अस्य पुस्तकस्य लेखकस्य एषः सौभाग्यः अस्ति यत् सितम्बर सन् 1977 वर्षे गुरोः संपर्कमागत्य दीक्षा ग्रहणः कृतः। तावत् सः शारीरिक मानसिक तथा च आध्यात्मिक कल्याणानुभवः अकरोत्।

अहम् पूर्वं उल्लेखः कृतः यत् केन प्रकारेण परमात्मा सद्गुरुं आध्यात्मिकाक्षिंनां उचितमार्ग दर्शनाय निर्देशं प्रददाति एतत् प्रकारस्यघटनायाः अत्र उल्लेख अस्ति। सन् 1979 वर्षस्य ग्रीष्मे घटिता। गुरुदेवः कालेऽस्मिन् बालोदे स्व शिष्य उप जिलाधीशाः श्री डी0 एस0 रायस्य पार्श्वे निवासः कृतः। अत्रानवरतं दिन चतुष्टयं एकस्याः महिलायाः मुखाकृतिः तस्य सन्मुखे प्रकटिता जाता। गुरुदेवः बुध्यते यत् एषा महिला तेन आध्यात्मिक मार्गदर्शनं प्राप्तये प्रतीक्षा रताः अस्ति तथा च तं तां प्रति निर्दिश्यते। किञ्चित् कालानन्तरं गुरुदेवः एकस्मिन् समारोहे सम्मिलितुं रायपुरं प्राप्तः। आमंत्रितेषु डा0 श्रीमती सईदा शिन्दे, एम0 डी0 अपि आसीत्। या पंडित जवाहर लाल नेहरु स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय रायपुरे, फारमेकोलाजी विषयस्य प्रवाचिका अस्ति सा काश्मीरी मुसलमानः अस्ति तां दृष्ट्वा गुरूं स्मरणमभवत् यत् तस्याः एव मुखाकृतिः सः बालोदे अपश्यत्। सा तथा च तस्य पतिः डा0 व्ही. ए. शिन्देयः शरीर रचना विभागस्य प्रधानाध्यापकः तथा च विभागाध्यक्षः आसीत्। उभावेव गुरोः आध्यात्मिक महत्तया अत्यन्तेव प्रभावितः अभवत् तथा च गुरूणा परिचय प्रापतये इच्छुकोऽभवत्। सः गुरूणा आध्यात्मिक मार्ग दर्शन संप्राप्तये स्वइच्छां प्रकटीकृतेनाल्पमपि समयः अतीतः। पूर्व दश वर्षैःसः योगस्य विभिन्न मुद्राणां आसनानाञ्चाभ्यासः करोतिस्म। सः

रायपुरे एव अवसत्। आध्यात्मिक पाठाभ्यासेषु अपि सम्मिलितः अभवत् परं असौ तावत् कालं निष्फलः एवः सिद्धोऽभवत्।

तस्योत्कटेच्छां वीक्ष्य गुरूदेवः अन्य दिने एव षष्ठ जून 1978 वर्षे तं दीक्षां प्रदत्तवान्। अमूदम्पतिः दीक्षा ग्रहणानन्तरे अल्पकाले स्व साधनायां अत्यधिकः उन्नतिः कृतः। पाठकानां आत्मिक उन्नति दृष्ट्या अनयोः आध्यात्मिकानुभवाः अस्मिन् पुस्तके संलग्नाः सन्ति।

ऊँ श्री सदगुरूवे नमः

ऊॅ श्री सद्गुरवे नमः

षोडशम् सोपानम्

परमोत्कर्षः

6 षष्ठ जुलाई 1982 अषाढस्य गुरूपूर्णिमां उषः काले वर्धायां कानिचित् विशिष्टाः जनाः गुरुणा दीक्षा प्राप्तादिवसेऽस्मिन् एकः विशिष्टः आयोजनः आयोजितः। श्री सत् गुरुपूजनाय दूरदूराच्च अनेकाः स्त्री, पुरूषाः बालकाः बालिकाश्च एकत्रिताः अभवत्। श्री गुरूदेवः बाबा तकवाले महोदयेन सहसभा मंडपे संप्राप्तः। सर्वेजनाः उत्साहः पूर्ण श्रद्धया च गुरोः चरण स्पर्शं कृत्वा स्व स्थान ग्रहणं कृतः गुरू पूजनस्यक्रमः घंटत्रयं प्रचलितः।

उपर्युक्तोल्लेखः विशिष्ट रुपेण एतदर्थं कृतः यदस्य परिणामःस्वरूपं गुरोः सम्पूर्ण शरीरे एकाविशिष्टाशक्तेः संचारः अभवत्। फल स्वरुपें तस्य शरीरः जड़ीभूतो जातः। पूजन समाप्तौ श्री गुरुदेवः अत्यन्त काठिन्येन तत् स्थानं प्राप्तः यत्र भोजनस्य प्रबन्धः कृतः। अस्यां स्थितौ भोजनादि कार्यः सम्पन्नमभवत्। गुरुदेवः सर्वेभ्यः विदां नीत्वा अधिवक्ता श्री तकवाले महोदयस्य ग्रहं प्राप्तवान्। द्वितीय दिवसे सप्त जुलाई 1982 वर्षमपि गुरूदेवः तज्जड़तायाः स्थितौ अवस्थितः। सः श्री अशोक धर्माधिकारी महोदयेन सह अमरावतीं गतः। अमरावत्यांमपि शक्ति संचारस्य फलस्वरुपं तस्य स्थितिः सामान्या जाता।

अष्ट जुलाई मासं प्राप्तः सप्ताष्टवादन मध्यस्य समयं भविष्यति गुरुदेवः अशोक धर्माधिकारीं च बहिः प्रकोष्ठे अतिष्ठताम्। गुरू पूर्णिमायाः आयोजन विषये वार्तालापं करोतिस्म। अकस्मादेव गुरूः सम्पूर्ण शरीरः शिथिलः संज्ञाहीनश्च अनुभवो भवितारः। तस्य मस्तिष्के विचारः समायातः यत् संभवतः एषः पक्षाघातस्य प्रभावस्तु नास्ति। सः

स्व हस्तपादौ उत्थातुं चेष्टा कृतः यस्यां सः सफलोऽभवत्। अनेन प्रतीतः जातः यदेषः पक्षाघातः नभूत्वा किञ्चिदन्यः एव अस्ति। गुरूदेवः स्वां एतां स्थितिं अशोक धर्माधिकारीं स्पष्टं कर्तुं इच्छेत्। येन सः चिन्तितं न भवेत्। परं तन्मुखेन मात्रेकः शब्द रहितः ध्वनिरेव निःसृता अथ च तत्कालेव शरीरस्य समस्त शक्तयः एकेनैव सह तस्य बृहत्मस्तिष्के प्रविश्य स्थिराभवत्। गुरोः एतदवस्थांवीक्ष्य समीपे एवअवस्थितः धर्माधिकारी विस्मयं गतः। सः वाग् रहितं भूत्वा पश्यन् एव अवस्थितः। अनुमानतः दस मिनटेषु गतेषु गुरोः स्थितिं क्रमशः सामान्याभवत्। तदा अशोक धर्माधिकारी अवदत् यत् गुरूदेवः भवान् अत्र न आसीत्। यतः भवतः शिरोऽपि संज्ञाशून्योवा जातः। एतां वीक्ष्य अहं शोकं गतः। अतोऽनन्तरे गुरूदेवः स्व दिनचर्यां सामान्य रूपेण अकरोत्। द्वितीय दिवसोऽपि सामान्य एव अतीतः परं गुरूदेवः स्व शरीरस्य भारहीन स्थितौ एकः वैचित्र्यानन्द सागरे ओत प्रोतः अभवत् जातः वा।

दिनाक्ड.ः 10 जुलाई तिथिं प्रातः काले गुरूदेवः स्व आसने अवस्थितः। अकस्मादेव तेन अनुभूयते यत् प्रकाश दीप्तयः दीप्तयन्ति। पश्यन् एव पश्यन् एताः दीप्तयः एकास्थिर ज्योति रूपं गृहीतः एषा स्वर्णमयी ज्योतिः गुरूं परितः एतादृक प्रसृता यत् तं स्व अस्तित्वस्य बोधः एव नासीत् अथ च सः अस्याः दिव्य ज्योतेः सौन्दर्याकषणेलुप्तं गतः मिनट त्रयं एषा स्थितिः विनिर्मिता। पुनश्च क्रमशः एषा ज्योतिः लुप्ताभवत्। सामान्य स्थितौ आगतानन्तरेऽपि सार्धेद्विमिनटं तं किञ्चिदपि दृष्टि गोचरं नैवाभवत्। एतादृशः प्रतीयते यत् नेत्रयोः ज्योतिर्गता। परं किञ्चित् अवधि अनन्तरे तस्य दृष्टिः शनैः शनैः आगता। एषः अनुभवः किञ्चित् किञ्चित् अन्तरानन्तरे तं भवति।

दिनॉक्ड.ः 13 जुलाई मासं 1982 अमरावती स्थानतः विदा नीत्वा सः वर्धां गतः। वर्धा स्थानतः मेरठ गमन कालेऽपि तस्य मस्तिष्के तस्याद्भुत शक्तेः संचारः प्रचलितः। हरिद्वारः स्थानक प्राप्यसः पुनः तत् परम ज्योतौ यस्तु तं परितः प्रसृतासीत्

निमज्जितः अथ च किञ्चित् दृष्टि गोचरीभूतः समाप्तिमेति। तेन सह आगच्छन् श्री प्रभाकर पांडेयः अथ च श्री तकवाले तत्काले अत्यधिकं आश्चर्य चकितम् भवत् यदा तौ गुरोः सन्मुखे चायस्य प्यालः प्रस्तुत कृतः। परं गुरूदेवः तं नैव दृष्टः तौ गुरोः सामान्य स्थितौ प्रत्यागमनस्य प्रतीक्षारतो जातः। यद्यपि किञ्चित् कालानन्तरे गुरोः शारीरिक अवस्था सामान्याभवत् परं दृष्टि संवेदं प्रत्यागमने किञ्चिदधिकं समयः अलगत्। स्वप्रवासं पूरयित्वा तृतीय अगस्तं सः पुनः वर्धां प्रत्यावर्तितः। समयः आनन्द पूर्वकं व्यतीतः भवति कृष्ण जन्माष्टभ्याः दिवसः आसीत्। पूर्णोल्लासेन सह उत्सवः मानयतिस्म। वातावरणः संगीत स्वरैः गुंजायमानः भवतिस्म। ध्वनेः एते प्रकम्पनाः गुरूं अत्यधिकं प्रभावितः कृतः। पुनः तस्य शरीरस्य समस्ता शक्तयः एकेनैव सह तस्य मस्तिष्के प्रविष्टाः। परं गुरूदेवः मूर्छितं नाभवत्। बाह्यान्तर बोधः विनिर्मितः मस्तिष्कःशरीरस्य च संतुलनः अगच्छत् शरीरम् तस्य नियन्त्रणे न आसीत्। सप्ताहमेकां एषा स्थितिः निर्मिता जाता। गुरूं भोजनेच्छाऽपि नासीत्। तं निद्रापि न आगच्छतिस्म वक्तुं इच्छेत् तथापि सः वक्तुं न समर्थासीत्। शनैः शनैः शरीरस्य संतुलनम् पुनः प्रत्यावर्तितः। परं प्रचलन काले सः साम्प्रतमपि अस्थिरः आसीत्।

गणेशोत्सव पर्वम् आगतः कोलाहलयुक्त संगीत प्रभावेण निवारयितुं श्री तकवाले महोदयः 22 द्वाविंशः अगस्तं गुरूं श्री कुटेमाटे महोदयेन सह रायपुरं डा0 पंधेरस्य गृहे समानीतः। गुरूदेवः अत्र दिनत्रयं चतुष्टयंवा निवासः कृतः। अस्यां स्थितौ डा0 गिरीशः तं डा0 सुधा पांडेयस्य गृहे मुंगेली प्रेषयतिस्म्। मुगेंली स्थाने एकस्मिन् दिने साधनायाः विषये वार्तालाप मध्ये पुनः गुरूदेवं एषानुभूतिर्जायते यत् तस्य शरीरः जड़ः भवति अथ च सः तिष्यति। अतः वार्तालापं मध्ये एव अवरूध्यतं विश्रामं आवश्यकः प्रतीयते। पादयोः एकः द्वि शून्यत्व क्रमः अभवत् अथ च शीघ्रेंव मस्तिष्कं शरीरञ्च संतुलन बोधो न जायते। गुरूदेवः अखण्ड़ दिव्यज्योतौ अनिमज्जत् डा0 सुधा एवञ्च डा0 भानू गुप्ता गुरोः पादतलौ अनवरतं 15–20 पञ्चदशविंशति मिनटं संम्मर्दयति।

परिणाम स्वरूपं सः पुनः शनैः शनैः स्व पूर्ववत् सामान्य अवस्थायां आगतः मुंगेली स्थानतः बिलासपुरं शहडोलं गच्छन् रीवामागत्य गुरूदेवः डा0 शिन्दे परिवारं अनुगृहीतः। परं अत्रापि तदानन्दातिरेक स्थित्या पूर्ण सामान्य अवस्था संप्राप्तये तं अनुमानतः मासद्वयं अलगत्। सः साम्प्रतं नियमितःएवञ्च स्वाभाविक रूपेण निद्राक्षुधा पिपासायाः अनुभवं अनुभूयतेस्म।

अधुनाऽहं स्व वृत्तस्य अन्तिम् गतिं प्रति आगच्छम्। संत श्री वासुदेव रामेश्वर तिवारीत्यस्य जीवनी तथा चाध्यात्म क्षेत्रे अपूर्वानुभवानांमहं दक्षिण अमेरिकास्थ जार्ज टाउने तस्य जन्मतः गृहीत्वा मध्यप्रदेशस्थित रीवां यावत् अवलोकनः कृतः षष्ठ्यशीति वर्षीयः वृद्धः अस्ति तस्य स्वास्थ्यः उत्तमः अस्ति। सः मध्यम्कदःगौरवर्णस्य चास्ति। मात्र तं यदा कदा गठिया वातेन पीड़ा भवति तथा च दृष्टिः मंदः भवति/च क्षीयते अन्यथा सः अत्यन्त्येव सक्रियः स्फूर्तिवान्चास्ति् अथ चाभिलाषीन् आध्यात्मिक मार्गदर्शनं प्रददाति।

सः बहुधा स्वशिष्याणां साहाय्यार्थं विभिन्न स्थानानां यात्रा करोति। अनेन मार्गदर्शन गृहीतारः अध्यात्मज्ञानाकाक्षिनां संख्या अनवरतं प्रवर्धति।

गुरूदेवानुसारं कस्यापि मानव जीवनस्य सर्वाधिक उपलब्धिरस्ति ''स्वस्वरूप बोधः'' एतदेव एकमात्रः सफलतास्तियः स्थायी वॉछनीयः प्राप्त कर्तुं योग्यश्चास्ति। तथाकथित धर्म पुरूषाणां चमत्कारिक शक्तयः मात्र हस्तकौशल प्रदर्शनं भवति। ताः कानिचित् सिद्धीनां फलमपि भवितुं शक्यते यां एकः अध्यात्मआकांक्षी स्वसाधनायाः मध्ये प्राप्नुवति। परं अस्योपरि व्यर्थ समयं न नश्येत्। एताः सिद्धयः वस्तुतस्तु अवरोधः प्रलोभनश्चास्ति यः देवात्माभिः साधकानां पथे तेषां ध्यानः अन्यं प्रति भ्रमयितुं प्रक्षिप्यते अनेन साधकलगनस्य परीक्षा भवति। एताः वास्तविकोपलब्धयः नास्ति एते ''बीजः'' न अपितु शुष्कपत्राणि शाखाश्च सन्ति। एताः सिद्धयः साधकंअध्यात्ममार्गे अग्रे प्रवर्धनाय महत्वपूर्णाः सन्ति परं दुर्भाग्य वशात् एताः साधकान् अत्रैव अवरूध्य। आध्यात्मिक

मार्गतः अधोऽपि अनयितुं शक्ताः। चेष्टापूर्वकं एताषाम् सिद्धीनाम् अवहेलना एवकरणीयः। एताः अनुपयोगीरेव नास्ति अपितु निश्चयादेव हानिकारकाः सन्ति। अतः पूर्ण शक्त्या अनेन रक्षा करणीया। यदा दिव्य शक्तीन् एषः विश्वासः भवति यत् एताः मिष्ठान्न सदृशाः आकर्षकः लगितारः सिद्धिभिः संलोलुप्य साधकः स्व सत्यान्वेषणेन विमुखः न भवति। तदैव ताः गुप्त रहस्यान् ईश्वरीय साम्राज्यं तस्मै उद्घाटयन्ति।

गुरोः न कोऽपि आश्रमम् वर्तते नैव च सःएक स्थाने अधिक समयंवासः करोति। सः स्व पृथक सम्प्रदाय निर्माणे विश्वासः न करोति। तस्य शिष्येषु मुसलमानः, ईसाईः, जैनः, सिखाश्च सन्ति। यस्यमार्ग दर्शनः सः तस्य धर्म ग्रन्थानां शिक्षानुसारैः एव करोति। तस्य कोऽपि विशेष विचारधारा दर्शनञ्चनास्ति। यस्य कृते एतत् कथ्यते यत् तत् मात्र तेनैव आरभ्भः कृतः। तस्य दर्शनः समस्त धर्माणांधर्मग्रन्थौः यथावेद्वेदान्तः, उपनिषदः श्री मद्भागवद् गीता पवित्र बाइबिल तथा च पवित्र कुरानस्य सारः अस्ति। तस्यानुसारेण समस्त धर्मः एकैव सत्यस्य शिक्षा ददाति। यत् मनुष्यः ईश्वरपार्श्वतः आगतः अथ च तं स्व जीवन काले ईश्वरं परिचीय तं प्रति गमनस्य प्रयत्नः करणीयः। महानभारतीयऋषीणामनुसारैः एषः मात्र ''आत्मबोधेनैव'' संभवः अस्ति। ईसाई सतपुरूषाः एतं ''आत्म त्यागः'' कथयित्वास्पष्टी कृतः। उभावेवार्थः तथा च लक्ष्यः एकः अस्ति।

गुरूदेवः प्रचारतः दूरं वसति सः न तु प्रशंसकानां श्रद्धालुजनानां जनसमर्दनेनआवृतं वसितव्यः नैवप्रमुखपत्रिकासुचर्चितः भवितुं। तस्य पार्श्वे सुलभाकर्षकः सरलतया च दातुं योग्यः कोऽपि वस्तुर्नासित। सःविक्रेतामपि नास्ति। सः ग्रहकाणां शिष्याणाञ्च अन्वेषणे अपि न गच्छति। सः बहिर्गत्वा सार्वजनिक व्याख्यानः प्रवचनमपि वा न ददाति। सत्यमस्तियः ''ईश्वरमहिमायाः'' दर्शनम् कृतः। तस्य पार्श्वेआश्चर्यव्यक्तये नेत्रौस्तः। परं सर्वशक्ति मानस्य अपरिमित प्रतापः महानतायाश्च गुणगानाय वाणिर्नास्ति। तस्याश्रवः यत्किमपि अपश्यत् तस्य एकः कणमात्रस्यापि

वर्णनः कर्तुं शब्द अत्यन्त एव साधारणः अपर्याप्तश्चास्ति। अतः सः शान्त मौनं वासाय च वाध्यः अस्ति।

गुरोः जन्मोद्देश्यः अर्थात् आत्मबोध माध्यमेन पार ब्रहमस्य ज्ञानस्य प्राप्तिः अतिपूर्वेवपूर्णः अभवत्। अनेन ज्ञानेन सः संतोषः पूर्णत्वं च प्राप्तः कृतः। सः सदैव प्रकाशस्य विशाल अवर्णनीय सागरे निमज्जितः वा हर्षः परमानन्देन च परम संतुष्टः एवं संतृप्तः वसति। तं न तु कस्यापि वस्तूनां इच्छास्ति। नैवावश्यकता। निश्चयादेव अनय मनुष्यैः इव तस्यापि किञ्चित् शारीरिक आवश्यकताः सन्ति परं सः असमै कदापि कस्यापि वस्तूनां याचनानकरोति। शिष्याः तस्यावश्यकतानां पूर्तिः कुर्वन्ति। एषः स्मरणीयः यत् सः एकः दक्ष होमियो पैथिकः एवञ्चायुर्वेदिक चिकित्सकः तथा च ज्योतिषी अस्ति अथ च स्व जीविकार्जने पूर्ण सक्षमः अस्ति।

स्वशेष जीवने गुरोः इच्छा अध्यात्मज्ञानस्य आकांक्षिनां साहाय्यं कर्तुं उददेश्यः अस्ति ये अन्धकारे भ्रमन्ति। अथ च साहाय्यं मार्गदर्शनञ्च वाञ्द्न्ति। कस्मै दानाय भौतिक सम्पदा तस्य पार्श्वे नास्ति। चेत कोऽपि तस्य संपर्के आगत्य भौतिकः शारीरिक कल्याणानुभवश्च करोति तत्तु एषा एका पृथक् वार्तास्ति आध्यात्मिक लाभातिरिक्तं अनेकाः जनाः एतत् प्रकारस्य लाभानामपि अनुभवः कृतः।

गुरोः अनुसारं यदा एतं संसारं त्यागस्य समयः आगमिष्यति सः एतं पूर्ण स्वतंत्र रूपेण स्वकीयोपरि बिना केनापि वा कस्यापि गुण दोषस्य छायां त्युक्तुं इच्छते। उत्तमः अनुत्तमः वा समस्त प्रकारस्य संस्कारैः कृतिभिः वासः रहितं भवितुं इच्छति येन अस्मिन् संसारे तं द्वितीय जन्मम् न गृह्येत्। सत्यमस्ति एषः संसारः अश्रूणां सागरः अस्ति अतः चेत् कोऽपि अस्मात् दूरं वसति तर्हितुकथमस्मिन् कष्टमयः एवं दुःखमयजीवने पुनः आगमिष्यति अनेन विचारेण स्व तपस्यायाः फलं आकांक्षिसुवितरितं कृत्वासः शुद्ध पवित्र स्थितौ गन्तुं इच्छति अतः आध्यात्मिक ज्ञानोदयाकांक्षिनां सः स्वागतं करोति।

गुरोः शिक्षाः वा दर्शनः यः स्व शिष्यान् सः समये समये ददाति पुस्तकस्य द्वितीय भागे लिपिबद्धः अस्ति। चेत् माम् तस्य शिक्षाः मात्रं एक वाक्येषु व्यक्तं कर्तुं कथ्यते तर्हि तु अहं पवित्र बाइबिलस्य अस्य वाक्यस्य प्रयोगं करिष्यामि–Be still know that I am *(* Psalm *96..10) एषः एव तद् वाक्यं अस्ति यस्योपलब्धि विषये समस्त पैगम्बराः सत्पुरूषाः विद्वत् पुरूषाः अथ च समस्त युगावतारः शिक्षां दत्तः। सहस्त्राणि पुस्तकानि लिखिताः अथ च सम्पूर्ण भूमण्डले मील पर्यन्तं सुदीर्घ प्रवचनो दत्तः संयोग वशात् अस्मिन् वाक्ये बाइबिले गुप्तदिव्य कोशाः तथा च ईश्वरीय साम्राज्यस्य धन्यतां अनावृत्तस्य शक्तिरस्ति। एतद् वाक्यम् दृष्टिगोचरी भूते अत्यन्त सरलः अस्ति आत्मबोधावस्थां प्राप्तये सम्पूर्ण शक्त्या कठोर परिश्रमः आवश्यकः अस्ति एषः आत्म बलिदानस्य याचनां करोति। सर्वाधिकावश्यकतास्ति सर्व शक्तिमान् सद्गुरोः कृपाशीर्वादस्य च। ईश्वरस्य सर्वाधिकः कृपापात्रः सैवाऽस्तियान् एवं शाश्वत् जीवनं प्रतिनेतारः ऋजुः संकुचित द्वारं तथा च क्षीणः पथोपरि यस्तु वास्तविकेषु बृहत जटिलः काठिन्य पूर्णश्चास्ति मार्गप्रदर्शनाय शतगुरूः मिलितः। तस्योपरि ईश्वरीय अनुग्रहः आशीर्वादस्य च वर्षां भवति अथ च सः परमानन्दः किवां शाश्वत सुखस्य प्राप्तिः अस्मिन् संसारेवसन् एव कुर्बन्तीति।*

ऊँ श्री सद्गुरू प्रसादात्

द्वितीयो भागः

दर्शनाध्यायः

ऊँ श्री सद्गुरवे नमः

द्वितीयो भागः

दर्शनाध्यायः

तात्विकः विचारः :—— *अस्यां सृष्टौ मात्र मानवेव एतादृशः अस्ति यानेत्थं सृष्टिबोधं भवति अन्यास्तु सर्वाः भोग योनयः एवसन्ति। बौद्धिक विकाशेन सहैवेव मानवः स्व उद्गमस्य विषये विचारान्मुखः आसीत् अद्याप्यस्ति च यदयं ''कस्त्वं'' '' कोऽहम्'' इति ध्वनिस्तु प्राचीनास्ति। कोऽहमित्यस्यान्वेषणः एव समस्त दर्शनानां मूलमस्ति। विभिन्न मताचार्याः तेषामनुभूतिनां आधारोपरि स्व सिद्धान्तान् जगति समक्षे संस्थापितवान्। तेषां सिद्धान्तानामेव अन्तिमः सत्यं मत्वा, तेषां मतावलम्बी जनाः अद्यापि प्रचलन्ति। कोऽहमित्यस्य मतः तानाचार्यान् तेषांम् अवस्यानुरूपं सम्मिलितः उत्तरः एवासीत्। वेदान्तोऽपि ''कोऽहम्'' इत्यस्योत्तरम् अस्ति। एषः सनातनः अस्ति सनातनः स एव भवतियः सदैव नूतनः भवति। किञ्चिदपि नूतन शास्त्रीयानुसन्धानः ''वेदान्त'' प्रतिकूलं भवितुं न शक्तः। तथा चान्यशब्देषु ''वेदान्तः'' एतादृशः विशालास्ति। यत् सः स्वीयेषु सदैव भवितारः नित्य नूतन शास्त्रीयानुसंन्धानान् एकत्रीकर्तुं शक्तः।*

वेद शब्दस्यार्थः भविष्यति अवबोधनः वा ज्ञानः यत्र तम् किञ्चित् ज्ञातुं योग्योऽस्ति तत्र तम् ज्ञानं लब्धस्य मर्यादा भविष्यति सामर्यादा यत्र समाप्ता भवति सैवास्थितिनाम वेदान्तः तत्र अवबोधनाय किञ्चिद् अवशेषोनास्ति। अन्यथा पर शब्देषु यमवबोधनोपरि ज्ञातुं योग्यः काचिदपि अवशेषेव नास्ति। सैव वेदान्तः। तस्येव वर्णनः श्री गीतायां कविं पुराण अनुशासितारं अणोरणीयां समनुस्मरेद्यः। सर्वस्य धातारम्चिंत्यरूपमादिव्य वर्णः तमसः परस्तात्।। (गीता अ. 8/9) एतेषु शब्देषु कृतः अयम् समस्त 'जगम्'। (यत्र निर्मिती = ज, तथा च लयः = ग, अस्ति सैव जगः)

धातारः /super cosmic ब्रहमेषः वेदानां प्रतिपाद्य विषयोऽस्ति। अयमेव स्व संवेद्य आत्म स्वरूपः अस्ति। एवमेव लब्धये साधकाः नेकजन्म जन्मान्तरः साधनायां सुसंलग्नाः सन्ति। अयमेव सर्वस्यगन्तव्योऽस्ति। सैवेऽयं सृष्टेः मूलमस्ति। इदमेव शुद्धः अस्तित्वः अस्ति। To be अस्यां स्फुरणेसति एव Being भवति। सा एव मूल प्रकृतिः परा प्रकृतिः मूल मायास्ति। पिंड़े इयमेव ''तूर्यावस्थास्ति''। अस्यामवस्थायाः प्रकृतिः पुंश्चोभयोः ज्ञानम् साधकम् भवति। अस्याः अवस्थायाः प्रतीकः वा देवः अर्धनारी ''नटेश्वरोऽस्ति''। इमाः सर्वाः वार्ताः साधकम् अनुभवेषु आगन्तारः सन्ति। तत्व ज्ञानः वस्तुतस्तु ब्रहम स्वरूपस्य आत्म स्वरूपस्य ज्ञानमस्ति। 'तत्' शब्दस्त्वयं तं अविनाशी परब्रहमस्य वाचक शब्दोऽस्ति। ''तत्'' इत्यस्य ज्ञानः अर्थात् तत्वज्ञानः अस्मात् कारणादेव तत्व ज्ञान वाद विवादः वा तर्कस्य विषयो नास्ति। तत्तु जीवन धारणास्ति प्रत्यक्षानुभूतिरस्ति। यस्य मनसि स्व स्वां ज्ञानाय इच्छा जागृतः तत्तु महद् भाग्यवानिति कथ्यते। मनुष्यः यानि यानि व्यवहाराणि करोति तानि तानि व्यवहारेषु कति परार्थाय कति स्वीयाय च भवन्ति। तानपि स्वोद्धाराय वा स्व स्वां ज्ञानाय अवबोधनाय भवन्ति। स्थिर चित्तेन विचार कर्तृषु ईदृक् अपश्यत्। यत् वयम् दैनन्दिनीय व्यवहारेषु स्वीयाय किंचिदपि नास्ति। वस्तुतस्तु सर्वे व्यवहाराः परार्थाय एव भवन्ति। अस्माकं मनसि अस्य कदापि। समस्त व्यवहारस्त्वयं अहंकृतिना ''अहं'' तथा च ''मम्'', एतेन परिपूर्णः भवन्ति, इयमासक्तिः इयमासक्तिरेव समस्त दुःखानां मूलमस्ति। स्वीयं किञ्चिद् व्यवहार कृतोपरि न कृतोपरि वा सृष्ट्यां भवितारः घटनाः निर्भरः न भवति घटना संघटनम् तु भवन्त्येव तस्य यद् परिणामः भवति तेनैव अस्मान् सुखं वा दुःखस्य अनुभूतिः भवति। यैः परिणामैः अस्माकं कामः क्रोधः शोकः मोहः भयश्च तृप्तिं अधिगच्छन्ति तत् परिणामस्तु सुखदाः कथयन्ति तथा च यद् एषां विपरीतः भवन्ति तानि दुःखदायी कथयन्ति। इदानी दुःख विनाशाय मार्गद्वयमपश्यत्।

प्रथमस्तु येषां घटनानां परिणामं दुःखदः तस्या संघटना घटनांरोधयेत् समापयेत् वा अथवा असमाकं आभ्यन्तराणां येषु कारणेंषु तेषां घटनानां परिणाम् भवति तान् 'परिणामं प्रमाणिकरणं कर्तव्यम्।

घटनाचक्रावरोधं वा अवांछित घटनानां घटनं रोधः विरोधः वा मानवस्य कार्य क्षेत्रे नास्ति। अवाछितं घटनानां घटने मानवः तस्य रोधे न समर्थः। शेषस्तु पुनः स्व/ रिसीविगं ऐण्डं व्यवस्थितं कार्यः। एवम्/ रिसीविगं ऐण्ड अमुमेव दर्शन शास्त्रे अन्तः करणं कथयन्ति। मनः बुद्धिः, चित्त, तथा चाहंकारः एते चत्वारः अन्तः करणे आगच्छन्ति। एतान् व्यवस्थिती करणं योगाभ्यासेनैव सम्भवम्। एतादृशाः सर्वेषां मनीषिणां उक्तयः सन्ति तथा च तत्रैव अनेक साधकानां अनुभूतयः सन्ति।

सामान्यतया एतद् प्राप्यते यत् योगस्य नाम ग्रहणेन अतीव भ्रम मूलकाः कल्पनाः मनसि आगच्छन्ति। अधुना योग शब्दस्य यादृक् प्रचारोऽभवत् तादृशस्तु कदाचिदेव इतिहासे कदाप्यभूत्। यं मनीषयः 'अनेक जन्म संसिद्धिः' न्यगादीत् तं चंदमासेव प्रशिक्षण देययोग्य विषयः विनिर्मितः। विभिन्न शारीरिकासनानां व्यायाम पद्धतयः अपि अधुना योग इति नाम्ना जानीते। योग प्रचार काले व्याधिं निवारणेति प्रसंग्ड़ं संगृह्य तु किञ्चित् असामान्यसमः मानसिक प्रवृत्ति स्थितीषु गमनादिकानां अवस्थानां चित्रणः चित्रीयते। यदा कदा तु अनेकः अतीन्द्रियः तथा चातिमानवी अद्भुत शक्ति प्राप्तिं अस्माकं समक्षे स्थापितः। पवने उडडीयनम् , जले चलनम्, अन्य जनानां मनसः वार्ता ज्ञानं वा यथेच्छ सुवर्ण धनोपार्जनं अर्जयति अथवा स्पर्शं मात्रेण रूग्णान् विश्रामं प्रस्तूयते अथवा रूग्णान् रोग मुक्तिं प्रदीयते। समावेश्यते एतादृशी अतीव चमत्कारस्य वार्तानपि इश्तहारी प्रसंग्ड़तः प्रत्यक्षे संस्थापितः। वस्तुतस्तु यद्यपश्यम तर्हितु साधकं एतैः ''चमत्कारिकै'' वार्तैः किमादान प्रदानं ? एतेभ्यः वार्ताभ्यः किं सः साधना करोति तस्य किं लक्ष्यं ? एतादृशी अतीन्द्रियः प्रदर्शनाय् यदि कोऽपि योगाभ्यासं कर्तुमिच्छुकः तर्हितु तं शतवारं शोचितव्यम्। योगे यां वार्ता 'हेयः' बोधितः

सैव लक्ष्य निश्चय कर्तारस्य विषये नाधिकं कथनंमेव उपयुक्तः भविष्यति। यः वास्तविकार्थेषु स्वतंत्र भवितव्यं भवेत् वा सांसारिक बंधनं परित्यजेत् स्व स्वरूपं जिग्मिषति तस्य कृते एषः पथः वर्तते चमत्कार प्रदर्शनाय सिद्धि प्राप्ताराणां कृते नास्ति।

एषः मानव देहः स्वकीयेषु एकः पूर्ण विकसित प्रयोग शालासित सा असौ विराट ''सृष्टेः'' प्रतिकृतिरस्ति यः विराट जगति वर्तते। तत्सर्व अस्मिन् प्रतिकृतौ वर्तते। अतः स्वगृहे स्थित्वापि अस्मिन् देह रूपस्थ प्रयोगशालायां प्रयोगः समारभते। विषयस्यास्य संबंधः अंतः करणेन भूतेव इति कारणात् साधकस्य वेषभूषा किं वा आश्रमः महत्वहीनोऽस्ति। काषाय वस्त्र धारणेन अंतः करणस्य ''कषायः'' वर्हिः निःसरिष्यत्येव अस्याः का शाश्वती ? वदिष्याम्यहं यदेष योगाभ्यासः गृहस्थ धर्मस्यावश्यकतास्ति। अनेन बिना गृहस्थ धर्मः अपूर्णेव भविष्यति। समस्ताश्रमेषु गृहस्थाश्रमः श्रेष्ठः तत्तु समाजस्य रीढोस्ति। सत्यार्थेतु तत् मानवस्य परीक्षा स्थलो वर्तते। तस्मिन् स्थित्वा स्व समस्त दायित्वान् पूर्ण कर्तारन् आत्मोन्नति पथे वर्धनम् तथा चास्य संसारस्य समक्षे स्वकीय स्थापना आवश्यकी। तत्वज्ञानम् एषः एतद् पुस्तकानां न जीवन वार्ताऽस्ति। नहि, नहि, तत्तु जीवनमेवास्ति। तत् पठनाय न जीवितुं अस्ति। असिमन् पथारूढे साधकः एतादृशी अवस्थायां संगच्छते यत् यः त्यक्तुं योग्य वा यः त्याज्यः तत्तु स्वयवमेवत्याज्यते गच्छति यः प्राप्यः तदागच्छत्। सः साधकः स्वयं किमपि न करोति। समस्त व्यवहारैः तस्य कर्तृत्वेव समाप्तं भवति, स तु मात्र निमित्त निमित्त मात्रं भवति। कार्यस्य सिद्धिमसिद्धिं वा तस्य किमपि संबंधं न भवति। एतदेव स्व ''रिसीव्हिंग ऐण्डम्'' अन्तः करणम् व्यवस्थितीकरणं।

अनेकानां बन्धु जनानां मनसि योग विषये किञ्चिद व्यवस्थित आश्चर्यमूलकं धारणाः भवन्ति ते योगस्य संबन्धः मात्र हठ योगेनैव युज्यन्ते। ते कथयन्ति यत् योगेन सुलभा भक्तिः सरलाय। योगं भक्तिं च भिन्नाव बोधनंनोचितं। साधकानामनुभवाः

एतस्मात् विपरीताः सन्ति। भक्त्यां भावना प्राधान्यं विद्यते ये साधकाः सगुणोपासनां कुर्वन्ति ते स्वोपास्य भक्तिरेव कुर्वन्ति। भक्ति अर्थात् भज्सेवायाम् अतः सेवायाः पद्धतिः यावद्वैतमस्ति तावद् भक्तिः प्रचलिष्यति भक्तारः भक्तारयितव्यः। उपासकाः उपास्याएतौ उभयोरेव भक्त्यर्थं आवश्यकः। वस्तुतस्तु एवम् वि–भक्ति कथनोपयुक्तो भविष्यति। यतः उपासकः स्व स्वकीयञ्च इष्टतः अभीष्टतः पृथग् जानाति। यदा भजकः एषः जानाति यत् यं भजामि तत्तु अहमेवास्मि नान्यः तदा सैव सत्यार्थे '' भक्तः'' भवति। तावततु सः विभक्तेव भवति।

योगस्यार्थमपि सम्मेलनं एकत्रीकरणं वा भवति केन स्वकीयेनं। अद्य वयम् स्व स्वकीयेनैव विभक्तः जातः वयम् विचारदासः विनिर्मितः। अस्मासु तसयैव नियंत्रणः प्रचलित। तस्मात् स्व स्वकीयं परित्यज्य सत्यार्थे स्वतंत्रोद्भव एव योगोद्देश्योऽस्ति। तथा च सैव भक्तेरपि उद्दीप्तः अस्ति। स्व स्वरूपानुसंन्धान कर्तारन् एव योगः तथा च भक्तेः मूल मंत्रमस्ति।

स्व स्वरूपानुसंधानं भक्तिरित्यभिधीयते।।

मराठ्यां श्री रामदासेन कथितं– ''सदा स्व स्वरूपानुसंधान''। हेचि भक्ति, हेचि ज्ञान।।

(सैव भक्ति, सैव ज्ञान) योग भक्तयोः यदन्तरमस्ति तर्हितु मात्र माध्यमस्य भक्त्यां भावना माध्यमः भवति तर्हितु योगे यं राजयोगः ज्ञानयोगः, बुद्धियोगः किं वा सहजयोगः नाम्ना ज्ञायन्ते– माध्यमः बुद्धिर्भवति। कोऽपि मार्गम् अस्तु माध्यमः कोऽपि अस्तु गन्तव्य एकैवास्ति आत्मज्ञानं।

एषः सत्यः अस्ति यत् ज्ञान प्राप्तारः संख्यायां अल्पः भवन्ति। अधिकांशंस्तु काम्यकर्माणांपूर्तेव जीवनस्य एक मात्रोददेश्यं मानयन्ति। एषां काम्य कर्माणां अर्थतः वासनानां पूर्तये अवैध मार्गतः नीत्वा तु विभिन्न देवी देवतानां साहाय्यं समस्तान् पथान् अधिगृह्यन्ति। एषः अस्माकं नित्यानुभवाः सन्ति। तान् साधु महात्मा, औघड़ः फकीरः तेषां वासना तृप्तये सुगमः वा लघुपथनिर्देशकः वांच्छेत् कारयते वा।

वासनानांमावर्ते आवर्तितः मानवः एषः विस्मृतः यदेते ''वासनाः आहार, निद्रा, भय, मैथुनश्च'' आसां चत्वारो मूल प्रवृत्तीनां शाखोपशाखाः सन्ति। एताः मूल प्रवृत्त्यः समस्तेषु जीवेषु समानाः सन्ति। मानव वैशिष्ट्यं तस्य ज्ञानप्राप्ति क्षमतायां सन्ति।

आहार, निद्रा, भय, मैथनञ्च। सामानमेतद् पशुभिर्नराणां।
ज्ञानोहि तेषामधिको विशेषः । ज्ञानेन हीनाः पशुभिर्समानाः।।

समस्त प्राणिषु बुद्धि न्यूनाधिक मात्रायां भवति परं मानव वैशिष्ट्यम् एषोऽस्ति यत् तस्य बुद्धिः पूर्ण विकसितः अस्ति। हानि लाभौ जीवन मरणौ यशपयशौ आदीनां तं बोध भूते तेन संरक्षणोपायमपि सः निश्कास्यतीति। एतादृशाः मानवाः यदाऽयं विचारयति यत् वासनानां पूर्तिस्तु कदापिकथमपि न भवति। मृगमरीचिका यादृशी वासनाः ''अतः अग्रे '' ''अतः अग्रे'' कथयन् तथा च स्व असत्य प्रतिबिम्ब प्रदर्शयन् मानवं जीवनान्ते अनुवर्तयति एव स्थितः तदा सः द्वितीय, अपर दिशायां विचारयति एतदेव क्षणः अत्यन्त महत्वपूर्ण भवति। तस्मिन् क्षणे संयमितारः एव ''कस्त्वं कोऽहं ? इत्यस्य प्रश्नं करोति। नान्यः। यस्य मनसि एषः विचारः उत्तिष्ठति तथा च यः अस्मिन् स्व स्वकीयं ज्ञातुं ज्ञानपथस्य पथिकः इति पदाधिष्ठितेच्छुकः तं निः शंकं भूत्वा अस्मिन् पथे प्रचलनम् समारभेत्।

या वार्ता शुभास्तु तं शीघ्रं कारयेत् एतादृशः सुभाषितः शुभस्य शीघ्रम्। आत्मज्ञान पथ सदृशः अन्यत किं शुभं भवेत् एषस्तु समस्त शुभ कार्याणां मुकुटमणिः अस्ति येन क्षणेन अस्मिन्मार्गे प्रचलनारभः करिष्यति सैवक्षणः समस्त पावन मुहूर्तेषु सर्वपूतं भविष्यति। आगच्छतु निर्भयं भूत्वा दृढ़ संकल्पं भूत्वा अस्मिन् परम पवित्रं सदा शुद्धं विमलोत्तमपथे वर्धयिष्यतेति।

ऊँ श्री सद्गुरू प्रसादात्

ऊँ श्री सद्गुरवे नमः

तात्विक विचारस्य

द्वितीयम् सोपानम् –शारीरिक रचनायोगश्च

स्व स्वरूपज्ञानं मनुष्याय परम पुरूषार्थ : अस्ति श्रेयोऽस्ति। अस्य श्रेयस्य ज्ञानं एवं अनुभवाः अस्मिन् मानवदेहे वसन् भवति। समस्त प्रकारस्य ज्ञानम् स्मृति चेतना आदेः स्थानम् मनुष्य नाड़ी संस्थानम् अस्ति यस्तु मनुष्य निर्मितः उत्तमोत्तमः कम्प्यूटरतः कदाचित् उत्तमतरः अस्ति। यतोहि परम तत्वः स्व आभासः एवमनुभवः नाड़ी तन्त्रेणैव सुलभः करोति कारयति वा अतः आधुनिक शरीर रचना शास्त्रानुसारेण संक्षेपे नाड़ी संस्थानस्य वर्णनम् प्रस्तुतः अस्ति। अस्य खण्डस्य अन्तिमे योग चक्रैः अस्य तारतम्यमेलनस्य प्रयत्नः कृतः। अनेन आसनध्यानञ्चावबोधितुं साहाय्यं मिलिष्यति। यान् पाठकान् स्नायविक शरीर रचनायाः भागम् दुरूहं अनुभूयते सः इमम् त्यक्त्वा अग्रेबर्धितुं शक्तः अनेन विषयप्रवाहे कोऽपि अंतरः न आगमिष्यति।

नाड़ी संस्थानः स्वकार्यान् केन्द्रीय नाड़ी संस्थानमाध्मयेन सम्पादयति। केन्द्रीय नाड़ी संस्थानस्य प्रमुख भागाः सनित मस्तिष्कः मेरूरज्जुः सुषुम्ना वा तथा च परिधीय परिसरीय नाड़ी संस्थानम् यस्तु दैहिकः (somatic) तथा च अनिच्छावर्ती नाड़ी वा स्व संचालित/ Autonomic नाड़ी संस्थानैःनिर्मितः अस्ति। मस्तिष्कं निम्न प्रमुख भागेषु विभक्तः कृतः––

1.....अग्रमस्तिष्क / Fore brain... अस्मिन् भागे आगच्छति →

अ.– टीलेनसेफेलॉन / एषः बृहद् मस्तिष्कस्य *उभयोः अर्धगोलाकार भागैः निर्मितः। यस्मिन् पार्श्व निलय / लैअेरल वेन्ट्रिकल स्थितं भवन्ति।*

ब–आन्तरअग्रमस्तिष्क/ डाइंनसेफेलॉन – *एषः भागः–*

चेतकः/ थैलमस

अधष्चेतकः/ हाइपोथैलमस

पश्चचेतकः/ मेटा थैलमस तथा च

पीनियल ग्रन्थिः सहितं

अधिचेतकः/ इपीथैलमस

नामक भागैः संमेल्य निर्मितः। अस्य भागस्य गुहिका ***तृतीय निलयः/ थर्ड वेन्ट्रिकल कथ्यते।***

2.....मध्य मस्तिष्क :—— यस्मिन् सेरीब्रल इक्वीडक्ट नामा नलिका प्राप्यते।

3.... पृष्ठ मस्तिष्क :——यस्तु–

0 अनुमस्तिष्कः / सेरीबेलम

0 सेतुबन्धः / पॉन्स तथा च

0 अन्तस्था / मेड्यूला

नामक भागैः निर्मितमस्ति। अस्या गुहिका चतुर्थ निलयः / फोर्थ वेन्ट्रिकलः कथ्यते। अधोभागे मेड्यूलाका मेरूरज्जुभिः संबन्द्धः भवति।

स्नायु संबंधितः दैहिक बहिर्ग्राही संवेदनाः / सोमैटिक इक्सटेरियोसेपटिव सेन्सेसनस् यस्तु त्वचायाः आगच्छति तथा ऊतक संबंधितः किं वा प्रग्राही संवेदनाः

यस्तु स्नायु , स्नायुबन्धः तथा च अस्थीनि एवं संधि भागतः आगच्छति , 31/ एक त्रिंशति युगल सुषुम्ना नाड़ी तन्तुषु तथा च कानिचित् कपाल नाड़ी तन्तुषु प्रवाहितः भवति। एताः संवेदनाः मेरूरज्जुभागेन प्रविष्ट भवितारः परिधीय नाड़ी तन्तुषु / पेरीफेरल स्पाइनल नर्वस स्थितनाड़ीकोशानां गण्डिका वा नाड़ी कोशिका समूहतः / डारसल रूट गैंगलियॉ गच्छन सुषुम्नायाः तस्मिन् भागे प्रवेशं करोति यस्तु कटिभागे स्थितः अस्ति। मेरूरज्जोः अंतः प्रथम कटिकरसिकाया / लम्बर वरटिब्रा अधः सीमायां कोनस मेडुलैरिस नामकः कृशभागरूपे भवति। भागेऽस्मिन् अंतिम निलय/टरमिनल वेन्ट्रिकल विद्यमानः भवति। सिरो भागतः संवेदनाः पञ्चम कपाल त्रिधारा नाड़ी तन्तुभिः भूत्वायं यं ट्रिाइजेमिनल कथयन्ति। सेतुं/ ब्रेन स्टेम प्रति प्रवाहितः भवति। प्रग्राही संवेदनानां / प्रोपियोसेपटिव सेनसेसनस्, एकः भागः सुषुम्नातः अनुमस्तिश्कम् प्रति अग्रसरः नाड़ी तन्तुनां समूहेन/ स्पाइनो सेरीब्रल ट्रैक्ट , अनुमस्तिश्के प्रविष्टं भवति। तथा च शारीरिक स्थितिं / बॉडी पोस्चर , नियंत्रणस्य कार्यम् संपन्नं करोति। शेषः प्रग्राही एवं बाह्यग्राही / प्रॉपियोसेपटिव एवं इक्सटेरियोसेपटिव, संवेदनाः त्रिनाड़ी कोशेन तथा च द्विनाड़ी संयोजनैः भूत्वा गमनीयः। स्थान द्वयोः एतानां संवेदनानां प्रदानः भवति। तत्पश्चात् एताः संवेदनाः थैलमसे प्रविशति। यत्रतः तृतीय नाड़ी तन्तुः निःसृत्य इनटरनल कैपसूल, करोना रैडियेटातः गच्छन् अंततः मस्तिष्ककायिक संवेदी मार्गेन / सोमैस्थेटिक एरियॉ, प्रवेशं करोति। प्रमस्तिष्के / सेरीब्रम् नाड़ी कोषिकाभिः निर्मितः षट् अति सूक्ष्म स्तराः भवन्ति। संवेदी उद्दीपनः / सेनसरी इमपल्स, दानेदारः स्तरस्य कोशेषु अधिगच्छन्तियः प्रकृत्या प्रमुखतः ग्राही भवति एषः दानेदारः कण स्तरः संवेदी प्रान्तस्थायां / सेनसरी कारटेक्स, पूर्ण विकसित अवस्थायां भवति। समस्त शरीरैः संवेदना अस्मिन् कण स्तरे गच्छति। अत्रत्यां: संवेदना विभिन्न नाड़ी संयोजकानां पारंगत्वा विभिन्न स्थानेषु विभक्ताः भवति यथा प्रान्तस्थायाः मनः संवेदी भागः, प्रेरक

भागः तथा चान्य भागाः। मनः संवेदी भागे गत्वा संवेदनायाः विश्लेषणः परिवर्तनः एवं संग्रहणम् भवति। प्रमस्तिष्कः प्रेरक प्रान्तस्थया नाड़ी तन्तु समूहैः / कॉरटिको स्पाइनल ट्रैक्ट , संवेग मेरूरज्जुं गच्छति प्राप्नोति वा। यत्रतः परिसरीय प्रेरक नाडिभिः मांस पेशीनां सामूहिक अथवा विशिष्ट संकुचनः भवति। अनेन प्रकारेण ऐच्छिकं दैहिकं वा नाड़ी संस्थानस्य द्वौपथौ स्तः। एकस्तु संवेदी अभिवाही पथः / आफरेन्ट /सेनसरी, तथा च द्वितीयः प्रेरक अपवाही पथः / इफरेन्ट /मोटर दैहिक नाड़ी संस्थानः मनुश्येच्छावशे वसति।

दैहिक नाड़ी संस्थानेन सहैव एकः अन्य नाड़ी संस्थानोऽप्यस्ति। यं अंतरंगं / अनिच्छावर्ती /इनवॉलेन्टरी , अथ च स्वसंचालितः नाड़ी संस्थानम् अपि कथ्यते। एषस्तु सामान्यतः अस्माकं वशे न ममेच्छावशे न भवति। एतां अनिच्छावर्ती नाड़ी संस्थनं भागद्वयोः विभक्तः कृतः। अनुःकम्पी/नाड़ी प्रणाली सिम्पैथेटिक नाड़ी सस्थानं वक्ष कटिनाड़ी प्रणाली/ थोराकोलम्बर सिस्टम, अपि कथयन्ति। यतः अस्याः प्रणाल्याः प्रतिनिधित्वम् मेरूरज्जोः समस्त द्वादशवक्षस्य तथा चोर्ध्वस्य द्वि त्रि कटि भागस्य सुषुम्नायाः खण्डेषु भवति। अस्य तंत्रस्य अनुकम्पी गण्डिकाः/ सिम्पैथेटिक गैंगलियॉन, वक्षः /थोरक्स, उदरः/एबडोमेन, श्रोण्क्रि/पेलविस, ग्रीवायाःभागेषु स्थिताः भवन्ति। अधः दक्ष वाम अनुकम्पी शाखाः अनुत्रिकस्य/ कॉक्सिक, पुरतः स्वकीयषु मिलित्वा एका एकल गण्डिका/ गैंगंलिया इम्पार, निर्मयति। ऊर्ध्वं अनुकम्पी तन्तु कपाल गुहायां कैरॉटिड धमनी, कसेरूका च धमनिभिः/ वरअिब्रल ऑरटेरीजॅ सह प्रवेशं करोति। अस्य तंत्रस्य कार्यम्ः शरीरं संघर्षः पलायनस्य च स्थितये संनद्धं आकारितः।

अनिच्छावर्ती नाड़ी संस्थानस्य द्वितीयः भागः परानुकंपी /पैरासिम्पैथेटिक किं वा कपाल सेक्रभी! क्रेनियोसैक्रल कथ्यते। यतः एतासु चत्वारि /04 कपाल तंत्रिकायाः / क्रेनियल नर्वस तथा च तृतीय –नेत्र प्रेरक तंत्रिकाः /आकुलोमोटर

नर्वस, सप्तम्– आनन तंत्रिका /फैसियल नर्वस, जिह्वा ग्रसवी तंत्रिका/ग्लासोफैरिन्जयलनर्वस, तथा च दसवीं– वेगस तंत्रिकायाः/वेगस नर्वस समावेशं भवति। सेक्रमी धारके सुषुम्नायाः द्वितीयतः, चतुर्थ सेक्रभी खण्ड़ः आगच्छति। दसवीं कपाल तंत्रिका वेगस परानुकंम्पी तंत्रस्य एकः महत्वपूर्ण घटकः अस्ति। अस्य केन्द्रकः चतुर्थ निलयस्य/ फोर्थ वेन्ट्रीकल्स तले सुषुम्नाशीर्षे/ मेडयूला स्थितं भवति।

अस्य तंतवः ह्रदयः फुस्फुसम् , अन्ननलिकाः, आमाशयः , पक्वाशय, अनुप्रस्यबृहदान्त्रस्य द्वि त्रि भागं यावत् प्राप्नुवन्ति। परानुकंपी तंत्रस्य चत्वारि गण्डिकाः शिरः वा ग्रीवाभागे स्थितः अस्ति तथा च बहुषाः गण्डिका : वेगसतंत्रिकया सह संबद्धाः भवन्ति। परानुकम्पी तंत्रः जीवनार्थं अनिवार्यः अस्ति। यतः एषः श्वसन तंत्रः अथ च रक्तपरिभ्रमण तंत्रस्य सक्रिय नियत्रणः करोति । अनुकम्पी तथा च परानुकम्पी उभावेव प्रणालीनां अभिवाही अपवाही च घटकाः भवन्ति यस्तु एषः श्वसनतंत्रः अथ च रक्त परिभ्रमण तंत्रस्य सक्रिय नियंत्रणाः करोति अनुकम्पी तथा च परानुकंपी उभावेव प्रणाल्योः अभिवाही अथ च अपवाही पटकाः भवनित। यस्तु ह्रदयः, फेफड़ाः, पाचनाग्ड़.:, उत्सर्जनाग्ड़.:, जननाग्ड़नानां च कार्यस्य नियंत्रणम् करोति। अधष्चेश्तकः/ हाइपोथैलमस अनिच्छावर्ती नाड़ी संस्थानस्य अनुकम्पी, परानुकंपी च उभाभ्यां तंत्राभ्यां प्रमुख गण्डिकाः सन्ति। अधश्चेतकस्य पश्च पार्श्वश्च भागः अनुकंपी तंत्र शासितं करोति। द्वितीयं प्रति अधश्चेतकस्याग्रः किं वा मध्य भागः परानुकंपी तंत्रेण संबंधिताः भवन्ति।

मस्तिष्कतृतीयनिलयस्य तलः वा पार्श्व भागेषु स्थितं भवितुं कारणात् अधश्चेतकस्य स्थानः महत्वपूर्णः अस्ति। रहस्यपूर्णपीनियल ग्रन्थिः तृतीय निलयस्य छते स्थितं भवति अथ च अस्मिन्नेव प्रस्फुटति। साहित्ये पीनियल ग्रन्थिः रहस्यमयम् कथयते। यतः शताब्दिभिः एषा दार्शनिकानां कृते आन्तरिक नेत्रः तृतीय चक्षुः वा

आत्मायाः निवास स्थानं अस्ति। वैज्ञानिकानां कृते एषः मात्र अवशेषागः अस्ति। परं साम्प्रतम् एव एषा ग्रन्थिः पाश्चात्य वैज्ञानिकानां ध्यानाकर्षितः कृतः। प्र्याप्त शोध कार्यं कृतः अनेकानि पुस्तकानि लिखिताः सन्ति याः न केवलं अस्य विविध कार्याणि उजागरम् करोति। वरन् अस्य अधश्चेतकेन सह निकटस्य संबंधःसंयोजनमपि च स्पष्टं करोति। वस्तुतस्तु तृतीय निलय पार्श्वे नाड़ी संस्थानस्य शिखरे अधश्चेतकः पीनियल युग्मस्य / हाइपोथैलमो–पीनियल एक्सिस एकः अद्वितीयमहत्वमस्ति।

ध्यानस्य भौतिक लाभेषु यथा रक्तचापस्य अल्पत्वं/न्यूनः वा, प्राप्तिः हृदयगत्याः मन्दत्वं लाभः तथा च प्रशान्ति आदिभिः अधश्चेतकः पीनियल युग्मेन संबंधितः मन्यतें पीनियल ग्रन्थिः स्व हारमोन्सेन यौवनाग्ड़े.षु प्रभावं निक्षिप्य यौन प्रक्रियां नियन्त्रितः करोति। अधश्चेतकः रेखित पिण्डेन/ कॉरपस स्ट्रायटम सहैव सह मस्तिष्कस्य ललाट खंड़ेन/ फ्रॉन्टल लोब अपि संबंधः स्थापितं करोति। यस्तु अव्यक्त लक्षण क्षेत्रः/ सॉइलेन्ट एरिया कथ्यते। चेत् अनिच्छावर्ती नाड़ी संस्थानस्य प्रान्तस्थायां स्थितिः स्पष्टं नास्ति। तथापि लिम्बिकः एवञ्च प्रान्तस्थायाः द्वितीय क्षेत्रः अनिच्छावर्ती नाड़ी संस्थानस्य कार्यैः संबंधितः प्रतिक्रियां दर्शयन्ति। येन इत्थं ज्ञायते यत् प्रान्तस्थापि अनिच्छावर्ती संस्थानेन संबंद्धः अस्ति। सी. आकारस्य पुच्छक केन्द्रकः/ कॉडेट न्युक्लियस पार्श्व निलयस्य दीवारे स्थितं भवति। रेखिता पिंडः लेन्साभ केन्द्रकः/ लेन्टीफॉम न्युक्लियस एवं पुच्छक केन्द्रकेन मिलित्वा निर्मितः। पुच्छक केन्द्रकं निम्न आवृत्तेः विद्युत प्रेरणा रासायनिक प्रेरणा वा दानेन प्रान्तस्थायाः गतिविधेः अवरोधनं भवति। तथा च शिक्षणेन संबंधितः प्रतिक्रियाणांमपि अवरोधनं भवति। जालीय रचना/ रेटिकुलर फॉरमेशन, भूरे/रक्ताभ द्रव्यः /ग्रे– मैटर तथा च श्वेत द्रव्यस्य / व्हाइट–मैटर, एकः जालिः अस्ति। यस्तु मस्तिष्कस्तंभे /ब्रेन स्टेम, प्रसृताः अस्ति तथा च चेतकस्य अवशिष्ट केन्द्रकान् गच्छति। अस्य शरीरक्रियायां यथेष्ट महत्वं वर्तते। एषा बहुतंत्रिका कोशीय तथा च बहुअन्तर्गन्थनीय

/पॉलीसाइनेप्टिक, तंत्र नाड़ी संस्थानस्य विविध भागानां प्रमुख कार्येषु सम्मिलिताः भवति यथा प्रान्तस्थातथान्य सहायकाः केन्द्राः यस्तु परिभ्रमणः श्वसन पाचक प्रणालिभिश्च संबंधिताः भवन्ति।

आरोही रेटीकुलर तंत्रः जागरण प्रतिक्रियायै उत्तरदायी सन्ति। तथा च प्रान्तस्थां सचेतः करोति एषाः सुप्तावस्थया जाग्रतावस्थायां परिवर्तनः इव अस्ति। रेटिकुलर फॉरमेशन '' चैतन्यतायाः'' स्तरं निर्माणे ध्यानं केन्द्रितं कर्तुं विभेदीकरणं कर्तुं तथा चावबोधनेन सम्बंद्धः अस्ति। सामान्यतः द्वादश युगल कपाल तंत्रिकाः वर्णिताः सन्ति अस्ति परं त्रयोदशी युगला अस्तु नर्वटरमिनेलिसः अपि एका अस्पष्ट अमाइलिनावृत्त तंत्रिकाः/ नानॅ माइलिनेटेड नर्व भवति। एषा भृकुटि समीपे नासिका गुहायाः शिखरेण आरम्भम् भवति। पृष्ठं गच्छन् चालनीवत पट्टिकां / क्रिब्रीफॉरम प्लेटं भेदयित्वा कपाल गुहायां प्रवेशं करोति। एषा तंत्रिका पटीय क्षेत्रस्य / सेप्टल एरिया समीप मस्तिष्केन योजयति। अस्याः तन्तवः अधश्चेतकं गन्तारः प्राप्तः। केचिज्जनाः: एतं अनुकम्पी तन्त्रस्य अग्रवर्ती विस्तारः मन्यन्ते। अस्याः तन्त्रिकायाः माध्यमेन अनिच्छावर्ती नाड़ी संस्थानं भृकुटिः वा त्रिकुटि सामीप्यं स्थापितः करोति। यस्तु अत्यन्त महतवपूर्णः अस्ति। भृकुटिः उभयोः भ्रुवोर्मध्यस्य तत् स्थांन अस्ति। यस्योपरि योगीजनः ध्यान केन्द्रितं कृत्वा आज्ञा चक्रे स्थितं भवति।

भृकुटिः तथा च पीनियल ग्रन्थिः एकैव समतलोपरिस्थितः अस्ति।

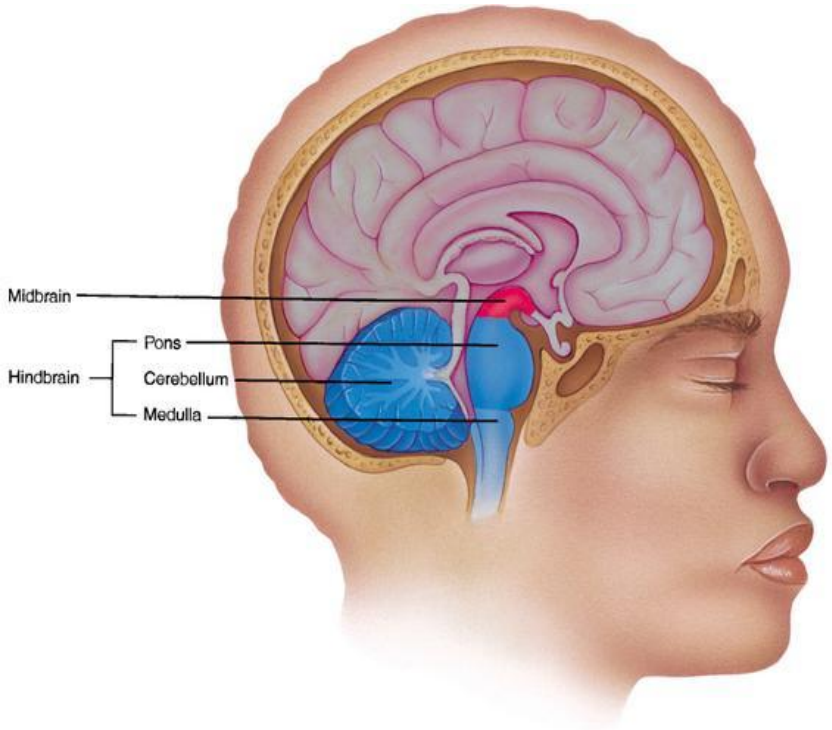

चित्र–खोपड़ी एवं मस्तिष्क के भागं

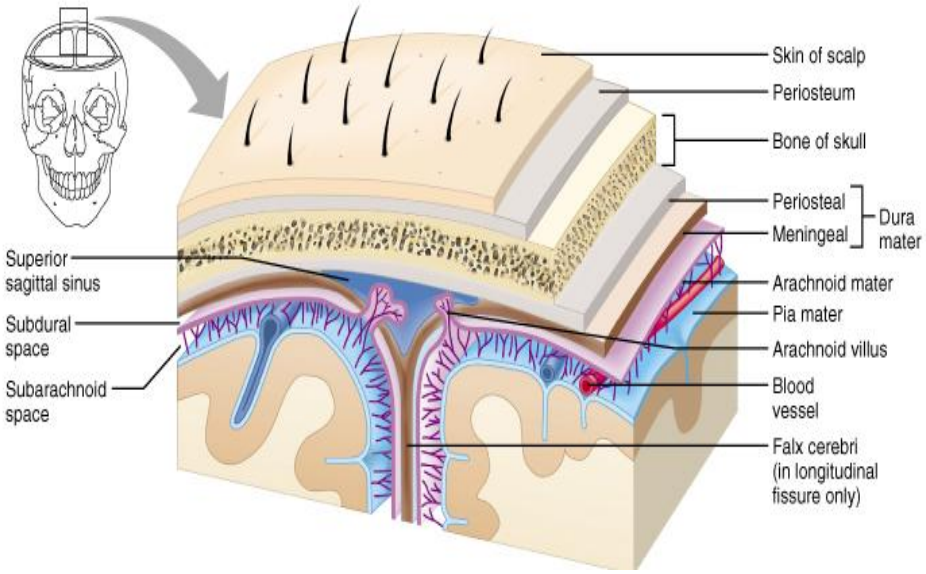

चित्र–खोपड़ी एवं मस्तिष्क की पर्तें

चित्र– ब्रहद मस्तिष्क(सेरेब्रल कॉटेक्स) की स्थिति तथा उसके भाग

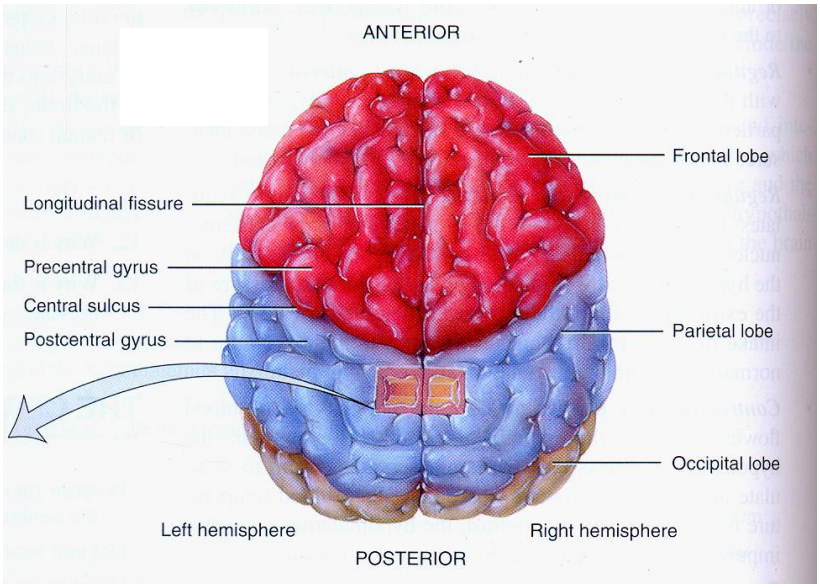

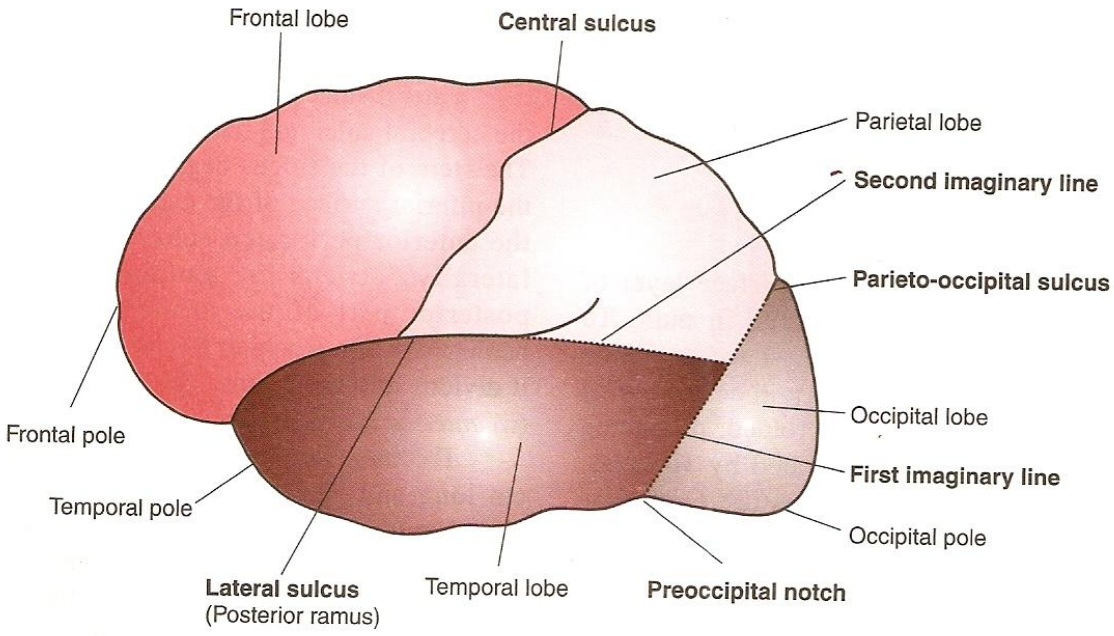

चित्र– मानव मस्तिष्क (सेरेब्रल कॉटेक्स) के भाग

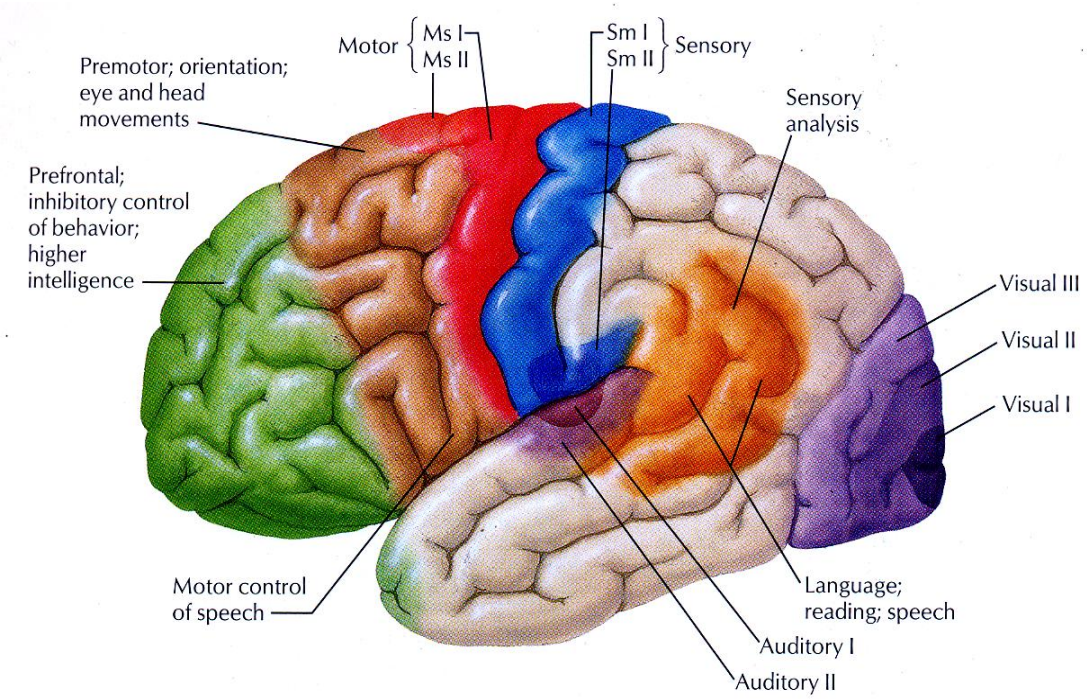

चित्र– मानव मस्तिष्क (सेरेब्रल कॉर्टेक्स) के प्रमुख्य भाग तथा कार्य के आधार पर मस्तिष्क मे विभिन्न क्षेत्र

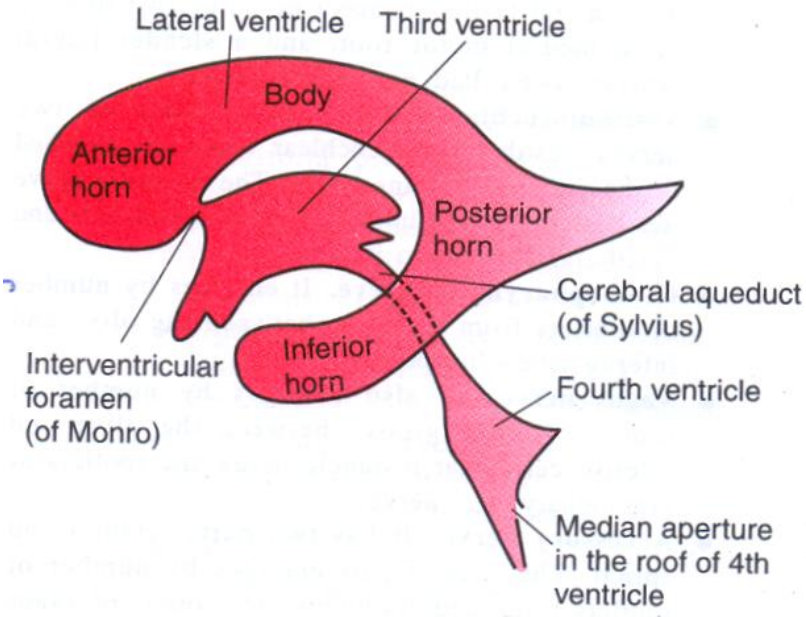

चित्र– मानव मस्तिष्क में पाये जाने वाले विभिन्न निलय या वेन्ट्रिकलस की स्थिति

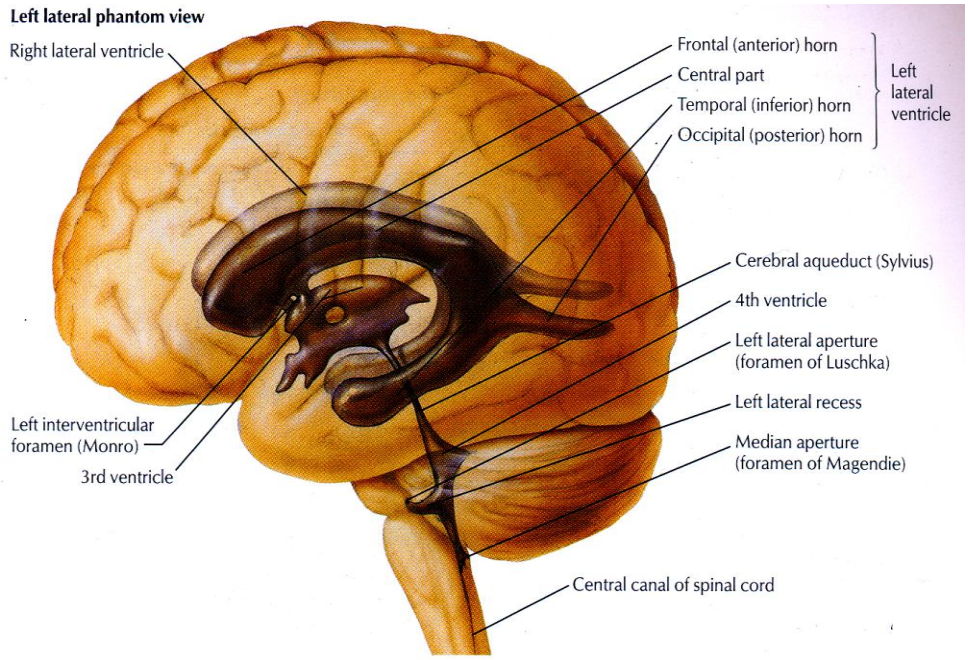

चित्र– मानव मस्तिष्क में पाये जाने वाले विभिन्न निलय या वेन्ट्रिकलस की स्थिति

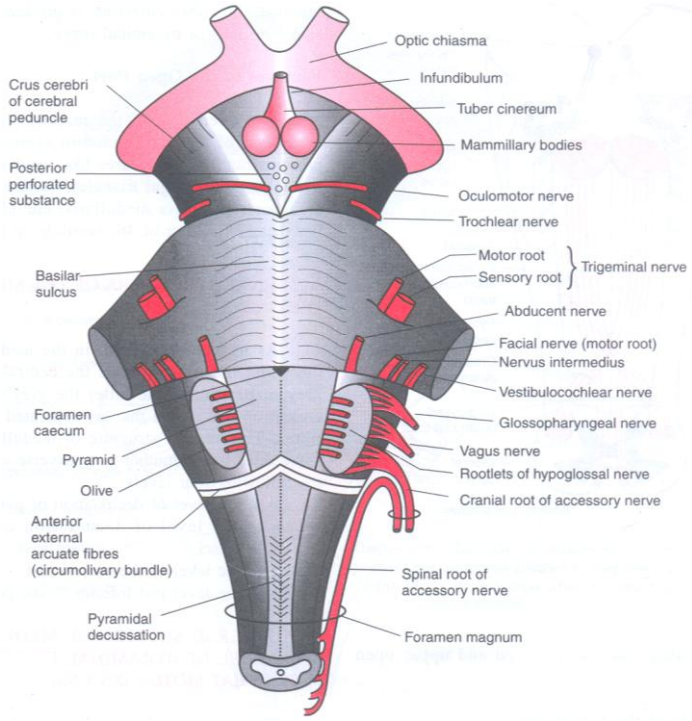

चित्र– मानव मस्तिष्क के प्रमुख्य भाग तथा मस्तिष्क से निकलने वाली क्रेनियल नर्वस

मस्तिष्कस्य निलय तंत्रः अथ च मस्तिष्क मेरू तरलः

(वेन्ट्रिकुलर सिस्टम ऑफ ब्रेन एवं सेरिब्रोस्पाइनल फ्लूड)

प्रमस्तिष्केन अर्ध गोलाकार भागेषु स्थितोभौ पार्श्वनिलयः अन्तरानिलय रन्ध्रेण/ इन्टरवेन्ट्रिकुलर फोरामेन, तृतीय निलयेन /थर्ड वेन्ट्रिकल सम्बद्धाः भवन्ति। यस्तु मध्य मस्तिष्कस्य कुल्यया/ एक्वीडक्ट ऑफ मिडब्रेन , पश्च मस्तिष्कस्य चतुर्थ निलयस्य गुहिकया/ फोर्थ वेन्ट्रिकल संबन्धितः अस्ति।

चतुर्थ. निलय/फोर्थ वेन्ट्रिकल नीचैः मेरूरज्जोः दुर्बलः केन्द्रीय नलिकया / सेन्ट्रल कैनाल, अवरोधं बिनासंबंधितं भवति। मेस्रज्जोः एषा केन्द्रीय नलिकास्च निम्नक्षेत्रे अन्तिम निलयस्य /टरमिनल वेन्ट्रिकल निर्माणं करोति। तथा च मेरू अन्त्य सूत्रे /फाइलम टरमिनेल किञ्चिद् दूरे गत्वा संरक्षितं वर्तते। मेरू अन्तय सूत्रेः अनूत्रिकस्य प्रथम खण्ड गत्वा तेन युजति। पार्श्व तृतीयः चतुर्थस्च निलयस्य कोइड जालिका/कोराइड प्लेक्सस, रूधिरेण मस्तिष्क मेरू तरलस्य निर्माणं करोति। एषः तरलः निलय तंत्रेण भूत्वा मेरूरज्जोः केन्द्रीय नलिकायां प्रवेशंकरोति। निलय तंत्रेण मस्तिष्क मेरू तरलः चतुर्थ निलयस्य शिखरे स्थितः द्विपार्ध्य अथ च एकः मध्य रन्ध्रेण भूत्वा अवजालतानिका/ सब–एरेक्नॉएड स्पेस अवकाशे प्रवेशं करोति। एषः अवकाशः मस्तिष्कं परितः स्थितः अस्ति। अत्रत्याः मस्तिष्कः तरलः पुनः रूधिरे ऊर्ध्व अग्रपश्च शिरानाले/ सुपीरियर सैजिटल साइनस स्थित अवजाल तानिका कणिकाभिः/ सब–एरेकनॉइड ग्रैनुलेशन भूत्वा मिलति।

अन्तः स्त्रावी तंत्र/ एन्डोक्राइन सिसटम्

नलिका विहीन ग्रंथयः विभिन्न हारमोनं उत्पन्नः कृत्वा शरीरस्य विभिन्न तंत्राणां मध्ये तारतम्यः निर्मितं करोति अथ च् अनेन प्रकारेण जैविक संघटनस्य विकाशं करोति। एताषां ग्रथिनां नामास्तिः–

1–पीयुषं / पिटयूटरी ग्रन्थिः 2–पीनियल/ ग्रन्थिः

3– अवटु ग्रन्थिः 4–परावटु ग्रन्थिः

5–अधिवृक्क/ सुप्रारीनल ग्रन्थिः 6– लैंगरहैन्स दीपिकाः/ आइसलेट ऑफ लैंगरहैन्स

7–तथा च जनन ग्रंथेः अन्तः स्त्रावी कोशिकाः।

एताषु कापि नलिका विहीन ग्रन्थिः पूर्णरूपेण स्वतंत्रं नास्ति ताः स्वकीयेषु घनिष्ट संबंधः स्थापयति एकः सुव्यवस्थित परिवारः इव एकः अन्यं नियंत्रितः करोति। चेत् नलिका विहीन ग्रंथीनां कार्यस्य तुलना वाद्य वृन्देन करोतु तर्हितु तृतीय निलयस्य तले स्थित पीयुष ग्रन्थिः अस्य वाद्य वृन्दस्य नायक सदृंशः अस्ति। एषः अधश्चेतकेन सह एकःउपयोगी पीयुष अक्षस्य /हाइपोथैलमो–पिटयूटरी एक्सिस निर्माणं करोति। एताः अन्तः स्त्रावी ग्रन्थयः योग साधने वर्णित चक्रैः संबंधः स्थापयति। यदा कुंडलिनी/ दिव्य शक्तिः मणिपूर चक्रे प्रकटं भवति एषा अधिवृक्क ग्रन्थिं सौरः वस्तुतस्तु कुक्षि जालिकायाः / सोलर / सीलियक पलेक्सस, माध्यमेन उत्तेजितं करोति यया एड्रेनैलिनस्य स्त्रावः भवति। यस्य प्रभावो वर्तते शरीरतापक्रमः तथा च ह्रदय गत्यां वृद्धिः। यदा एषा शक्तिः ऊर्ध्वं उत्थापयति तथा च पीयूष ग्रन्थि माध्यमेन प्रकटं भवति। तदा विभिन्न चयापचयस्य परिवर्तनं भवति। उदाहरणार्थं रक्ते ग्लूकोजस्य प्रवर्धनः किं वा न्यून्ता प्रोलेक्टिनः तथा च इस्ट्राजनस्य स्त्रावः यस्य

कारणेन स्तनेषु अल्पकालिकः भारं पीड़ाञ्चउत्पन्नः भवति। अधश्चेतक स्तरे एषा शक्तिः ताप नियत्रंक केन्द्रस्य माध्यमेन शरीर तापक्रमं वर्धयति क्षयति वा। एते कानिचिल्लक्षणाः सन्ति यस्तु साधकः साधनायाः विभिन्नः अवस्थासु अनुभवं कर्तुं शक्ता भवन्ति।

प्रमस्तिष्कः प्रान्तस्थाः/ सेरिब्रल कॉटेक्स

प्रमस्तिष्कः तले संवलनाः प्राप्यन्ते। यस्तु परिखा/सलकॉई अथ च कर्णकः/गायॅराई निर्मीयते अस्योपस्थितेः कारणात्। ईषत भूरे धवल प्रान्तस्थायाः क्षेत्रफलं पर्याप्तं वर्धते। तथा च एषः कपाल गुहिकायाः सीमित स्थाने समाविष्यते। अस्मिन् भूरे रक्ताभ द्रव्ये विभिन्नाकारप्रकारस्य अर्बुदाः नाड़ी कोषाः प्राप्यन्ते। एते समस्त सूक्ष्मदर्शी कोषाः प्रान्तस्थायाः स्तरेषु आवरणेषु प्राप्यन्ते। एकः प्रारूपिक नाड़ी कोषस्य/ टिपिकल नर्व सेलपार्ष्वतन्तु / डेन्ड्राइटस नामकः लघु प्रवर्धाः भवन्ति। यस्तु उद्दीपनंस्य चालनं करोति तथा च एकः सुदीर्घ प्रवर्ध अक्ष तन्तुः/एक्जॉन भवति। नाड़ी कोषः स्व प्रवर्ध सहितं तंत्रिका कोषिका/न्युरॉन कथ्यते। यस्तु नाड़ी सस्थानस्य संरचनात्मकः कार्यात्मकः इकाई भवति। विविध नाड़ी कोशिकाः लघु सुदीर्घश्च संयोंजन तन्तूनां/ एसोसिएट फॉइबरस निर्माणं करोति। एते तनतवः एकेव /प्रति भागस्य प्रमस्तिष्क गोलार्धस्य कर्णकान् योजयति। परियोजी तन्तुः/ कमिष्योरल फॉइबरस उभौ प्रमस्तिष्क गोलार्धान् तथा च सुदीर्घ प्रक्षेप तन्तवः/ प्रोजेक्षन फॉइबरस, प्रान्तस्था क्षेत्रान् निम्नस्थ प्रमस्तिष्कः मस्तिष्कस्तम्भः तथा च मेरूरज्जोः केन्द्रैः योजयति। एकातंत्रिका कोषिकातः द्वितीय तंत्रिका कोषिकायां उद्दीपनस्य प्रभावः अंतर्गन्थन माध्यमेन भवति अंतर्ग्रन्थनाः तत् सन्धि स्थलं अस्ति। यत्र एक तंत्रिका कोशिकायाः समाप्तिः भवति। तथा च द्वितीय कोषिकायाः प्रारम्भः

भवति। तंत्रिका संचारी/ न्युरोट्रान्समीटर पदार्थः अन्तर्ग्रथनस्य आरपारे उद्दीपनानां संचरणः एकः वान्य तंत्रिका कोशिकाषु कुर्वन्ति। प्रमस्तिष्कः प्रान्तस्थायाः जटिलः ईषत् धवल द्रव्यस्य मनसाः आसनम् अस्ति। तथा च जटिल तन्तु जालः, तंत्रिका कोशिकाः अथ च तस्य अंतर्ग्रथनः विचार प्रक्रिया एकः क्रीड़ा स्थलस्य निर्माणं कुर्वन्ति। एषः अन्तर्ग्रथनः तथा च तस्य रिक्त स्थान/ सॉइनेप्टिक गैप ध्यान साधनायै महत्वपूर्णः अस्ति। ध्यान साधनायाः प्रारम्भिक अवस्थासु एकाग्रतया मानसिक विचार प्रक्रियां अवरूद्धेः वा शान्ति करणस्य चेतनप्रयासः क्रियते। तंत्रिका संचारी पदार्थः , अधश्चेतकः तथा च तंत्रिका पीयूषेन/ न्युरोहाइपोफिसिस निःस्सारितः तथा च प्रशान्तता/ट्रैन्कूलॉइजेशन, पीड़ाश्च शून्यता/ एनॉलजेसिया उत्पन्नं कुर्वन्ति। एते अन्तर्जात/ एन्ड़ोजीनस ओपियम पदार्थः भावात्मकः तथा च व्यवहारात्मकः समीस्थितौ/ न्युरोस्टैसिस महत्वपूर्ण भूमिकाः निर्वाहयन्ति। ध्यानावस्थायां मस्तिष्कः एल्फा मस्तिष्कः बीचयः तरंगः/ एल्फा ब्रेन वेव उत्सर्जितं करोति। यस्तु शरीरं मनञ्च शान्ति पूर्णा स्थितौ प्रतिष्ठितं करोति, एड्रेनैलिन स्त्रावी तंत्रस्य विरोधं करोति। तथा चानेकाधुनिक रोगेभ्यः सर्वरोगहारीं इव सिद्धं भवितुं शक्तयतै प्रमस्तिष्कस्य प्रान्तस्थायां अनेन प्रकारस्य कार्यात्मक केन्द्राः भवन्ति। यथा तु श्रवणः, वाणी दृष्टिः, इन्द्रिय संवेदनाः एवाञ्च प्रेरकादायकः। परं प्रमस्तिष्कस्य ललाट खण्ड़े अव्यक्त लक्षण क्षेत्रः आत्मिक पक्षे महत्वपूर्णः अस्ति। अनेन प्रकारेण प्रमस्तिष्के पुच्छक केन्द्रः अन्तरानिलय रन्ध्रेण ऊर्ध्व पार्श्व निलयस्य भित्तौ स्थितः अस्ति। अथ च एते गति संयामकः जातेन ध्यान काले अत्युपयोगी अस्ति।

एतद् पाठ्य पुस्तकं न जातेन केवलं शरीर रचना संबंधयः तेषां विशिष्ट तत्वानां वर्णनः कृतः। यस्तु योगसाधनायाः गूढ़तम रहस्य पूर्ण प्रक्रियाणां वैज्ञानिक विश्लेषणे सहायकं भवेत्। अस्माकं समस्त संवेदी अंगाः बाह्य संवेदनाः ग्रहणं कर्तुं विकसितः अभवत् तथा च जनमतः एव वयम् केवलं बाह्य जगतं ईक्षणस्याभ्यस्ताः

सन्ति। स्वाभ्यान्तरस्य साक्षात्कारं कर्तुं न। स्वाभ्यन्तरे गह्वरे गन्तुं एकमात्रः पथम् अस्ति। एकाग्रतायाः विशिष्ट विधिभिः मनं बर्हिमुखी न भवितुं शक्तः। अंतः करणे (आंतरिकः + करणः, वस्तु तस्तु कार्य करणस्य उपकरणेः) मानसस्य समस्त विधिनां संकेतः वर्तते। अर्थात् मन बुद्धि चित्त अहंकारश्च। योगसाधना तान् आन्तरिक उपकरणैः अन्तः करण सम्बन्धयः अन्वेषणं करोति। एषस्तु स्वकीयेन स्वकीयस्य अध्ययनः इव अस्ति। परं अस्य प्रकारस्य प्रायोगिकान्वेषणस्य प्राचलनः प्रतिमानश्च स्वकीयाभ्यान्तरे किंवा मनुष्य शरीरे एव विद्यमानः भवन्ति। केवलं एतद् ज्ञानः आवश्यकः अस्ति य द्वारे दस्तकं कथं प्रददातु। एकः सत्साधकार्थं द्वारः उद्घाटयिष्यते अथ च संसारः स्वदृश्यान् उदघानाय कीट़नाय उद्यतो भविष्यति। मस्तिष्के उदात्त विचारान् संतृप्तं कृत्वा मनुष्यः आत्मा परमात्मायाश्च साक्षात्कारः कर्तुं शक्तः।

मेरूदण्डः योगश्च / स्पाइन एण्ड योगा

केशरूकी दंडः मेरूरज्जुं परिवद्धं कृत्वा सुरक्षितः स्थापयति एतौ द्वावेव योग साधनायै आवश्यकः अस्ति। कशेरूका दण्डस्य खंण्डीय रचना गति संचालनं गतिं ददाति। केशरूकाणां मध्ये अनतरा कशेरूका चक्राः भवन्ति। यस्तु उपधानी अस्ति तथाचाघातावशोषी इव कार्य कुर्वन्ति ऊर्ध्वतः अधं प्रति सप्त ग्रैव /सरवाईकल कशेरूकाः, द्वादश वक्षीय/ थोरासिक कषेरूकाः पञ्च कटि/लम्बर कशेरूकाः, पञ्च त्रिक/सैक्रर कशेरूकाः तथा च चत्वारः अनुत्रिकः/कॉकसीजियल कशेरूकाः, अनेन प्रकारेण सर्वाः त्रयस्त्रिंशति कशेरूकाः भवन्ति। मेरूदण्डः योगस्य एकः अनिवार्यः महत्वपूर्णश्च भागम् निर्मितं जायते। एका लोकोक्त्यानुसारं, नमनीयपीठः दीर्घ जीवनं

ददाति। मेरूदण्डस्य सुकोमलता/ लचीलापनश्च चिरस्थायी यौवनस्य मूलमस्ति। दोषरहितः स्वस्थ मेरूदण्डः लाभप्रदः योगार्थं अपेक्षित गुणः अस्ति।

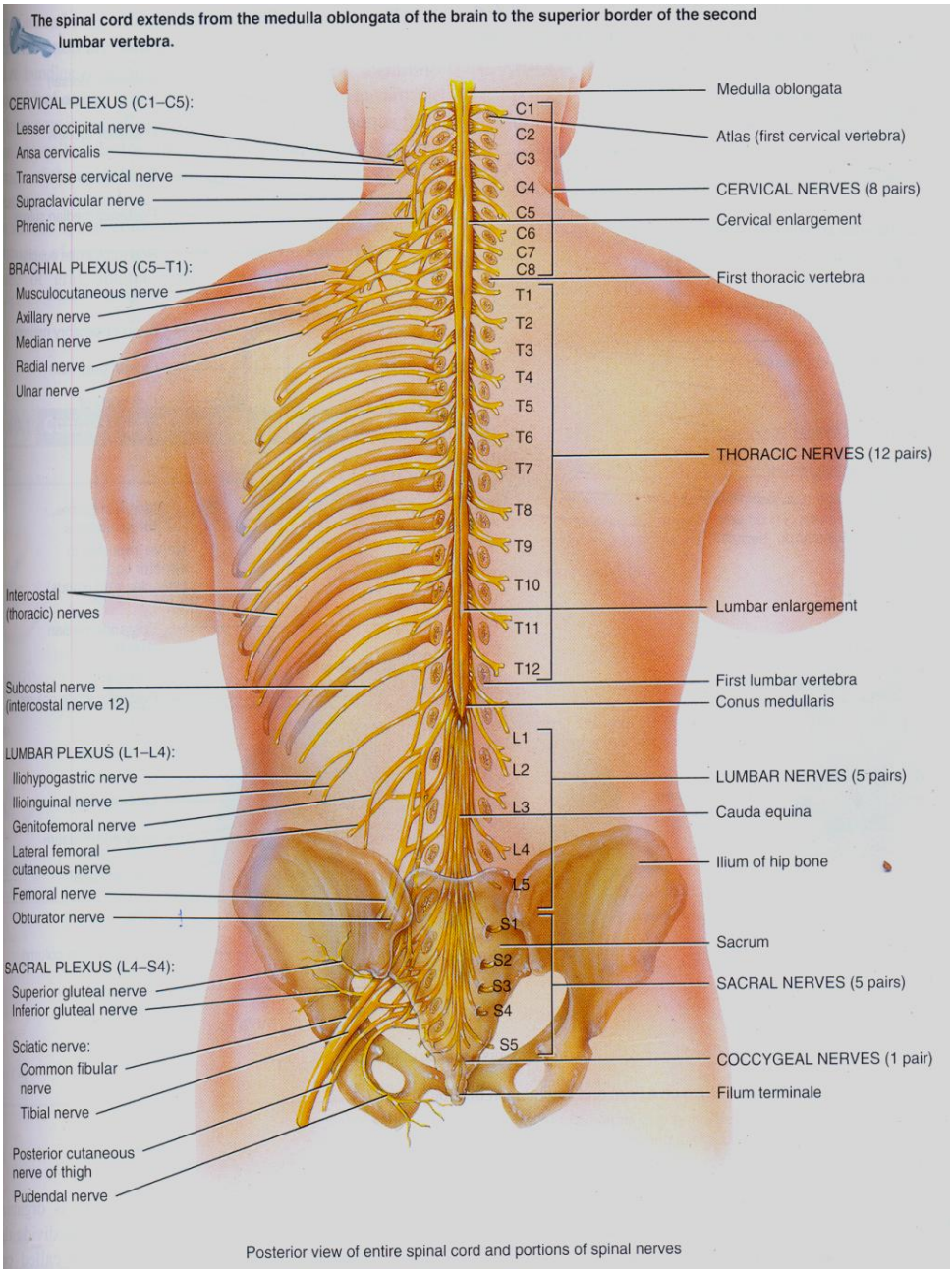

Posterior view of entire spinal cord and portions of spinal nerves

चित्र– स्पाइनल कार्ड से निकलने वाली क्रेनियल नर्वस तथा स्पाइनल नर्वस

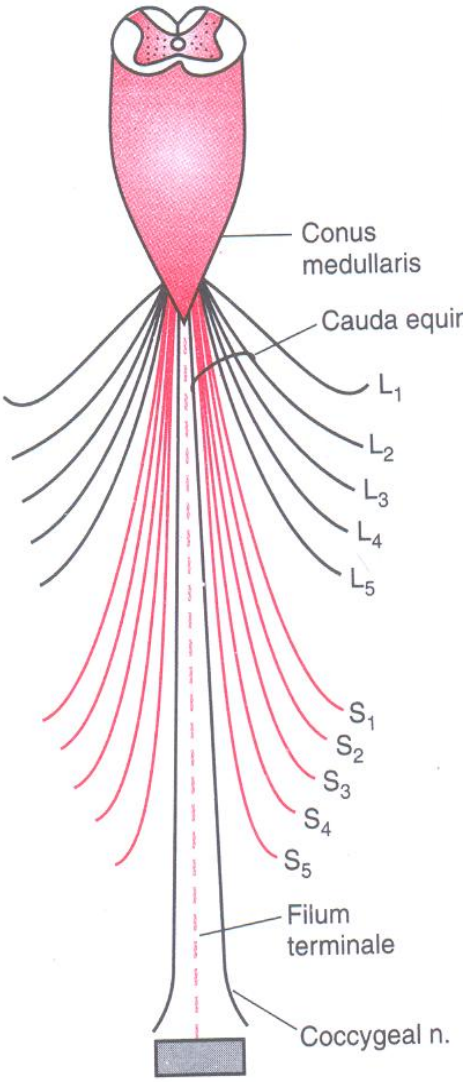

स्पाइनल कार्ड का अन्तिम छोर की स्थिति

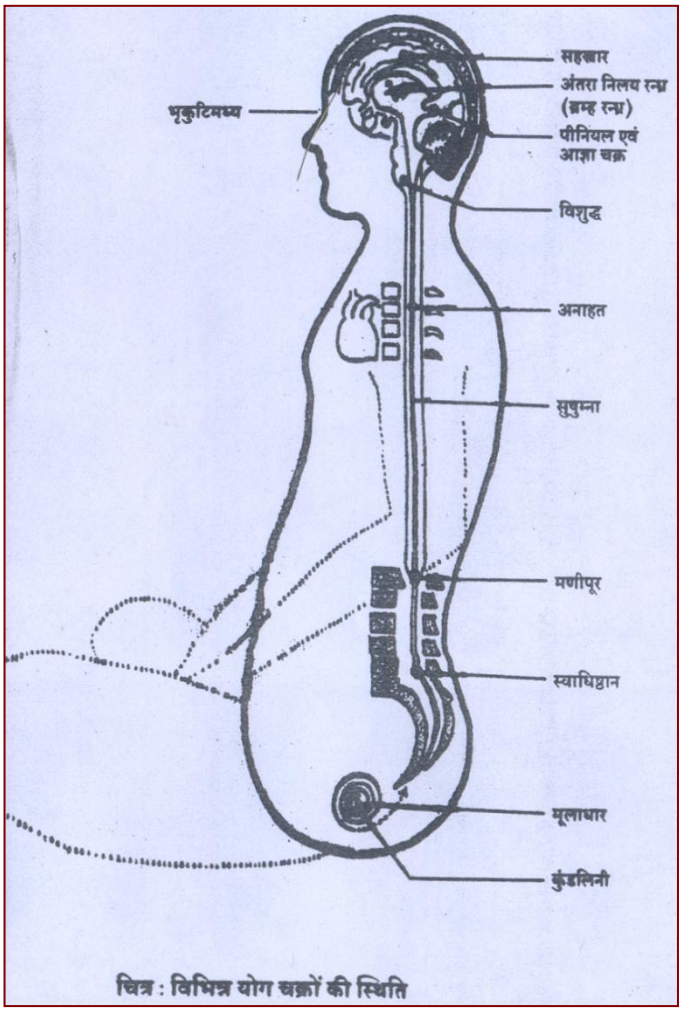

चित्र : विभिन्न योग चक्रों की स्थिति

चित्र– मानव शरीर में विभिन्न चक्रों

योगचक्रः एवञ्च नाड़ी संस्थानम्

यौगिकाः चक्राः मुख्यतया सप्ताः सन्ति यस्तु मेरूदण्डः कपाल गुहायाम् लम्बवत् केन्द्रीय नाड़ी तंत्रस्य निम्न शिखरतः ऊर्ध्वभागं प्रति विस्तारितः अस्ति एते चक्राः स्वतंत्रा इकाई सन्ति तथा च स्वनिर्धारित कार्यं कुवन्ति आसाम् क्रियाणां नियंत्रणाय प्रत्येक चक्रे एका शक्तिर्निहिता अस्ति। मेरूदण्डस्य पञ्च भागाः अधः, पञ्चचक्रैः मिलन्ति। येतु अनेन प्रकारेण सन्ति।

1— मूलाधारः :——

एषः अनुत्रिकः कन्देन च संबंधितः सर्वतः अधः चक्रः अस्ति। ऐते संम्भवतः एकैव तले स्थिताः सन्ति। एषः कुंडलिनी शक्तेः आसनं वर्तते।

2— स्वाधिष्ठानः :——

एषः मूलाधारेण किञ्चिदुपरि सेक्रमस्य आभ्यन्तरे यौनांग्ड़नां मूलस्य पश्च भागे स्थितः अस्ति।

3— मनीपुरः :——

एषः कटिभागे यत्र मेरूरज्जुः अथ च तस्य निलयः समाप्तं भवति तत्रैव स्थितं वर्तते अथ च तस्य

निम्न तले नाभ्याः स्थानं वर्तते।

4— अनाहतः :——एषः हृदयेण संबंधितः वर्तते अथ च उपरि मेरूदण्ड़स्य वक्षीय भागे स्थितं वर्तते।

5— विशुद्धः :——एषः ग्रीवायां अवटु ग्रन्थि तथा च श्वास नलिकया संबंधितः मन्यते। अस्य नियंत्रणः संभवतः पश्च मस्तिष्कस्य चतुर्थ निलयस्य तलभागेन

अस्ति यत्र श्वसनः तथा च रक्त परिभ्रमणः संस्थानस्य नियंत्रण केन्द्राः स्थिताः सन्ति। एषः ध्यान काले साधकैः अनुभव कृत श्वासावरोधः अथ च मृत्योः अनुभूतिं स्पष्टं करोति। यदा कदा सहानुकंपी तंत्रस्य उद्दीपनेन प्रकटितारः लक्षणानां तुल्येव प्रवर्धिता क्रमाकुंचनगतिः अतिसारः तथा च वमनादेः अनुभवः भवति।

6– आज्ञाचक्रः :——

एषः अनेकैः नामैः ज्ञायते उदाहरणार्थ– तृतीय नेत्रः , आन्तरिकनेत्रः , गुरूचक्रः, शिव नेत्रं वा आज्ञा चक्रस्य स्थानः कपाल गुहायां पीनियल ग्रंथौ ग्रन्थोपरि अस्ति। यस्तु मस्तिष्कस्य तृतीय निलयस्य शिखरस्य पश्च भागे स्थितं वर्तते। एषाः पीनियल ग्रन्थिः उभयोः भ्रूवोर्मध्यस्य स्थानः यस्तु भ्रकुटिः त्रिकुटिः वाकथ्यते। तस्य समस्तरे स्थितं भवति। आज्ञा चक्रः सर्वोपरि महत्वस्यास्ति। यतः साधकेन समस्ताध्यात्मिकानुभवानां अनुभूतिः अस्मिन् चक्रे भवति। आज्ञा –अर्थतस्तु आदेशः सतगुरूः स्व शिष्यैः अनेन चक्रेण आत्मिक स्तरे संपर्कं स्थापयन्ति।

7–सहस्त्रार /बिन्दु :——

थ्कवां एषा सवोच्च अवस्था अस्ति एषा सर्वोत्तमावस्था यस्तु प्रान्तस्थायां सहस्त्राः दल रूपे वर्णितः अस्ति। योगाभ्यासेन जागृतं भूत्वा कुंडलिनी दिव्य शक्तिश्च एतैः चक्रैः अग्रसरं भवन् ऊर्ध्व प्रतिवर्धयति। तथा च एतेषु चक्रेषु आध्यात्मिक चेतनायाः संचारं कुर्वन् गच्छति।

प्राचीन साहित्यः तन्त्रेषु च विविध नाड़ीनां वर्णनः अस्ति। परं शरीर रचना एवंञ्च क्रिया विज्ञानेन तस्य यथा तथ्य संबंधः स्थापनं नतु संभाव्यते नैव हितकरश्चास्ति। एते चक्राः नाड़ीनाञ्च एकः आत्मिक आधारः अस्ति। संभवतः एते प्राच्य मनीषिभः नाड़ी मात्रं तत्रिका रज्जु रूपे एव

परिभाषितं न कृता भविष्यति। परं प्राण शक्तेर्वहनकर्त्री सूक्ष्म वाहिका रूपे कृता भविष्यति। विविध नाड़ीषु केवलं त्रयः एव उल्लेखनीयाः सन्ति।

इडा पिंगला नाड़ी च केन्द्रीय नलिकायाः एक भागतः अन्य भागं प्रति गत्वा सुषुम्नया सह त्रिवलित ग्रंथनस्य / बन्धनस्य निर्माणं करोति। त्रिवेणीति कथ्यते। इडा नाड़ी या चन्द्रमपि निगद्यते। वाम नासिका रन्धेण तथा च पिंगला नाड़ी या सूर्यं कथयते। दक्ष नासिका रन्ध्रेण प्रवाहितं भवति। तृतीया सुषुम्ना सर्वाधिक महत्वस्यास्ति। सुषुम्ना मूलाधार चक्रेणं आरभ्य मेरूरज्जोः केन्द्रीय नलिकया ऊर्ध्वं प्रति प्रवर्धितः एकात्यन्त सूक्ष्म वाहिका मन्यन्ते। सुषुम्ना मेरूरज्जोः केन्द्रीय नलिका पश्च मस्तिष्कस्य चतुर्थ निलय मध्य मस्तिष्कस्य कुल्या आन्तर अग्रमस्तिष्कस्य तृतीय निलयः एव अन्तरा निलय रन्धेण गतवती बृहद् मस्तिष्कस्य गोलाधेषु स्थितपार्श्वनिलयषु प्रवेशं करोति। एते सर्वे एकैव ऋजुः लम्बवत् तलेषु भवन्ति। केन्द्रीय नलिकायां सुषुम्ना वाह्याभ्यांतरिक जगतः मध्ये एका सीमा रेखा निर्धारितं करोति। सुषुम्नायाः आभ्यान्तरे अन्य त्रयः आत्मिक वाहिकाः एकायाः आभ्यान्तरे एका स्थिताः सन्ति। एताः बज्रा/ सूर्य, चित्रिणी/ चन्द्र तथा च ब्रह्मंनाडयः सन्ति। मूलाधारतः स्वाधिष्ठानपर्यन्तं पृथ्वी तत्वः, स्वाधिष्ठानतःमनीपुरपर्यन्तं जल तत्वः, मनीपूरतः अनाहतपर्यन्तं अग्निः अनाहतेन विशुद्ध पर्यन्तं वायु तत्वः तथा च विशुद्धितः आज्ञाचक्र पर्यन्तं आकाश तत्वः वर्तते। एतेषां पञ्च तत्वानां व्याप्तिः अत्र यावत् वर्तते वस्तुतस्तु एतैः चक्रैः ऊर्ध्वं केवलं परम तत्वः अस्ति। योगी ध्यान योगेन क्रमशः मूलाधारेण ऊर्ध्वं प्रति अग्रसरं भूत्वा एतेषु तत्वेषु नियंत्रणं प्राप्य आकाश तत्वे स्थितं भवति। योगिनामनुसारैः एषः आकाश तत्वः अत्यन्त गूढ़ः अस्ति। सर्वव्यापी एषः तत्वः ब्रहमाण्डस्य प्रत्येक वस्तु अत्रत्याः यत् सूक्ष्म परमाणुष्वपि विद्यमानः अस्ति। अस्य आकाश तत्वस्य तुलना वयम् चलचित्रं पटेलेन कुर्वन्ति यावदहं चलचितं अपश्यामः

अस्माकं ध्यानः एतं पटलं प्रति आकर्षितं न भवति। अथ चाहं अस्य उपस्थित्या सर्वथा अनभिज्ञः जायन्ते। अनेन प्रकारेण यावद् वयं इच्छा वासनादि भौतिक गतिविधिषु व्यस्ताः भवन्ति। अस्माकं अस्य ब्रहमाण्ड पटलस्य उपस्थितेः किञ्चिदपि बोधं न भवति। परं साधकः यदा मनीषिभिः निर्देशित युक्त्या षष्ठाकाश तत्वे स्थितं भवति। सः /तत् वा शान्त्यावस्थां प्राप्यते आसु अवस्थासु असीम मौनः वर्तते अस्मिन् परम स्तब्धतायां अकस्मादेव गुप्त रहस्यानां ज्ञानम् बोधश्च भवति।

कुंडलिनी

कुन्डल्येव भवेच्छक्ति ततः संचालयेत् बुधाः ।
तस्थाने भ्रूअर मध्ये सरस्वत्यादि चालनम् ।।
।। उपनिषद् ।।

'' कुंडलिनी शक्तिः यातु प्रसुप्तावस्थायां वर्तते , भृकुटि मध्ये ध्यानं कृत्वा तं जागृतं कृत्वा सुषुम्नायां संचारः कारयेत्''।

कुंडलिनी कुंडलानां रूपे प्रसुप्त दिव्य शक्तिः अस्ति। या प्रत्येक मनुष्ये वसति। एषा स्थैतिक कुंडलिनी महान्ब्रहमाण्ड शक्तेः। विशिष्ट निरूपकं वर्तते। तन्त्रेषु एतां शक्तिं चत्वारः नामो निदर्शितः प्रदत्तः कुंडलिनी, ब्रह्म्शक्तिः तथा च सतपुरूषः। एताम् विद्युल्लताअपि कथ्यन्ते।

कुंडलिन्याः आसनं कंदः अस्ति। मलद्वारेण अग्ंडुलद्वयम ऊर्ध्वं उपरिवा तथा च यौनांगानां मूलतःअंगुल द्वयम्–अधः मूलाधारस्य केन्द्र बिन्दुः कंदः स्थितः। अत्र सर्वोच्च शक्तिः कुंडलिनी सार्धत्रयं कुण्डलैः सहितं एकः सर्पमिव स्थितः वर्तते। एतस्मादेव कारणेन सर जॉन वुडरफ एतां सर्प शक्तेः/ सरपेन्ट पॉवर संज्ञा दत्तः। पूर्वेवर्णित चक्राः यदाः कस्यापि आध्यात्मिक गुरोः परोपकारी मार्गदर्शने नियमित प्रबल योग

साधनया शुद्धाः भवन्ति। श्वासः सरलतया सुषुम्नायां प्रविष्टः भवति यदा श्वासः सुषुम्नायां नाडीषु प्रवाहितं भवति। मनः स्थिरं भवति तथा च एतादृशः अनुभवं भवति यथा हृदयगतिः श्वसनश्चावरूध्यते। वास्तविकेषु एषा एका गुढ़ा क्रिया वर्तते। यस्याः क्रमे जागृतकुंडलिनी प्राणं नीत्वा स्वकुण्डलान्त्यक्त्वा सुषुम्ना नाड़्यां ऋजुः स्थितं भवति। तदा सा शक्तिरूपाभूत्वा अग्रसरं गच्छन् तृतीय केन्द्र मनीपुरे यत्रतः मेरूरज्जुः प्रारभ्यते स्थिरा भवति। कुंडलिन्याः जागृतं भूतस्य अभिव्यक्तिः अस्मिन् चक्रे अधिक स्पष्टं भवति। अस्मात् कारणात् केचिज्जनाः मनीपुरं कुण्डलिन्याः आसनं मन्यते। अधः चक्रत्रयेषु (मूलाधारः, स्वाधिष्ठानः अथ च मनीपुरेः) तामस प्रवृत्तेः प्रबलता भवति। यस्य विनाशकारी प्रवृत्तिः वस्तुतस्तु आसुरी शक्तिरस्ति। अथ च अस्याः निवृत्तये प्रयत्नम्/ कर्तव्यः। द्वितीय पक्षे अनाहतः अथ च विशुद्धि चक्रः प्रतिष्ठा सम्मानञ्च प्रदानं कुर्वन्ति। अत्र राजसः किवां रजोगुणः (अधीरता, अस्थिरता) वस्तुतस्तु आसुरी दैवी संपदायाश्च सम्मिलित विशेषतानां प्रबलता अस्ति। परं आज्ञा चक्रे सत्वगुणः (आकर्षण स्थिरताश्च आध्यात्मिकतायाः गुणस्य) प्रधानता अस्ति। अथ च एषा शान्त्यावस्था प्रदानं करोति।

साधनया एकाग्रता ध्यानस्य च काले भृकुटिना निर्देशः अथ च संवेदनाः सुषुम्नया भूत्वा केन्द्रीय नलिकायां उपरिअधं प्रति च गत्वा विभिन्न केन्द्रेषु गच्छन्ति। कुण्डलिन्याः सुषुम्ना मेरूदण्डेन च आरोहणः पञ्च प्रकाराणां ज्ञापितः। यथा चीटीनां प्रचलनः, दादुरंइव कूर्दनः, पक्षीणां पक्षे प्रचलनः सर्प, वानरस्य च प्रचलनइव।

कुण्डलिन्याः सक्रियणंः जागरणं वा दीपशिखा विद्युल्लता चन्द्रं वा सूर्य इव प्रकाश पिंड़ः अथ च शरीरे स्फुरणानुभूतेः सदृशं अनुभवः भवति। केचित्साधकान् स्वर्णिम सर्पः वा कमलदलस्य पंखुड़ीनां प्रस्फुटन् सदृशं भवति। अन्यं एतादृशः किञ्चिदपि अनुभवं न भूत्वा उच्चतम केन्द्रः सहस्त्रदलानां प्रकाशमानः कमल रूपं यथा अनुभवः भवति अत्र एतं तथ्यं महत्वं दाष्यते यत् समस्त व्यक्तिभ्यः अनुभवानां

कोऽपि एकः प्रतिमानः नास्ति अथ च एषः समस्त शिष्यान् पृथक् पृथक् भवितुं शक्यते। साधकं शिष्यं वा ध्यान काले भवितारः प्रकाश दर्शनः वा अनुभवानां भ्रान्तव्याख्या महानता परमानन्दस्य च आध्यातिमक उपलब्धि रूपे कर्तुं शक्यते। परं एतेतु केवलं मार्गे प्रगतेः संकेतं वर्तते। सदुपलब्धिस्तु केवलं चतुर्थ अनाहतेन षष्ठ आज्ञाचक्र पर्यन्तं दृढ़ स्थापना स्थिरतायाश्चानन्तरेव भवति यदा इडा पिंगला सुषुम्नायाश्च भृकुटि मध्ये संमेलने आत्म ज्योतेः दर्शनं भवति। एतमेव त्रयमेकत्र संगमः इति कथ्यन्ते।

इडा सुषुम्ने शिव तीर्थ केऽस्मिन्
ज्ञानांबुर्भिक्रेऽथ ततः शरीरे,
ब्रम्हाबुभिर्स्नाति तयो सदायः,
किंतस्य गांगेरपि पुष्करैर्वा ।।

अस्मिन् मनुष्य शरीरेवयः सत् गुरोः मार्ग दर्शने भृकुटौ इडा पिंगला अथ च सुषुम्नायाः पवित्राध्यात्मिक त्रिवेणी संगमे स्नानं करोति। तत् प्रबुद्धव्यक्तये गंगा यमुना तथा च पुष्करस्य किं लाभः।

तृतीयम् सोपानम्

आसनः ध्यानञ्च

ध्यानाय आसनस्य अतीव महत्वं वर्तते। प्रायः ध्यानाय चतुर्थ प्रकारस्य आसनाः अनुकूलं बोधयन्ते। सिद्धासनः , पद्मासनः, सुखासनः स्वस्तिकासनश्च। उपर्युक्तासनेषु कस्यापि एकासनस्य चयनं करोतु यः स्थिरः सुखदाता च भवेत् तथा च यस्मिन् सुदीर्घं कालं तिष्ठते। आसन ग्रहणात् पूर्वं वस्त्रम् कम्बलं च चत्वारि परतं कृत्वा कस्यापि शुद्धः शान्त निर्विघ्न स्थाने विस्तारयतु। एषः समतल स्थानम् मसकः मत्कुणादि रहितं भवेत्। चेत मसकादीनां समस्या असतु तर्हि मसक निवारणिकायाः उपयोगमपि कर्तुं शक्यते ध्यानाय सर्वाधिकोपयुक्तः कालः ब्रह्म मुहूर्तः अर्थात् प्रातः त्रिवादनतः षष्ठ वादनं यावत् वर्तते।

समयेऽस्मिन् प्रकृतिः अथ च वाह्य वातावरणः सहायकाः भवन्ति। तथा च आंतः च उदरः रिक्तः भवति अन्यदीय समये इन्य बिघ्नानामतिरिक्तं तथा च आंतः उदरेच मलस्थितेन ध्याने विध्नविक्षेपश्च उत्पन्नः भवति। अस्मादेव ब्रहम मुहूर्तः निर्देशितः कृतः। अन्यथा कोऽपि समयः ध्यानाय उपयुक्तः अस्ति। आसन ग्रहण काले एषः ध्यानो विधेयः यत् ग्रीवा सिरः कटिश्च ऋजुः एका सरल रेखायां असतु तथा च चिबुकः कंठ कूपं प्रति किञ्चित् संकुचितः अस्ति। आसन ग्रहण काले सन्मुखं प्रति नम्यपुनः ऋजुः तिष्ठते अस्यां क्रियायां पुरतः नमनेन गुदा पृथ्वीतः ऊर्ध्वं उत्थितः भवति। तथा च ऋजुभूते सति एकस्मिन् त्रिकोणे स्थिरं भवति एषः त्रिकोणः उभौ आसनास्थि गण्डकैः तथा च कन्देन निर्मितो जातः। कन्दं केचिज्जनाः मनसः निम्न स्तरस्य केन्द्रमपि कथ्यते। कन्दः अस्य त्रिकोणस्य शीर्षं निर्मीयते। यः उपर्युक्त

विधिना आसने स्थितौ पृथ्वीं प्रति नमति। सिद्धासने एड़ी/ पिंड़ली अस्मिन् स्थाने प्रभावं स्थापयति।

ध्यानायचयनकृत आसने मेरूदण्डं ऋजुः तथा च सिरः ग्रीवा, कटिं सरल रेखायां स्थापनः अति आवश्यकः वर्तते। उभौ हस्तौ पुरतः पादयोः मध्यमध्ये अनेन प्रकारेण स्थापयेत् यत् वामकरतलापरिदक्ष करतलः स्थितं भवेत् तथा च करतलौ ऊर्ध्वं प्रति अस्तु किं वा यस्मिन् सुगमता प्रतीयते तया् विधिना हस्तौ स्थापयित्वा अवस्थितः। कूर्परौ/ स्कन्धौ पृष्ठं नीत्वा वक्ष स्थलं ऊर्ध्वं उत्थापयित्वा मूलबन्धेन सह सामान्यरेव उड्डीयान बंधः सलंग्नेन कुण्डलिनी शक्तिं जागृत करणे साहाय्यं मिलति। अनेन प्रकारेण दृढ़ आसनं गृहीत्वा नयनं निमील्य भृकुटि मध्ये लक्ष्यं कर्तारन् स्व सदगुरोः आदेशानुसारं मंत्रस्य शनैः शनैः जपं कुर्यात्। क्रमशः अनेनाभ्यासेन पादयोः तथा च धड़स्य भागः शून्यत्वं जातः भवति वा यतः एतेषु भागेषु रक्त संचरणगतिः न्यूना भवति। एषः प्रभावः क्रमशः ऊर्ध्वं प्रति वर्धते येन शरीरः सामान्यं प्रतीयते। अनेन प्रकारेण आसनोपरि उपवेशनेन शरीरस्य वाह्य ग्राही प्रग्राही च संवेदनाः। शिथिलाः भवन्ति। वाह्य संवेदनायाः शिथिले जाते नाड़ी तन्तुभिः मस्तिष्कं प्रति उद्दीपनस्य गमनः अवरूध्यते अनेन संवेदी प्रान्तस्थायाः क्रियापि शरीरस्य संबंधित भागे न शक्तुं भवति। शरीरो अचलः जातः। परं मस्तिष्के विचाराणां श्रृंखला निरंतरं प्रचलति। यतः पारतंत्रिका अन्तर्ग्रन्थने कार्यं भवति। मनोवृत्तयः चंचलाः भवन्ति। अथ चमनः कदापि विचारैः रिक्तं न भवति। एषः निरन्तरं एकानन्तरे एकः विचारान् गृह्यते त्याज्यते च वर्तते। मनसः एषाः चंचलता एकाग्रतायां बाधकोऽस्ति। मस्तिष्के एषा चंचलता अंतर्ग्रन्थनेषु निरंतरं प्रचलितारः क्रियायाः परिणामः अस्ति। एषा विचार श्रृंखला साधकस्य ध्याने एकाग्रता आनेतुं बाधकः अतिकष्ट साध्यश्च भवति। यतः ध्यान काले मानवस्य प्रसुप्त संस्कारः (संस्कार जन्य बुद्धिवृत्तयः) मस्तिष्कस्य अधः तलेनोर्ध्वं उत्थितः भवति। साधकः ध्यान काले गुरू उपदेशित ध्येय पथे स्वमनः केन्द्रितं कर्तुं

इच्छते। अथ च एकैव विचारे मनं स्थिरं कर्तुं इच्छति। येन अन्य विचारः न प्रकटितं भवेत। परं प्रारम्भिक अवस्थायां एतादृशः न कर्तुं शक्यतेति कारणेन साधकः विचलितं भवति तं अनेनकाठिन्येन निराशं न भवितव्यम् यतः लगनेन सह अनवरतं अभ्यासेन यदा ध्यानस्य अवस्था परिपक्वं भवति तदा सद्गुरोः आदेश कृपाप्रसादेन च मनसः अनियंत्रित चंचलतायाः निरोधः भवति। कालमेकः एतादृशः आगच्छति यदा मस्तिष्कस्य प्रान्तस्थीय अन्तर्ग्रन्थीय प्रक्रियापि शिथिला निरूद्धा वा जायते। एतादृक् ध्यानकाले साधकं उपदृष्टा वा साक्षी भावेन च एकं विचारं शान्तं अन्यच्च द्वितीयं विचारं प्राकट्यं दर्शितव्यम् सर्वाधिकं महत्वपूर्णमस्ति एकस्य शान्तिः द्वितीयस्य च प्राकट्यान्तरः। यावत् विचाराणां क्रमः अनवरतः प्रचलति तावत् विचाराणां पृष्ठभूमिः किं अस्ति एतद् ज्ञानं असंम्भवः अस्ति अस्य ज्ञानं तदैव संभवः अस्ति यदा ध्यानं स्व स्वरूपे केन्द्रितः कारयेत्। कर्तव्यः वा। ध्यान योगेन मनसः कार्यान् ज्ञाने साहाय्यं मिलति पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि (श्रोत ,त्वचा, चक्षु, रसना घाणञ्च) पञ्च कर्मेन्द्रियाणि (हस्त, पाद, वाक्, गुदा, उपस्थश्च) एवं एकादशी इन्द्रियाः मनं भवति। मनः इन्द्रियाणां नृपः कथ्यते (मनसः कार्यः क्रमबद्धः अस्ति) मनः बुद्धयाहंकारस्य आधारभूमिः चित्तः कथ्यते। एषः चित्तः चलचित्रस्य पटाक्षेपः इव अस्ति। मनसि विचाराणां आगमने गमनस्य च गतिः एतावता अधिकं भवति यत् चेत् एकस्मिन् काले चित्ते केवलं एकैव विचारः भवति तथापि तीव्रगत्याः कारणेन मनुष्यः एषः अनुभवम् करोति यत् अनेकाः विचाराः मस्तिष्के विचरणं कुर्वन्ति। अस्याः वास्तविकतायाः ज्ञानं तु तदैव भवितुं शक्यते यदा तु एक विचारस्य आगमने एव अन्य विचाराणां आगमनः पूर्णरूपेण अवरूध्यतेस्म। अस्य सिद्धान्तस्य आधारोपरि चलचित्रे चित्राणां प्रदर्शनगति इत्थं अधिकं स्थाप्यते यत् चित्रेषु क्रमबद्धता गतिः सामंजस्यश्च च स्थापितं भवति। यदा तु पटले एकस्मिन् समये केवलं एकैव चित्रम् उद्भवति आगच्छति। चलचित्रे वस्त्र पटलेषु नेपथ्ये चित्रान् दर्शन काले अस्माकं चित्राणां पृष्ठस्य पृष्ठभूमेः बोधं न भवति

अनेन प्रकारेण मनसिविचाराणां श्रृंखलायाः प्रचलन कारणेन तस्य पृष्ठे किं वर्तते एतस्य ज्ञानं न भवति। मनसः कार्यः क्रंमबद्ध जातेन एकस्मिन् समये एकैव विचारं वस्तुं वा सः गृह्यति। यदा एकः विचारः अतीते गच्छति तदा तस्य स्थाने अति शीघ्रं अपरः विचारः अनुगृह्णाति। एषः मनसः विचारान् ग्रहणं त्यागश्च क्रमः अनवरतं वानरवृत्यैव प्रचलति। आसनः ध्यानस्य च परिपक्व अवस्थायां मनसः अस्याः चांचल्ये वृत्तेः निरोधं भवति। यथार्थतः मनः समस्त विचारैः रहितं भवति। अस्यां अवस्थायां मनः एकैव विचारोपरिस्थिरं भवति। एतमेव मनसः एकाग्रता इति कथ्यते। एतादृशी एकाग्रतायाः स्थितौ एकः एव महद् विचारः यस्तु ध्येयः अस्ति पुनः पुनः क्रमबद्धं भूत्वा निरंतरं लुप्तः प्रगटश्च भवति अथ चान्यः विचारः तस्य स्थानं न गृह्यति एतदेवएकतानता यथार्थतः लक्ष्यस्य ध्येये स्थैर्यं लक्षण समाधिरस्ति। अस्यां स्थितौ अनतर्ग्रन्थन स्तरोपरिं एकैव लक्ष्य मात्रं अवशिष्यते। अत्र शरीर विज्ञानः समाप्तं भवति।

अधुनाध्याने मनसः कानिचित् अन्यान्य प्रक्रियासु विचारं कुर्वन्तु चित्तं अन्यविषयादपसारयन् एकः ध्येय विषयेवृत्ति मात्रेण बंधनः अर्थतः स्थैर्यं धारणा अस्ति। अस्याः धारणायाः अनवरतं एक तुल्यं स्थिति निर्माण किं वा तद् वृत्तेः समान प्रवाहेण सततं उदयन् ध्यानः कथ्यते। एषः ध्यानः यदा समस्त बाह्य उपाधिना रहितं भूत्वा अर्थमात्रमेव प्रकाशितं करोति तदा तां समाधि कथ्यते। अथ च बुद्धिः यदा ध्येये समाहितं भवति तं समाधि इति कथ्यते धारणाः, ध्यानः, समाधिश्च त्रयं मिलित्वा संयम इति कथ्यते (त्रयमेकत्र संयमः) । बुद्धेः सूक्ष्मतायाः सीमा साक्षात्कारः अस्ति।

अहं अन्तमुर्खं कथं न भवेयम् ? एकः कोशीय जीवेन बहुकोशीय प्राणि मात्रः एवं मानव शरीरस्य उत्पत्तिः विकाशस्य वाचेत् अध्ययनं कर्वामः तर्हितु एतद् स्पष्टं भवति। यत् सर्व प्रथम संवेदना वाहक नाड़ी संस्थानः तथा च ज्ञानेन्द्रियाणां विकाशः बहिर्मुखी अभवत्। अस्याः नाड़ी सस्थानस्य प्रमुख कार्यः बाह्य जगत कारणेन उत्पन्न

संवेदनाः गृहीत्वा शरीरं निरतरं वाहृय वातावरणस्यानुकूलः क्रियाशीलः स्थिरं कारयेत्। विकाश क्रमस्य मध्ये क्रमशः अस्याः नाड़ी संस्थानस्य कोशिकाः वाह्य स्तरस्य ऊतकानां गाम्भीर्ये प्रविशन्ति गताः यतः वाह्य स्तरे भूतस्य कारणेन एतं संस्थानं क्षतिग्रस्तस्य संभावनाः संभावितः। एषः नाड़ी संस्थानः मेरूदण्डः कपालगुहायां च स्थितं अभवत्। अस्य केन्द्रीकरणानन्तरमपि एषः संस्थानः वाह्य संवेदनाः ग्रहणं करणस्य कार्यः प्रमुख रूपेण सततं संलग्नाः। यतः अस्माकं समस्त संवेदना वाहकः नाड़ी तन्तवः बाह्य संवेदनाः ग्रहणं कर्तुं निर्मितः वयम् जन्मतः एव बाह्य जगत विषयेषु वासस्याभ्यस्ताः सन्ति। अस्मादेव तं प्रति आकर्षितं भवन्ति। बाह्य जगतः आकर्षणः इत्थं प्रबलः भवति यत् मनुष्यः पूर्णतः अस्मिन् प्रभावे वसति। चेदहं नाड़ी तंत्रस्य भ्रूणीय विकाशं अपश्यम् तर्हि अयम् प्राप्स्यामि यदस्य निर्माणः एकः अन्तस्तरस्य रूपे भवति। असौ एक कोशिय स्तरेण असंख्य कोशिकाः विकसितं भूत्वा मेरूरज्जु सेतुबन्ध बृहद् मस्तिष्कस्य च र्निमाणं भवति। परं अति रोचकः तथ्यः इदमस्ति यत् नाड़ी तंत्रस्य समस्त कोशिकानां निर्माणे अशंदायी भूतानन्तरे एषः अन्तस्तरः निष्क्रियः जायते। यथा बाह्य संवेदनाः जगतः परा आंतरिकः जगतः मध्ये एकः दीवारः अस्तु। गहन ध्यान योगस्य माध्यमेन वयम् एतमवरोधं तीर्त्वा भौतिकेनाध्यात्मिक जगति प्रविष्टुं प्रयत्नं कुर्वन्ति।

यथा– यथा ध्यानः प्रगाढ़ः भवति मनुष्यः अंतर्मुखं भवति। यावत् मनः, वासना, इच्छा कामादेः वशे अस्ति, प्रसुप्त कुंडलिन्याः कुण्ड़लैः वाह्यं प्रति अधिकाधिकं उत्क्षिप्यते यथा तु स्प्रिंगंस्य कुंड़लान् मर्दनेन भवति। आसनः ध्यानेन च एतां कुंडलिनीं चालनेन एषा स्वकुण्डलान् त्यक्त्वा सष्शुम्नानाड़्यां ऋजुः उत्तिष्ठति। एषः तदैव संभाव्यते यदा ध्यानेन वाह्य संवेदना शून्यं भूत्वा अन्तर्मुखं अभवम्। अस्यां स्थितौ मनसः संपर्कः इन्द्रियैः अथ च तस्य विषयात् त्याज्यते। अत्र पर्यन्तं यत् श्वास प्रश्वासस्य प्रक्रियायाः अपिभासः न भवति। सुषुम्ना बाह्य जगतः वा अन्तर्जगतः

मध्यस्य दीवारः आवरणश्चास्ति। एषा सषुम्ना मुख्य नाड़ी अस्ति यस्तु मेरूदण्ड़स्य आभ्यन्तरे सूक्ष्मनली इव ऊर्ध्वं प्रति मस्तिष्के चतुर्थ तृतीयश्च निलयेन अन्तरानिलय रन्ध्रेण गच्छन् उभौ पार्श्व निलयान् गच्छति। अस्मिन् अन्तरानिलय रन्ध्रं एव ब्रहमरन्ध्रं ज्ञातव्यम्। सुषुम्ना नाड़याः आभ्यन्तरे एका बज्रा नाड़ी अस्ति। बज्रायाः आभ्यन्तरे चित्रिणी अथ च चित्रिणी मध्ये ब्रहम नाड़ी वर्तते। एताः नाडयाः अतीन्द्रियः मानसिकश्चास्ति। यस्य ज्ञानं केवलं योगिनः एव भवितुं शक्यते। कुंडलिनी शक्तेः जागृतं भूत्वा सुषुम्नायां प्रविष्टे सति बाह्यस्य इडा पिंगला क्रमशः चित्रिणी बज्रायाः नाम्ना ज्ञायन्ते। बहिर्जगति इडा पिंगला अथ च सुषुम्नया कार्यः भवन्ति। अन्तर्जगति सैव सुषुम्ना अग्निरूपा अस्ति। अथ च बज्रा चित्रिणी माध्यमेन कार्याणि संपन्नाः भवन्ति यदा जागृत कुण्डलिनी प्रथम केन्द्रं विकसितं कर्तारन् भेदनकर्त्री द्वितीय केन्द्रं विकसितं करोति। तदा प्रथम केन्द्रमपूर्वं स्थितौ आगच्छति अर्थतस्तु अवरूध्यते। एषा शक्तिः मेरूदण्डान्त स्थितं चक्रान् भेदनकर्त्री आज्ञाचक्रे स्थिरं भवति पुनश्चापि संस्कारः तथैव स्थितः एषा अवस्था सबीज समाधिरस्ति।

विज्ञानः ध्यान योगश्च

आसन ध्यानस्य च क्रिया एका वैज्ञानिक पद्धतिरस्ति। यतः शरीर रचना विज्ञान अथ च शरीर क्रिया विज्ञानः संपूर्ण मानव प्राणिषु समान रूपेण एक इव अस्ति। अतः एतत् विज्ञान सिद्ध ध्यान योगस्य उपलब्धयः सर्वेभ्यः जाति पंतः अथ च संप्रदायादेः बिना सुसाध्यः अस्ति। निज स्वरूपे अवस्थितं भवितुं वर्णाश्रमः आयोश्च कोऽपि मर्यादानास्ति। अस्यां सत्यतायां शंका न भवेत्। अस्य ध्यान योगस्या धारः एषः अस्थि मांस निर्मितः भौतिक शरीरः एव अस्ति। यदा कस्यापि एकं स्व अनुभूतिः भवितुं

शक्यते तर्हि तुकस्याप्यन्यमपि प्रयत्न निष्ठया च सुसाध्यो भविष्यति। एतस्मादेव एषः विज्ञान संगतः अस्ति। एतं अवबोधनाय अस्माकं मानवः संसारस्य चोत्पत्ति विकासे विचारं कर्तुं आवश्यकतास्ति। भारतीय संस्कृतेः योगःदर्शनानुसारं सर्वप्रथमः किञ्चिदपि न आसीत्। चेतनप्रकृतेः सान्निध्ये आगमनेन प्रतिबिम्बितं जातेन प्रकृतौ अस्थिरताः आरम्भः भवति। एतदेव प्रकृतेः हिरण्यगर्भस्य अवस्थां अस्ति। मूल प्रकृतेः अनेन क्रमशः विकाशः भवति।

1– प्रथम विषम परिणाम महत्तत्व

एतदेव लिगः अस्ति अथ च सृष्टि नियमानां बीजम् वर्तते। अनेन समस्त सृष्टेः उत्पत्तिः भवति।

2– द्वितीय विषम परिणाम अहंकारः :

अहं भावेन एकत्व बहुत्व सर्व प्रकारस्य भिन्नतां उत्पन्नकर्तारः परिणाम अहंकारः अस्ति। मन, बुद्धि ,अहंकारः, चित्तश्च चतुर्थ प्रकारस्य वृत्ति भेदेन अन्तःकरण चतुष्टय कथ्यते।

3–ग्राहय सूक्ष्म विषम परिणामः

पञ्च तन्मात्राः पञ्चकर्मेन्द्रियान्कर्मकर्त्री शब्द–तन्मात्राः स्पर्श– तन्मात्राः, रस –तन्मात्रा, गंध –तन्मात्राः, एते विभाजक अंहकारस्य ग्राह्य विषम परिणामाः सन्ति।

4– एकादशेन्द्रियाः ग्रहण विषम परिणामः :––

परस्परं विभक्तारः ज्ञानेन्द्रियाः शक्तिरूप श्रोत, त्वचा, चक्षुः, रसना, घ्राण पञ्च कर्मेन्द्रियाः शक्ति रूप, हस्त, पाद, वाक् ,गुदा, उपस्थः एकादशं मनश्च एते विभाजकाहंकारस्य ग्राह्य विषम परिणामाः सन्ति।

5– ग्राहय स्थूल विषम परिणामः :––

पञ्च स्थूलः भूताः– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाशश्च पञ्च तन्मात्राणां ग्राह्य स्थूल विषम परिणामाः सन्ति।

विषम परिणामाणां कारणेन सत्वे , रजस, तथा च तामसप्रभावः वर्धते। एते चतुर्विशति जड़तत्वाः सत् ,रजस, तमसश्च गुणत्रययुक्ताः सन्ति। सत्वस्यगुणः–प्रकाशः, रजसः–क्रिया अथ च तमसः स्थितिरस्ति। एतैः चतुर्विशति जड़तत्वैः भिन्न पञ्चविशति तत्वः, चेतनः वर्तते।

संक्षेपे चेतनः मूल प्रकृत्या च महत्तत्वः तेनाहंकारः अहंकारेण षोडष समूहः अथ च पञ्च स्थूल भूतः उत्पन्नं भवन्ति। प्रकृति रूपी चित्तं मिलित्वा एते चतुर्विशति जड़तत्वाः सन्ति। चेतन तत्व संयोगेन विरचित एतत् सर्वं विश्व अस्ति। यस्मिन् समस्त प्राणीनां उत्पत्तिः भवति। समस्त प्राणिषु मानवः एव अद्वितीयः अस्ति। पाश्चात्य विज्ञानेनापि एतदेव सिद्धं भवति यत् संसारे मनुष्येन वर्धयित्वा अन्यः नास्ति। मनुष्यः एव एकः एतादृशः प्राणी अस्ति यः समस्त प्रापञ्चिक बन्धनान् कर्तयित्वा स्वमूल स्वरूपे पुनः प्रविष्टुं शक्तः। ऋग्वेदस्य पुरूष सूक्ते विराट पुरूषस्य वर्णनंकर्तारन् सहस्त्रशीर्षः सहस्त्राक्षः, सहस्त्रपादयुक्तारः, समस्तब्रहमाण्डं व्याप्यमपि दशांग्डुंलीनांसमः अवशिष्टः कथ्यते–'' त्यत् तिष्ठति दशांगुलम्''। मानवः एव सृष्टेः केन्द्रमस्ति। मानवस्य बृहत् मस्तिष्कः अनुमानतः दशाग्डु.ल परिमाप्तार अस्ति। अस्मिन् दशाग्डु.ल परिमाप्तारः प्रदेशे मूल पुरूषस्य ध्यानेन साक्षात्कारः संभवः वर्तते।

शरीराध्ययनं कर्तुं छात्रान् शवच्छेदनः अथ च सूक्ष्मरचनां ज्ञानाय् उतंकानां सूक्ष्म कर्तनः सूक्ष्म दर्शी एवं जीव रसायन शास्त्र इत्यादेः साहाय्यं गृह्यते एव। येन सूक्ष्म तत्वानां ज्ञानं भवेत्। अनेनप्रकारेणाध्यात्म विषये स्थूल भूतरूपी शरीरं आसने दृढ़ता पूर्वकं स्थापयित्वा अथ च बाह्य संवेदना शून्यं भवन् मनं कस्यापि एक विषये ध्येये वा एकाग्रं कर्तारन् अंतर्मुखं भवेत्। तदा अंतर्जगति प्रवेशः भवति। एतादृक् समये सुषुम्ना रूपा पटाक्षेपस्य बर्हिर्गति विधिभिः निवृतं भवन् योगीनां बज्रा, चित्रिणी अथ च

ब्रह्म नाड्याः संपर्कः स्थापितं भवति। यथा–यथा निरंतरं प्रयासेन ध्यानस्य अवस्था प्रगाढ़ः भवति तथा–तथा साधकं कानिचित् विशेषानुभूतयः भवितारः। यथातु तुषारः, धूम्रः,अग्निः, ताराः, विद्युल्लतासूर्य, चन्द्रादेः दर्शनं सुगंध, सुस्वादु, मृदुस्पर्शः एवं नाद ध्वनेः अनुभवः ध्यान प्रभावेण शरीरः सामान्यं भवति। एवञ्च निरोगः भवति जायते वा विषयाणांलिप्सा समाप्त प्रायः भवति। कान्तिः प्रतिभा च वर्धते विशेषानन्दः मिलति। उपर्युक्त परिवर्तनाः प्रगति सूचक चिह्नाः सन्ति। एतैः अनुभूतिभिः साधक मनसि दृढ़ता विश्वासश्च प्रवर्धते यत् एषः तकनीकः किं वा प्रकिया सत्येवास्ति। अनेन प्रकारेण सूक्ष्म तत्वानां क्रमशः शुद्धत्वं जातेन मनः परिवर्तते। अथ च स्थूलतः प्रत्यावर्तितः मूल प्रकृतिं प्रति अग्रसरं भवन् ध्यानस्य उत्कृष्ट स्थितौ चेतन स्वरूप परम आत्मायाः साक्षात्कारः करोति। यथा मृतिकालिप्त रत्नः प्रक्षालने तेजोमयं भूत्वा चकाशते। तथैव भेद भ्रमस्य नाशं भूत्वा स्व स्वरूपस्य बोधं भूत्वा आनन्दस्य प्राप्तिः भवति। समस्त प्रापंचिक बन्धनात् निवृत्तिः जायते। ध्यानं निर्विषयं मनः भौतिक विज्ञान इव समः वा एताषां अनुभूतिनां प्रत्यक्ष प्रदर्शनः संभवं नास्ति। यतः ध्यानस्योपलब्धयः: पराभौतिकः सन्ति। अथ च स्वानुभवस्य भवन्ति। महदेव मार्मिक शब्देषु कथ्यते। नाहं मनुष्यो न च देव, यक्षो न ब्राह्मणाः, क्षत्रिय वैश्य शूद्रः। न ब्रह्मचारी नगृहीवनस्थो, भिक्षुर्न चाहं निजबोधरूपः। वस्तुतस्तु अहं मनुष्यः देव, यक्ष, ब्राहमणः, क्षत्रियः, वैश्यश्च, शूद्रादिकं नास्मि। अहं ब्रह्मचारी, गृहस्थ वानप्रस्थो अपि नास्मि, अहं नास्मि भिक्षुकः तत् पुनः अहं किमस्मि ? अहं नित्य शुद्ध चैतन्य बोधरूपोऽस्मि। ध्यान योगस्य गुह्यंता क्रियाविधिञ्च पञ्च कोषाणां माध्यमेनापि अवबुद्धयते कोषान् अनावृत्य अथ च आवरणः किवां म्यानः इति कथ्यन्ते। मानव शरीरे स्थूलतः सूक्ष्माति सूक्ष्मं पञ्चकोषाः सन्ति। अन्नमयः प्राणमयः, मनोमयः, विज्ञानमयः, आनन्दमयश्चः––

1– अन्नमय कोषः :––

एष अन्नेन उत्पद्यते। अथ च अन्नेन वर्धते, एषः अन्नमयकोषः पञ्च भूतैः निर्मितः अस्थि मांसः एवञ्च इन्द्रियमय शरीरः अस्ति। एषः त्वचया गृहीत्वा शरीराभ्यन्तर स्थित आंत्र गुहायाः अन्तस्त्वचा, श्वसन तंत्रस्य, अन्तस्त्वचा तथा च रक्तवाहिनीनां अन्तर स्तर पर्यन्तं भवति।

2–प्राणमय कोषः :––

पञ्च कर्मेन्द्रियान् अथ च पञ्च प्राणानां निर्मितः वर्तते। अस्मिन् प्राणमयकोषे क्रिया शक्तिः वर्तमाने गतेसति एषः कार्यरूपः भवति। एषः प्राणमय कोषः आंत्रगुहायां अथ च रक्त नलिकासु स्थितं वर्तते, महाप्राणाः पञ्च सन्ति, प्राणवायु–उपरि इन्द्रियाणां कार्य संचालनं करोति। अपान वायुः अधः इन्द्रियैः मल मूत्र त्यागादीनां कार्यम् करोति। समान वायुः भक्षितः वा पीत जलादिकं पाचनस्य कार्यं करोति। व्यानवायुः सर्वासु नाडीषुपरिभ्रमन् रूधिरस्य संचारं करोति। उदान वायुः सूक्ष्म शरीरं शरीरान्तरेषु लोकान्तरेषु वानयति एषः प्राणमय कोषः चेतन रूप आत्माम् आच्छादितं कृत्वा क्षुधा पिपासा आलस्यादिकं उत्पन्नं करोति। अथ च जड़ इन्द्रियान् चालयति।

3– मनोमय कोषः :––

मनः पञ्चेन्द्रियाणां तृतीय कोषः अस्ति। अस्मिन् इच्छा शक्तिः अथ च ज्ञानम् विद्यमानः अस्ति। मनसः प्राणस्य च अतीव गहन संबंधः भवनेन मनसं प्राणतः पृथकीकरणः कठिनं वर्तते। एषः तृतीय कोषः पञ्चकोषाणां मध्यस्य चास्ति। यावत् वृत्तिः बर्हिमुखी भवति। मनः प्रपंचे संलग्नयति अथ च बाह्यं प्रति आकर्षितः भवति।

असौ मनः कदापि रिक्तं न भवति, सदैवव्यस्तं भवति। वस्तुतस्तु विषयान् गृह्यति त्यागयति च। बहिर्मुखी भवनेन मन इन्द्रियैः मिलित्वा वृत्तिषु क्रीडति। अथ च मेरूरज्जू मस्तिष्कस्य च निलयानां आन्तरिक कलायाः बहिः सांसारिक मायायां व्यस्तं भवति, यथा तु जागृत स्वप्न सुषुप्तिषु च भवति।

ध्यानस्य प्रगाढ़ अवस्थायां बाह्य संवेदना शून्यत्वे गते एषः मनः बाह्याकर्षणैः वैपरीत्यं शुद्धञ्च भूत्वा उन्मनी अवस्थां प्राप्यते। मनसः उन्मनी अवस्था तदैव भवति यदा कुण्डलिनी शक्तेः प्राणं गृहीत्वा सुषुम्नानाड़्यां प्रवेशं भवति। परं कार्यस्य स्वरूपं परिणामश्च भिन्नाः जायन्ते। साम्प्रतं कुण्डलिन्याः सुषुम्नानांड़्यां प्रविष्टे सति मनः बज्रा, चित्रिणी अथ च ब्रह्मनाड़यां संलग्नः जातः।

4– विज्ञानमय कोषः :––

एषः कोषः अहं बुद्धि प्रधानश्चास्ति। एषः बाहृय जगतः अहं अस्तित्वस्य अपेक्षाकृतं भिन्नः वर्तते। एषः शुद्धः अहम् एव अवशिष्यते। एषः कोषः अन्तर्जगतः सूक्ष्मातिसूक्ष्म भवनेनस्वानुभवस्य विषयः वर्तते सुषुम्ना नाड़ी यावत् बहिः कार्यं करोति। तावत् अज्ञान अविद्यामयञ्च भवति। उन्मनी अवस्थायां एषा सुषुम्ना अग्नि रूपा अस्ति। चित्रिणी रूपा नाड़ी आत्मायाः (पुरूषस्य), मनरूपः चन्द्रः वर्तते। तथा च बज्रा रूपा नाड़ी तस्याः सूर्य रूप चक्षुः वर्तते। विज्ञानमय कोषे चित्रिणी नाड़्या रचना भवति। यस्यानुभवः साधकंबज्रा नाड़्याः प्रकाशेन/तेजेन प्राप्यते। एतासुत्रीषु सुषुम्ना चित्रिणी अथ च ब्रजा नाडीनां यदा भृकुटि मध्ये मिलनं भवति। तं दिव्यसंगमः इति कथ्यते। अस्मिन् संगमे स्नानं कृतेन साधकं दिव्यालोकस्य /झलकस्य च दर्शनं भवति। यदा साधकः अस्यां पष्ठभूमिकायां दृढंरूपेण स्थितं भवति तदा तं दिव्य ज्योतेः वा प्रकाशस्य च अनवरतानुभवं भवति।

अस्यामेव तुरीयावस्था/शान्त्यावस्था चेति कथ्यते। अस्यां अवस्थायां तमशः लोपं भूत्वा रजः सत्यमयं भवति। तथा च बुद्धिः सत् प्रधानं भवति। येन चित्तः स्फटिक मणिः अथ च बिल्लौर तुल्यं भवति। अस्यां पूर्व संस्कारः मूर्तिमंतं भूत्वा स्फटिकमणिना प्रतिबिम्बितः भवति। एतेषां संस्काराणां प्रकटीकरणः एव अस्य भोगमानः अस्ति। तथा च विलयः एव नाशः अस्ति। अस्यां प्रक्रियायां लेशमात्रमपि सुख दुःखस्य प्रतीतिः न भवति। साधकस्य ब्रहम नाड़्या संलग्नं भवितुं कारणेन सः

साक्षीमात्रं भवति। अनेन प्रकारेण जन्मान्तराणां अर्जित संस्कारः अस्मिन् जन्मे भस्मीभूताः भवन्ति। अस्यामवस्थायां साधकः सद्बुद्धिं यस्मिन् काले देशे वा प्रेषितुं इच्छेत्। तदेव स्थानस्य कार्य कारणबोधः प्राप्तुं शक्तः। सर्वव्यापी आत्मायाः नित्य चैतन्य ज्ञान स्वरूपः भवितुं कारणेनैव एषः संभवः भवति। एतादृशी आत्मिक बुद्धिं चेत् ब्रहमास्त्रं मन्यते तर्हि अनुचितं न भविष्यति। दिव्यत्व प्राप्त्यनन्तरेव अचिन्त्यः एवं चिन्तनान्तर्गत संदेशानां रहस्याणाञ्च पूर्ण बोधः भवति। एते संदेशाः ब्रह्माण्डस्य दिव्य तरंगैः सततं प्राप्यन्ते।

विज्ञानमय कोषेण परे आनन्दमय कोषाः सन्ति। यं वैदिक धर्मानुसारं सत्यलोकः अथ च कुंडलिनी तंत्रानुसारं परमः कथ्यते। विज्ञानमय कोषतः उत्थाने आनन्दमय कोषे प्रवेशः भवति। बुद्धिशुद्धं भूत्वा प्रकृत्यां लयः भवति। ताः प्रकृतयः परम पुरूषेलीनं भवति। तदा साधकः अस्मिन्परमानन्दस्य सागरे मग्नं भवति। येन बाह्यान्तर देहस्य च किञ्चिदपि बोधं न जायते। अस्यां स्थितौ किञ्चित् कालं वसित्वा साधकः यदा पुनः विज्ञानमय कोषे प्रत्यागच्छति तदा तत् अवर्णनीय आनंदं अभिव्यक्तये तस्य पार्श्वे मौनं विहाय काऽपि भाषा नास्ति। किमेतत् काष्ठमौनंनास्ति।

अचिन्त्यः एवं चिन्तनान्तर्गत संदेशानां भौतिकः रचनात्मकं वा आधारः वृहत् मष्तिष्कस्य असंख्य नाड़ी कोषाः एवञ्च तस्य अन्तर्ग्रथनमेवास्ति यत्र तस्य बोधः किं वा ज्ञानम् भवति। मस्तिष्केन नाड़ी कोषाः एवञ्च तस्य अन्तर्ग्रन्थनपर्यन्तं शरीरस्य निम्न अवस्थाः भवन्ति :———

1— जागृत अवस्था :—

अस्या अस्मिन् वा सत्व गुणः गौड़ रूपेण शान्त भवति (तमः, रजं अनेन प्रकारेण), तमः सत्ववृत्तिं अवरोधयति परं रजः प्रधानं भूत्वा चित्तं इन्द्रियैः बाह्य विषयेषु संलग्नं करोति।

2— स्वप्नावस्था :—

अस्यां अस्मिन् वा सत्वगुणः गौणतररूपेण शिथिलं भवति तमः रजं अनेन प्रकारेण शान्तं करोति यत् सः चित्तं इन्द्रियैः बाह्य विषयेषु न गन्तुं आदिशति। परं रजः किया सूक्ष्म रूपेण भवत्येव।

3—सुषुप्ति अवस्था :—

अस्यां सत्वगुणः गौणतम रूपेण शिथिलोंजातः एषा प्रगााढ़ निद्रायाःअवस्था वर्तते।

मानव स्थूल शरीरस्य तुलना मोटर कारयानेन कारयेत् यस्मिन् त्रिगियरः अस्तु यथातु उपरिवर्णित सुषुप्ति स्वप्नः तथा च जागृत अवस्था। सामान्यतः मानवः एताषुत्रीषु अवस्थासु एववसति। परं एताभिः तृतीय अवस्थाभिः परे चतुर्थी तुरीयावस्था षष्ठ आज्ञा चक्रे भवति। यदा सुषुम्नायां कुण्डलिनी शक्तेः प्रवेशं भवति। तदा अस्मिन् स्थूल शरीरे ब्रेक अवरोध तुल्य कियायाः अथ च बाह्य गतेः अवरोधः भवति। शरीरावस्था न्यूट्रल गत्यां आरब्धा मोटर कार सदृशी भवति तथा च न्यूनतम् ईधनेन तस्य कार्यं भवति।

अनया न्यूनतम् शक्त्या शरीरः आसने स्थिरं जायते। न पतति। प्रमस्तिष्के पुच्छक केन्द्रः' अन्तरानिलयरन्ध्रेण ऊर्ध्वं पार्श्व निलयस्य दीवारे स्थितं वर्तते। एषः केन्द्रः ध्यानावस्थायां अतीव महत्वपूर्णः एवं च उपयोगी सिद्धः अभवत्। यतः तस्य कार्यम्गतिविधीन् आकलनं कृत्वा स्थिरं करोति। येन सबीजः निर्बीजः वा समाधेः स्थायी भावस्य निर्वहनं करोति। ध्यानावस्थायां कुंडलिनी शक्तेः विशुद्धादि चक्रान् संभेद्य आज्ञाचक्रे गमनात् पूर्वमेव अस्मिन् पुच्छकः वा गतिसंयामक केन्द्रे प्रभावः भवति। तदा अमी गति संयामक केन्द्रः गति विधीन् संयमितं करोति। येन किञ्चित्काल पर्यन्तं साधकं बाह्यान्तरस्य बोधो न जायते। परं एषा शक्तिः तत्र न

अवरूध्य आज्ञाचक्रे गच्छति। यत्र गमने सति विलक्षणानुभूतयः भवन्ति। अस्यां अवस्थायां बुद्धिः शुद्धः एवं सतोगुणमयी भवति। कुण्डलिनी शक्तिः प्राणं नीत्वा सुषुम्नायां अग्रसरं भवन् आज्ञा चक्रे आगत्य स्थिरा भूत्वा सहस्त्रारे प्राप्य समस्त मस्तिष्के दिव्य शक्तिः वा ज्योतिरूपे व्याप्तं भवति। एषा एव दिव्यज्योतिः पीनियल ग्रन्थ्या परिलक्षितं भूत्वा भृकुटि मध्ये आगत्य स्थिरं भवति। एषा शक्तिः यस्यां नाड़ी कोषेषु अथ च तस्य अन्तर्ग्रन्थन स्तरेषु विरमति तत्र ज्योति रूपे परिवर्तितं भवति येन शिथिलं गतः संस्कारदृश्याणां ज्ञानं भवति।

जन्म जन्मान्तरैः एते संस्काराः मस्तिष्कस्य नाड़ी कोषेषु शिथिलं स्थिराः भवन्ति। अस्य वैज्ञानिकान्वेषणः विश्वविख्यात तंत्रिका वैज्ञानिकः डा0 पेनफिल्डेन कृतः।

मानव मस्तिष्कस्य टेम्पोरल लोबे स्मृति केन्द्रः स्थितः वर्तते। डा0 पेनफिल्डः मस्तिष्कस्यास्य भागस्य कार्य प्रणाल्याः विस्तृत ज्ञानं कर्तुं एका सूक्ष्मोत्तेजक सलाई माध्यमेन यस्यां क्षीण विद्युत धारा प्रवाहिता भवतिस्म। अस्य क्षेत्रस्य तंत्रिकाकोशिकाः स्पर्शं कृतः। सः इत्थं प्राप्तः यत् प्रेरक विद्युदग्रस्य स्पर्शेन विगत स्मृतीन् पुनर्जीवितं कर्तुं शक्तः अनेन प्रयोगेण डा0 पेनफिल्डः एषः निष्कर्षः निः सारितः यत् विद्युदग्रस्य प्रत्याहरणः केवलं एकः विगत स्मृतेः पुनः स्मरणम् कारयितुं शक्तः। मिश्रितं अथ च व्यापक स्मृतीनां न। कदाचित् सर्वाधिक महत्वपूर्णान्वेषणः एषः आसीत् यत् न केवलं विगत घटनाः एव विस्तृत रूपेण स्मृति बद्धाः सन्ति परं तेन संबद्ध विभिन्न भावनाः अपि स्मृति बद्धाः सन्ति। दृश्यः तथा च तद्दृश्येन संबंधित भावनाः नाड़ी कोशेषु अनेन प्रकारेण सम्बद्धाः सन्ति यत् दृश्यः अथ च तेषां भावनानां एकान्यतः पृथक्–पृथक् पुनर्स्मरणः भवितुं न संभाव्यते। एषोऽपि स्पष्टमभवत् यत् केवलंताः एव संवेदी घटकः स्मृति बद्धाः भवन्ति यस्योपरि व्यक्ति स्वध्यानं केन्द्रितः करोति। केन्द्रीय नाड़ी संस्थाने निरन्तरं आगन्तरः सर्वे उद्दीपनाः स्मृति वद्धाः न भवन्ति विगत

जटिलस्मृतिः अनुकर्मानां एतैः प्रयोगैः पुनर्स्मरण एषः विश्वासः प्रददाति। यत् प्रत्येक स्मृतेः एका पृथक् तंत्रिका पथम् वर्तते। एकं उद्दीपन प्रतिक्रियायां व्यक्तिः अल्पकालार्थं वर्तमानतः चलित्वा भूते गच्छति। तंत्रिका विज्ञानी पेनफिल्डस्यानुसारं मस्तिष्कः एकः हाईफाइडेलिटी टेपरिकार्डर इव कार्यं करोति मस्तिष्क रूपः अस्मिन् टेपरिकार्डरे न केवलं जन्मानन्तरस्य अपितु संभवतः जन्मतः पूर्वस्य संस्कारमपि अभिलिखिताः सन्ति।

येन प्रकारेण उपरि प्रदर्शितः सामान्य वैज्ञानिक पद्धत्या पूर्वं संस्काराणां बोधमाकारितः। तर्हियोगी परमोच्चशक्त्या जन्मजन्मान्तरैः बोझिलः शान्त संस्काराणां पृथक् अचिन्त्यः एवं चिन्तनान्तगर्त संदेशान् प्राप्तये समर्थं अस्तु–तर्हितु न आश्चर्यभवितव्यम्। परं षष्ठंभूमिः आज्ञाचक्रे स्थितं जातः अति आवश्यकः वर्तते। ध्यानस्यास्य परमोच्चावस्थां प्राप्तिस्तु लौहचणकचर्वणं इव वर्तते। परं महत्वपूर्णः वार्ता इयमस्ति यत् साधकं स्व योग साधना एतादृशः गुरूणां निर्देशः अथ च सान्निध्ये करणीयम् यः यौगिक क्रियाः मनः अथ चात्मासंबंधी विज्ञानस्य पूर्णदक्ष विशेषज्ञः अनुभवी चास्तु एतस्मादेव सर्वधर्मावलम्बी एतदात्मिक योग क्रियाः कस्यापि आत्म ज्ञानीनां एव निर्देशने कर्तुं औचित्यं प्रतिपादितं कुर्वन्ति। उदाहरणार्थ चेदहं नोवल पुरूस्कार विजेता महान् वैज्ञानिकानां जीवनस्य अध्ययनं कुर्मः तर्हितु एतद् स्पष्टम् भवति यत् तस्योपलब्धीनां पृष्ठे तस्यैव कठिन परिश्रमः अस्ति। यस्तु विद्यालयः महाविद्यालयः तथा च कार्यकालीन समये ते कस्यापि उपयुक्त निर्देशकस्य निर्देशने क्रियमाणो भविष्यति। एकैव समस्योंपरि लगनेन सह वर्षाणि संघर्षानन्तरेव ते एकोल्लेखनीयः अन्वेषणं कर्तु सफला भवन्ति। एकस्यामेव समस्यायां लगनेन सह वर्षाणि पर्यन्तं संघर्षानन्तरंमेव ते एकः उल्लेखनीय अन्वेषणे सफलाः भवन्ति। अत्र वयं आत्मसाक्षात्कार रूपी जटिलसमस्यायाः विषयेन संबंधितः अस्ति। यस्य समाधानाय अपि कुशलः अनुभवी निर्देशकस्य भवितुं अत्यन्तावश्यकः अस्ति। एतादृशाः

महान्पुरूषाः ये साधकम् भौतिकतया निःसार्य्य। आध्यात्मिकतायाः बोधं कारयतु। अल्पतराः एव मिलन्ति। साधकान स्व अस्मिन् आध्यात्मिकमार्गे सत्पथप्रदर्शकस्य अन्वेषणे पूर्ण सचेतनः भवितव्यम्। योग मार्गे पथप्रदर्शकस्य अनुभवी जातस्तु विशिष्ट रूपेण अत्यन्त आवश्यकः अस्ति। एव तथा च सहैव पथप्रदर्शकस्य धर्म जाति संप्रदाय संबंधयस्च दृष्टिकोणः संकीर्णः न भवितव्यम्। तं मान सम्मानस्य लुब्धः न भवेत्। पथप्रदर्शकः प्राणीमात्रे एकः नित्य चेतन परमात्मतत्वं पश्यन्। सर्वस्य हितचिन्तकः अस्तु। पथ प्रर्दशके इत्थं दृष्टि प्रक्षेपणान्तरात् पूर्वं साधकं स्व आभ्यन्तरे दष्टव्यम् साधकं गुरूशिष्य सम्बन्धं सततं निर्मितव्यम् अथ च एषः कथनः तं कदापि न विस्मरेत् यत् सः शिष्यः अस्ति सदैव शिष्यः भविष्यति सः न किञ्चिदन्यः केवलं शिष्यः एवास्ति। तं इत्थं निर्देशित सिद्धान्तानां पालनं कर्तव्यम्। शम ,दम, उपरति, तितिक्षा, समाधानः श्रद्धा च आध्यात्मिकानुभवाः एवं चास्थानां प्रकृतिः आत्मिक अतीन्द्रियश्च भवति।

परं एषोऽपि स्मरणः अस्तु यत् एतादृशी आध्यात्मिक घटनानां आधारः अस्थि मांसाभ्यां निर्मित मानव शरीरः एवास्ति। एषः मानव शरीरः ईश्वरस्य कृतेः अनुपम् निदर्शनः वर्तते। यस्तु त्रिगुणमयी प्रकृत्या आवृत्तः परिवृत्तः। यथार्थतस्तु बुद्धिज्ञानेन च सीमितं वर्तते। सैवपरमस्थितौ गतेसति असीमः भवति। यथा तु विभिन्न धर्माणां संत महात्मानां जीवनीभिः दृष्टिगोचरं भवति। योगिभिः प्रर्प्त असीमितः अलौकिकः अतीन्द्रियश्चानुभूतीन् अवबोधने विज्ञानमपि साम्प्रतम् असमर्थास्ति।

डा0 पॉल ब्रन्टनः, डा0 कार्लस्य डैरो इत्यस्य पुस्तकम् ***"रेनेसन्स ऑफ फिजिक्स" एषः उद्धरणः स्व पुस्तकं – " दी इनर रीएलिटी "****। पुस्तके दत्तः भौतिक तत्वं वैज्ञानिक विधिभिः ऊर्जा ज्यौतौ च परिवर्तितः कर्तुं शक्तः। परमाणुं यं अविनाशी वुध्यतेस्म। शक्तिशाली विद्युत अणुषु विघटितः कारयेत्। ज्योतेः सूक्ष्म कणः यथा फोटॉन तथा च भौतिक तत्वस्य सूक्ष्मकणः विद्युत अणुः इलेक्ट्रानः किंवा पूर्णतः लुप्ताः*

भवन्ति। अथ च एकः अन्ये परिवर्तितः भवेत्। भौतिक तत्वस्य स्थायित्वः लुप्तो जातः। यतः भौतिक तत्वस्य विद्युत कणान् ज्योतेः रूपे अहम् परिवर्तनं कर्तुं शक्तः। कोऽपि तत्वः पदार्थः अथ च स्वयं ज्योतिः अपि स्थाई नास्ति। तद्यस्तु स्थाई अस्ति। ***तद यस्तु स्थाई अस्ति*** *वास्तविकेषु किञ्चित् एतादृशः एवासित यः एतान् समस्तं रूपान् क्रमेण धारणं कर्तुं शक्यते अथ च एक रूपतः अन्य रूपे परिवर्तिते जातेऽपि अक्षतः अस्ति। अस्य अविनाशी अनश्वरस्य च सर्वोपयुक्त नाम मम्ज्ञाने ऊर्जा एव भवितुं शक्यते परं नाम्नः अधिकं महत्वं नास्ति।*

परमाणु सिद्धान्तः अति समयेन अस्तित्वे आसीत् परं अस्माकं पीढ़ी पद्धतिः। इतिहासे प्रथमा अस्ति। यस्तु प्रकृतेः एकतां ग्रहणं कर्तुं शक्ता एकः आधारहीनः सिद्धांतः वा नैराश्यजनकः अभिलाषा इव नास्ति। अपितु वैज्ञानिक सिद्धांतमिवयस्तु सिद्धतथ्येषु आधारितः अस्ति।

विविध वैज्ञानिकान्वेषणः एकवै पदार्थं भौतिक संसारस्य समस्ताभिव्यक्तीनां आधारः मानयन्ति। प्राच्य मनीषयः अथ च दार्शनिकाः अपि अस्यैव विश्वासस्य पुष्टिः कृतः। ध्यानस्य परमोद्देश्यः एतत् सत्माधारं प्रगटानुभवः करणीयः। विचारद्वयोर्मध्येयः अंतरालः अदृश्य शक्ति रूपा अस्ति। तदेव मात्रं सत् अस्ति। योगी जनाः ध्याने अवस्थितः एतत् सत् पदंमनः किंवा चित्तरूपः स्फटिमणौ अनुभवः कुर्वन्ति। यथा–यथा ध्यानः प्रगाढ़ भवति अखण्ड मंडलाकारं यः चराचरे व्याप्तः अस्ति। सैव ज्योति रूपे प्रगटं भवति प्रारम्भिकाभ्यासस्य अवस्थायां अस्माकं कामनाः विघ्नरूपं भवितुं कारणेन न सफलाः जायन्ते। परं किञ्चित् कालं वा अत्यल्पकालाय एव कथं न अस्तु तज्ज्योतेः झलकस्यानुभवः स्वकीये एकः उपलब्धिरस्ति।

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ।। भ0 गीता

(अस्मिन् निष्काम कर्मयोगे आरंभस्य यर्थार्थतस्तु बीजस्यनाशं नासित, विपरीतफलरूप दोषोऽपि न वर्तते। एतस्मात् आत्मसाक्षात्कारं कर्तुं यः कर्मः कारयेत् तत् निष्कामकर्मयोगरूप धर्मस्य साधना करणेन बुद्धौ अल्पमपि प्रकाशः जायते तर्हितु जन्म मृत्यु रूपी महद् भयान् उद्धारः भवति)

ध्येय ध्याता ध्यान त्रिपुटी वेगळा ।
सहस्त्रदळी उगवला सूर्य जैसा ।।
ज्ञानदेव म्हणे, नैनाची ज्योति ।
या नामे रूपे, ती तुम्हीं जाणा ।।

– ज्ञानेश्वर

(ध्याता, ध्यान, ध्येयस्य च भृकुटि मध्य अस्मिन् त्रिवेणी संगमे यस्य स्नानं भवति तस्य मनः बुद्धि, चित्त, अहंकारतश्च परे यः सहस्त्र सूर्ययां प्रकाशयुक्तः परम तत्वः अथ च सर्वव्यापकः परम् आत्मा अस्ति। तस्य साक्षात्कारः भवति। अस्यैव भावस्य पुष्टय ज्ञानदेवेन अनुभवानन्तरे स्वसाक्षीं ददन्अकथयत् यत् परम तत्वस्य ज्योति एतादृशः नामः अथ च सूर्यइव वर्णः अस्ति इत्थं जानातु)

'' अस्य शरीरस्य चक्षवः प्रकाशं अस्ति। चेत् एताः नेत्राः एकत्वम् जायते–तर्हितु समस्त शरीरः दिव्य प्रकाशेन पूरितो जायते। ईश्वरः एव दिव्य ज्योतिरस्ति।''

–बाइबिल

''अल्लाह आस्मान् (आकाशः) अथ च जमीनस्य प्रकाशः अस्ति। तस्य प्रकाशस्य मिसालः एतादृक् एव अस्ति। यद्यत् एकः ताकः अस्ति। तत् ताके/स्थाने एकः चिरागः वर्तते। अथ च चिरागः एक शीशस्य कंडीले स्थापितः वर्तते अथ च कंडीलः एकः सितारः इव चकाशते। जैतून वरकतस्य वृक्षेण तत् चिरागे तैलं जलति यः न तु

पूर्वी न पश्चिमी अस्ति। तस्य तैलः इत्थं स्वच्छः वर्तते यत् चेत् तस्य आभां नापि स्पृशेत् तथापि ज्वलति प्रकाशोपरि प्रकाशः अल्लाह स्व प्रकाशंप्रतियं वाञ्ॅछति पथं दर्शयति। अथ चाल्लाहः जनेभ्यः मिसालाः बयान फर्मायते अथ चाल्लाहः समस्त वस्तुभिः ज्ञानवान् अस्ति।'' ***–कुरान***

अब्बल अल्ला नूर उपाया, कुदरत दे सब बंदे ।
एक नूरते सब जग उपजा, कौन भले को मंदे।। ***– गुरूनानक***

सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा । दीप शिखा सोई परम प्रचंडा ।।
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा । तवभवमूलभेदभ्रमनासा ।।

उत्तरकाण्ड।। दोहा –अनन्तरे– तुलसी रामायण

संसारस्य समस्त धर्म संप्रदायः दिव्य ज्योतिं एव मान्यता ददाति। यथा कथितं बाइबिले ईश्वरः ज्योतिरस्ति। कुराने–अल्ला नूर अस्ति, हिन्दू धर्मानुसारं आत्मा ज्योतिर्मयः अस्ति। आदयः। दिव्यज्योतिः एतादशी पद्धतिरस्ति। येन समस्त धर्माः एक स्पं वर्तते अथ च एतादृशी दिव्य ज्योतेः साक्षात्कारं करणीयः एव परम लक्ष्यः कर्तव्यञ्च भवितव्यम्।

ईश्वरः तद् ज्योतिरस्ति यस्यां अहं स्वम् विभिन्न मान्यतानां तथा च विश्वासस्य चानुरूपं , रामकृष्ण, ईसा ,मोहम्मदादीनां दर्शनं कर्तुं शक्तः। एषः तदात्म स्वरूपः अस्ति यस्तु स्वकीय प्रकाशेन प्रकाशितं भूत्वा षष्ठ आज्ञा चक्रे अनुभूतं भवति। एषः एव सगुण साकारः अस्ति परं चरम वास्तविकता अस्यापिपरे वर्तते। यत्र केवलं परम सत्यः वर्तते।

ऊॅ श्री सद्गुरवे नमः

तृतीयो भागः

शिष्यानुभवः

ऊँ स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नः तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नः वृहस्पतिर्दधातु ।।

ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः । ऊँ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः

पृथिवी शान्तिः आपः शान्तिः औषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिः

विश्वे देवाः शान्तिः ब्रह्म शान्तिः सर्व ब्रह्म शान्ति शान्तिरेव शान्तिः

सा मा सुशान्तिर्भवतुः। सर्वे भवन्ति सुखिनः सर्वे सन्तुः निरामयः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुख भागभवेत्। जिस तरह से आशीर्वाद देकर गया था, उसी तरह से आज हम सब फिर से इकट्ठे हुये हैं, हम अपने परिवार को आनन्दमग्न पा रहे हैं जिसे देखकर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। कोई भी कार्य करने के पहले वैदिक मंत्र के आधार पर हम आशीर्वाद देते हैं।

सबका कल्याण हो, सब प्रकार के दुख, आपत्ति, विपत्ति, संकट शान्त हो, सब प्रकार की शान्ति आपको प्राप्त हो, जीवन सफल हो, जीवन यशस्वी हो, जीवन निर्मल हो और आप सतपथ पर अग्रसर हो ऐसा, मेरा स्नेहपूर्ण आशीष है । शांतिः.... .....शांतिः.....शांति।

☆ *जय गुरूजी* ☆

तृतीयो भागः

शिष्यानुभवः ——

1—श्री श्रीधर गंगाधर धर्माधिकारीति

रवीष्टाब्दः 1940 वर्षे गुरूदेव तेल्हारा आगतः तथा च सः गणेशोत्सव कार्यक्रमेषु प्रवचनं दत्तः।

तस्य प्रवचनैः तत्रस्थ जना सुप्रभावितः अभवत्। एकदा तस्य प्रवचनानन्तरे अहं कतिचिद् समित्रः तेन वार्तालापं कृतः येन प्रतीयते यदसौ होम्योपैथ चिकित्सकः अस्ति। वयमाग्रहंकृतवान् यत् ते तेल्हारास्थानेव औषधालयं स्थापयतु इति यमाग्रहं सः स्वीकृत्य विजयादशमी तिथौ औषधालयः स्थापितः।

अस्माकं मध्ये पारिवारिक संबंधः स्थापितः येसंबंधाः अद्यापि समादृयते।

पंड़ित महोदयस्य औषधालये वयम् नियमित रूपेण नित्यसायं गच्छन्तिस्म् एकस्मिन् दिवसे समीपेवस्थित गाड़ेग्रामतः एकः युवकः उपचाराय आगतः तस्य कण्ठे एकं पिण्डकं आसीत्। असौ जनः पूर्वम् आकोटस्य डा0 मदन मोहनः तथा चअकोलायाः सिविल सर्जनस्यापि समीपे गतः: ते एतम् (कैंसर रूजः) भणित्वा आपरेशनाय भणितम्। व्यक्तेः पार्श्वे पर्याप्त धनं नासीत्। प0 महोदयः तं सुपरीक्ष्य अकथयत् । यत् अस्तित्वयं कैंसरः एव। सः तं बिन्दुद्वयं औषधिं प्रदत्तः। अथ च पंचदश दिवसानन्तरे आगन्तुं भणितः। पं0 महोदयस्य कृपापूर्ण स्पर्शेन कानिचिदीदृक् अद्भुतः प्रभावः अभवत् यत् सः जनः तदसाध्यरोगात्मुक्तः जातः।

माम् प0 महोदयस्य एतायाः आध्यात्मिक शक्तीनाम् अनेकधानुभवः अभवत्। एकदा ममधर्मपत्नीं 104 फै. ज्वरः वर्धितः। मया प0 महोदयं संदिष्टः तथा च यदा ते आगत स्पर्शम्चाकरोत् तस्मिन्नेव काले ज्वर तापः न्यूनः भूत्वा 101 फै. अभवत्।

1946 रव्रीष्टाब्दे खामग्रामाय ममस्थानानतरणः जातः पुनश्चापि अस्मान् सम्बंधः सुरक्षितः। अत्र ममत्रिवर्षीयः पुत्रः एकदा अत्युन्नत स्थानतः पतित्वा संज्ञा शून्यः जातः। उत्थाने सत्यवगतः भूतः यत् तस्य कर्णतः रूधिरः प्रवहति। चिकित्सकः वीक्ष्यणानन्तरे वोबुद्धयते यत् सः षट्त्रिशत् घटिकां संज्ञा शून्यो स्थाष्यति। शिशोः जीवनापदः संवृत्तासीत्। चेत सः जीवनमपि सप्राप्त्यति तथापि शारीरिकं मानसिकं वाक्षतेः संभवनासीत्। चिकित्सकः रात्रौ संज्ञागते औषधि प्रदातुं अकथयत्। सः उपलब्ध संज्ञोऽभूत् परं यदा वयम् तं ऋजु स्थापयामः तदा तु ज्ञातमभवत् यत् सः ग्रीवा पृष्ठं संतुलितः अथ च संमानान्तरः प्रस्थापथितुं न समर्थः। वयम् तं जलेन सह औषधिं अददाम् यंः तत्कालेव सः वमनं कृतवान्। वमने मले चापि रूधिर पिण्डः निःसृतः पुनश्च संज्ञा शून्यः जातः गदहां आहूयानन्तरे सः पुनश्चौषधीं अददत् दत्तः वा तथा चाकथयत् यद्धुना अस्य बालकस्य जीवन संरक्षणें शंशयः किं वा अत्यल्पाशास्ति। अहम् अस्मिन् क्रमेऽपि पंडित महोदयं तेल्हारा संदिष्टः वा संदेशं प्रेषितवान्। सः आगत्य शिशोः परीक्षणं कृत्वा चिन्तांमा कुरू इत्यकथयत्। एषः स्वः प्रातः स्वस्थः भविष्यति। आगामि दिवसे यः चिकित्सकः बालकस्य उपचारः कुर्वतिस्म सः आगतः तथा च बालकं पूर्णतः स्वस्थं प्राप्तः तं अस्मिन्नपेक्षित स्वास्थ्य लाभोपरि अत्यन्ताश्चर्यमभवत्। सोऽयम् जिग्मिषति यत् कस्योपचारेण असौ बालकः अस्याम् स्थितौ संप्राप्तः अहं तं पं0 महोदयस्य विषये अबोधयत् तदा तु सः तेन मिलितुं स्वेच्छां प्राकटयत् तं विश्वासः आसीत् यदैषः मात्रौषधेः प्रभावः न भूत्वा अपितु किञ्चिदन्यप्यस्ति यः बालकजीवनं अरक्षत्।

श्री पं0 महोदयस्य आगमनः एव अस्माकं परिवारे सुखारोग्यस्य कारणं भवतिस्म। चेत् कोऽपि रूग्णः स्यात् तर्हितु पं0 महोदयस्या गमनेन सः तत्रैव तत्कालेव स्वस्थः जातः वा अभवत्। 1941 ख्रीष्टाब्दे मम्धर्म पत्नीं सन्निपात् /लकवा इति रोगेण घातितः। तस्याः रोगोऽयमपि पं0 महोदयस्य परम कृपा प्रसादेन उत्तमः अभवत्। अधुना सा पूर्णः स्वस्थाः यत्तुकोऽपि तं वीक्ष्य एतादृशः नानुभवति यत् कदापि इमाम् /लकवा इति संपृक्तो भविष्यति। मम् एकः दूरस्थ संबन्धयः मित्रश्च श्रीमधुकर पाण्डेयः मम गृहे अधिकतरं आगमनं करोतिस्म। ते साखरखेर्ड़ायाः वासी आसीत्। एकदा यदा पं0 महोदयः मम गृहे आगतः सोऽपि आगच्छत्। मया परिचयं आकारितः। श्री देशपांडेय तं स्व ग्रामे स्व गृहस्य रहन सहनादयः भव्यतां अवलोकनाय् आनयेत्। स पं0 महोदयं आमंत्रितः कृतः परं पं0 महोदयस्य अस्मिन् प्रसंग्डे. किञ्चिदपि रूचिः न आसीत्।

पं0 महोदयः तेन कथितं यत् सः यदापि खाम ग्रामं आगमिष्यति पं0 महोदयोऽपि चतुर्विंशति घटिकाभ्यन्तरेव तत्र प्राप्स्यति। चेत् सः एतादृशः करणेन विस्मृतं गतः तर्हितु तेन सह ग्रामं प्रचलिष्यति। अतोनन्तरेतु श्री देशपाण्डेयः यदा यदा खाम ग्रामं आगतः तदा तदा यथा तु पं0 महोदयः पूर्वतः एव विराजतेस्म किंवा तस्य आगमनानन्तरे किञ्चित घटिकानन्तरेव आगच्छतिस्म। श्री देशपांडेयः पं0 महोदयं पराजित करणस्य सम्यक् प्रयासः कृतः परं ते असफलः एवजातः। अन्ततस्तु श्री देशपांडेयः पं0 महोदयस्य महानतां स्वीकरोतु अग्ड़ीकारः कृतवान्।

सन् 1949 वर्षे दीपावल्यानन्तरे श्री पं0 महोदयः खाम ग्रामे गृहे आगतः अथ च सः विज्ञापयत् यत् सः साम्प्रतं स्व औषधालयं आवृत्य कुत्रापि बहिः गमिष्यति। बहुषः कलिकातायां रामकृष्ण आश्रमे किञ्चित् साधनां करिष्यन्ति। अथ च सत्येव तेल्हारां त्यक्त्वा प्रस्थितवान्। अनन्तरे तस्य वासस्य कतिचिद् दिवसान् न प्राप्तः। अहं सन् 1960 जनवरी, फरवरी मासयोश्च अचानकं रूग्णतां गतः। ज्वरः शरीरे व पीड़ानुभवः

जायते। औषधीभिः किञ्चिदपि लाभो न लब्धः। अस्मिन्नेव स्थितौ माम श्री पं0 महोदयस्य स्मरणं आगतः अहं मनसि विचारितः यत् पं0 महोदयः चेत् तेल्हारा स्थाने अवस्थित मात्रं तर्हितु अवश्यमेव अत्रांगमिष्यति आगच्छतु वा सायं अनुमानतः 5 पञ्च वादने अहं नेत्रं निमील्यः अस्मिन् विचारे अवस्थितः निद्रातु न आसीत् अचानकं माम् किञ्चित् श्रुतः। रूग्णतावशात् नेत्रे शैथिल्यं प्रसृतासीत् शब्दस्तु अपरिचितः आसीत् कथं ´ भ्रतात्वं कुत्र गच्छसि ´। तव साधना खडिंता भविष्यति। एतादृशः मध्ये साधनां त्यक्त्वा गमनंनोचितम्। अस्योत्तरे यः शब्दः अश्रृणोत् सः परिचितः आसीत् अथ च पं0 महोदयस्यैव आसीत। तेन उत्तरं दत्तः यत् साधनायाः माम् चिन्तानास्ति तथापि भवितुं शक्यते। परं साम्प्रतं मम बाबूरावः अवस्थतां गतः तस्य चिन्ता वर्तते अथ चाहं अवश्यमेव गमिष्यामि। अस्य तत्कालानन्तरे एतादृशः शब्द आगतः यथा कोऽपि द्वारे स्थित्वा अवदत्। बाबूरावः कथं स्वपसि किमभवत् उत्तिष्ठ एषः कालः स्वपनस्य नास्ति उतिष्ठ। अहं नेत्रौ उन्मील्य अपश्यम् यत् द्वारे तु कोऽपि नास्ति। शब्दस्तु शब्द ध्वनिस्तु पं0 महोदयस्यैवास्ति। अचानकं मम दृष्टौ द्वारस्य ऊर्ध्वं संपृक्त संत गजानन महाराज्ञस्य, शेगॉव चित्रे पं0 महोदयः दृष्टः 10 मिनटं यावत् सः माम् चित्रे दृष्टः अथ च मम नेत्राभ्यां अश्रवः प्रसृताः प्रवर्धितः। अतोनन्तरे न किमपि दृष्टम्। एतावतैव प्रो0 काणे सपत्नीकः गृहं आगतः अथ च मया पृष्टम् यत् भवदीय नेत्रे अश्रवः किं वर्तते। तीव्रतरं पीड़ातु नास्ति। चिकित्सकं आवाहयामि। अहम् अश्रुम् संमार्ज्य उत्तरं दत्तः नास्ति मम रूग्णतागता। माम् कोऽपि कष्टं नास्ति। पं0 महोदयः आगतः अधुनामाम् कस्यापि आवश्यकता नास्ति। अहं तं यत्किञ्चिदपि अभवत् तं श्रावयत् तत् कालतः माम् उत्तमं लगति। अनुभूयते दिनत्रयानन्तरे अहं स्व कार्यालयं गमनारम्भः कृतः।

सन् 1973 वर्षे मम द्वितीय पुत्रस्य विवाहः निश्चितो जातः। अहं पं0 महोदयं दुर्ग निवासो परिनिमन्त्रणः प्रेषितः। मया अनुमीयते यत् संभाव्यते चेत् पं0 महोदयः न आगन्तुं शक्यते। बारातस्तु अकोला स्थानाय प्रस्थितो जातः। मम कनिष्ठ पुत्र

निरंजनः अस्वस्थः आसीत्। माम् तेन सहैव आनयतिस्म। वयम् अकोलायां एकस्मिन् चिकित्सकस्य पार्श्वे नीत्वा तं दर्शयति परं तं औषधीभिः कोऽपि लाभः न प्राप्तः। अर्धघटिकानन्तरेव माम् पं0 महोदयस्य विवाहे समिमलितुं संदेशः प्राप्तः मम् प्रसन्नतायाः पारावारं नासीत् अहं तस्य पार्श्वे धावन् गतः अथ च तेन सहैव नीत्वा आगतः। एषस्तु अनुमानतः चतुर्दश वर्षानन्तरस्य मिलनः आसीतः। अस्माकं सर्वेषां कुशल क्षेमं पृष्टानन्तरे सः निरंजनस्य विषये अपृच्छत्। निरंजनस्य अस्वस्थता विषये विज्ञापिते सति सः तस्य पार्श्वे गतः अथ चाकथयत् निरंजन निरंजन। बालकस्य नेत्रोन्मीलिते सति सः अपृच्छत् त्वं माम् परिचीयतु। बालकस्य हस्तौ तं प्रणाम करणस्य मुद्रायां उत्थितः। पं0 महोदयः तस्य पृष्ठं भूयो भूयो स्पृशति। अथ चाकथयत् यत् सः श्वः प्रातः पूर्ण रूपेण स्वस्थो भविष्यति। आगामी प्रातः निरंजनः पूर्ण स्वस्थः नवीनतां च अनुभूयन् उत्थितः।

अधुनाहं पं0 महोदयस्य परम कृपा विषये किमधिकं बूमहे।

2– श्री लक्ष्मणराव देशपांडे

अहं पूज्य गुरूणा प्रथम बारं सन् 1970 वर्षे मिलितः। ते तस्मिन् काले बिलासपुरस्य रामकृष्ण आश्रमे रामकृष्ण सेवा समितेः सदस्यान् प्रवचनं दातुं आमंत्रितः।

किञ्चित् कालानन्तरे श्री गुरूदेवेन मम संपर्कः श्री काले अवकाश प्राप्त सत्र न्यायाधीशस्य गृहे यत्राहं भोजनार्थं निमंत्रितः। भोजन काले तथा च तस्यानन्तरे आध्यात्मिक विषयेषु चर्चा प्रचलिता। अहं गुरूणा। अपृच्छत् यत् समाधेः परमानन्दम् किं भवति। गुरूदेवः प्रत्युत्तर पूर्वकं अपृच्छत् यद् भवान समाधि सुखस्य अनुभवं इच्छति अथ च तस्याः परिभाषा मात्रं मयोक्तं यत् माम् उभावेव इच्छास्यात्। अस्ति वा

सः अपृच्छत् – किं योगस्य आत्मिक पथे कोऽपि गुरूः किं भवन्तं दीक्षा दत्तः अहं नकारात्मकं उत्तरं ददन् अकथयत् यत् माम् तथा कथित गुरूदीक्षाग्रहणे कोऽपि रूचिर्नास्ति। माम् गुरूजनेषु विश्वासो नास्ति तथा च तेषां उददेश्योपरिअपि संदेहोऽस्ति। अस्योपरि श्रीगुरूदेवेनोक्तं यत् त्वं प्रथमं स्वरूचि अनुरूपं गुरूणा दीक्षां गृहीत्वा आगच्छतु तदाऽहं समाधेः परमानन्दस्य किञ्चित अनुभवं कारयिष्ये।

आगामीमासे अवसरे आगते सति मध्ये मध्ये अहं तस्य पार्श्वे सततं अगच्छम्। प्रत्येकं क्रमे तेन पृष्टम् यत् किं त्वं दीक्षा गृहीतः दीक्षा तु अहं नैव गृहीतः। अंतेमया निर्णयं गृहीतः यत् पूज्य गुरूदेवेनैव अहं दीक्षां गृहणामिं अथ च तेन अस्य कृते प्रार्थना कृतः। सः अनुमोदनम् कृतः तथा च माम् दीक्षा प्रदत्तः। समाधेः परमानन्दस्यापि आस्वादनः आकारितः तदनुभव शब्दैः परे अस्ति। यस्य सुखस्य अहं अनुभवः कृतः तस्याः अस्मिन् संसारे मानव शरीरे च कल्पनाः एव न कर्तुं शक्यते। अस्य वर्णनस्य मयिशक्तिरेव नास्ति। अनेन सुखेन अहं इत्थं अभिभूतं गतः यत् अहं रूदन् पूज्य गुरूदेवस्य चरणेषु अपःतत् गुरूदेवस्य चरणं त्यक्तुं मम इच्छा एव न भवतिस्म। ऐते चरणाः अस्मत् कृते परमपवित्रो जातः। गुरूदेवः माम् सान्त्वनां दत्तः अथ च अकथयत् अहं यत्किञ्चिदपि दातुं शक्तः तद्दत्तः त्वम् चिन्तांमा कुरू सः माम् योगध्यान पथस्य दीक्षा दत्तः अथ च नियमित रूपेण ध्यान करणस्य परामर्शो दत्तः।

अनन्तरस्य संपर्के सः माम् योगाभ्यासस्य गहन विधीन् सविस्तारं ज्ञापयत्। सः माम् अमृत अनुभवः किं वा एकनाथ, भागवतादि पुस्तकान्यपि संबोधयत्। तस्य ज्ञापनस्य पद्धतिः एतावता गहनः प्रफुल्लित कर्त्री। आसीत् यत् अहं तां लिपिबद्धः कृतवान्।

दीक्षा दानात् पूर्वं सः मया पृष्ठम् –यत् किंमहं कोऽपि जपादयः करोमि ? अहम् तत्काले अजपा जपं करोतिस्म। गुरूदेवेन अदेशो दत्तः यत् तज्जपस्य मंत्रान्ते अहं ऊँ

शब्दं योजयामि अथ च विशिष्ट आसने। विशति मिनटं यावत् ध्यानं करवाम। दीक्षा प्रदान काले माम् सः आसने उपतिष्ठत् तथा च हस्तेन स्पर्शं कृतः कानिचित् क्षणेषु एव अहम् स्थिरं अभवत् अथ च आज्ञाचक्रे गतवान्। मम श्वसन क्रिया अवरूद्धा जाता। अस्मिन् समये माम् समाधेः परमानन्दस्य आस्वादनः कारितः। यस्याहं उपरिवर्णनः कृतः अहं अस्यां स्थितौ 15–20 पञ्च दश विंशति मिनटं यावत् अवस्थितः। तदनन्तरं पूज्य गुरूदेवः माम् सामान्य स्थितौ आनीतः। अत परं सः अवबोधयन् पथानुसारेण नियमित ध्यानं कर्तुं आदेशः दत्तः। पूज्य गुरूदेवः लक्ष्यं ज्ञापितः यत् यस्मै प्राप्तये माम् यथा शक्ति प्रयासः करोतिस्म। एषस्तु अभवत् मम दीक्षायाः कालिकानुभवाः। अतः परं यदा अपि अहं ध्यानाय तिष्ठामि तर्हि तु पादयोः। पदतलाभ्यां आरभ्य समस्त शरीरतो भवन् सिरे यावत् एतादृशः अनुभवः भवति। यत् पिपीलिकाः प्रचलन्ति। माम् प्रकाशस्यापि अनुभवः भवति यस्तु तीव्रतरं आकारे प्रवर्धयति अथ च माम् अप्रतिम सुखानन्दस्यानुभूतिः भवति श्री गुरूदेवं अहं धन्यवादं ददामि यस्य कृपा प्रसादेन माम् बहुशः अनेकाः अद्भुतानुभवाः अभवन् यस्याहं वर्णनं कर्तुं न समर्थः श्री गुरूदेवः मम विचारेषु सततं समाहितं वर्तते।

3– श्री जानकी प्रसाद मिश्र

परम श्रद्धेय श्री गुरूदेवस्य संपर्के आगमनस्य सर्वप्रथमावसरः माम् श्री हर्षचन्द्र त्रिपाठी यस्तु मम प्रिय शिष्येषु सन्ति। तस्य निवास स्थाने प्राप्तः। एतस्य संपर्के आगमनानन्तरेव माम् भौतिकता अथ च अध्यात्मस्य वास्तविक अर्थानां बोधोऽभवत्। जीवनस्य प्रत्येक क्षेत्रस्य उत्तमोत्तम विकाशाय तथा च आत्म कल्याणस्य मार्ग प्रशस्तं कर्तुं गुरोः अनिवार्य आवश्यकतायाः प्रतीतिर्भवति। भविष्यति वा। अंततस्तु एक वर्षस्य परिचयानन्तरे सन् 1971–72 वर्षे अहं पूज्य गुरूदेवेन दीक्षा गृहीतः दीक्षा कालेव माम् शीतल दिव्य ज्योतेः दर्शनो जातः क्रमिक साधना काले एषा एव दिव्य ज्योतिः

विकसिता अभवत् कति अवसरेषु तु एतादृषः प्रतीतं भवतिस्म यथा अहं परितः तेज प्रकाश पुंजेन आवृत्तोऽस्मि। अथ च प्रकाश पुंज मध्ये मम अस्तित्वस्य लोपः अभवत्। अस्यां स्थितौ यदानंदानुभवः भवतिस्म तद् शब्दैः न प्रकटितः क्रियते। गुरूदेवस्य संपर्के आगमनात् पूर्वं अहं योगः अथ च यौगिक साधनाभिः विशेषं परिचितो न आसीत्। मम उपासनायाः स्वरूपं नाम जपः नियमित रूपेण मंदिरगमनं रामायण पाठः तथा च यदाकदा गीताध्ययन मात्रं एव सीमितः आसीत्। अग्रे चलित्वा गायत्री जपः प्रवचन श्रवणे विशिष्टा रूचिः तथा च मानसिक षोऽसोपचार पूजने साधनायाः स्वरूपं प्रतिष्ठितः अभवत्। परं पूर्ण शान्तिः कुत्रापि न प्राप्ता। बुद्धेः प्रखरता दृढता अथ च विवेकस्य अभावः यदा कदा स्पष्टरूपेण दृष्टि गोचरः भवतिस्म अथ च तदभावस्य कारणेन भटकावमपि भवतिस्म। कदा–कदा एभिः कारणैः मनः अत्यधिकं अशांतों जातः। गुरूदेवस्य प्रथम दर्शने एव माम् तस्मिन् सत् मार्गदर्शकः अथ च संरक्षकः कथनं अधिकं उचितो भविष्यति। एतस्य स्वरूपः दर्शितः। परिणाम स्वरूपे क्रमशः तस्य निकटं आकर्षितो अगच्छत्।

साधना काले माम् येः अद्भुत अनुभवाः अभवत्। तेषु कानिचिदस्य संक्षिप्त वर्णनः निम्नानुसारः वर्तते :–

26 षडविंशति नवम्बरः 74 चतुर्थ सप्ततिः साधनाकाले एकाएकः उभौ मुखभागयोः उद्घाटन्े मगरस्य आकृतिः प्रकटितो जाता यः माम् गलबिलाधं कर्तुं आगच्छतिस्म। माम् लेश मात्रमपि भयं नाभवत्। तदा अचानकं कुपिता तीव्रतरं शब्दं कर्तारन् सर्पिणीं पृष्ठ प्रदेशतः ऊर्ध्वं गच्छन्ती मस्तिष्क शिखरे आगत्य अवस्थिता। व्रीवतर वेगेन पद्मासनस्य संयोजनः छिन्नो जातः। एतादृशः अनुमीयते यथा प्राणान्तो भविष्यति। झटिति आननतः निःसृतः गुरूदेवः संरक्षयतु अथ च मिनट द्वयाभ्यंन्तरेव स्वस्थः अभवत्।

द्विदिवसानन्तरे प्रकाश आवृता दिव्य आकर्षक लावण्यवती युवती द्वारमेकं अवस्थिता। साधनाकालेव प्रतीतो जातः यत् अहं सोपानतः ऊर्ध्वं गच्छामि अकस्मादेव ऊर्ध्वं अट्टालिकायाः द्वारः अनावृतः अथ चाहं आभ्यान्तरे प्रविष्टः। एक वर्षस्य शिशु रूपे श्री रामः माता कौशल्यायाश्च दर्शनं अभवत्। पुनश्च षोडशी दिव्या लावण्यमयी अपश्यत्। अतोनन्तरस्य दिवसे भगवान शिवः पार्वती गणेशः रामचन्द्रस्य च दर्शनारब्धः। दिनाङ्कः प्रथम दिसंबर 74 वर्षं पूज्य गुरोः दर्शनं जातः। तेन कथितं '' वरं याचयतुं ''मम मुखेन निःसृतः, ''सद्गुरूदेवः''।

साधनाकाले विभिन्न अवसरेषु माम दिव्य ज्योतिः लौ रूपे अथ च त्रिकोणः किं वा ''ऊँ'' इत्यस्य रूपे दृश्यते दि0 10 दिसम्बरं 74 वर्षंश्रुतः यत् दि0 12–12–1974 वर्षम् गुरूदेवः मिर्जापुरं प्रति गन्तारः। यतः तत्काले पूज्य गुरूदेवः शहडोले एव आसीत् अतः आगामि दिवसे तेन संपर्के गतेसति तेन निवेदनं कृते सति च ज्ञातं अभवत् यत् सत्येव अकस्मात् तस्य तं प्रति गमनस्य विचारः निर्मितः।

सन् 1976 वर्षे मम् षोडशः किं वा अष्टादशः 18 वर्ष मध्यस्य स्वकीयस्याकृतिः अतीव चारूतरः कांतिमय आरक्त वर्णस्य तथा च प्रसन्न मुद्रायां अपश्यत् श्रद्धेय गुरूदेवानुसारेण एतदेव आत्म साक्षात्कारः वर्तते। यस्योपलब्धिः माम् तेनैव कृपानुग्रह स्वरूपेण अभवत्। एकदा अतीव तीव्रतर प्रकाश मध्ये ऑगल भाषायाम् लिखितः शीतल शब्दः स्पष्टं दृश्यते।

एकान्यवसरे विशिष्टः चमत्कारः अभवत् मम् अंग विषेशे पीडयासह स्थूलता जाता एकद्वि 1–2 मास पर्यन्तं होमियोपैथी अथ च आयुर्वेदिक औषधायः गृहीते सत्यपि कोऽपि लाभः नाभवत्। समस्त जनानां एतदेव विचारः आसीत् यत् चिकित्सालयेनामांकितं भूत्वा (आपरेशनस्य) आश्रयो गृहीतः संयोगतः श्रद्धेय गुरूदेवस्य शहडोल शुभागमनः अभवत्। अहं तं स्वस्थित्या अवगतं कारयित्वा माम् स्वास्थ्यलाभाय

प्रार्थना कृतः। मम हठं वीक्ष्य तस्य मुखेन निःसृतः वाढम् गच्छ उत्तमं भविष्यति। किञ्चित् हस्तपादौ अनेन प्रकारेण कंपयतु।

मम आश्चर्यः प्रसन्नतायाश्च स्थैर्यं नासीत्। (पारावारं नासीत्) यदा सप्ताह आभ्यन्तरेव तत् पीडा स्थूलता अथ च कष्टः एतादृशः तिरोहितो अभवत् यथा किञ्चिदपिनैवाभवत्।

मध्यवर्षेषु अन्यानुपमानुभूतिना सह श्री गुरूदेवस्य दर्शनः अत्यन्त प्रसन्न मुद्रायां आशीर्वादं ददन् एव अभवत्। अनेकधाध्यान काले भ्रुवोर्मध्ये मंडलाकार तीव्र प्रकाश पुंजस्य अनुभूतिः अभवत् अहं परितः अनेन दिव्य प्रकाशेन आवृत्तः जातः।

सन् 1979 वर्षे एकाविशिष्टानुभूति जायते पुण्य क्षेत्र अमरकंटके अहं अनेकैः शिष्यबान्धवैः सह श्रद्धेय गुरूदेवः भ्रमणं करोति कपिलधारायाः पार्श्वे कानिचित् ईसाई वेशधारी साधनायांरताः जातः। गुरूदेवस्य तत्र गतेवतेषां नायकः अग्रेवर्धयित्वा तस्य स्वागतम् कृत+: अथ च तं अत्यधिकं सम्मानप्रदानम् कृतः एतादृशः प्रतीयते यत् ते जनाः गुरूदेवस्य एव प्रतीक्षायां आसन्। । सर्वेभ्यः अतीव आनन्दः प्राप्तः। प्रारब्धवशात् यदाकदा विभिन्न प्रकाराणां कष्टास्तु आगच्छन्तिएव परं गुरूकृपया शनैः शनैः तस्य निवारणमपि एतादृशः सरलतया भवति यत्वहं स्वकीयं आश्चर्य चकितं भवामि शारीरिक कष्टानां प्रभावः एव न्यूनो भवति अथ च अन्तर्प्रेरणया ताभ्यः मुक्ति प्राप्तस्य मार्गर्दनं मिलति। मानसिकः आर्थिकश्च काठिन्याः अनेन प्रकारेण दूरी भवन्ति यत् ज्ञाने एव न आगच्छति समस्याभिः मुक्ति प्राप्तस्य प्राप्ते' वा ज्ञानं निर्देशः वां मिलति अथ च गुरूदेवोपरि अर्पणेन समस्यायाः समाधानं स्वतः भवति तद्जनित आवश्यकतानां पूर्तिः सहजा सुलभा भवति। मनः सदैव स्वस्थः संतुष्टः तथा च हृदयः सदा सर्वकालं प्रफुल्लितः जायते। चतुर्थ अवस्थायां प्रविष्टे गतेसति तदनन्तरेऽपि गुरूदेवस्य अहैतुकी अहर्निश कृपाप्रसादेन जीवने उत्साहः अथ च उमंगस्य काऽपिन्यूनता नास्ति।

गुरूदेवस्य मार्गदर्शनः शनैः शनैः कियत् सौन्दर्य सहज भावेन मम उपासना तथा चाध्यात्मिक मान्यतानां पूर्ण परिमार्जनं कृत्वा केन प्रकारेण स्वस्वरूपस्य बोधं कारयितः तथा चआत्मकल्याण विषयक अनेकाः अनुभवाः कारितः। यतःतदा अधुना च स्वकीयस्य स्थितिं ध्याने आनीते सति गुरूदेवस्य विलक्षण शक्तेः। स्मरणं कृत्वा हृदय श्रद्धया पूरितो जातः अथ च चरणेषुस्वयमेव नतमस्तकं भवामि।

4—श्री विजयशंकर दुबे

अहं 1969 मास दिसंबरे श्री गुरूदेवस्य संपर्के आगतः अहं सेवा निवृत्तः अभवम् अतः स्व समयस्य सदुपयोगाय अहं दुर्गे एका विपणिका उद्घाटिता।

संध्यां मम कानिचित् मित्राः परिचिताश्च अवकाशे प्राप्ते सति मम् विपणिकायां आगच्छन्तिस्म। वयम् वार्तालापं कुर्मः। कतिषु अवसरेःु एषां वार्ता धर्मः तथा च दर्शने गांभ्भीर्य विचार विनिमये परिवर्तिता जाता। एकदा मम विचार विनिमयस्य विषयः श्री मदभगवद् गीतायाः एकादशोऽध्यायस्य एकःश्लोकः आसीत्। कोषाधिकारीः श्री ए0 पी0 व्यासः अस्य श्लोकस्य व्याख्या करोतिस्म अस्मिन् काले संयोगवशात् श्री गुरूदेवः विपणिकायां आगतः। सः स्वनप्तृभ्यः किञ्चित् विस्किटं क्रीणितुं इच्छतिस्म। यतः अहं बिस्कुटं निःसार्य्य बन्धयतिस्म। सः एतम् विचार विनिमयं शान्ति पूर्वकं श्रुतः। बिस्कुटं प्राप्त्येव मूल्यं दत्वासः विपणिकातः गतः। द्वितीय दिवसे मम मित्रगणाः दर्शन संबन्धी चर्चां कुर्वन्तिस्म गुरूदेवः पुनश्च किञ्चित् बिस्कुटं आनेतुं आगतः। बालकान् प्रतिदिनं बिस्कुटं दानं स्वास्थ्य दृष्टया उचितं न वर्तते। इत्थं अहं गुरूणा उक्तम्। तस्य उत्तरः आसीत् यत् सः जानाति परं शिशवस्तु शिशवः संति तं प्रकारान्तरेण प्रसन्नः कारयेत् एव। गुरूदेवः अस्माकीनां कृते अपरिचितः नासीत् तस्य संगीत महाविद्यालयः तथा च क्षेत्रस्य प्रसिद्ध स्यूतकारः/ दर्जी , तस्य पुत्रः अशोक तिवारी महोदयस्य कारेणेन सर्वे तेन सम्यक् परिचितः आसीत् विचार विमर्शे तस्य रूचिं वीक्ष्य अहं तेन

स्थान ग्रहणस्य आग्रहं कृतः। सः अवस्थितः तथा च किञ्चित् क्षणानन्तरे तूष्णीं श्रवणानन्तरे गतवान्। सः न तुकाऽपि टिप्पणी कृतः नैव विचार विमर्शे भागं गृहीतः।

कानिचित् दिवसानन्तरे प्रातरेकंसः विपणिकायां आगतः अहं एकाकी एव आसीत्। मम प्रार्थनोपरिसः अतिष्ठत् अथ च श्री व्यासस्य विषये अपृच्छत्। अहं यत्किंञ्चिदपि श्री व्यासस्य विषये जानातिस्म तं ज्ञापयत्। सः संध्यां पुनरागमनस्य वचनो दत्तः अथ च प्रचलितः।

सदैव तुल्यः अस्मिन् दिनेऽपि संध्यां मम मित्राः विपणिकायां एकत्रितं भूत्वा रामचरित मानसस्य एकस्मिन् छनदे विचार विमर्शं करोतिस्म। अस्मिन् क्रमेऽपि स्वविचारान् व्यक्तीकरणे श्री व्यासः प्रमुखः आसीत्। स्व वचनानुसारेण श्री गुरूदेवोऽपि आगतः। अहं तस्य विचारैः अस्मान् लाभान्वित करणस्य अनुरोधः कृतः। अस्योपरिसः उक्त छन्दोपरि प्रवचनारंभः कृतः। अथ च महाकाव्याः भगवत गीता अथ च शास्त्रैः प्रचुर मात्रायां उदाहरणं गृहीत्वा तस्यार्थः स्पष्टम् कृतः। सः अस्मिन् विषये प्राच्य कवीनां आचार्याःटीकाकाराणां विचारान् अपि स्पष्टं कृतः। तस्य ज्ञानस्य बाहुल्यतया गाम्भीर्येणच अहं अत्यधिकं प्रभावितो अभवम्।

अहं आश्चर्य चकितं अपि आसीत् तं एतत् पूर्वं अहं संगीत शिक्षकस्य रूपे जानातिस्म ज्ञानी ज्ञानवान् वा रूपेन। अस्मिन् दिवसानन्तरतः अहं तं एकः पृथकेव व्यक्तित्व रूपे अपश्यम् अथ च तस्य सान्निध्यस्य इच्छा अभवत् माम पूर्ण विश्वासं अभवत् यत् चेत् सः इच्छति तर्हितु विविध दार्शनिक रहस्याणां ज्ञानं अस्मान् दातुं शक्तः।

समयेन सह मम ह्रदये तं प्रति आदरः अथ च श्रद्धा जागृता। अहं तस्य पार्श्वे श्री मद्भगवत् गीतायाः व्याख्यार्थं गन्तुकामः तेन न केवलं माम् गीतायाः गूढ़ार्थानां परं सहैव उपनिषदाध्यात्मरामायण तथा चान्य धार्मिक ग्रन्थान् अपि संबोधयत्। होमियोपैथी तथा च ज्योतिष विज्ञानस्य द्वारमपि सः मदर्थं अनावृत्तः।

यदा अहं पातंजलि योग प्रदीपिकायाः विचार विमर्शः करोतिस्म श्री गुरूदेवः स्वानुभवेषु प्रकाशं स्थापयन्। माम परामर्शो दत्तः यत अहं प्रदीपिकायाः सूत्रेषु निहित सत्यं अनुभवः तथा च आत्मशात् कर्तुं प्रयत्नः करवाणि करवामहै/ समयेन सह आवयोः पारस्परिकः स्नेहः गहनः अभवत्। श्री गुरूदेवः माम लघु भ्रातः रूपे अपश्यत्/दृष्टवान्। यं तस्य स्नेहपूर्ण मार्गदर्शनस्य आवश्यकता आसीत्।

दार्शनिकः जीवनयापनस्य इच्छा माम् अति पूर्वतः एव आसीत्। अहं कानिचित् योगासनाः यथा मुद्रा त्राटकादेः अभ्यासं करोतिस्म। हृदयरूग्णत्बात् इति कारणेन अहं एषां अभ्यासः सुदीर्घ कालं यावत न कर्तुं समर्थः। अहं नित्य संध्या प्राणायामः तथा च भद्रासनादयो/ भद्रासनादयः अपि करोतिस्म परं एतैः अभ्यासैः माम कस्यापि प्रकारस्य शक्तिर्न प्राप्ता।

आदरणीय गुरूणा मार्गदर्शनं प्राप्ते सति अहं स्व अभ्यासं अत्यधिकं मनोयोगेन आरम्भः कृतः सः माम् त्राटकस्य एकाविधिः अवबोधयत् यस्याभ्यासः आरम्भं कृते सति परिणामः सन्मुखे आगतः। माम् मेरूदण्डे एतादृशी अनुभूतिः अभवत् यत् असंख्य पिपीलिकाः प्रचलन्ति। मम भ्रुवोर्यध्ये विविध वर्णानां /रंग सम्मिश्रणः प्रकटितो जातः। कतिचिद्दिवसानन्तरे एकः धवलप्रकाशः प्रकटितः। अभवत्। अथ च माम् अनुभवः जातः यत् अहं पवनेलम्बवान अस्मि। माम् स्व शरीरे एकः विचित्र तापस्य अनुभूतिः आरब्धा मम् अंगुलयः अथ च पादयोः नखाः कठोरं जातः। अल्प समयार्थमेव परं मम नेत्रयोः सम्मुखे त्रिकास्थेः त्रिभुजः मणिपूरस्य पंखुडयः तथा च स्वाधिष्ठानस्य चक्राः प्रकटितो जातः। एकदा अहं स्व आंतरिक अंगानि यथा हृदयः फुस्फुसः आदिम् एतत् कार्यं कर्तुं अपश्यत्। यथाहं एक्स किरणानां पटले एतत् सर्वं अपश्यम्। ग्रीष्म ऋतु आरम्भे सति गुरूदेवः माम् ऋतु समाप्तिं यावत् साधना रोधाय अवदत्।

एतेसर्वे अनुभवाः माम् अगस्त 1971 तः मार्च 1972 मध्ये अभवत्। चेदहं विधिवत् दीक्षा ग्रहणंः न कृतः। परं अहं श्री गुरूदेवं स्व गुरूदेव पथप्रदर्शकः तथा च शिक्षकस्य रूपे सम्मानं करोमि।

गुरूदेव मेलनात् पूर्वमपि अहं समस्त धर्म गन्थान् पठतिस्म तथा च स्वक्रमेण धार्मिकाभ्यास अकुर्म। अहं त्राटकाभ्यासं करोमि अथ च प्रतिदिनं 10–15 मिनटं यावत् आज्ञा चक्रे ध्यानकेन्द्रितं करोतिस्म कानिचित् वर्णान् /दृश्यानन्तरे दृश्यादतिरिक्तं अहं अधिकोन्नति न कृतः। अहं अंगुलीषु शक्ति उत्पन्नस्य प्रयत्नः कृतः परं साफल्यं न प्राप्तः।

वास्तविकानुभवस्तु माम् तदैव अभवत् यदा अहं श्री गुरोः उदार मार्गदर्शने साधनारंभः कृतः। दिवसेऽस्मिन् बहुधा माम् कस्णाजन्य घटनाः यथा लौहपथगामिन्यः घूम्रगन्त्रीवा दुर्घटनाः आगन्तारः पत्राणां विषयवस्तु अथ च अतिथीनां आगमनादेः पूर्वाभासः अभवत् यावदहं गुरूणा मिलितः तावत मम समस्त आशंकानां निवारणः अभवत् याः अपिजिज्ञासाः अवशिष्टाः सन्ति सः ताः अपि संतुष्टं करोति।

अहं हृदय रोगिणोऽस्मि। बारत्रयं माम हृदय पीड़ां अभवत् अथ च मम प्रियजनाः मम स्वास्थ्य लाभस्य समस्ताः आशाः परित्यक्ताः। अहं गुरूदेवस्य कृतज्ञः अस्मि यस्योदारता आर्शीवादेन च मम् पुनर्जीवनम् प्राप्तमभवत्। सः माम् स्वकीयस्य इच्छा शक्तिं प्रबल निर्माणे अपि साहाय्यं कृतः। माम् कोऽपि सासांरिकाः चिन्ताः अथ च समस्याः न सन्ति। चेत् किञ्चिदुत्पन्न भवन्ति अपि तर्हितु माम् कोऽपि प्रयत्नं बिना स्वतः एव समाधानं भवन्ति।

पञ्चदश /15 जनवरी 1976 रव्रीष्टाब्दं माम् अविस्मरणीयानुभवाः अभवत्। स्वप्ने गुरूदेवः प्रकटं भूत्वा माम् तत् पत्रस्य विषयवस्तुसंबन्धे अवबोधयत् यः सः माम् शहडोलतः अलिखत्। पत्रस्तु अधुनापि मार्गे एव आसीत्। एक मिनटार्थंअहं चैतन्यशून्यं अभवम्। अज्ञातेव मम पृष्ठः दीवारेण स्पृश्यते अथ च मम चेतना

प्रत्यावर्तिता। पुनश्चाहं विविध सुण्डवान् एकः गजः स्वकंठे स्थितः अपश्यत्। कानिचित् क्षणानन्तरे सः अदृश्यः अभवत्। मम समस्त पीठोपरि पिपीलिकानां प्रचलन इव अनुभूतिर्जाता। तथा च रीढः विशिष्ट रूपेण संवेदनशीलः अभवत् किञ्चित् कालं अहं अव्यवस्थितो अभवत्ः माम कंपने किञ्चित् काठिन्यं अभवत् दीवारस्याश्रयं गृहीत्वा अहं उत्तिष्ठम्। कानिचित् क्षणानन्तरं अहं शय्यायां शवासनस्य अवस्थायां विश्रमितः। समस्त दिवसं माम् क्षुधा न आगता। रात्रौभोजने कानिचित् करपट्टिकाः एव अहं गृहीतः। अहं गहन निद्रायां प्रसुप्तः। एतादृशी गहना निद्रा माम् कदाचिदेव आगमिष्यति।

द्वितीय दिवसे अर्थतस्तु षोडश जनवरीं अहं एकः आंतरिक उत्तेजनायाः अवस्थायां स्थितः। अहं पुनश्च स्व आभ्यन्तरिक अंगान् कार्यं कर्तारन् अपश्यम्।

अक्टूबरः 1977 रव्रीष्टाब्दस्य आरंभतः अहं सुदीर्घ कालं एकाग्र न भवितु शक्ताः। यदाप्यहं श्री गुरोः स्मरणं करोमि माम शरीरे पिपीलिकाः प्रचलनस्य अनुभूतिर्जायते। यदा कदा माम् हनुमानः पवनपुत्रस्य दर्शनाः भवन्ति। कस्यापि समये माम् संत गणाः अपि दृश्यन्ते। पुस्तक पठनस्यतु प्रश्नः एव न उत्थापितः यतः एक द्विवाक्याः एव माम्भाव विह्वलं कर्तुं पर्याप्तः भवन्ति। अध्यात्मसंबंधी कस्यापि प्रकारस्य काठिन्ये आगते सति अहं श्री गुरोः स्मरणं करोमि अथ च तत्कालेव मम काठिन्यं दूरीभवति। मया प्राप्तं यत् समस्त प्रकारस्य काठिन्यं दूरी कर्तुं प्रार्थना सर्वाधिक शक्तिशाली अस्त्रः वर्तते।

माम् शिरे भारयुक्तं तथा च नाडीषु तीव्रतायाः अनुभवः भवति अथ च माम् चमत्कृत कर्तारः प्रकाशमपि दृश्यते। अहं न जानामि यत् स्व एतदाध्यात्मिक तीर्थ यात्रायां अग्रे उन्नतिः कदा करिष्यामि।

5 – श्री गजानन वड़्यालकर

श्री गुरूदेवः यस्तु तिवारी जी इति नाम्ना ज्ञायतेस्म सन् 1960 वर्षे दुर्गस्य एम0 जी0 विद्यालये एकम् संगीतविद्यालयम् चालयतिस्म। संगीते रूचिवशात् विधि पूर्वकं शिक्षा ग्रहणाय अहं अस्मिन् विद्यालये प्रविष्टो जातः। विद्यालयेऽस्मिन् माम् न केवलं संगीतस्य शिक्षा प्रदत्ता अपितु अनेकेषु अवसरेषु योग विद्ययाअपिपरिचितं आकारितं योगेषुमम रूचिःएकः असाधारण विधिना उत्पन्ना जाता।

तत्समये संगीत विद्यालये वयम् सप्त छात्राः आसन् यथा तु विद्यार्थी वर्गे भवत्येव वयम् सामान्य प्रलापः कुर्मः यदा गुरूदेवः स्व संध्यायाः भोजन ग्रहणांय अगच्छत् वयम् प्रफुल्लितं भूत्वा तस्योपरि आलोचना विनोदं च कुर्मः। परं निरपवाद रूपेण कक्षायां आगते सति सः ताः सर्वाः टिप्पणयः आलोचनाः संदेहानाञ्च उत्तरं ददाति यः तस्यानुपस्थितौ वयम् आचरितः। यदा अपि। यावदपि वयम् तस्योपरिटीकाटिप्पणयः कृतः एतदेव अभवत्। वयम् तस्य सर्वज्ञता एवञ्च योगस्यउपलब्धिषु आश्चर्य चकितं आसन् अनेन प्रकारेण योगविद्यां प्रति वयमपि आकर्षितः अभवत्। अहं तस्य समीपं गत्वा दीक्षा प्रदानस्य प्रार्थना कृतः मम प्रार्थनां स्वीकृत्य सः रामनवमी नवरात्रिं दीक्षा दानस्य वचनो दत्तः।

मम् रामनवम्याः दिवसे व्रतार्थमपि परामर्श तेनैव दत्तः। परम्परानिष्ठहिन्दू परिवाराणां इव अहं अस्य व्रतस्य पूर्ण धर्म निष्ठया पालनं कृतः अथ च संध्यां श्री गुरोः पार्श्वे अगच्छत्। सः दीक्षां दत्वा माम् कृतार्थः कृतः तथा च माम् या साधना करणीया आसीत् तस्य विषये विस्तार पूर्वकं निर्देशोऽपि दत्तः।

प्रारम्भे ध्यानस्य कालः पञ्च दशतः त्रिशत् मिनट मध्यं स्थितः परंयदाहं नियमित ध्यान कर्तुं आरभत् मया प्राप्तम् यत् मम पादाः अल्प समये एव क्रियाहीनाः भवन्ति पादौ पुनः क्रियाशीलगति आगमने किञ्चित कालः लगितः। दैनिक कार्याणि

सुचारू रूपेण प्रचलन्ति अनेन विचारेण अहं रात्रेः समयं ध्यानाय लगनस्य निश्चयं कृतः। दिवसेऽपि अवकाशः अथ च एकातं सम्मेलने सति अहं ध्यानार्थ उपविशामि। अहं दिवसे अनेक घटिकाः यावत् परिवारव्यापारे व्यस्त जातः एतावता रात्रिं अपि कार्यं करोति परं माम् किञ्चिदपि श्रमस्य अनुभवः न भवति अस्य कारणं आसीत् यत् यदापि संभवः भवति अहं स्वरिक्तं समयं ध्याने व्यतीतं करोमि मम कार्ये कदापि बाधा नागता।

एकदा मम भ्राता ध्याने अवस्थितः अपश्यत् अथ च माम फटकारयन् लज्जयन् अकथयत् यत् अहं स्व कार्याणां उपेक्षा करोमि। वस्तुतस्तु सः ग्राहकाणां उपस्थितौ अकथयत् । अहं स्वकीयं अपमानितं अनुभवः कृतः अहं प्रत्युत्तरे वदामि यदहं स्वकर्तव्यं विधिपूर्वकं करोमि। अतः रात्रिं अहं यत्किञ्चिदपि करोमि तस्य सः चिन्ता न करोतु। रात्रिकालिक समयः मम स्वकीयः अस्ति। एषा वार्ता तस्य क्रोधं अत्यधिकमपि प्रवर्धितः। अथ च सः माम वासाय कोऽपि अन्य स्थान अन्वेषणाय अकथयत्।

एषः अतीव दुःखद अनपेक्षितश्चासीत्। एषः तत्कालः आसीत्। यदाहं साधनायां किञ्चित् उन्नतिः करोतिस्म। माम विविध मनोहारी वर्णाः दृश्यतेस्म। एते वर्णाः माम मंत्र मुग्धः करोतिस्म अहं वर्णैः आवृत्तः। ध्यान मग्नः किंवा कार्यरते जातेऽपि सौन्दर्य युक्त वैभव शाली वर्णैः सदा आवृतः। अस्य परिणाम स्वरूपं अहं एतावता सम्मोहितो जायतेस्म यत् समयेऽस्मिन् आगच्छन् ग्राहकैः उचित रूपेण वार्तापि न कर्तुं समर्थासीत्।

एकदा यदाहं 11 एकादश बादनस्य समीपे भोजनग्रहणाय गृहं आगतः माम् गृहे कस्तूरिकायाः सुगंधः आगता। मया पृष्टम् यत् इत्थं उत्तम कस्तूरिका माम् कुतः प्राप्तः। पारिवारिकाः माम् ज्ञापयत् यद् गृहे कस्तूरिका नास्ति। ते विचारयन् यदहं अर्ध विक्षिप्तं भवामि। अहं मौनम् एव आसीत्। माम् विविध प्रकारस्य सुगंधानां अनुभवः

भवति अभवत्। एकस्मिन् अवसरे अहं भगवान् श्री कृष्णं वॉसुरी वादयन् श्रुतः सः माम् स्वकीयेन सह क्रीड़ार्थं आगमनस्य निमंत्रणो दत्तः। माम विविध प्रकाराणां ध्वनयः अपि श्रृणोति। उदाहरणार्थं मटिकाः तथा च तबला आदि वाद्यानां ध्वनिः। अहं अनेकान् जनान् परितः प्रभामंडलमपि द्रष्टुं शक्नोमि। अहं सतं तुकारामः शिरडी स्थानस्य सांईं बाबा, चाजुद्दीन बाबा, रामदासः, रामकृष्ण अथ च विवेकानन्दादि सत पुरूषाणामपि दर्शनं कृतः। निरपवादरूपेण श्री गुरूदेवः एषां मध्ये भवन्ति। स्वशक्तौ अनेक गुणितं बृद्धेः अनुभवः माम् भवति। अतिथीनां आगमनः तथा च उद्देश्यस्य पूर्वाभासः माम् भवति। अनेन मम सामाजिकः स्थितिः तथा च प्रतिष्ठायां उन्नतिर्जाता। एताः कानिचित् सिद्धयः अभिव्यक्तं कुर्वन्ति। येन प्रत्येकं दूरं बसेत्।

एकदा रात्रेः अनुमानतः एकादश वादने अहं शैय्यायां अलेटम्। एका विचित्र ध्वनिः ग्रीवायाः पृष्ठ भागे उत्पन्नं भूत्वा शीघ्रतया अंतस्थां गताः। प्राप्ताः वा अहं अतिश्वसितः तथा च अर्ध घटिकां यावत् विश्रमितः वा यदाहं मुत्थितः मम कंठः शुष्कः जायतेस्म। पूर्णशरीरः अत्यन्त उष्णः आसीत्। माम रक्तस्य वमनः अभवत्। अहं अतीव भयभीतः जातः। तत्कालेव अहं गुरोः पार्श्वेगतः अथ च तं स्व अनुभव विषये कथितः। सः पृष्ठं स्पर्शयन् माम गृहे गत्वा एक लघुजलपात्र चंदनयुक्तजलपानाय अकथयत्। अहं गृहं प्रत्यावर्त्य तन्निर्देशानुसारंमेव कृतः। अतोनन्तरे यदा माम एतादृशः अनुभवः भवति अहं एकं लधुजलपात्रे चन्दन युक्त जलं गृह्णामि। 1968 वर्षे मम विवाहः अभवत्। अधुना मम पुत्र द्वयं वर्तेते। मम प्रथम पुत्री वर्ष द्वयस्य अवस्थायां स्वर्गं गता। मम प्रथम पुत्रः अधुनापञ्च वर्षीयः वर्तते। तस्य जन्मतः एका घटिका पूर्वं मम पत्नी श्री पवनपुत्रस्य दर्शनं कृता। सा अपि गुरूणा दीक्षा गृहीता। तां विट्ठलः अथ च रूक्मिणी तथा च श्री रामंचन्द्र सीतायाश्च दर्शनाः भवन्ति। कष्ट क्षणेषु मम पत्नीं मात्र एकः दीपकः अथ च धूपं प्रज्वालयते अथ च समस्यायाः समाधानं भवति।

अधुनाहं ध्यानं न करोमि। अहं आत्मरूपस्य सौन्दर्यतायाः दर्शनं प्राप्तः। अहं स्वमृत्योः अपि अनुभवः कृतः। अहं स्व शरीरं चितायां ज्वलितोऽपिं अपश्यम्। माम् सर्वान त्यागार्थं इच्छा भवति। यदा प्रश्नावली मम पार्श्वे प्राप्ता अहं रात्रिं आदरणीय गुरोः दर्शनः कृतः। सः माम शीघ्रेव उत्तरं दातुं अकथयत् यदहं ददामि।

माम् विविधान्यप्रकारस्यानुभवाः अभवत् परं कालेऽस्मिन् इत्थमेव पर्याप्तः वर्तते।

6– श्री चित्रनाथ मिश्रा

मम पिता (जनकः) संगीते रूचि स्थापयतिस्म। अतः यदा श्री गुरूदेवः दुर्गे संगीत विद्यालयम् उद्घाटितः ते सहजेव तं प्रति आकर्षितोऽभवत्। सन् 1960 वर्षे स्व पितुः माध्यमेनैव अहं गुरोः संपर्के आगतः।

तस्मिन् काले अहं एकम् एतादृक रोगेण पीड़ितो आसीत्। यः असाध्यं मन्यतेस्म। मम जीवनं प्रति समस्तोत्साहः समाप्तं गतः अथ चाहं गहन निराशायाः अनुभवम् करोतिस्म। कानिचित् प्रारम्भिक सम्मेलनेषु सः माम संगीत विद्यालये प्रविष्टं भूत्वा संगीत शिक्षणाय परामर्शो दत्तः। तावदहं न केवलं संगीतं अपितु आध्यात्म क्षेत्रेऽपितेन मार्गदर्शनं प्राप्नोमि।

संगीत विद्यालये दिवस यापनेन सहैवेव श्री गुरोः आकर्षक व्यक्तित्वः माम तस्य निकटतमआनीतः। रोग रूजकारणेनोत्पन्नयन् मम जीवनं प्रति निराशावादी दृष्टिकोणः परिवर्तते। साम्प्रतमहं जीवनं प्रति रचनात्मक दृष्टिकोणंस्थापितः। अथ चास्य जीवने किञ्चित् उत्तम कार्य कर्तुं इच्छा जागृता मध्येऽस्मिन् गुरोः आध्यात्मिक जीवनः उपलब्धयस्च माम् प्रभावितः करोतिस्म अतः एकदा अहं श्री गुरूणामामअपि योगः तथा च आध्यात्मिक मार्गस्य दीक्षा प्रदानं कर्तुं अनुरोधः कृतः। सः माम विजयादशम्याः दिवसे दीक्षां दत्तः।

दीक्षा ग्रहणानन्तरतः अहं श्री गुरूणा निर्देशित विधिना ध्यान योगाभ्यासंकरोमि अहं योगस्य विधयः तथा च प्राच्याधुनिक साहित्ययोः अति रूचिं गृहणामि। अध्ययन मध्ये आगन्तारः गुप्त रहस्यार्थं मम मनसि एकः अनतर्जात ज्ञानम् स्फुर्यते स्फुटति वा तथा च बिना विशेष प्रयत्नेनैव दुस्तराः समस्याः स्वतः एव संवार्य्यते। मम् तत्काल बुद्धिरपि विकसितः जायते। यदा कदापि माम् दुस्तर समस्यानां प्रश्नानां वा साक्ष्यः क्रियते माम् मम अन्तरतः तेषां उत्तरं प्राप्तः। अथ च माम् आश्वासनमपिलब्धः यत् समस्याः शीघ्रेव किवा किञ्चित् बिलम्बेन समाधानं भविष्यति। प्रसुप्त कालेऽपि मानसिक सतर्कतायाः अनुभूतिः भवति। माम् अनुभवः भवति यत् मम चेतना पूर्णजागृतः सतर्कश्चास्ति।

एकदा यदाहंध्यानं अकुर्म एकानुभूतिः गुदा भागे/मूलाधारे उत्पन्ना जाता एषा विद्युत धारा इव आसीत्। एषा तीव्र गत्या मेरूदण्डतः भूत्वा अंतस्थायां प्राप्ता। तत्कालेव एकम् अंडाकार प्रकाशं अपश्यत्। अथ चानुभूतिर्जायते यदहं स्वभौतिकं शरीरे नास्मि परं अस्यबहिः कोऽपि व्यक्तिः वस्तुश्चास्मि। अहं स्व शरीरं संचालने असक्तः हस्त पादौ मम नियंत्रणेन आसीत्। समयस्य बोधमपि माम् नासीत्। स्वकीयं परितः भौतिक जगताहंमनभिज्ञः आसीत्। यदा शरीरे संज्ञा प्रत्यावर्तिता तदाहं स्फूर्तिः प्रसन्नतायाश्चानुभवाः कृतः। एषः अनुभवः एकम् वास्तविक रहस्योद्घाटनः आसीत्। अथचाहं कदापि एतादृशः परमानन्दस्य क्षणानां कल्पनाऽपि न कृतवान्। अतोनन्तरेऽपि बहुधा अहं कार्ये व्यस्तं जातं तथापि स्व आभ्यन्तरे महद्सुखानुभवंकरोमि यः मम समस्त शरीरे व्याप्तं भवति।

भगवद् गीतायां चन्द्रमोत्पन्न उज्वलः तथा चान्धकारपूर्ण काल विषये उल्लेखः ज्ञायते। योगाभ्यासेन अस्य महत्वं सम्यक् रूपेण ज्ञायते। एषः किं अथ च केन प्रकारेण भवति अहं न जानामि।

अहं अधुना सांसारिक समस्याभिः काठिन्यैश्च व्यथितं नास्मि। अहं आत्मिक उत्थानस्य अनुभवं करोमि काठिन्यास्तु अवश्यमेव आगच्छन्ति परं माम् विचलितं न कुर्वन्ति समयेन सह तस्य समाधानं भवति।

गुरोः संपर्के आगमनात् पूर्वं अहं अतीव हतोत्साहितः आसीत् अथ च माम् स्थितिः निराशाजनकासीत्। अहं स्व समयम् आत्मदया तथा च आत्मदुःखे व्यतीतयतिस्म। सांत्वना दातारः न कोऽपि आसीत्। साम्प्रतम् एषः । एतत् सर्वं परिवर्तते।

7– श्री गुरू प्रसाद पाण्डेय

बाल्याकालादेव माम् धर्मं प्रति रूचिः आसीत् अथ च अहं धार्मिक ग्रन्थानां अध्ययनं करोतिस्म मंदिरेषु अगच्छम् परं मूर्तीना प्रति श्रद्धायाः अभावः अभवत् गुरूदीक्षा ग्रहणस्य परंपरा पूर्वज पक्षतः आगच्छन्तिस्म।अतः मामपि वाध्यः क्रियते मयापिनिश्चयमाकारितः यत् यावत् सद्गुरूः न मिलिष्यन्ति अहमपि दीक्षां न गृहीष्यामि।

यदाहं कक्षा नवमीषु आसीत् तदा प्रथमवारं अहं कस्यापि पुस्तके कुण्डलिन्याः विषये किञ्चित् अपठम्। तस्मिन् समये मम मनसि जिज्ञासा उत्पन्ना जाता यत् किं कदापि मम कुण्डलिनी जागृतं भविष्यति। सन् 1970–71 वर्षे एम. ए. कक्षायां अध्ययन रतः आसीत्। तद्दिनेषु कबीर साहित्ये कुण्डलिन्याः विषये ज्ञानमधिकं प्राप्तः माम् एतत्सर्वं कवेः कल्पना मात्रेव प्रतीतः भवतिस्म। तत्कालीन प्राध्यापकः श्री भटनागरेण एतत् प्रश्नं पृष्टे सति यत् किं कबीरस्य वार्तानां अनुभवः संभवमस्ति। सः माम् संबोधयत् यत् कबीरः यत्किञ्चिदपि लिखितः तत्सर्वं अनुभवगम्यं वर्तते। अस्यानन्तरतः मम जिज्ञासा तीव्रतरा जायते। यत्र तत्र परिभ्रमण कर्तारः तथा कथित

सतपुरूषैः अस्य संबंधे किञ्चिदपि प्राप्तं न अभवत्। एतादृशान् जनान् प्रति मम मनः अश्रद्धया पूरितो जातः।

सन् 1974 वर्षे अहं श्री हर नारायण दुबे महोदयेन सह शिक्षक पदे कार्यरतः आसम्। श्री दुबे महोदयेन अवकाश क्षणेषु दर्शनोपरि वार्तालापं अकुर्वः। एकदा श्री दुबे विज्ञापयत् यत् तस्य पूज्य गुरूदेवः तस्यैव निवास स्थाने अवस्थितः। परं तस्मिन् काले स्थितिरेषा आसीत्। यदहं गुरूभ्यः भीतोजातः। अतः द्विवेदी महोदयस्य एतत् विज्ञापनेन मम तेन तं प्रति वा गत्वा मिलनस्य किञ्चिदपि इच्छा नाभवत्। अस्यां रात्रौ माम् एकम् स्वप्नम् अपश्यत् मया दृष्टम् यदहं द्विवेदी महोदयस्यगृहे गच्छामि किञ्चिदपि इच्छा नाभवत् ते यज्ञ स्थले पूजनं कुर्वन्ति। तत्र एकः व्यक्तिः विराजमानं वर्तते। सः माम् प्रति पश्यति। अथ चाहं पूजा स्थलं प्रति वर्धे। तत् काले तद् व्यक्तेः ललाटे नेत्रेयोः यॉ विलक्षणा दीप्तिः आसीत् सा माम् अद्यावधि स्मरणं वर्तते। सः उत्तिष्ठय माम् प्रतिआगतः अथ च पुनः अदृश्यः अभवत् अतोऽनन्तरे यज्ञ कुण्डतः एकः स्वर्णिम सर्पः निःसृत्य पुनः अस्यां प्रविष्टोऽभवत्। एषा प्रकिया द्वित्रिवारं अभवत्। अतोऽनन्तरे सर्पः तत्रस्थगुरोः रूपं गृहीतः अथ च मम कर्णयोः किञ्चित् अवदत्। स्वप्नं समाप्यते। जागृते सति मया एषः अनुमीयते यत् कदाचित् यः व्यक्तिः स्वप्ने अदृश्यत्। सैवतु श्री दुबे महोदयस्य गृहे न विराजतेइत्थं चिंतितं यत् तस्य गृहं गत्वा पश्यामि तु सत्येव। अन्येद्युः एव दिवसे अहं तस्य गृहं प्राप्तः मम आश्चर्यस्य सीमा न आसीत्। यदा तत्र अहं तं गुरूं चतुष्पादिकायां अवस्थितः प्राप्तः अन्य उपस्थित जनानां मध्ये अहमपि अतिष्ठत्। किञ्चित्कालानन्तरं सर्वेगताः तदा पूज्य गुरूदेवः मम परिचयं अपृच्छत् मम मुखात् निःसृतः अहं भवानेवप्रसादः अस्मि। गुरूदेवः किञ्चत् क्षणाय उत्थाय बहिर्गतः।

प्रत्यावर्त्य सः मन्देन अकथयत्। अहं तवार्थं एव अत्र आगतोऽस्मि। किंञ्चित ज्ञातुं इच्छसे। मया कथितं अहं स्व स्वकीयं केन प्रकारेण परिचयामि भवान् एतत् माम्

ज्ञापनस्य कृपां कुरू। पू0 गुरूदेवः अपरे दिवसे पुनः आगमनाय अवदत्। आगामि दिवसे तत्र गतेसति पू0 गुरूदेवः मम शंकानां समाधानः कृतः। मम मनसि कस्यापि प्रकारस्य संदेहः किंवा भ्रमः अस्य विषये नावशिष्टः। माम् एतादृशः अनुभूयते यत् माम अनेन अतीव घनिष्ट संबंधः अस्ति। एतत् सर्व केन प्रकारेण अभवत्अहमपि न बुद्धम्। पू0 गुरूदेवेन कथितं यत् तव कार्य सिद्धः जातः। मम ज्ञाने न आगतः यत् कः कार्य सिद्धः अभवत्। अतोऽनन्तरे सोऽवदत् त्वम् गुरूदीक्षा गृहणातु यतः तेन विना त्वम आदेशं न पालयिष्यति। पूर्व अहं किञ्चित् विचार मग्नः आसीत् परं पुनः माम् एतादृशः अनुभूयते यत् एषः बहुमूल्य कालः इत्थमेव नश्यते। अतोऽहं 02/ द्वि दिसम्बर 1974 वर्षें गुरूदीक्षा गृहीता। तथा च गुरू चरणेषु समर्पितः अभवत्। नियमित साधनायांरताः दीक्षा ग्रहण करणस्य द्वितीये तृतीये वा दिवसतः एव साधना कर्तारन् पादयोः जानुः जानुः/ घुटना देशतः अधः कम्पनइव अभवत्। आसप्ताहानन्तरे शवासने ध्यान काले अकस्मात् स्वर्णिम् ऊँ दर्शनो दत्तः। दृश्यते वा कटि प्रदेशे तीव्र ध्वनिः अभवत् अथ च जिह्वा वहिः निः सृता। समीपेव पूज्य गुरोः आकृतिः दृश्यतेस्म। अथ च शरीरः अतीव सामान्यः प्रतीयतेस्म अहं कामनां कृत्वापि जिह्वां आभ्यान्तरे न कर्तुं शक्तः। मांसपेशयः /त्वक समूहः निष्क्रियो जातः। किञ्चित्क्षणानन्तरं जिह्वा अंतर्गता अथ चाहं पूर्ण स्वस्थ जागृतः अवस्थायां इतस्ततः अपश्यम् विश्रमितः। प्रातर्जागृते शरीरेः अतीव सामान्यः अनुभूयते/दृश्यतेवा समस्त वातावरणः इत्थं शोभनः आकर्षकः शान्तश्च अवलोक्यते तथा जीवने कदापि न अनुमीयतेस्म। संसारे यः अपि दृष्टि गोचरः भवति सर्व प्रेमानन्देन ओतप्रोतः प्रतीयते। एतावता अधिकं सरसता आसीत् यस्य वर्णनः एव नवर्णनीयः शरीरः अतीव संवेदनशीलः जातः। विविध देवतानां दर्शनम् अभवत्। 28 अष्टविशति दिसम्बरः 74 वर्षतः यथा पञ्च दश दिवसं यावत् श्री कृष्णः विभिन्न रूपेषु दृश्यते। अहं अनेन संतुष्टः न आसीत्। माम् तु पू0 गुरूदेवस्य एव दर्शनानां अभिलाषा आसीत्। एषः पू0 गुरूदेवेन कथने सति सः

स्पष्टीकरणो दत्तः यदेषः एकैव दिव्य शक्तिरस्ति। यः विभिन्न रूपेषु स्वकीयं प्रदर्शयति। ''गुरू र्बह्मा, गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वराः'' यः अपि दृश्यतेस्म तत् बिना संकल्पेनैव दृश्यतेस्म। यथा शोचयतु तथैव न दृश्यतेस्म कस्यापि प्रति कोऽपि आकर्षणं नासीत्। पू0 गुरूदेवः विशति मिनटं यावत् एव ध्यानार्थं अकथयत् माम् प्रतीयतेस्म यत् एतत् समयेनकि भविष्यति शेषस्तु पूर्णकालः सांसारिक व्यवहारान् पूर्ण करणे एव गच्छति। तस्मिन् समये एका पंक्तिः माम्ध्ययनाय मिलितः '' रघुवीरहि बावरि असि भजिये, जस नागरि को चित नागर में'' एषः मह्यम् महावाक्यः जातः। मध्येऽस्मिन् मम् एक प्राच्य शत्रुः मित्रतायाः हस्तं वर्धयित्वा आगतः ततः शत्रुता समाप्तं भूत्वा मित्रतायां परिणता जाता।

किञ्चित् अन्य दिनानन्तरे कम्पनानुभूतिः कटि प्रदेशतः ऊर्ध्वं सुषुम्ना मार्गे प्रवर्धिता बारमेकं एकेन सज्जनेन स्वअनुभव ज्ञापने सति कथने सति। सर्वं शून्यत्वंगतः। अस्याः घटनायाः संबंधे पू0 गुरूदेवं पत्र प्रंषणस्य मासद्विमासांदनन्तरं पुनः अनुभवक्रमः प्रारम्भः अभवत्। एकदा स्वकीयस्य मृत्युरपि भुक्तोऽस्मि। एकान्यवसरे शरीरः पृथक् स्थितः दृश्यतेस्म। अहं तत्रैव वहिः अवस्थितः। मम् स्वकीयस्य शरीरः माम् इत्थं दूषितः दृश्यतेस्म यत् प्रत्यावर्त्यतस्मिन् गमनस्य इच्छा एवन अभवत्। एतादृशाः अनुभवाः यदापि भवति तदा केनापि कारणेन पू0 गुरूदेव कथनेन माम् शरीरे प्रविष्टु प्रेरितः एव जायतेस्म। अनेकेषु क्रमेषु संस्कारः अथ च कार्य विचारः मूर्तरूपे दृश्यन्ते। ये संस्काराः यथा प्रबलाः भवन्ति तथैव स्पष्टं दृश्यते अथ चान्यः पृष्ठे अस्पष्टः दृश्यते। एकदा एतादृश एव अवस्थायां माम् ममपितृदेवता दृष्टम् यं प्रति अहं आकर्षितः गम्यतेस्म। जायतेस्म। परं तस्मिन् काले पू0 गुरूदेवः हस्तं गृहीत्वा अवरोधयतिस्म।

एकान्यसमये ध्यानांरभं काले माम् एषः आभासते यत् मम पीठे तीव्रेण गुरूदेवः हस्तेनताऽयते। मम पृष्ठः अत्यधिकं प्रज्वलितः गृहस्थ जनान् यदा पृष्ठोपरि हस्त

संचालनाय अवदत् तर्हितु हस्त स्थापिते एव सः चकितः जातः यतः तद् स्थानः सामान्यतः अतीव उष्णः आसीत्। गुरूदेवं पत्र लेखनेन उष्णता न्यूना जाता।

गुरूदीक्षायाः किञ्चित् मासानन्तरंध्यानावस्थायां नासिका मुखम् कण्ठः अथ च कर्णस्य पृष्ठनाड़ीषुंकर्षणः जायते। अस्य कच्चित् दिवसानन्तरं मुखे एकः स्वादिष्ट द्रवः स्त्रावितः जायते। तद् कुतः आगच्छतिस्म एषः न ज्ञायते। अधुनायदापि अस्य स्मरणः आगच्छति तद् रसास्वादनः मिलति। एकदा ध्यानेव काले कृष्ण वर्णः शिवलिगंः अदृश्यत् यस्योपरि शुभ्रंचकासते सर्पः लिप्तः आसीत्। यदा सः सर्पः प्रकम्पते तर्हितु प्रतीयते यत् सिरस्य अधोभागः स्फोटयिष्यति। सः किञ्चिदपि ऊर्ध्व उत्थापयति ततु इत्थं तीव्रस्य सिरे आधातः उत्पीड़यते यत तस्य शब्दमपि श्रूयते। अनेन सहैव ललाटोपरि ऊँ तथा गुरोः दर्शनं भवति। कुंडलिन्याः दर्शनानन्तरे एताः सर्वाः क्रियाः शान्ताः अभवत्। पू0 गुरूणा ज्ञापिते सति सः ध्यानकरणेरोधयति। यदापिकोपिआध्यात्मिक काठिन्याः अवरोधश्च आगच्छति ताः अहं पू0 गुरूं निवेदयतिस्म अथ च ताः समाप्ताः भवन्ति। अनेक क्रमे विविध शंकाः भ्रमोत्पन्नाः जायन्ते। तस्मिन् काले एतादृशः प्रतीयते यत् अधुनाअपतत्। इदानीं अनेन निवारणः दुस्तरम् वर्तते। परं गुरूणा निवेदन कृते सत्येवताः स्वयमेव गुरूकृपया इत्थं सरलतया दूरी भवन्ति यदहं व्यक्तये कर्तुं न शक्तः। एषा साधना गुरूकृपां बिना असंभवः वर्तते मानवः साधनारम्भंकर्तुं शक्तः परं साधनायां साफल्यदानं कस्यापि महान् शक्तेः एव कार्यं अस्ति। संशयः भ्रमश्च बिना गुरू साहाय्येन न दूरी भवन्ति।

मई सन् 1975 वर्षे मम पितृ देवता अतीव रूग्ण ग्रस्तः आसीत्। माम् पू0 गुरूदेवः अदृश्यत् अथ च तस्य वाण्या स्वपितुःपूर्ण रूपेण सेवा कर्तुं आदेशः अभवत्। एतस्य प्रकारस्य संदेशाः माम् समये– समये प्राप्ताः भवन्ति। तथा च भावी वार्ताः अपि यदाकदा ज्ञातं भवन्ति।

सन् 1977 वर्षतः ममसुषुम्ना मार्गे कम्पनः प्रवर्धितः पू0 गुरोः ऊँ प्रणवस्यस्मरणे जाते एव किं वातस्य चर्चाप्रचलितेव प्रकम्पनः अथ च उत्तेजना वर्धयतिस्म। साम्प्रतं दिव्य ज्योतिः समस्तमस्तिष्के प्रसृताः जायन्ते ललाटे भारः कम्पनश्च भवति। इत्थं अनुमीयते यथा पूर्ण मस्तिष्के किञ्चित् पूरितोजातः तथा च स्थितिं संवहनम् दुर्गमः भवति मार्ग प्रचलने चेत् पू0 गुरोः स्मरणम् अजायत् तर्हितु गमनः अवरूध्यते। चेत द्वि चक्रिकया गच्छन् /गच्छामि तर्हितु पादचापः न चलितुं शक्तः द्विचक्रिकायां अतिष्ठत् द्विचक्रिका स्थिरं भवति परं न अपतत्। पृष्ठतः आगन्तारः यात्री कथयन्ति मध्ये किमर्थं। अवरूधयते तर्हि पुनः चलनारम्भः भवतिस्म लेखन कार्योऽपि अवरूध्यतस्मे। शान्तः एवासीत्। धार्मिक चर्चा न तु कर्तुं शक्तः नैव श्रवणे शक्तः। कस्यापि माध्यमेन गुरोः नामगृहीते/ ऽउच्चारिते सति कण्ठे अवरोधः भवतिस्म समस्त शरीरे कम्पनः भवति। आध्यात्मिक वार्तानन्तरे यथैव अन्य सांसारिक चर्चारंभः भवति एषा संवेदना तस्मिन् पले रूद्धयति। पुनः गुरोः स्मरणे सति एव पुनः प्रारभ्यते। एतयोः उभयोर्मध्ये तथैव समय लगति यथा तु विद्युतस्य विद्युत संचालन लघुयंत्रः उच्चैः नीचैः करणे लगति एतत् सर्वं गुरोः एव कृपायाः परिणामः वर्तते।

अहं स्वपक्षतः कोऽपि प्रयासः न कृतः मात्र गुरोः ध्यानं अहर्निशि अकरवम्। साम्प्रतंतु सोऽपि अवरूध्यते। परं प्रगतौन्यूनतानु आगच्छति। अत्यधिकस्तु आध्यात्मिक पुस्तकानां अध्ययनस्तु न कृतः परमद्य गूढ़ातिगूढ़ आध्यात्मिक विषयोऽपि ज्ञाने आगच्छन्ति। गुरोः निर्देशानुसारं ''एकहि साधे सब सधे'' पूर्णतः सत्यमस्ति समस्त धार्मिकाः पुस्तकानि विविध विधानेन ब्रहमंप्रति उन्मुखं भूतस्यमार्गज्ञापयन्ति चेत् ब्रहम् प्रति उन्मुखः जातः जायतेवा तर्हितु संपूर्ण रहस्यज्ञाने आगच्छन्ति यदा कस्यापि कठिन विषयं ज्ञानस्य प्रयत्नं करोमि तर्हितु एतादृशः लगति यथा तु आभ्यन्तरतः कोऽपि मार्गदर्शनं करोति अथ च सम्यक् समाधानः भवति सोऽपि एतादृशः यत् यस्योपरि संदेह नैव कर्तुं शक्यते।

सांसारिक व्यवधानैः संरक्षणाय अहं पू0 गुरूणा कदापि किञ्चिदपि नाकथयत्। अनेकेषु पुस्तकेषु अहम् अपठम् यत् नारायणस्य दर्शनः किंवा परम तत्वस्य ज्ञानं ; लोभ, मोहश्च, संसारेण आसक्ति त्यागे एव संभाव्यते परं गुरूचरणेषु आगमनान्तरे एते सर्वे स्वयमेव अनेन प्रकारेण परित्यजन्ते यत् साधकः नैव ज्ञातुं समर्थो भवति। हानि लाभस्य च ज्ञानं तु माम अधुनापि वर्तते परं आभ्यां इदानीमहं विचलितं न भवामि।

साधना काले विविध माध्मेन प्रकाशः दृश्यतेस्म कदापि मस्तकस्य पुरतः कदापितु शिरस्य पृष्ठतः आगच्छन् दृश्यते कदापि एषः इत्थं तीव्रः भवति यत् तस्योपरिध्यान केन्द्रितः एव न क्रियतेस्म। कदापि तु मेधाच्छादित आकाशः दृश्यते तु कदापि निःसृत ताम्रवर्णी सूर्यः। परिणामतः अधुना एकान्ते स्थित्वा अहं पूर्णिमायाः चन्द्रः किंवा उदयति अथवा अस्त भवन् सूर्यः न द्रष्टुं शक्तः एतादृशः करणे सति स्व स्वकीये निमज्जामि यतः एते वस्तुतस्तु तथैव दृश्यन्ते यथा ध्यानावस्थायां द्रष्टारः प्रकाशः। एते सर्वे अनुभवाः निरंतरं न भवन्ति। कदापि अत्यधिकं भविष्यन्तितु कदापि न्यूनं। यदा कदापि तु एषोऽपि प्रतीयते यत् कोऽपि साधनानैव कृतः एतादृशः भूतस्य कारणं गुरूणा पृष्टेसति सः अकथयत् यत् यथा भोजनः किंवा पर्याप्त मात्रायां ग्रहणानन्तरे तं पाचयितुं किञ्चित्कालं लगति अतोऽनन्तरेव एतम् पुनः ग्रहणं उचितः भवति तथैव साधनयासहभवति एतेषां सर्वेषां नियमनः साधकस्य अज्ञातेव दिव्य शक्त्या भवति। शिष्यावश्यकतां पूर्ण रूपेण उदबुध्य अस्यकालस्य नियंत्रीकरणः अहं गुरोः एवमहानतां मन्ये।

शिक्षकोऽस्मि इति संबन्धेन लेखनः पठन पाठनस्य च एव कार्यं अधिकं क्रियन्ते चाटुकारितापूर्णः असत्यभाषी लेखाञ्च यदा पठन पाठनाय कालः आगच्छति तर्हितु लगति एतत् सर्वं माम् उदरस्थः अधिगच्छति। भावनाः मूकाः भवन्ति। अधुना सत्यवाणी सत्यभाषणं च प्रत्येव विशेषः रूचिः भवति जायतेव। अधुनागुरोः चरणेषु आगतः सप्तवर्षाण्यतीतः अस्यां अवधौ इत्थं विभिन्न प्रकाराणां अनुभवाः जायन्ते यत् तत्

सर्वेषां वर्णनः कठिनं वर्तते। वस्तुतस्तु वर्णन कर्तुं इच्छा एव न भवति। प्रारम्भे स्व अनुभवज्ञापनस्य उत्सुकता आसीत् परं यथा गुरूकृपा वर्धते केनापि किञ्चिदपि इच्छा न भवति। पूर्वं स्व हितेच्छुकानां कल्याणार्थं तान् अपि पू0 गुरोः दर्शनं कारयितुं इच्छा भवतिस्म् तान् इतः आकृष्टयेतैः गुरोः विषये विज्ञापयामि तथा च स्वकीयं अथ चान्यानां अनुभवानां परिचर्चा करोतिस्म। परं अधुना एषः लगति यद् यः व्यक्तिः अतीव भक्तः प्रतीयते तत्तु वास्तविकेषु किञ्चिदन्यः एव भवति। व्यक्तिः न जानामियत् कस्य भ्रमे आसक्तः जायते। एतैः कारणैः साम्प्रतं केनापि अस्मिन् विषये चर्चा नैव करोमि।

मनः यदा गुरू चरणेषु लीनः भवति तदा तस्य गति मन्दः प्रतीयते। मनसः शान्त भवन् स्थितेः भानं भवति। मनः इत्थं अत्यधिकं शान्तः भवति यत् कदापि वॉज्छयित्वापि तं अन्यं प्रति न नीयतेस्म। शीघ्रेव सः स्व शान्तावस्थायां प्रत्यागच्छति। अस्यां स्थितौ साधकः मौनः भवति नेत्राः निमील्यते अथ च प्रस्फुटितः जायते। चिन्ता किं वा चिन्तनः किञ्चिदपि न भवितुं शक्यते। अस्यानन्तरे कस्यापि कार्यं करणीयः अथ च तस्य विषये विचारणीय अतीव कष्टप्रदः भवति। अस्यां शान्ति सागरे न केवलं मनः अपितु समस्तः शरीरः गतिहीनः भवति श्वास प्रश्वासस्यापि भानं नावशिष्यते। चेत् कोऽपि शब्दा श्रूयन्ते तर्हितु तस्योपरि विचारः न कर्तुं शक्यते। समस्त शरीरे विशिष्टः उष्णता अथ च प्रकंपनः पूरयति। दुःख सुखस्यकापि अनुभूतिः न भवति। साधकः आनन्दे आप्लावितः स्थिरः जातः। न ज्ञायते एषः एव ब्रहमानन्दः वर्तते अथ चैतेन अग्रेऽपि किञ्चिदपि वर्तते। अस्यां अवस्थायां समस्त संसारे अलौकिक दीप्तिः दृश्यते। कालेऽस्मिन् अवर्णनीयानन्दस्य प्राप्तिः भवति। चेत्एतादृशः प्रतिक्षणे निर्मीयते। एतत् समक्षं समस्त सांसारिकाः आनन्दाः अति तुच्छाः सन्ति। परं यथा उपरिवर्णितः। एते भावाः सदैव एकैव न निर्मीयते। एकदा सद्गुरूदेवेनाहम्पृच्छम् तर्हितु सः ज्ञापयत् चेत् एषः न्यूनाधिकं न भवति तर्हितु समस्त सांसारिकाः कार्याः एव समाप्तं भविष्यन्ति। तथा च देह पातं भविष्यति। मनसः स्थिरे जाते सति शरीर भावः समाप्तं भवति। यदा

कदा एषः शरीरः स्वकीयं कस्यापि दर्पणे प्रतिबिम्बितः जातः दृश्यते। परं सः प्रतिबिम्बितः अतीव स्वस्थः शोभनश्च भवति। कदापि एषः शरीरः अतीव लघु प्रतीयते अथ च कदापि एतादृशः लगति अहं धरातलतः उपरि उपरि प्रचलामि। पथिगन्तारः जनाः लघु –लघु तथा च निम्नः दृश्यन्ते। यथा तु वाह्य रूपेण अहं सामान्य एववसामि।

एकदा मम स्थानान्तरणः एकस्मिन् ग्रामीण क्षेत्रे अभवत् अहं स्वकाठिन्यं वस्तुतस्तु तत्रस्थस्य भौगोलिक स्थितिं अथ च जनानां प्रकृति विषये पू0 गुरूं पत्रम् अलिखित्। गुरूदेवः पत्रोत्तरे अलिखत् –''जहॉ बसइ सोइ उत्तम देशा, जो प्रतिपालइ सोइ नरेशा''। साधनायां स्थानम् परिवेशस्य च महत्वं न वर्तते। यावत् साधकः साधनायां लीनः भवति सः अन्थानां गुणदोषान् प्रति उदासीनः भवति तं कालजितं भवेत्। सतत् साधनायां लीनः भवितव्यम्। देशः कालः अथ च परिस्थितेः तस्योपरिकोऽपिप्रभावः न उत्क्षिप्येत्। भवितव्यम् वा। तावत् एषा वार्ता माम् सततं स्मर्यते। माम् यत् किञ्चिदपि अस्मिन् मार्ग्रेप्राप्तिः अभवत् तत् सर्वं सद्गुरोः कृपा प्रसादेन अभवत्। गुरू स्मरणः अथ च गुरू पूजायाः अतिरिक्तं अहं अन्य किञ्चिदपिनकृतः प्रयोग माध्यमेन देवी देवतानां स्मरणः अथ च पूजनं कृत्वा अपश्यम् परं अनेन लेशमात्रमपि आनन्दः अथ चात्मसुखः न प्राप्तः। भ्रमोत्पन्नास्तु भवन्ति एव परं गुरू कृपया तस्मात् मुक्तिरपि मिलति। एकदा पू0 गुरूदेवः संबोधयतिस्म यद तत्सर्वं अन्तरात्मा अथ च वाह्य प्रकृतेः क्रीड़ायाः परिणामः वर्तते। ब्रहमचर्य विषये अद्यावधिं यावत् एषः अनुभवः वर्तते यत् यावत् साधकः अस्य पालनं करोतु तावत् पतिपत्न्याः संबंधः इत्थं उत्तमः दृश्यते यत् भ्राता भगिनी किंवा पिता पुत्र्याः संबंधमपि तस्याः समक्षे न्यूनाः वर्तन्ते। एतद् भावः आगच्छति एव न यत् पत्नी भोग्या अस्ति येन प्रकारेण एका अबोध बालिकां प्रति कोऽपि भावः न उत्तिष्ठति। तथैव समस्त स्त्री जात्यर्थं भवति। अस्य व्रतस्य खण्डने सति अनेन आनंदेन वंचित जायते। तथा च

साधनायांसा शान्तिः स्फूर्तिः अथ चतन्मयता न स्थिरा भवति। ब्रहमचर्यस्य स्व पृथक् महत्वं वर्तते। एकः अबोध बालक इव कालेऽस्मिन् स्त्रीणां वासना रहित सौन्दर्य दृष्टि पथे आगच्छति।

पृष्ठ भागे शयनेन काठिन्यं भवति। तीर्यक उदर बलेन शयनेन उत्तमं लगति। अन्यथा पृष्ठे भारः गते सति उत्तेजनाायां अवरोध जातेन व्याकुलमिव प्रतीयते। यस्य कारणेन समस्त पीठः अथ च सिरः भारयुक्तः जायतै। यदा निद्रा न्यूना जाता तदा साधनायाः प्रभावः अत्यधिकं वर्धते तथा च साधनां प्रति मनः लगति।

यदा कदा साधनावस्थायां अतीव जल राशिः अथ च जल प्रवाहः दृश्यते। कदापि गुरूदेवः तस्मिन् पक्ष तः निः सरन् दृश्यते तु कदापि अहं तितीर्षामि इत्थं प्रतीयते कदापि एतादृशः अनुमीयते यत् अतीव वेगेन पवनः प्रवहति। स्वप्नावस्थायां विशिष्ट दर्शन भूतानन्तरे (जातेन) प्रथमं तु शरीरः सामान्यम् लगतिस्म परं अधुना मद्मस्तइव वर्धयन् प्रतीयते। गुरोः असीम कृपा प्रसादेन अधुना अलौकिक दिव्य शक्तीनां आभासः भवति। साम्प्रतं प्रकाशः अधिक तीव्रं दृश्यते। रक्तः ताम्रवर्णः धवलः हरित पीतः अथ च स्वर्णिम् वर्णम्ः दर्शयते। प्रकाश स्वरूपः चन्द्रः सूर्यः ताराः दीपक किंवा प्रज्वलन अग्नि इव भवति। यदा कदा तु प्रस्फुटित नेत्रेणापि एषः दिव्य प्रकाशः दृश्यते। पूर्वं समस्त शरीरः कम्पन ध्वनिना पूरितः जायतेस्म। परं अधुना एतत् सर्वं अवरूध्यत्। यावत् उत्तेजना सुषुम्नामार्गतः विना कस्यापि अवरोधेन ऊर्ध्वं मस्तकं प्रति सततं गच्छति। तावत् हस्त पादादि अंगेषु प्रकम्पन ध्वनिः अवरूध्यतेस्म। एषा उत्तेजना कदा प्रारभ्यते। कदा अवरूध्यते माम् न प्रतीयते। मनः तावत् शान्तः न भवति यावत् तु कोऽपि दर्शनं न भवति। दर्शनं प्रारम्भे जाते एव मनः तस्मिन् लीनं भूत्वा स्थिरः भवति। समस्त जगतः वास्तविक स्वरूपः ज्ञाने आगतः। पूर्वं जीवनस्य क्षणिकता अथ च नश्वरता तथा च सत्यः असत्यस्य वा विषये पठनेन बुध्या क्षणिक ज्ञानम् एव भवतिस्म। परं अधुना अस्य जगतस्य सारहीनता सहज कल्पनायाः विषयं

न स्थित्वा बोधगम्यः अभवत्। गुरूदेवः अतुल कृपां कृत्वा यः सुखः अथ च शान्तिः दत्तः तस्य कदापि कस्यापि रूपे मूल्यः न दातुं शक्यते। पूर्वं गीता ज्ञाने एव न आगच्छतिस्म। परं अधुना तस्य सर्वं रहस्यम् ज्ञाने आगच्छति। तस्मिन् अहं स्वकीयं समस्तानुभवान् प्राप्नोमि। सतानां वाण्यपि सहजतया ज्ञाने आगच्छति। पुनश्चापि साम्प्रतं भावनाः स्थिर न जायते भावनाः परिवर्तते एव अग्रे किं भविष्यति एतत सर्वं पू0 गुरूदेवः एव ज्ञातुं शक्यते।

8– श्री अशोक कुमार पांडेयः

स्व पितुः माध्यमेन अहं गुरोः संपर्के आगतः। सः गृहे गुरोः विषये वार्तालापं करोतिस्म्। द्वि दिसम्बरं 1974 वर्षे सः गुरूणा दीक्षा गृहीतः। दिवसेऽस्मिन् अहं गुरोः निवास स्थानं तेन सह अगच्छत । तदाऽहं स्वकीयेन सह एकम् पुष्पगुच्छं अथ च पुष्पहारम् नीतवान्। कितिचित् दिवसोपरातं परिवारस्य समस्त सदस्याः दीक्षा गृहीताः। अतः परिवारस्य वातावरणः ध्यानाय सर्वथा उपयुक्तः जातः।

जुलाई 1975 वर्षे गुरूदेवः पुनः शहडोलं आगतः। अहं प्रतिदिनं तस्य पार्श्वे अगच्छम्। स्वपित्रा सह अहमपि ध्यानाय उपविशामि दीक्षा काले माम् कोऽपि विशिष्टः अनुभवः न अभवत् परं अनन्तरे अनेकाः अनुभवाः अभवन्।

जुलाई 1975 वर्षतः पूर्वं माम् स्व शरीरे ध्यान काले एकः प्रकारस्य कम्पनानुभूतिः जायते अथ च माम् एतादृशोऽपि अनुभवः भवति यत् मम सिरसि केशाः उन्नताः जातः। 18 अष्टादश जुलाई 1975 वर्षे माम एकः उल्लेखनीयानुभवः अभवत् तस्मिन् काले आदरणीय गुरूदेवः शहडोले आसीत्। यदाहं ध्यानं अकरवम् स्व सन्मुखे अहं एकांतमसयुक्तां गुहाम् अपश्यम्। अहं तस्मिन् प्रविष्टः जातः।

अग्रे किञ्चित् दूरौ एकः अंडाकारः महत् प्रकाश पुंजः आसीत्। गुरूदेवः अस्मिन् प्रकाशे प्रकटितो जातः। गुरोः दर्शने जातेसति मया नेत्रं अनावृतम्। माम्

समस्तशरीरे कंपनानुभवः जातः। मया प्राप्तम् यदहं उत्तिष्ठ्य चलितुं असमर्थोऽसिम मम शरीरे गतेः शक्तिरेवनासीत् अहं अस्यां स्थितौ पूर्णरात्रिं लेटितः विश्रमितः व। ध्यानावस्थायाः मध्येः अहं बहुधा गुरोः दर्शनं कृत्वा तेन सह वार्तालापं करोमि कम्पनानुभूतेः कारणांत अहं दीर्घकालं यावत् न अवस्थितः।

एकदान्यदिवसे ध्यान काले अहं एकस्या मूर्तेः दर्शनं कृतः। किञ्चित कालानन्तरं देवी दुर्गाः, सरस्वती अथ च महालक्ष्मी प्रकटितं भूत्वा मूर्तेः सन्मुखं अवस्थिता। अहं साष्टाग्. दण्डवतं भूत्वा संपूर्ण श्रद्धया ताभ्यः प्रणामं अकरोत्। अहं तेन वार्तालापमपि कृतः अहं दुर्गां कथ्यते '' श्रुतः –मम पुत्रः भयं मा कुरू तव अनिष्टं न भविष्यति। अतः परं अहं स्वकीयं देवी दुर्गया सह सिहंस्य पृष्ठोपरि स्थितः प्राप्तः। माम् तस्य निवास स्थाने नीत्वा किञ्चित् भक्षणाय दत्तवान्। अतः परं माम् एकस्मिन् युद्धक्षेत्रे नीतवान्। यत्र दानवः मिथः स्वसदसि युद्धं करोतिस्म। देवी दुर्गा पुनः सान्त्वनां दद्न अवदत्। मम पुत्र माभैषीः। अतः परं अहं एकम् एतादृश स्थानेषु गतः यत्र दीर्घ सुण्ड धारिणाः अनेकाः गजाः आसन् अहं देव्याः पुनः स्व निवास स्थाने प्रेषणार्थं प्रार्थना कृतः। अहं देव्याः सरस्वत्याः सन्मुखे स्व कानिचित् इच्छाः अपि स्थापितः। शीघ्रेव एषः दृश्य समाप्तं अभवत्। अथ चाहं स्वकीयं गुरोः श्री चरणेषु प्राप्तः। देव्याः तं आवृत्तः आसन्।

एकअन्य अवसरे अहं विविध शीशयुक्तारः व्यक्तिमेकं अपश्यम् यस्य प्रत्येक शिरः एकान्यतः भिन्नः आसीत्। ध्यानकाले पू0 गुरोः आशीर्वादात्मक हस्तस्य स्पर्शम्: मम पृष्ठोपरि वर्तते।इत्थं अनुभवः भवति ध्याने एवाहं असंख्य द्वारान् तीर्त्वा अंतहीन मार्गे सततं प्रचलाम्येव। कालेऽस्मिन् परितः शोभनः अवर्णनीयः दृश्यः भवति।

एकदाहं पू0 गुरूं श्री मिश्रा महोदयस्य गृहतः आवाहनाय गच्छतिस्म। यथैव द्वार पार्श्वे प्राप्तः माम् अतीव तीव्रतरः प्रकम्पनः अभवत् प्रचण्ड प्रकाशः प्रकटितः जातः भयभीतं भूत्वाहं अतिष्ठम् यतः ज्ञान परिज्ञानं दर्शनः श्रवणः सर्वं लुप्तः जातः।

किञ्चित्कालानन्तरं अहं यथा पूर्वं अभवत् तथा पू0 गुरोः पार्श्वे प्राप्य तं एतद् वृत्तान्तं श्रावये। प्रतिदिन जीवने अन्यतः अहं कस्यापि प्रकारस्य भिन्न प्रतीत न भवामि। मम स्मरण शक्तिः प्रवर्धिता।

मम मातुरपि अस्माभिः सह दीक्षा गृहीता तं पू0 गुरोः ध्याने कृतेसति तेषां दर्शनं भवति पारिवारिक चिंतानांमध्ये शान्तिः मिलति।

9—डा0 गिरीश पाण्डेयः

द्वादसवर्षपूर्वं यदाहं चिकित्सा महाविद्यालय रायपुरस्य छात्रः आसीत्। बहुधा दुर्गं गच्छतिस्म । दुर्गे मम एका विवाहिता भगिनी वसतिस्म। ममलघु भगिनी अपि तत्रैव वसित्वा संगीते स्नातकोपाधि प्राप्त्यर्थं अध्ययनं करोतिस्म सा माम् स्व संगीत शिक्षकस्य विषये ज्ञापयत्,यं सा गुरूजी इति कथयित्वा संबोधितं करोतिस्म अहमपि एकदा गुरूणा अमिलत् अथ च अत्यधिकं प्रभावितः अभवम्। माम् एतद् विज्ञापयेत् यत् सः संगीतःशिक्षकादपि वर्धयित्वा अस्ति। चेत् यस्मिन् विषये सः वार्तालापं करोतिस्म तस्मिन् विषये माम् न्यूनः एव ज्ञानम् आसीत् परं तस्य प्रस्तुति करणस्य विधिः विलक्षणा आसीत्। सः कुंडलिनी शक्तौ अनेक घटिकां यावत् व्याख्यानो दत्तः। अतोऽनन्तरे अहं तेन द्वि त्रि वारं अमिलम्। अहं कुंडलिनी योग विषये जिज्ञासुः अजायम्। तथा च तस्य मार्ग दर्शने शिक्षणाय अथ चाभ्यासं कर्तुं इच्छा जाता। परं गुरूदेवः माम स्नातक उपाधि उपलब्धिकालं यावत् प्रतीक्षां कर्तुं अवदत्। उपाधिग्रहणं कृत्वाहं बिलासपुरे शासकीय सेवायां आगतः। गुरूदेवः यदा कदा बिलासपुरं आगच्छतिस्म अथ च स्वमित्र निवासे वसतिसम यदा अपि बिलासपुरं आगच्छति माम् अवश्यमेव आह्वयतेस्म। सन् 1974 रव्रीष्टाब्दे यदा सः बिलासपुरं आगतः तर्हि मम गृहं पुरतः स्थित स्व एकः शिष्यस्य निवास स्थाने अतिष्ठत्।

दुर्गे गुरूणा सम्पर्कानन्तरे अहं कुण्डलिनी योग विषये अत्यधिकं जिज्ञासुः जातः अथ चाहं अस्मिन् विषये साहित्यस्य संग्रहाध्ययनञ्चारभंः कृतः। अहं स्वतः ध्यानारम्भं कृतवान्। ध्यानकाले माम् विविध आनन्द दातारः तथा च विचित्रानुभवाः अभवन्। परं एते अतीव श्रम दातारः आसीत्। अहं कुण्डलिनी योगस्य दीक्षां गृहीतुं इच्छतिस्म। अतः अहं गुरूणा कृपा पूर्वकं अस्मिन् मार्गे दीक्षितं कर्तुं प्रार्थना कृतः। सः स्वीकारः कृतः।

एकदा प्रातः ध्यानकाले अहं गुरोः स्वरं श्रुतवान् '' गिरीशः आगच्छतु ''। हर्षाभिभूतंभूत्वाहं धावितः तथा च गुरोः पार्श्वे गत्वा यत्किञ्चिदपि अभवत् तं ज्ञापयत्। अत्यन्त्येव शान्ति पूर्वकं सः माम् आगामि गुरूवारं आगन्तुं अवदत्। आगामीगुरूवारं सः माम् दीक्षां दत्तः तद्दिवसतः अहं गुरूणा अनावृत एकम् नवीन मार्गस्य यात्रारंभः कृतः। दीक्षानन्तरे यदा तस्य कक्षतः बहिः आगतः तत्तु एतादृशः प्रतीतो जातः यथाहं मदोन्मत्तोऽस्मि। अहं स्व दैनिक कर्तव्यः तस्यां अवस्थायां कृतः अतोऽनन्तरे चतुर्थ पञ्च दिवसं यावत् अहं तस्मिन् प्रशान्ति तथा चात्म विस्मृतेः अवस्थायां अवस्थितः। चेदहं स्वकार्य पूर्णतः सामान्य रूपे कृतः। एषा भाव समाधेः अवस्था आसीत् संसारतः पृथकतायाः अनुभूतिः माम् अभवत्। बहुधा माम् हार्दिक हर्षस्यानुभवः अभवत्। यस्य फलस्वरूपं कस्यापि प्रत्यक्ष कारणं बिनापि अहं अहसम्।

मध्येऽस्मिन् मया अहं स्वध्यानेः नैरन्तर्यं स्थाप्यते। अथ च गुरूणा प्र्याप्त नियमिततया मिलितः। सः माम् विंशति मिनटतः अधिकं ध्यानं न कर्तुं परामर्शो दत्तः परं अथ च अत्यधिकानंद हर्षोल्लासः प्राप्त्यर्थंञ्चाहं एकान्त सम्मिलितेव ध्यानेरताः जातः। दीक्षा ग्रहणकाल दिवसतः माम् अनुभवारम्भः जायते माम मस्तिष्के शानित प्रदातारःश्वेतः धवलः प्रकाशस्यानुभवः अभवत् तथा चहिमस्य पर्वतः प्रवाहितः इति अनुमीयते। बोध शक्तिः तद् प्रवाहित श्वेत पर्वतानां गाम्भीर्येषु प्रवेशं करोतिस्म।

अहं शवासनस्य स्थितौ ध्यानं करोतिस्म कपाल मध्ये एकं महद् भारस्यानुभवकारणेनाहं व्यथितानुभवः करोतिस्म। एतादृशः निद्रामग्ने गतेसति न भवतिस्म। इत्थं माम् अनुभवः भवति यत् कोऽपि वस्तुः मम कपालं छिदं कृत्वा तद् स्थानतः वहिः आगच्छेत्। अथ च एकः अनुगुंजायमान शब्दः इव मम मस्तिष्के भ्रमति। यदाहं ध्यान मग्नं भवामि अथ चकस्मिन् कार्ये–रतं न जाते सति एताः अनुभूतयः तीव्राः भवन्तिस्म।

स्व नियमित ध्यान काले माम् अन्यानेकाः अनुभवाः भवन्ति यः अहं गुरूं ज्ञापयतिस्म। एकस्यां रात्रौ यदाहं ध्यान मग्नः आसीत् एकः पारदर्शी प्रकाशमयः अंडाकारः अकस्मादेव प्रकटः अभवत् अथ च कपाल मध्य भागे प्रविष्टो जातः। किञ्चित् कालं यावत् अहं उत्सुकतया अस्मिन् अण्डाकारं प्रकाशं अपश्यम्। मस्तिष्कस्यास्य भागे माम् शून्यतायाः अनुभवः अभवत्। यथा–यथा कालं अतीतः माम् काठिन्यं अनुभूयते अथ चाहं विस्तरतः उत्थितो जातः। तथा च करतलाभिः शिरस्य तं भागं मर्दयन्। यदाहं एतादृशः कृतः तदा अण्डाकारः प्रकाशः अदृश्यो जातः। अथ चाहं शान्तेः अनुभवः कृतः। अवशिष्टां रजन्या अहं व्यवस्थितं सुप्तः। द्वितीय दिवसे प्रातः काले अहं स्व अनुभवान् गुरूं ज्ञापयत्। सः माम् अपृच्छत् यत् किं मेरूदण्डे कानिचिदानुभूतयः जायन्ते। अहं विज्ञायत् यत् अण्डकोषाधः मेरूदण्डस्य निम्नतम भाग पार्श्वे एकः सशक्त स्पन्दनस्यानुभवः भवति। परं मेरूदण्डे काऽपि अनुभूतिः: न भवति। तस्मिन्नेव मध्याह्ने आसने विश्राम काले मेरूदण्डस्याधोभागतः ऊर्ध्वं प्रति गच्छन् इत्थं अनुभवः अभवत् यथा पवन प्रेरित बिन्दवः गच्छन्ति। एषानुभूतिः कतिचिद स्थानेषु प्रबलतया प्रतीयतेस्म। यथा पुच्छास्थेः अग्रभागः त्रिकास्थि अथ च पुच्छास्थेः संगमः वक्षः अथ च कटिभागस्य संधिः तृतीय चतुर्थश्च वक्षस्य कशेरूकानां सतह ग्रीवायाः मेरूदण्डस्य मध्ये तथा च कपालस्य पश्च भागे संध्यां गुरूदेवः एषः अनुभवः विज्ञापिते सति सः अकथयत् यत् एषः उचितं वर्तते अथ चास्मिन् मार्गे प्रवर्धयतु।

तदनन्तरं गुरूदेवः: नागपुरं गतः। गमन काले सः माम् आदिशत् यत् साधनायां शनैः शनैः संवर्ध य्। अहं साधनायां पूर्ववत् उत्साहेन सुसंलग्नः कपाल मध्ये छिद्र इव कर्तारन्। भारः प्रतिदिनं वर्धते। यदा कदा एषः भारः इतस्ततः अथवा–पृष्ठेऽपि जायतेस्म। गच्छतिस्म अस्य भारस्य स्थितेऽपि अहं घटिकाषु ध्याने अतिष्ठम्। परं एकामावस्यां ध्यानकाले एषः भारः इत्थं प्रवर्धितः यतु अनुमीयते यत् कपालः प्रस्फुटितो भविष्यति। मया विचारितं यत् कपालः स्फुटति तत्तु स्फुटति अथ च स्व साधनायां संलग्नः जायते। कानिचित् मिनटेषु अनन्तरे मस्तिष्कस्य मध्ये एक विस्फोटः इव अभवत्। रजत इव चकासितः तेजः प्रकाशः नेत्रीं येनाहं नेत्रौ संमर्दते। संमेद। तस्मिन् काले भारः कपाल शीर्षस्य वाम पक्षे आसीत्। एषः भागः अनुमानतः प्रेरक प्रान्तस्थायाः ऊर्ध्वं वर्तते। अतोऽनन्तरे भारः केन्द्रीय भागे गतः। अतोऽनन्तरे माम लगितः यत् मम हस्त पादाः अथ च मस्तकः अपितु पूर्ण शरीरः एव वैपरीत्यं गतः तेन प्रकाशेन सह अहं गहने अवतरितः। कंमशः माम संज्ञापि लुप्ता जाता। द्वितीय प्रातः उत्थितेसति माम इत्थं नवीनत्वं प्रतीयते यथा मम पुनर्जन्मः अभवत्। अतोऽनन्तरे एषा प्रकिया क्रीड़ा इव सरला जाता। अहं ध्यानाय लेटयामि गुंजयन् ध्वनौ ध्यानः केन्द्रितः करोतिस्म अथ च तद् ध्वनेः कपाल शीर्षे गते एव अहं संज्ञां विहाय शून्य स्थितौ अधिगच्छामि अधिगतः वा पुनश्च सजगं भूते सति गुंजनं मस्तिष्कतोऽधः अवतरित्वा मूलाधारोपरिस्थिरं भवति।

एकान्य दिवसे पूर्वाह्ने ध्यानावस्थायां एकः सूर्यमुखी इव दीप्त स्वर्णिम पुष्पः पुरतः तीव्र गत्या आगतः तथा च मम मस्तिष्के समाविष्टो जातः। पुष्पस्य तटवर्ती पंखड़यः वृहद् वृहदासीत् तथा च मध्यमस्य लघु लघु अथ च सघनासीत्। समयेन सहैव संज्ञा शून्य स्थितेः अवधिः प्रवर्धिता। यदा गुरूदेवः विलासपुरं पुनरागतः तर्ह्यहं स्वानुभूतीनां वर्णनः कृतः। श्रुत्वा सोऽवदत् यदधुनातः त्वम् याधनायाः आकांक्षीनां योग पथस्य दीक्षा दातु शक्तः।

यथा समयोऽतीतः अहं योगोपरि उच्चकोटेः साहित्यं पठितः अथ च मम ध्यानः तेनैव लगनेन नियमिततया च चलितः। कालेऽस्मिन् मनसि या शंकायाः तुषारः आच्छादितः ते अन्यदीय जनानां विचार जातः ते अन्यैः विचार विमर्शेन अथ च पुस्तकाध्ययनेन अनायासः दूरी भवन्तिस्म। एषाऽपि एका विचित्रा वार्ता आसीत्। क्रमशः संसार विषये मम धारणा अतीव परिवर्तिता जाता तथा च मम व्यक्तित्व एवं व्यवहारेऽपि परिवर्तनः आगतः।

दीक्षायाः एक वर्षानन्तरे अहं पचमढ़ी गतः यत्र मया सह मम मित्र डा0 पी0 यदुवसतिस्म् अहं स्व नियतिम साधना कृतः। डा0 यदु अस्य कौतूहलेनं अवलोकनं कृतः। यदाहं ध्यानानान्तरे नेत्रोन्मीलितः तर्हितु सः साधनायाः विषये अपृच्छत् तथा च विज्ञापयत् यत् सोऽपि किञ्चित् योगाभ्यासं कुर्वन्ति अथ च सः अनेकैः योगिभिः गृहीत ध्यानस्य कानिचित् कक्षासु शिक्षा गृहीतः परं तंकोऽपि स्मरणीयानुभूतिः न जाता। मया कथितं चेत त्वं सत्येव किञ्चित अनुभूतिः वॉच्छसितर्हितु मम सन्मुखे एकस्यां मुद्रा विशेषे शिथिलं भूत्वा उपविशइदानीं स्व नेत्रौ निमीलयतु । स्व आभ्यन्तरे किं भवति अस्यानुभवं कर्तुं प्रयत्नं कुरू। सः मम निर्देशानां पालनं कृतः। अथ चाहं पुरतः स्थित्वा अपश्यत्। कानिचित् मिनटानन्तरं सः नेत्रोन्मील्य अथ च पलायितं भूत्वा गृहतः बहिर्गतः। कानिचित् क्षणानन्तरं प्रत्यागच्छत्। सः विज्ञापयत् यत् तं छुद्रघंटिकानां ध्वनिः श्रुतः आंतरिकाः अस्ति किं ना वाह्यस्य। एतदेव निरीक्षणाय सः बहिः धावयित्वा गतः। अहं तम् विज्ञापयत् यदेताः ध्वनयः आंतरिकाः सन्ति। अतोऽनन्तरे डा0 यदुं अतीवानन्दः अथ च शरीरे लघुत्वं अनुभूयते यथा च यथा सः कार्थसस्य राशौ प्रचलति। पचमढ़ीतः अहं भोपालं आगतः अत्र साधनायाः काले इत्थं अनुभवो जातः यथा वाम पादः जले तरति। शनैः–शनैः पूर्ण शरीरः एव जले तरति इत्थं प्रतीयते।माम् अस्मिन् आनंदः आगच्छतिस्म। पुनश्च माम् अनुभवः अभवत्। यत् स्वर्णिम् फडमयः एकः सर्पः त्रिकास्थेः कृष्ण गुफयाः निःसृत्य अतीव तीव्र गत्या कपाल

ष्च पृष्ठे विलीनः जातः। अस्यां प्रक्रियायां जुर्र जुज्ट इत्यस्य ध्वनिः अभवत्। अथ चाहं स्तंभितः जायते यथा अति विभवस्य विद्युत धाराः प्रवलंघातितः किञ्चित कालानन्तरं मम चेतना प्रत्यावर्तिता। अस्यानुभूतेः अनन्तरं माम् बहुधा एतादृशः प्रतीयते यदहं ज्योति सागरे निमग्नोऽस्मि तथा च मम शरीरतः स्वर्णिम् प्रकाश निः सरति।

सन् 1976–77 समयस्य समस्त वार्तास्ति यदहं स्वमित्र डा0 महापात्रेण सह दक्षिण भ्रमन् पांडिचेरी स्थानस्य एकस्मिन् कुटीरे अवस्थितः तत्र एकोनविंशति–विंशति वर्षस्य एकः फांसीसी यहूदी युवकेन संपर्कः जातः तस्य कथनं आसीत् कस्यापि पापात्मायाः प्रभाव कारणेन मास त्रयेण न शयने शक्तोस्तीति। विविधः कुशल चिकित्सकैः एवञ्च नीम हकीमैः उपचारेण न कोऽपि लाभः अभवत्। एतस्मादेव फ्रांसतः भारतं आगतोऽस्मि। येन अत्रत्याः कस्यापि योगी किं वा तंत्र मंत्रस्य ज्ञाता साहाय्येन स्वास्थ्य लाभं प्राप्नोमि। अहं कामकोटेः शंकराचार्येणापि मिलितः यः माम पांडिचेरी स्थाने मासमेकं व्यतीतं कर्तुं आदेशः प्रदत्तः। माम पांडुचेरी स्थाने एक मासमपि पूरयितुं आगतः परं कोऽपि लाभो न अभवत्। पूर्ण गाथां श्रुत्वा माम एतादृश अनुमीयते यदसौ कुण्डलिन्याः त्रुटिपूर्ण माध्यमेन जागृत करणेन इति कारणे न अभवत्। अहं तम् सान्त्वयन्। सान्त्वनां दत्तः। अथ च एक मुद्रा विशेषे शान्तं भूत्वा स्व सन्मुखे उपविष्टुं अवदत्। अहं तस्य युवकस्य पृष्ठे स्थित्वा विंशति मिनटं स्व सतगुरोः ध्यानं कृतः। ततोऽनन्तरे तं चक्षु उन्मीलनाय कथयित्वा अपृच्छत्। यत तं कीदृशः लगति सः विज्ञापयत् यत् तं शान्ति अथ चसामान्यत्वं लघुत्वं अनुभूयते। अहं तं जगत गुरोः ध्यानं कुर्वन् प्रसुप्तुं अवदत् अथ च एषः विश्वासः दत्तः यत् असौ उत्तमं भविष्यति।

अन्येद्युः प्रातः सः युवकः पुनः मिलितुं आगतः। इदानीं तस्य मुख मुद्रायां संतोषः अथ च नेत्राभ्यां कृतज्ञता प्रस्फुटितः। सोऽवदत् यत् नवति दिवसानां अनिद्रानन्तरे प्रथमवारं तं उत्तम निद्रा आगता। सः नवीनत्वं प्रसन्नः अथ च कृतज्ञः अनुभवति। अहं

तं स्वदेशं पुनः गमनस्य परामर्शो दत्तः अथ च शिक्षित विधिना ध्यानं कर्तुं अकथयत्।

अधुनाहं पू0 सत् गुरोः निर्देशानुसारं अनेकैः आत्म साक्षात्कारेच्छुकः साधकानां मार्गदर्शनं करोमि गुरू कृप्या तान् असाधारणः शाश्वत् आतिमकानुभवाः प्राप्नुवन्ति अहं तं मात्र वार्ता त्रयोपरि ध्यानं स्थापयितुं परामर्शं ददामि साधनायां नियमितता धैर्यःतथा च सद्गुरौ विश्वासः।

10– डॉ0 श्रीमती सुधा पांडे

द्वितीयः अप्रैलः 1975 वर्षम् अहं आदरणीय गुरूणा मिलितः। दिनेऽस्मिन्। सः स्व एक शिष्येन सह मम निवास स्थाने आगतः। अहं तस्य विषये अवश्यमेव श्रुतः परं एतं दिवसं यावत् तेन मिलनस्य कोऽपि अवसरः न प्राप्तः।

अहं एकः एतादृशः परिवारेण संबन्ध स्थापयामि यः एकः विशिष्ट सम्प्रदायस्यानुसरणं कृत्वा आध्यात्मिक कार्यैः गहन संबंधः स्थापयति अस्य पारिवारिक पृष्ठ भूमेः फलस्वरूपे पूर्वतः एव अध्यात्मे रूचि स्थापयतिस्म।

श्री गुरूदेवेन प्रथम संपर्कस्य दिवसे एव अहं तेन दीक्षा प्राप्तं कर्तुं इच्छुकासीत् परं सः। माम् अपरे दिवसे गुरूवारं आगमनाय अवदत्। तृतीय अप्रैलः 1975 वर्षम् अहं आदरणीय गुरूदेवेन विधिवत् दीक्षाग्रहणं कृता। दीक्षाकाले अहं स्व भ्रुवोर्मध्ये एकः प्रकम्पित धवल प्रकाशं अपश्यत्। मम नेत्रौ भारयुक्ता जाता यथा मदमस्तः अभवत् अथ च नेत्रौ उन्मीलनाय मम किञ्चिदपि इच्छान आसीत्। अस्यां संध्या यदा अहं शवासनस्य मुद्रायां ध्यानं करोतिस्म जडत्वानुभूतिः मम पद तलैः आरभ्य शीघ्रेव मेरूदण्डस्य निम्न भागं यावत् विस्तृता जाता अथ च माम एतादृशः अनुभवः अभवत् यत् मम उभयोः पादयोः पक्षाघातः अभवत्। सहैवाहं स्व मस्तिष्के अस्पष्ट चन्द्रमायाः प्रकाशमपि अपश्यत्।

चतुर्थ अप्रैल संध्यां ध्यानावस्थायां एतादृशी एव जड़तायाः अनुभूतिः माम् अभवत्। कालेऽस्मिन् एषानुभूतिः मेरूदण्डस्य निम्न भागतः आरभ्य मेरूदण्डस्य तत् स्थानं प्राप्तायः नाभि पृष्ठ ाागस्य समतलं वर्तते। अनवरतं आगामि दिवस द्वयं अहं इत्थं कूर्दन् इव अनुभूतिं मेरूरज्जौ उपरिअधः परिभ्रमणः अनुभवः कृतः। पञ्च दिवसे अहं ह्रदय भागे घुरघुराहट ध्वनेः अनुभवः कृतः। अहं उभयोः हस्तयोः मांस पेशिषु तीर्यक् तीव्र तरोऽपि अनुभवः कृतः एषा एका सुखदानुभूतिः आसीत्। चन्द्रमायाः प्रकाशस्यापि दर्शनं अभवत्। द्वितीय दिवसे ध्यानक्रमे ग्रीवा अथ चनिम्न जबड़स्य मांस पेशयः जडत्वं गतः। अथ च एकः छिन्दन् विनद्यन् भारीपनः कपालपश्चे पूरितो जातः। एषानुभूतिः किञ्चित् कालं यावत स्थिरा जाता। सहैव मेरूदण्डे कूर्दनस्य अनुभूतिरपि स्थिरा जाता। यातु कपालस्य पृष्ठ भागं यावत् गच्छतिस्म। एकदा माम् किञ्चित् श्वासावरोधस्यानुभवः अभवत्। यथा कोऽपि वस्तुः मम कण्ठं अवरूद्धः करोति। कपाल मध्ये एकः चक्क इति शब्दस्य ध्वनिः तथा च महद् भारस्यानुभवः अभवत्। माम् न ज्ञायते यदहं कदा चेतना शून्या जाताः अभवत्। परं पुनः चेतना प्राप्ते सति माम् समीपस्थ वातावरणस्य बोधो जातः। अहं प्राप्तः यत् मम निम्न जबड़ास्थ चिबुकः स्थितः जायतेस्म। अहं अनेकैः घटिकां यावत् ध्यानं करोतिस्म। अथ च सुखदानुभवानां रूपे परिणामेऽपि माम् मिलतिस्म। यदा कदा भ्रूवोर्मध्ये माम् सूर्य प्रकाशः अर्ध विकसितः कमलः अथ च चंद्र प्रकाशस्य दर्शनमपि भवतिस्म। एतादृशः दर्शनानन्तरे अहं निरपवाद रूपेण चेतना शून्यो भवतिस्म। एतैः दर्शनैः सहैव सह कपाल मध्ये भिन्दन् प्रभावः इत्थं अधिकः प्रवर्धितः यत् कपालेव विस्फोटयिष्यते। ममार्थं चेतना विहाय शून्यत्व प्राप्तिः सरलम भवत्।

एकस्यां रात्रौ यदाहं ध्यानमग्नासीत् एकः उज्वल शान्तिदायकः प्रकाशः मम सममुखे प्रकटमभवत् अथ च क्रमशः एकः स्वर्णिम् आकृतौ परिवर्तितो जायते। अहं तदा कृतिं प्रतिं दर्शयन् अवस्थिता। किञ्चित् क्षणानन्तरं सा आकृतिः अदृश्यः अभवत्

तथा चाहं शून्या जाता यदाहं अनेन शून्यत्वेन पुनः चेतनायां आगता अहं पूर्ण अनुभवस्य स्मरणं कर्तुं शक्तासीत्।

अधुनापि अहं ध्यानं करोमि माम विभिन्नानुभवाः भवन्ति ध्यानानन्तरे अहं लघुत्वं प्रसन्नतायाश्चनुभवं करोमि।

11– श्री रघुनाथ दामोदर कुपटकर

बिलासपुर शासकीय महाविद्यालयस्याचार्यः श्री एन0 जी0 देशपाण्डे महोदयस्य कृपा प्रसादेन अक्टूबर 1975 वर्षे अहं पू0 गुरोः संपर्के आगतः। प्रथम संपर्के एव तस्य सहजः अथ च आत्मीय वचन व्यवहारेण च अहं इत्थं आकर्षितः अभवत् यथा चुम्बकं प्रति लौहः। माम् लगितः (यत् अहं एकः प्राच्यमित्रेण मिलितोऽसिम। यस्योपरिपूर्ण रूपेण विश्वासः कर्तुं शक्यते। माम् लगितः यत् सः एकः आत्मीय स्वजनः अस्ति। अथ च अहं अभिभूतं भूत्वा स्व जीवनस्य समस्त घटनाः तस्य समक्षे अनावृत्य स्थापितः। अस्य संपर्कस्य त्रिसप्ताहानन्तरे माम् दीक्षा प्राप्तः अभवत्। यदा पू0 गुरूदेवः माम दीक्षा दातुं स्वीकार कृतः तदा माम इत्थं आनन्द अभवत् यथाहं आनन्द सागरे तरामि। दीक्षा काले मम पूर्ण शरीरे शक्तिशाली कम्पनस्यानुभवः अभवत्। माम् एतादृशः प्रतीतः अभवत् यत् कस्यापि अदृश्य हस्ताः मम पीठोपरि सर्वदा लिप्तः महद् भारं दूरी कृतः। अथ चाहं लघुत्वं अभवम् इत्थं लघुत्वं अहं कदापि अनुभवः न कृतवान्।

दीक्षायाः दिवसतः एव मम जीवने उल्लेखनीयः अन्तरः आगतः। प्रति दिवसस्य समस्याः अथ च काठिन्याः मम मानसिक संतुलने किञ्चिदपि प्रभावं न करोति। मानसिक विचलनः शनैः शनैः न्यूनं गतः। माम अधुना अधिक (अत्यधिक) स्फूर्तेः अनुभूतिः भवति। अहं परिश्रमेण स्वकीर्य कार्यं करोमि अथ च माम् शान्त स्थितये

आनन्द आगतः। अहं विचार विमर्शानन्तरे एववदामि। पारिवारिक कार्येषु अधुना माम् संतोषं अस्ति अथ च तेषु मम दृष्टिकोणः संतुलितः वर्तते।

यथा तु अहं नाद योगे दीक्षितोऽस्मि। अतः ममानुभवाः ध्वनिना संबंधितः अस्ति। पूर्वं माम् मधु मक्षिकाणां गुजनं इव ध्वनिः श्रुतवान् पुनश्च माम् घटिंका मजारः पटहस्य नगाडस्य च ध्वनिः श्रुतः अतोऽनन्तरे दिव्य ऊॅकारस्य नाद श्रवण गोचरः अभवत् ऊॅकारस्य नादेन सह सुरलयञ्च मिलित्वा संगीतस्य विविध वाद्यनां ध्वनिरपि श्रुतः। नेत्राणां पुरतः विविध वर्णैः प्रकाश विन्दवः प्रकटितों जातः। यदा कदा भृकुटि मध्ये अंडाकार प्रकाशस्य ज्वाला इव अपश्यत्।

पञ् अक्टूबरः 1976 वर्षम् ध्यानावस्थायां मम शरीरः कंपिता जातः मया दैवी वाणी श्रुतः येन आनन्द/ विभोरं विह्वलं भूत्वाहं रूदनारम्भः कृतः अश्रुपातो अभवत् अथ च मम वस्त्राः वेपथुर्जातः। जलयुक्ताः जातः। अनेन मम परिजनाः भीताः जातः परं किञ्चित् कालानन्तरं अश्रुवः अवरूद्धाः जातः।

द्वितीय दिवसे ध्यानावस्थायां माम् स्वेदः आगन्तुमारभत्। माम् कम्पनारंभः जातः। ध्वनयोऽपि श्रूयते। इत्थं प्रतीयते यथा भूमितः माम् कोऽपि ऊर्ध्व उत्थापयति। अग्रिम दिवसे मम शरीरः लय बद्धं भूत्वा भ्रमितः। शिरःचक्रायते। आशरीरे कंपनारंभः अभवत् अथ च मध्ये मध्ये विद्युदाघातःलगितः।

चतुर्थ दिवसे ध्यानावस्थायां अनुभवः अभवत् यत् मूलाधारेण निःसृता वायुः पूर्ण शरीरे पूरितो जातः। तथा च शरीरः कंदुक क्रीडनकमिव तीर्तुं जायते। वक्षः पीनः जातः तथा च उदरः पीठतः संपृक्तः जातः। चिबुकः ग्रीवामूले संपृक्तः जातः। अनेन प्रकारेण प्रयासंविनैव महाबंधः लगितः वर्तते यस्तु मूलः उड्डीयान् अथ च जालन्धरबन्धानां मिश्रित बंधः अस्ति। पंचम दिवसे मम शरीरः बिना कस्यापि प्रयासस्य स्वतः एव कानिचित् एतादृशः आसनः गृह्यते यान् अहं न जानातिस्म। एकाद्भुता ध्वनिः आशरीरे व्याप्ता जाता। शिराभ्यन्तरे तुरही वादन् ध्वनिर्जायते अथ च

तस्य प्रति ध्वनिः सहस्त्रारतः मूलाधारं यावत् प्रसृता जाता। माम इत्थं लगितः यथा मेरूदण्डे ऊर्ध्वतः नीचैः यावत् कोऽपि द्रवः प्रवहति।

एताः अनुभूतयः वारं बारं भवन्ति अथ च द्वि त्रि दिवसानन्तरे तस्याः स्थानं नवीनानुभूतयः गृह्यन्ति। मूलाधारेण स्पन्दनः आरभ्य तीव्रं भवति तथा च ऊँकारस्य ध्वनिना सह भृकुटि मध्यं यावत् प्रवासं करोति एतादृग्वसरेषु मम पूर्ण अस्तित्वः अवर्णनीयआनन्देन पूरितो जायते। रूचिः अरूचिश्च समाप्यते। तथा चसर्वेभ्यः सौजन्यस्य भावना उत्पन्ना भवति। कस्यार्थमपि न तु विशिष्टं स्नेहः भवति नैव घृणा। सर्वे एकैवास्ति एवं सः एकः अहमेवास्मि। एतादृशी महद् भावना जागर्ति।

पूर्वे माम् कोष्ठबद्धता आसीत् सापि स्वस्थतां जाता। उत्तमो भवति। अहं मिताहारी अभवम् तथा च मम मनोभावाः स्ववशे अभवत्। एकांतः अधिकं रोचते। परिपाटीगताः कर्मकाण्डस्य अर्चना भजनः कीर्तनं प्रति वा माम् साम्प्रतं कोऽपि आकर्षणं नास्ति वर्षेः प्रचलित कृतउपवाशान् अपि अहं परित्यजामि। दर्शने किंवा स्वादे यथापि वर्तते परिवेषितम् भोजनं आनन्देन प्राप्नोमि। मयि स्फूर्तिः अथ चोत्साहः अधुना प्रवर्धिताः। अनेन मम कस्यापि कार्ये कोऽपि व्यवधानः न भवति। ऊँकारतः एकाकारं भूतस्य उत्कटाभिलाषा निरंतरं बलवती भवति।

श्री गुरोः आशीषेन मम पारिवारिकः जीवनः सुख सुविधा पूर्वकं प्रचलित। मम साधनायां मम धर्म पत्नी सहयोगी अस्ति। काठिन्यास्तु आगच्छन्ति परं तस्याः। प्रत्यक्षीकरणं साहसेन कियते। आर्थिक समस्याः अपि स्वयमेव पूर्णाः भवन्ति। रोगान् अपि आगच्छन्ति परं काऽपि हानि प्रदानं बिना दूरी भवन्ति सांसारिकोत्तरदायित्वः मम मानसिक संतुलनः न विपरीतं क्रियते। येन प्रकारेण समस्याः आगच्छन्ति गुरूकृपया समाधानमपि तेनैव प्रकारेण आगच्छति।

गुरूणा सम्मेलनात् दशवर्ष पूर्वतः अहं हठयोगाभ्यासं कृतः। अनेकैः काठिन्यासनेषु मम पूर्ण अधिकारः वर्तते। कुण्डलिनीं जागरणार्थं अहं प्रतिदिनं

प्राणायामं गायत्री पाठञ्चापि करोतिस्म अहं हठयोगस्य शिक्षापि अददम् अहं भ्रामरी प्राणायामं करोतिस्म तथा च तेन किञ्चित् आनन्दमपि प्राप्तम् भवतिस्म। अहं बहुशः योगी अथ च योगमातरः निकटेऽपि गतः। एतत् सर्वं अहं अतीव कृतः यतः मम महत्वाकांक्षासीत् यत् योगे लगनेन नामार्जितं करवाणि सिद्धयः प्राप्नुमः येन जनाः मम पार्श्वे आकर्षितं भवन्तु। अथ चाहं तेषां साहाय्यं करवाणि। येन माम् ख्यातिना सहैव धन सुखः आनन्द विलासस्य साधनः प्राप्यते। परं अद्य अनेन प्रकारेण कोऽपि वस्तुं माम न इच्छेत्। अद्यमम एका मात्र प्रार्थना वर्तते यत् श्री गुरोः आर्शीवादः अथ च मार्गदर्शनः माम् सदा प्राप्तं भवति येनाहं आत्म साक्षात्कारं करोमि।

अहं त्रि नवम्बरः 1976 पर्यन्तानुभवः प्रदत्तः तदनन्तरं कानिचित् अन्यानुभूतयः जायन्ते। अगस्त 1977 वर्ष अनन्तरे प्रातः एवञ्च सायंकालः साधनायाः काले मम मुखे सामान्य मधुर द्रवः श्रावितः जातः। यदा कदा एषः श्रावः इत्थं अधिक मात्रायां भवतिस्म यत् माम् बारं–बारं निगरणं करोतिस्म। एषः श्रावः मधुरं भवतिस्म परं यदा कदा क्षारयुक्तः अथ च स्वादरहितः श्रावोऽपि भवतिस्म। श्राव गमनात् पूर्वं कण्ठे स्पंदनानुभूतिः भवतिस्म। अनेन माम् महद् सुखं मिलतिस्म। एषः अनुभवः सप्ताहमेकं स्थितः पुनश्च क्रमशः समाप्तं अभवत्।

अस्यानुभवानन्तरे मम जठर संबंधि कष्टः आरभयते मम शिरः भ्रमन् इव लगितः। अथ च पूर्ण शरीरे पीड़ां जाता। हृदय क्षेत्रें पीड़ानुभवः जातः। सौभाग्येन श्री गुरूदेवः बिलासपुरे एव आसीत्। एतैः वार्तैः अवगतं कारयितेसति सः परामर्शोदत्तः यत् यत्र त्वम् साधनां करोषि तत्रैव शवासनमपि कुरू। तथा च सः औषधिरपि दत्तः निर्देशानां मया पालनं कृतः येन मम सर्वेकष्टाः दूरं गताः अथ चाहं नव शक्त्या साधनायां संलग्नो जातः।

शवासनं कुर्वन् अनेकैः क्रमे मम शरीरः कठोरं जायतेस्म परं सहैव मम पादाग्डु.लीभिः संगीतमय स्वरावली प्रति ध्वनितः भवतिस्म। या समस्त शरीरे प्रवासं

कृत्वा शिरं यावत् गच्छतिस्म। तथा चविलीनः भवतिस्म। अतोऽनन्तरे समस्तः व शरीरः संज्ञाहीनः भवतिस्म।

अष्ट सितंम्बरे 1977 वर्षम् नित्य इव श्री गुरोः प्रार्थनां कृत्वा अहं ध्याने अवस्थितः। माम् स्व सूक्ष्म शरीरस्य दर्शनमभवत् यस्तु एक वृत्ते गतिशीलं आसीत्। प्रच्छालित कार्पासस्य अंडाकृति इव शरीरः सामान्यं आसीत् अथ चपवने वहतिस्म। पुनश्चैकाएकः भ्रूवोर्मध्ये चन्द्रमा प्रकटितो अभवत् ततः सूर्यः प्रकटितोऽभवत्। पुनः बहुकालं सूर्य चन्द्रश्च क्रमिक रूपेण प्रगटः लुप्तश्च भवतः। ध्यानानन्तरे एतासां अनुभूतीनां वर्णनः अहं श्री गुरोः सन्मुखे प्रस्तुतः कृतः सः मम पृष्ठं संस्पृश्य अवदत् यत् त्वां परमानन्दस्य प्रापितः अभवत्। अस्यानुभवस्यार्थः अस्ति। यत् सुषुम्ना ऊर्ध्वगामी भूत्वा विज्ञानमय कोषे घनीभूतः जायते। अथ चएषा एव हंसावस्था अस्ति एतत् श्रुत्वा अहं कृतार्थं अभवत् एवं भावाभिभूतं अभवम्। माम् विश्वासः जातः यत् भविष्य यात्रायां आदरणीय गुरोः प्रसादः मम सहैव वर्तते।

12– श्री नर्मदा प्रसाद द्विवेदी

पू0 गुरूदेवेन मम परिचयः श्री लक्ष्मी प्रसाद मिश्रा महोदयेन अभवत्। प्रथम संपर्केनाहंअतीव प्रभावितः अभवत्। दीक्षा प्रदान काले यदा सः माम् स्पर्शः कृतः येन माम् मूलाधारेण मेरूदण्ड द्वारा गच्छन् विद्युत इव संवेदनः अभवत्। तत्कालेव मम भृकुटि मध्ये प्रकाश पुंजः प्रकटितो जातः। यः शीघ्रेव एकः भ्रमन वृतरूपे परिणतं गतः। अथ च तत् समीपे विविध वर्णैः किरणाः प्रसृताः जायन्तेस्म।

प्रकाश वृत्त मध्ये लघुत्वं जायते अथ च तस्मिन् पू0 गुरोः आकृतिः दर्शितः। दृष्टः। एषः अनुभवः सामान्य पूजार्चनां प्रति मम दृष्टिकोणः परिवर्तितः कृतः। गुरू उपदिष्ट विधिनाहं ध्यानेरताः। येन माम स्वतः स्वकीये तथा च समीपे शान्ति

आनन्दस्य अनुभवः जायन्ते। माम् पू0 गुरूणा यः आनन्दोन्नतिश्च प्राप्त अभवत् तेनाहं संतुष्टोऽस्मि अथ च कदापि कस्यापि अन्य पार्श्वे आध्यात्मिक धैर्यः अथ च मार्गदर्शनं प्राप्तये न गछेत्। अप्रेल 1974 वर्षम् अहं पवनपुत्रस्य पूजायाः अनुष्ठानः कृतः अस्यां अवधौ अहं ऋजुः एवञ्चात्म संयमपूर्ण जीवनः व्यतीतः कृतः। येन अतीव दुर्बलतां आगतः। एकदा प्रातः काले स्नानार्थं गच्छन् अहं एक नलिकायां अपतत् अथ च अर्ध चेतन अवस्थायां प्राप्तः। अहं यथैव पू0 गुरोः स्मरणः कृतः मम मानसिक शक्तिः प्रत्यावर्तिता अथ चमाम् प्रतीतो जातः यत् गुरूदेवः तत्रैव स्थितः। पूर्ण सप्ताहं यावत् गुरोः प्रतीतिः मया सह स्थिता। तसिमन् काले अहं भोपाले आसीत्।

अनुष्ठानः चैत्र पूर्णिमां समाप्तो जातः। तस्मिन् दिने उषः कालतः पूर्व ध्यानावस्थायां माम् एकः विशाल सर्पस्य दर्शनम् भवत् यस्य मुखः पूर्ण रूपेण स्फोट्यतेस्म। मुखाभ्यन्तरतः श्री रामः लक्ष्मणश्च स्कन्धयोः स्थापयन् श्री हनुमानः प्रकटितो जातः।

एषः सुनिश्चये यदहं स्वप्नस्तु न प्श्यामि अहं अनेकैः क्रमे नेत्रं निमीलितः उन्मीलितश्च परं अहं यद् पश्यतिस्म तत् स्वप्नं किं वा माया न आसीत्। अपितु यथार्थः एवासीत्। यथैवाहं तान् स्पर्शं कर्तुं अग्रे प्रवर्धितः ते अंतर्ध्यानं गतः। गुरूणा पृष्टे सः ज्ञापयत् सा कुण्डलिनी शक्तेः दर्शनमासीत्।

अतोऽनन्तरे माम् सिरशि महद् भारस्य अनुभवः जातः यः शिरं निम्नं प्रति भारितं क्रियतेस्म। परं एषानुभूतिः आनन्द दायिका आसीत्। पुनश्च शिरे भयंकरः पीड़ारंभः जातः। येन शिरः स्फुटनं प्रतीयतेस्म। किञ्चित् शोथमपि अभवत्। यथैव पू0 गुरूदेवः शिरं स्पर्शः कृतवान् कष्टः दूरं भूत्वा सर्वं सामान्यं अभवत।

दीक्षाकालेया ज्योति दर्शनमभवत् सः अधुनापि वर्तते यदा कदा सः मन्द भवति अथ च कदापि तीव्रं भवति। ध्यानावस्थायां माम् विविध मूर्तीनां अवताराणाञ्च दर्शनं भवन्ति। एकदाहं पूर्व जीवनस्य कानिचित् घटनाः अपि अपश्यम् यस्मिन् मम विवाहः

मृत्योश्च दृश्योऽपि आसीत् मृत्युकाले एक चिबुककेशयुक्तः वृद्धः माम आहवयतिस्म। अहं अप्सराणां आवाहने एकस्मिन् तडागे कूर्दनाय उद्यतः आसीत् परं गुरूदेवः माम पृष्ठे आकृष्यते।

एकान्य काले अहं एकां नदीं उड्डीय पारं कृतः नद्याः द्वितीय तटे घमासानः युद्धः प्रचलतिस्म तत्र गुरूदेवोऽपि गतः अथचयुद्धबन्दीजनान् स्वतंत्रं कृत्वा मार्गं प्रदर्शयत्। पुनः आवाम् प्रत्यावर्तितः। यदाहं आस्याः स्थितिक्रमतः पुनः चेतनायां आगतः तर्हितु मम शरीरः काष्ठवत् अभवत्। श्री गुरूदेव मया सहैवासीत्। सः माम् उत्थातुं अवदत्। अहं उत्तिष्ठ्य तस्य चरणेषु अपतत्।

सन् 1976 वर्षे अहं रायगढ़े स्थानान्तरितं अभवम्। तत्रापि मम शिरे विचित्र वैचित्र्य प्रकारस्य पीडा जाता सहैव मुखे मधुरः स्वादः आगतः। येन अतीव तृप्तिः अभवत्। अथ च पिपासा शान्तिमेति। माम् कार्य करणे मन मपि न संलग्नतेस्म। यदाहं गुरूं एवं विज्ञापयत् तर्हि सः इत्थं अवदत् यत् तव सुपुत्र्याः विवाहं यावत् अग्रे उन्नतिं स्थगितं भविष्यति अथ च सत्येव सा स्थगितं स्थितः।

अनेकेषु क्रमेषु गुरूदेवः माम विषम परिस्थितौ साहाय्यं कृतः। सन् 1976 वर्षे मम सुपुत्रीं विषम ज्वरस्य कारणेन अनवरतं 104 फे0 ज्वरः स्थितः। औषधीनां किञ्चित् लाभं न जायतेस्म, यदा अतीव तीक्ष्ण औषधयः प्रदत्तः तदातु तापमानः 94 फे0 आगत्य शरीरः शैत्यं गतः। निरूपायं भूत्वाहं पू0 गुरोः ध्यानं कृतः अथ च ते तस्यां सायं एव तत्र आगतः। सः ता कन्यां / काफी किं वा चायञ्च। पायार्थं अवदत् यं पीत्वा आश्चर्य जनक रूपेण तस्य तापमानः सामान्यं अभवत्।

द्वादश वर्षस्य आयुक्रमे यदाहं हनुमानस्य पूजां अकुर्म एकदा मंदिरे तस्करता जाता अहं सुप्तः। अथ च हनुमानदेवः माम बारं–बारं उत्थाप्यतेस्म। नहि उत्थापने सति सः माम् एक चपेटांम्दत्तः। अहं व्याकुलं भूत्वा बहिः आगतः। पलायितः वा। येन तस्कारतायाः सामग्रीं वस्तवः सुरक्षिता जाता मम कपोले चपेटायाः चिह्नं तदापि

निर्मितः। चेत् अस्याः चपेटायाः कृपा प्रसादेन पू0 गुरूदेवः माम् प्राप्तः। इदानीं तु गुरूदेवः एव मम सर्वस्वं वर्तते।

13– श्री लक्ष्मी प्रसाद मिश्र

श्री के0 के0 द्विवेदी अवकाश प्राप्त उप जिलाधीशः माम् ज्ञापयत् यत् तव एव प्रदेशस्य श्री तिवारी महोदयः मया सह अवस्थितः तेन गत्वा मिलतु। तस्यां रात्रौ स्वप्ने अहं अपश्यम् यत् नर नारायणः आकाशे विचरणं कुर्वन्ति अहं तौ प्रणामः कृतः। तौ आशीर्वादं दत्वा अन्तर्ध्यानं अभवताम् द्वितीय दिवसे प्रातः यदाहं द्विवेदी महोदयस्य गृहे अगच्छम् तर्हि तु श्री गुरूदेवः पुरतः विराजमानः आसीत् अथ चाश्चर्यस्य वार्ता एषा वर्तते यत् रात्रौ दृष्टः नर नारायणयोः मध्यतः एकः प्रतीतं भवतिस्म। परिचीय अहं तस्य श्री चरणेषु अपतम्। गुरूदेवेन कथितं अलं अलं तव कार्यं जातम्। एतेते एव शब्दाः आसन् यः रात्रिं माम् आशीर्वादरूपे अमिलत्।

म्म मित्रः हर्षचन्द्र त्रिपाठी गुरू पूर्णिमायाः दिवसे बड़ौदा गमनस्य विचारं करोतिस्म यतः एकः महात्मा माधवानन्देन मिलितुं शक्यते अहं परामर्शो दत्तः यदहं आवाम् दुर्गं गत्वा पू0 गुरूणा अमिलताम्। पू0 गुरूणा सम्मिलिते सति श्री त्रिपाठी अकथयत् यत् सः सांसारिक बन्धनैः आकर्षणैश्च त्यागं प्राप्तुं इच्छते। तथा च नित्य नैमित्तिक अर्चनेन तं कोऽपि लाभः न अभवत्। सः कानिचित् दिव्यानुभूति हेतवे गुरूणा मार्गदर्शनं इच्छते। गुरूणाऽक्तम् यत् त्वम् अद्यवधियां साधनां कर्तारन् आगतः तां आसन बद्धं भूत्वा कुरू अहं द्रष्टुं इच्छतिस्म। सः मिनटत्रयं ध्यानस्थें गतोऽनन्तरे आसनं त्यक्त्वा आसन्दिकायां आगत्य अवस्थितः। अथ चावदत् यत अत्रतः अहं साम्प्रतं किञ्चित् प्राप्तिं बिना न गमिष्यामि। यथा तु वृत्ति स्थिरं अस्तु अस्थिरेवा। तदा गुरूदेवोनोक्तम्। उततम वार्ता अस्ति। साम्प्रतं अस्मिन् विशिष्ट आसने तिष्ठतु

पुनःतस्य पृष्ठोपरि हस्तंचालयन् अवदत् यत् इदानीं उपरिगच्छ। अस्यां स्थितौ अनुमानतः दश मिनटं यावत् श्री त्रिपाठी ध्यानस्थः स्थितः। पुनः गुरूदेवेनोक्तम् अवतरतु अधः अवतरतु। यदा सः नेत्रौ स्फोट्यते तदा गुरूदेवेनापृच्छत्। किञ्चित प्राप्तः ? तदा सः उत्तरं दततः। यत् मम् एकः स्वर्णिम् त्रिकोणस्य दर्शनमभवत्। अतोऽनन्तरे सः आसनं त्यक्त्वा आसन्दिकायां आगतः अतिष्ठच्च। पुनः त्रिपाठी महोदयः माम अवदत् यद् इमानि दश रूप्पकाणि गृह्यतु अथ च पूजन सामाग्रीं आनयतु। सः गुरू वन्दना सम्पन्नं कृतः अथ च भोजनं कृत्वा प्रस्थानं कृतः।

एकदा गुरूणा मिलित्वा आगच्छन् काले रेलयाने एकः लकवायाः रूग्णः याचकः मिलितः यस्तु तंत्र मंत्रस्य कारणेन तस्यां स्थितौ प्राप्तः। गुरूपदिष्ट विधिनाहं तस्य उपचारः कृतः अथ च सः स्वस्थमभवत्। सर्वे एतम् वीक्ष्य आश्चर्य चकितंमभवत्। गुरोः मयि उपरिकृपायाः बहुशः उदाहरणाः सनित येन मम तस्योपरि अविचलः श्रद्धा वर्तते।

14 – श्री भैय्यालाल तिवारी

परम पू0 गुरोः प्रथम दर्शनः माम् नवम्बर 1974 वर्षे अमिलत् प्रथम दर्शने एव दिव्य पुरूषस्य । दिव्य पुरूषं प्रति एकः अद्भुताकर्षणस्यानुभवः अभवत् । जनवरी 1976 वर्षे अहं परम पू0 गुरूणा आध्यात्मिक ज्ञानार्थं दीक्षितं अभवत्।

दीक्षितानन्तरे तेन प्रदत्त मार्गदर्शने साधनायाः अभ्यासः प्रारम्भः कृतः। साधना प्रारम्भं करणस्य त्रि चतुर्थ दिवसानन्तरे सैव साधनायाः काले नेत्राभ्यां धारा प्रवाहः अश्रुपातः अभवत् अथ च अंगे (मस्तके) पिपालिकानां गतेः अनुभवः जातः। तदनन्तरं पीठोपरि एका एतादृशी गतिः निम्नतः ऊर्ध्वं प्रचलन् विदितो जातः यथा–थरमामीटरे पारा ऊर्ध्वं प्रतिवर्धते। एषा गतिः शनैः शनैः मम कण्ठदेशं यावत् अनुमीयते अतोऽनन्तरे अस्याः गतेः अनुभवः शान्तं वर्तते। गुरूं प्रणाम काले सः सदैव मम पृष्ठोपरि निम्नतः ऊर्ध्वं प्रति स्व हस्तं संचालयन् आशीर्वादं ददातिस्म। परं यदा एषा

रीढ़स्य गतिः कण्ठदेशं यावत् प्राप्ता जाता तदाते गर्दनोपरि स्व अंगुलयः निम्नतः ऊर्ध्वं प्रति न भ्रामयित्वा दक्ष वाम दिशोपरि स्पर्शं कृतः। ततोऽनन्तरतः एषा गतिः अवरूद्धास्ति।

1980 वर्षे ग्रीष्मावकाशे अहं स्व ग्रामे आसीत्। रात्रौ सहसा इत्थं अनुमीयते यत् मम पृष्ठोपरि नाभि देशे पृष्ठे कोऽपि तीव्रेस्य मुष्टिका प्रहारः कृतः। एका आक्रान्त ध्वनिना सह विशिष्ट कष्टमयः ज्वलनस्य भानः अभवत्। तस्मिन् काले एकं शब्दं ध्वनिः श्रुतः। यस्य शब्दः कालेऽस्मिन् न स्मरणास्ति परं तस्य भावमासीत् यत् यस्य आराधना त्वम् करोसि सः मम समक्षे किञ्चिदपि नास्ति। इत्थं स्पष्टं भवति यत् पूर्वे मया अथ च परिवारैः पूजित कस्यापि पीड़ितात्मायाः शब्दं वर्तते। या विद्वेष पूर्णा ध्वनिः आसीत्। अतोऽनन्तरे न तु सा दृष्टि गोचरी जातः नैव तस्य शब्दाः अद्यावधि श्रुतः। अनेन प्रकारेण गुरूणोपदिष्टरीत्या नियमितं तु न परं अभ्यासं करोमि। अभ्यास काले नेत्र निमीलिते सत्यपि अतीव अल्प समयार्थं परं दिव्य दर्शनाः भवन्ति।

3–1–1983 वर्षस्य रात्रौ माम् एतादृशः प्रतीतम भवत् यत् तिष्ठन् एव प्रकाश पुञ्जेन अहं आवृतः। अथ च एषः प्रवर्धत् माम् पूर्ण रूपेण निमज्जयति अस्मिन् प्रकाश पुञ्जे कण्ठपर्यन्तं निमज्जितः किञ्चित् कालं अतिष्ठत् स्नानं अकरोत्। अतोऽनन्तरे सः स्वयमेव लुप्तोः जातः।

भौतिकतायाः वास्तविकतायाश्य ज्ञानः गुरूणा प्राप्ते जातेति कारणेन अस्यां प्रति उन्मुखे न्यूनतायाः अनुमानः भवति। भौतिक कार्याः यः जीवनं सुखमयं स्थापयति तस्योपरि उत्पन्न बाधायाः शमनः स्वयमेव भवति। यमहं स्वयं नावबोधयामि।

मम एक पुत्रः यः 1–1/2 एकः सार्धेक वर्षस्य आयुक्रमे शुष्कः एवञ्च पोलियोइति रोगेण पीड़ितम भवत्। चिकित्सकैः नैराश्ये गतेसति ततः गुरोः शरणं अगं्ड़ीकृतः मात्रेकौषधिं तस्मै तेन ज्ञापितः। येन तस्य एकः अंग यः शून्यः आसीत् गतिमान अभवत् । अथ च इदानीं पूर्ण स्वस्थः अस्ति। एतं बालकं गुरूदेवः लघु

भक्तः इति शब्देन संबोधयति। एवञ्च तस्य बहुशः वार्ताः अद्भुताः भवन्ति अथ चाग्रेसा सत्यं भवति। एतं बालकं या औषधी गुरूदेवः ज्ञापयतिस्म सा अद्यापि कस्मिन्नपि कष्टे कार्यं करोति। सः अद्यापि कस्यापि पीडयातया औधिना लाभं प्राप्नोति। अथ चमम जीवने घटित भवितारः घटनायाः आभासः पूर्वतः भवति। परं सतर्कतां बिना कारणेन अवश्यमेव घटयन्ति। परं अतीव अल्परूपे।

अनेन प्रकारेण प0 पू0 गुरोः संपर्के आगमनानन्तरे अध्यात्मिक किं वा दैनिक जीवन निर्वाहे माम् अत्यधिकं लाभं भवन्ति बहुधा कानिचित् एतादृशी सुखदानुभूतयः सन्ति याः शब्द बद्धं करणाय मह्यम् कठिनं वर्तते।

15– श्री मती श्यामवती तिवारी

जनवरी1976 वर्षे मम पतिः गुरूदेवेन दीक्षितम्भवत्। तस्य दीक्षितानन्तरे 4/चतुर्थ दिवसानन्तरे अहं परम पू0 गुरूणा दीक्षां गृहीतः। दीक्षा गृहीतपूर्वे अहं तस्य दर्शनं प्राप्तां कृतः। एवञ्च प्रथम दर्शने नैव अहं अनेन प्रकारेण आकर्षितं अभवत् यत् कियत् शीघ्रं तस्याशीर्वादं प्राप्तं कर्तुं शक्नोमि।

दीक्षा ग्रहणानन्तरे साधनार्थं अभ्यास प्रारम्भे सति बारं–बारं शिथिलतायाः /जंम्हाई आगमनः मुखमण्डले ईषतः वायु प्रवाहः अथ चनेत्राभ्यां अश्रु प्रवाहः प्रारम्भः अभवत्। 8–10 दिवसानन्तरे प्रकाशस्य वृत्तः दक्षतः वामे/घटिकागति अनुकूलं भ्रमन् दर्शितः। एषः क्रमः अनुमानतः मास त्रयं यावत् प्रचलितः। अतोऽनन्तरे साधनायाः काले एकः मखमलस्य नीलवर्णस्य पालने भ्रमन् परम पू0 गुरोः दर्शनं अभवत्। साधनाकाले मुखे यदा कदा स्वादरहितः कदा स्वादयुक्तः इत्थं अत्यधिकं जलं आगच्छति यन्मुखः पूरितोजातः। अहं सततं पिवामि।

सित0 1982 वर्षे अहं पू0 गुरोः स्मरणं कृत्वा विश्रमितः। यत् सहसा प्रकाशस्य एकः वृत्तः यथोदित सूर्यः अस्तु दृश्यते। किञ्ित् कालान्तरं तस्मिन्नेव वृत्ते ऊँ

कारस्य दर्शनं प्राप्तः। एषः दर्शनः अनुमानतः पञ्च मिनटं यावदहं कृतः। अक्टू0 82 वर्षे अनेन प्रकारेण अहं गुरोः स्मरणं करोतिस्म यत् माम् एका अद्वितीय आभायाः मंदिरद्वयं अपश्यत्। ततोऽनन्तरे तन्मध्यतः गुरूदेवः बहिः निःसृत्यमां प्रतिवर्धयन् दर्शनोदत्तः। अनेन प्रकारेण माम् अधिकतरं दर्शनं प्राप्ताः भवन्ति। किञ्चित् कालं मया नानुमीयते यदेषः भ्रमः अस्ति किं वा वास्तविका परं अधुना शनैः शनैः माम् विश्वासो अभवत् यदसौ पू0 गुरोः अपूर्व कृपा वर्तते। कस्यापि विषयः किं वा प्रतिकूल परिस्थतौ तस्य स्मरेण कृते सति प्रत्यक्ष दर्शनम मिलति। अथ च तस्य शब्दमपि श्रूयतै। येन माम् तस्यां विपरीत परिस्थितीषु सरलतया साफल्यं मिलति।

अनेन प्रकारेण गुरूदेवः प्रत्यक्षः परोक्ष रूपेण च दिव्य दर्शनस्य लाभं ददाति। यस्य कृते अहं हृदयेन कृतज्ञोऽस्मि। अनेन प्रकारेण सर्वान् लाभं अस्तु एतादृशी कामना करोमि।

16– श्री अंजनी कुमार तिवारी

प0 पू0 गुरोः प्रथम दर्शनः माम् मई –जून 1979 वर्षे बरांव ग्रामे अमिलत्। तत समयेन मम इच्छा परम पू0 गुरूणा दीक्षा ग्रहणस्य जाता। परमहं स्वयमेव गुरूणा न कथितुं शक्यतेस्म। ममान्तरिकेच्छां गुरूदेवः जानातिस्म एव। परम पू0 गुरोः एषा आज्ञा जाता यत् त्वम् स्मरणं करोतु कापि काठिन्यं न भविष्यति। सर्व उत्तमं भविष्यति तत् कालतः गुरूदेवं प्रति अतीव आकर्षणः आसीत्। सुदीर्घ कालानन्तरे प0 पू0 गुरोः द्वितीय कृमे दर्शनः माम् सितम्बर 81 वर्षे शहडोले अभवत्। तद्दर्शन मध्ये दिनाक्ड़. 13/9/1981 सोमवार दिवसे भाद्र पूर्णिमातिथौ समयः सायं 3.45 वादने प0 पू0 गुरूणा दीक्षितोऽभवत्। दीक्षितो जाते सति। गुरूणोक्त नियमानुसारं अहं साधनारंभः कृतवान् तस्य किञ्चित दिवसानन्तरत साधना काले कर्णे शून्यता नेत्रयोः स्फुरणः तथा च कटिदेशे पीड़ा भवतिस्म। अहं शाखायाम् गच्छतिस्म अनुमानमेव्

ज्ञातमेव न भवतिसम यत् अहं कस्य कार्यार्थं अतिष्ठम्। पुनः कम्पन इव लगति अथ च पूर्वस्थितौ आगच्छतिस्म। दीक्षितानन्तरे द्वितीय तृतीय मासे साधनां करोतिस्म। तस्मिन्काले इत्थं अनुमीयते यत् माम् किञ्चित् मिलितारः अस्ति। तस्य प्रतीक्षायां अहं 30 त्रिशति मिनटं तिष्ठतिएवासीत्। यत् श्री कृष्णः मुखे वंशीं सन्निवेशयन् वेशयन् दर्शनो दत्तः। किञ्चित् कालें अहं दर्शनः अकरोत् पुनश्च अदृश्यः जातः। तद्दिवसतः साधनां प्रति अत्यधिकं ध्यानं संलग्नो जातः। किञ्दिदवसानन्तरं प0 पू0 गुरोः हसन् दर्शनं प्राप्तः। साधना यथावतं प्रचलति। ततोऽनन्तरे तीव्र प्रकाशः इव दृश्यतेतं प्रति दर्शनस्य प्रयासः कृतः परं नेत्रौ कार्यं न कृतः। अनेन प्रकारेण अनेकैः बारं अभवत् द्वि, त्रिदिवसानन्तरे अस्याः प्रकारस्य प्रकाशं प्रति पूर्ण उत्सुकतया अपश्यत्। तस्मिन् एकः सूर्य इव वृत्तः आसीत्। अथ च तस्मिन् ऊॅकारस्य दर्शनमभवत्। साधना प्रचलिता। तत् समये कटि देशे पीड़ा बाहूनां स्फुरणं व्याकुलतां इव स्थितिः निर्मीयते। मध्ये एकदा श्री शंकर देवस्य दर्शनं प्राप्तः। ते अतिष्ठन् किञ्चित् वदतिस्म। तस्य कथनस्य न ध्वनिं मया श्रुतम्। अवश्यम् परं न अववुध्यते यत् किं वदति। सित0 82 वर्षे अहं प0 पू0 गुरोः स्मरणं कृत्वा अलेटत्। किञ्चित् कालानन्तरं अति सुदूरं एकं मंदिरं इव अपश्यत् यः पर्याप्त पुष्प मालाभिः सुसज्जितः आसीत् तन्मध्ये गुरूदेवस्य दर्शनः अतीव अल्प समयार्थं अभवत्। पुनश्च अदृश्यं अभवत् अनेन प्रकारेण माम् ऊॅकारस्य एवञ्च श्री प0 पू0 गुरोः दर्शनं अभवन् अपश्यत्। अहं तं पूर्ण रूपेण द्रष्टुं इच्छामि परं द्रष्टुं न समर्थोऽस्मि्। अद्यतः 3–4 त्रि चतुर्थ दिवस पूर्वमपि माम् सूर्य किरण इव प्रकाशः नेत्रयोः अपतत्। कालेऽस्मिन् साधनारत कालेणवा कुलतांमधिकं लगति। यस्य कारणेन पुनः साधना अवरूध्यते। चेत् साधनायां न तिष्ठामि तर्हितु एतादृशः प्रतीतं भवति यत् अहं किञ्चित्त्यजामि।

दिवसं यावत् चिन्ता इव लगति कालेऽस्मिन् गुरोः स्मरणे कृते सति दक्ष हस्ते अतीव स्फुरणः जायते। एषः स्फुरणः कदा वामहस्तेंऽपि भवति। ममोपरि संकटः यदा आगच्छति तर्हितु गुरोः स्मरणं कृत्वा घूपस्य भस्म लेपनेन पर्याप्त विश्रामः भवति।

17– श्री राजेन्द्र सराफ

अहं 1977 वर्षस्य आरम्भे दीक्षितमभवत्। दीक्षामिलनकालेव माम् कटि प्रदेशतः मेरूदण्ड़ मध्यतः भूत्वा ऊॅर्ध्व प्रति किञ्चित् प्रचलित इव प्रतीतः अभवत्। ततः एषः संवेदनः मस्तिष्के गत्वा स्थिरंमभवत् अथ च मम् श्वसनः अवरूध्यते।

साम्प्रतं माम् रहस्यमयं ध्वनयः श्रूयते। यथा सितारः मंजीरस्य च वादनं भवति ध्यान करणस्य काले यदा मम श्वासः अवरूध्यते तर्हितु दीप्त प्रकाशः दृश्यते। यस्य मध्ये नीलः वृत्ताः भवन्ति। मस्तिष्कस्य वामे वेदनानुभवः भवति। जठराम्लता प्रवर्धिता प्रतीतं भवति परं यदाहं शयन काले गुरूणा प्रदत्त मंत्रोच्चारं करोमि तर्हितु माम अतीव लघुत्वं प्रतीयते अथ व चैते उपद्रवाः न्यूनाः भवन्ति।

18– श्री बसंत विठ्ठलराव तकवाले

आंतरिक सुरक्षा अधिनियमान्तर्गतंमहं 24 चतुर्विशति नव0 1975 वर्षं बंदी कृतः अथ च राजनैतिक बंदी रूपे नासिक कारागारे स्थापितः। योगं प्रति मम रूचिज्ञातारः एकः विधि विशेषज्ञः मित्रः माम् पत्रमलिखत् यस्मिन् श्री गुरोः आध्यात्मिकता श्रेष्ठता एवञ्चोपलब्धीनां विषये लिखितः। अस्य गुरूदेवस्य स्पर्श मात्रेण साधकं अनायासेव समाधिः लगति। इति अध्ययनं कृत्वा मम मनसि तेन मिलितुं तीव्र उत्कंठा जाता।

अनुमानतः 4 चत्वारिंवर्षतः अहं योगाभ्यासं करोतिस्म परं माम् कस्यापि समर्थ गुरूणा मार्ग दर्शनस्य सौभाग्यः न प्राप्तं अभवत्। यद्यप्यहं सद्गुरोः अन्वेषणं कृतः कानिचित् योग शिक्षका प्राप्ताः अपि परं तेन माम् संतोषः नाभवत्। अहं एतत् कथा

वृत्तं श्रुतः यत् साधकं एकः पूर्व निश्चित समये एव सद्गुरोः प्राप्तिः भवति। अहं विचारं अपि कर्तुं शक्यतेस्म यत् मम बंदी भूतस्य अवघौ एव सद्गुरूणा मिलनस्य सौभाग्यं प्राप्तं भविष्यति। कारागारे प्राप्त मित्रस्य पत्रं पू0 गुरूणा मिलनः अथ च तेन दीक्षा ग्रहणस्येच्छां तीव्रः कृतः परं अति कालतः संयुक्तेच्छा कारागारस्य नियमांकारणेन तत्क्षणं फलीभूतं न अभवत्। परमहं अनेन हतोत्साहितं न अभवम् अहं स्व मित्रेण प्रश्नं कारियितः यत् किं दीक्षा पत्रेण संभाव्यते। मित्रः अलिखत् यत् एषः संभवः अस्ति।तथा च पू0 गुरूदेवः आश्वासनं दत्तः। यत् ते स्वतः दीक्षा दानार्थं समुचित परिस्थितीनां निर्माणं करिष्यति। अस्यार्थमेषः अभवत् यत् कारागारे वसन्माम् दीक्षार्थं अग्रेप्रतीक्षां करोतिस्म। अनेन माम् –नैराश्यं अभवत्।

अगस्त 1976 वर्षे मम पुत्री गम्भीर रूपेण रूग्णत्वं गता अथ चाहं 5 पञ्च अगस्तं कारागारतः मुक्तः कृतः।अहं नासिकतः वर्धां आगतः। अथ च समय नष्टं कृते बिना स्व मित्रस्य पार्श्वे गतः यतोहि शीघ्रातिशीघ्रं गुरूणा सम्पर्कं करोमि। दुर्भाग्यतः गुरूदेवः अस्मिन् काले अमरावतीं गतः। अहं अति विषमपरिस्थितौ बद्धौ जातः। मम् पुत्र्याः चिकित्सा नागपुरचिकित्सा महाविद्यालये भवतिस्म। गुरूदेवः अमरावत्यां आसीत् अथ चाहं वर्धा स्थाने आसीत्। अस्मात् सर्वतः महद् वार्ता एषा आसीत् यदहं अतीव अल्प समयार्थं मुक्तः कृतः। चेन्मयि गुरोः अदृश्य कृपा दृष्टिः न भवति अथ च मित्रेण उत्साहितं न कृतः तर्ह्यहं 8 अष्टअगस्तं 1976 वर्षं अमरावतीं गत्वा गुरूणा न मिलितुं शक्यते। असौ संपर्कः मम जीवने महत्वपूर्णः परिवर्तनः आनीतः अतः तस्मिन्नेव दिने माम् दीक्षां प्राप्तः।

गुरूदेवेन प्रथम संपर्कः मदर्थं यादगारः विनिर्मितः। अहं भावभिभूतं गतः मम समक्षे अनेकैः प्रश्नाः आसन्। यस्याहं उत्तरं वॉच्छतिस्म। मम बिना पृष्टैव सः समस्त उततरं अद्दत्। सः समस्त शंकाः दूरी कृत्य मम मस्तिष्कं शान्त्या पूरितो कृतः।

कितिचिदेव दिवसेषु मम पैरोलः समाप्तं गताः। अहं पुनः नासिकस्य कारागारे गतः। अत्र मम पार्श्वे ध्यानाय पर्याप्त एकान्तः अथ च समयं आसीत्। अनुभवानां नवीन संसारः मम सन्मुखे उदितो जातः पूर्वं अहं 45 पञ्च चत्वारिशति मिनटतः अधिकावधिं यावत् ध्यानं कर्तुं न शक्यते परं अधुना द्वित्रि घटिकां यावदपि उपविष्टुं संभवः जातः। मानसिक विघ्नाः न्यूनत्वं गतः अथ च ध्यानः गहनं जातः। कारावासस्य प्रारम्भिक दिवसेषु माम् निद्रान आगमनस्य कष्टं अभवत् परं श्री गुरोः मार्गदर्शने ध्यान आरम्भानन्तरेतः अहं गहन निद्रायां गतः।

श्री गुरूदेवेन दीक्षां ग्रहणस्य पूर्वस्य च एक द्वि घटनाः माम् विस्मृतेऽपि न विस्मरति। 1969 वर्षे अहं मैसूरे भ्रमणार्थं गतः। तस्मिन् दिने कस्यापि प्रकारस्य योगाभ्यासः प्रारम्भः न कृतः। मैसूरे अहं चामुण्डा देव्याः दर्शनार्थं गतः मूर्ते सन्मुझे अतिष्ठम्। भाव विह्वलं भूत्वाहं बालकमिव अरूदम्। अश्रून नावरूध्यतेस्म। अनेन प्रकारेण एकदा वर्धा स्थाने अहं यदा 4 चत्वारिवर्षपूर्वं ध्यानं करोतिस्म तदा एकः अनुभवः अभवत्। देव्याः मानवाकार प्रतिमूर्तिः मम सन्मुखवे प्रगटमभवत्। कारागारेऽपि यदाहं दीक्षा गृहीतः अस्यैव प्रकारस्य अनुभवः अभवत्।

धार्मिक मनोवृत्तिः यं कथयन्ति तत् मम चरित्रस्य मुख्यागृड़ः कदापि न आसीत्। आगामि जन्मे माम् मार्ग दर्शनाय अहं यदा कदा भगवना प्रार्थना करोतिस्म। द्रव्यार्जनस्य मम अनेकैः योजनाः असफला जाता। गुरूणा मेलनात् चत्वारि वर्ष पूर्णं माम् अतीवाधिकं हानिः सहनं कृतः येन माम् अत्यधिकं कष्टमभवत्। अहं स्वकीयेन् पृच्छणारंभः कृतः यत् मम धन संग्रहस्य निरर्थक उद्यमाः अधिक महत्वपूर्णं वर्तते। किं वा परिवारस्य इष्ट देवं प्रति कृत ध्यानः भक्तिश्च यस्तु माम् प्रसन्नताः संतोषं च दाष्यति। मयानुमीयते देव्याः प्रार्थना भक्तिरेव जीवनाय अधिकं सार्थकं वर्तते अनेन भावेन निश्चयमेव मम जीवने किञ्चित् परिवर्तनः आगतः।

अहं नवार्ण मन्त्रान् प्रति अतीव आकर्षितः अभवत्। परं माम् आवश्यक नियमानां अतीव अल्प ज्ञान मासीत्। अहं श्री मनोहर हरकरे नामकः एकः योग शिक्षकस्य पार्श्वे गतः। तमपि अस्याः विधेः ज्ञानं न आसीत् अतः सः अन्यविधि अग्ड़ीकाराय परामर्शोदत्तः। निर्दिष्ट विधिनाहं योगः कृतः अथ च सप्ताहाभ्यन्तरेव सफलतायाः आभासः आभासते। समयेन सहैव आत्म विश्वासः दृढ़ जायतेस्म। अहं आध्यातिमक विषयेषु तर्क वितर्कं कर्तुं समाप्तः कृतः। मदर्थं अधुना धर्मः अथ चाध्यात्मः अनुभवस्य विषयः निर्मितः। अस्मादधिकं न त्वहं किञ्चित् कथितुं समर्थोऽस्मि। अथ च नैव किञ्चित्करणेषु समर्थोस्मि।

7.10.1977 नासिक कारागारे साधनायाः विषये लेखनानन्तरे अनुमानतः नव मासमतीतः कारागारतः मुक्त्यनन्तरं मम राजनैतिकाः गतिविधयः प्रवर्धनेन साधनार्थं न्यूनं समयः अवशिष्यतिस्म। यदा कदा एषा तीव्रेच्छा भवतिस्म यत् राजनीतौ सक्रिय रूपेण गत्वा राजनैतिक लाभं अर्जयामी। परं तस्मिन् काले अन्तर्मनसा ध्वनिः आगच्छति यत् राजनैतिममाध्यात्मिकोन्नतिंरोधयिष्यति। मम मनः मासमेकेन अधिकं कालं यावत् अस्मिन्नेव अन्तर्द्वन्दे संलग्नः यदहं राजनीतिं परित्यजामि नवा अन्तर्मन सः ध्वनिः अद्य अतीव तीव्र जातः यदहं राजनीतिंपरित्यजामि एव। कारागारतः मुक्त्यनन्तरं मम पुनः विधि कार्यारम्भस्य किञ्चिदपि इच्छा न आसीत्। सप्ताहं यावत् अहं किञ्चिदपि निश्चयः न कृतः। सांसारिक जीवनतः माम् एक तुल्यस्य सन्यासः इव लगति। अहं श्री गुरूणा पारमर्श साहाय्यार्थं याचना कृतः। सः माम् विधिकार्यं पुनः प्रारम्भाय अवदत्।

अहं पुनश्च साधनारंभम् कर्तुं विचारः कृतः गुरू पूर्णिमायाः दिवसे अहं बिलासपुरं अगच्छम् यत्र तु गुरूदेवः तदिदवसेषु अवस्थितः। गुरूदेवोऽपि साधना अनवरतं कर्तुं अवदत् परमहं न कर्तुं शक्तः दिवसा आतीतः। एकदा प्रातः अहं वर्धा स्थाने स्व गृहं पुरतः स्थितः। माम् पुष्पपादपाः अथ च वृक्षाणां पंक्तिषु पंक्तिः

अदृश्यत्। एते सर्वे माम प्रति स्नेहपूर्ण दृष्ट्या अपश्यन्। माम् ह्यार्दिक प्रसन्नता जाता। संयोगवशात् तस्मिन्नेव प्रातः श्री गुरूदेवः बिलासपुरतः वर्धां आगमनाय प्रस्थान कृतः। तस्मिन्नेव सायंकालतः अहं साधनारम्भः कृतः तथाचाद्यं नियमित रूपेण प्रचलति।

गुरूदेवः वर्धां आगतः अथ च किञ्चित् कालं अत्र अवस्थितः। अहं प्रतिदिनं संध्याकालं तस्य उपस्थितौ अभ्यासं करोतिस्म। आंतरिक प्रेरणा अनिवार्य रूपेण माम् साधनायांरतमाकारिता। ध्यानावस्थायां वाह्य संसारस्य चेतना पूर्णतः समाप्तं भवतिस्म।

चत्वारि अक्टूबरं अहं गुरोः समक्षे ध्यानं करोतिस्म। माम् प्रतीयते यदहं स्व स्वकीये निमज्जितोऽस्मि। मम अन्तस्थायां एका तीव्र संवेदना उत्थिता। मम मेरूदण्ड़ः एवञ्च अतंस्था अनेन प्रकारेण उष्णं प्रतीयते यथा पावके स्थापित लौह दण्ड़ः। मम शरीरस्य अधोभागः संज्ञा शून्यं गतः। अथ च मम कण्ठ अवरूध्यते अतीव तीव्रस्य पिपासा लगितः परमहं एक शब्दमपि वक्तुं असमर्थासीत्। पू0 गुरोः समीप स्थित श्री भास्कर देश पाण्डेयं अहं संकेतेन अवबोधयत् यन्माम् जलं प्राप्तव्यम् सः एकस्मिन् लधु जल पात्रे जलं आनीतः। अथ च माम् पीतवान् यतः अहं हस्तोत्थानेऽपि असमर्थसीत्। अन्तस्था एवञ्च मेरूदण्डे भवितारः प्रबलानुभूतेः माम् पूर्ण चेतना आसीत् माम् अनुभवं जायतेस्म यदहं अन्तस्थायां स्थितोऽस्मि। तथा च तत्रतः गमनस्य मम किञ्चिदपि इच्छा न आसीत्। परम पू0 गुरूदेवः माम्पद्मासनं त्यक्त्वा उत्थितुं अकथयत्। मया आज्ञापालनः कृतः। अथ चोत्तिष्ठ्य विस्तरे शिथिलं भूत्वा अलेटत्। माम् विश्रामः न रोचते अतः उत्तिष्ठय पुनः पद्मासने अवस्थितः। अहं तस्यां स्थितौ सुदीर्घ कालं यावत् स्थितः। माम् गृह गमनस्यापि इच्छा न भवतिस्म। अंते मम मित्रः प्रभाकर पाण्डेयः माम् त्रिचक्रिकां उपवेश्य गृहं प्रेषितः। अन्तस्था एवञ्च मेरू प्रदेशे

भवितारः अनुभूतयः स्थिताः। गृहं आगत्या। अहं भोजनं कृतः। माम् अस्यां वार्तायां आश्चर्यं अभवत् यत् तद्दिने अहं प्रतिदिनस्यापेक्षाकृतं अधिकं भोजनं गृहीतः।

द्वितीय दिवसेऽहं पुनः गुरोः पार्श्वे गतः।तद्दिने अन्तस्थायां भवितारः चेतना विशिष्ट सहस्त्रारे प्राप्ता।

सांसारिक विषयेषु मम दृष्टिकोणः एव परिवर्तितः। माम् सांसारिक कार्येषु प्रवृत्ते गते अति परिश्रमः क्रियते, अथ च कार्यरतं स्थितेव अहं स्वकीये निमज्जामि मनसि विचारैः उत्तिष्ठति। परं शीघ्रेव गच्छन्त्यपि। समस्तः। विचारः स्वतंत्र भूतस्य इच्छा बलवती भवति।

ध्यानकालेऽहं पूर्ण सचेतं भवामि माम् ज्ञानं भवति यत् कदाहं मस्तिष्के उपरिगच्छामि अथ च कदा अधो आगच्छामि।यदाहं सांसारिक कार्येषु रतं भवामि। मम स्थितिः निम्नैः केन्द्रेषु स्थितं भवति। कार्ये समाप्ते सति स्वयमेव उपरि केन्द्रेषु प्राप्तं भवामि। विरक्तेः भावना प्रवर्धिता।अहंकारः लुप्तं गतः तथा च शक्ति श्रोतस्य बोधः प्रवर्घते।

यदा कदा भृकुटि मध्ये ज्योति बिन्दुः दृश्यते। चेत् अस्मिन् काले अहं नेत्रौ निमीलयामि। तर्हितु ज्योतिपिंडः वृहद् भवति। अस्यां स्थितौ चेदहं कस्यापि व्यक्तिं स्मरणं करोमि तु सा ज्योतिःपिंडे प्रकटं भवति। यस्मिन् काले वाम नासिकया श्वासः चलति तस्मिन् काले सः व्यक्तिः वामं प्रति दृश्यते तथा च दक्ष नासिकया चेत् श्वासः प्रचलित तर्हितु दक्षिणं प्रति दृश्यते।

अद्य प्रातरेव 7.10.1977 अग्नेः रक्तिम् ज्वाला अपश्यत् यं परितः हरित नीलः प्रभामंडलः स्थित आसीत्। निश्चयादेव एताः अनुभूतयः काल्पनिक माया जालं नास्ति यथा तु साधनायाः प्रारम्भिक स्थितौ नवशिक्षितानां अनुभवे आगच्छति।

दि0 9.4.1982 वर्षम् प्रातः सर्वश्री कुटेमाटे, ऊॅवरकर, लोणकर अथ च श्री काण्णवः मम गृहं आगतः। ते पू0 गुरोः कक्षे (यस्मिन् तु ते यदापि मम गृहं

आगच्छन्ति तदा तु वसति) गतः अहं एकसिमन् विवादस्य निर्णये व्यस्तमासीत्। किञ्चित् कालानन्तरं कार्ये समाप्ते गतिसति अहमपि तस्मिन्नेव कक्षे गत्वा चतुष्पादिकायां स्थित्वा ध्यान मग्नं अभवम्। ते चत्वारस्तु ध्यान मग्नः आसीत् एव। किञ्चित् क्षणानन्तरमेव माम् कम्पन इव प्रतीयते। पूर्ण शरीरः पूर्वतः एव तपतिस्म ज्वरेण तु न अपितु स्वकीयस्य उष्णतया शनैः–शनैः पश्चिममार्गेण महाशक्तेः आरोहणं प्रारम्भः अभवत्। सप्तम् स्थाने एकः तरूणः धौतोत्तरीय धारणं कृत्वा पूर्वतः एव समाधिस्थ अवस्थितः। क्रमशः प्रकाश वर्धनेन प्रकाशः धवलितः जातः। रक्त मुखस्य वानराः आगतः अथ च पुनः आगतः गरूडखगः दक्षतः कोणे सुदूरं पीताम्बरधारी नीलवर्णः विष्णुमूर्तेः दर्शनमभवत्। पुनः सहसा उपरि असंख्य गरूडः परिभ्रमन्ति। कालेऽस्मिन् दक्षतः दिशि स्थितारः शुभ्रं शंखः दर्शितः। अस्य जलः सप्तम् स्थाने अभिषेक करणस्य इव अपतत्। आनन्दाश्रवः अनवरतं नेत्राभ्यां अपतत्। अहं अत्यधिकं आनन्द विभोरं अभवत्। पूर्ण पश्चिम् मार्गं सप्तम् स्थानं यावत् प्रकाशितः आसीत्। यस्मिन् आसने अहं अवस्थितः। तस्मिन् संपूर्ण शरीरं काष्ठवत् अभवत्। कण्ठे तीव्रस्य कम्पनः प्रकोपः जायते। पुरतः स्थित चत्वारः जनाः यदा एषः अपश्यत् तदा ते भीताः जातः। तदा मम अज्ञाते एव आभ्यन्तरतः शब्दमागतः, '' एतं विश्रामं कारयतु''। मम काष्ठवत् शरीरं चत्वारो जनाः मिलित्वा अलेटयत्। किञ्चित् कालानन्तरं पुनः शब्दमागतः, '' गीतां पठतु''। पुरतः जनेन पृष्टेसति यत् किंमध्यायं पठानि, उत्तरं प्राप्तः, ''विश्वरूप दर्शन युक्तः अपठत्।'' पुनः श्री काण्णवः गीतायाः एकादशोध्यायः अपठत्। कालेऽस्मिन्नपि अखण्ड अश्रुधारा प्रवहति गच्छतिस्म। अस्यां अवस्थायां उभौ करौ संपुटितो जातः अथ च प्रणामः कृतः। पू0 गुरोः शुभाशीषेन एषः जीवः अत्र आगतः। एतत् सर्वं किं वर्तते। अथ चास्याग्रे किं वर्तते एषः मम ज्ञानतः परे वर्तते।

19 – डा0 वासुदेव जयकृष्ण देवरसः

पू0 गुरूदेवेन मेलनात् पूर्वं अनुमानतः त्रिंशति वर्षं यावत् अहं बहुशः दर्शन ग्रन्थाः अथ च शास्त्राः अपठम्। प्रवचनाः श्रुतः साधु संतानां संपर्कः कृतः कठिन व्रतोपवासश्च स्थापितः जपासन प्राणायाममपि कृतः यतः चरम सत्यस्य गहनं गच्छामि परं गुरूणा मिलनानन्तरे एव मम एषः उददेश्यः पूर्णमभवत्।

मम श्री गुरूदेवेन परिचयः श्री के0 के0 द्विवेदी अवकाश प्राप्त (डिप्टी कलेक्टरस्य) माध्यमेन अभवत्। यः बिलासपुरे विधि कार्यारंभ कृतः। प्रथम संपर्कः एव माम्इत्थं प्रभावितः कृतः यत् माम् विश्वासमभवत्। यदद्य एतादृश जनेन संपर्कः जातः यस्य माध्यमेन मम आध्यात्मिक समस्यानां समाधानं भविष्यति तथा च मम मनं अति कालतः कष्ट दातारः शंकानांमपि निरसनं भविष्यति।

कतिचिद्दिवसानन्तरं अहं तेन कृपां कृत्वा दीक्षा अथ च आशीर्वाद प्रदानस्य अनुरोधः कृतः यं मानयित्वा सः माम दीक्षा दत्तः। दीक्षा काले एव माम् शून्यत्वस्य अनुभवः अभवत्। तस्मिन् समये मम मस्तिष्कः विचार कर्तुं शक्त्याः विरहितं गतः। माम् एतादृशः प्रतीतमभवत् यथाहं समीपस्थस्य सांसारिक व्यस्तता अथ च कोलाहलेन दूरं भवामि।

अतोऽनन्तरेअनेकैः परिवर्तनाः अभवत् गुरू चरित्र अध्ययनस्य इच्छा प्रवर्धिता अथ च तस्य गुह्य रहस्याः सरलतया अवबोधने आगताः।

स्वतंत्रता संग्रामस्य कालतः अहं राजनैतिकाः सामाजिकाश्च सुदीर्ध भाषण प्रदानस्य अभ्यस्तः आसीत्। दीक्षोपरान्तमहं बिना कस्यापि सन्नद्धतया दृढ़ विश्वासेन सह वक्तव्य दातुमारभत्। येन् मम विचारमति सरलतया नियमिततया स्पष्टतया च व्यक्ताः जातः। यद्यपि भाषणोपरान्तं किं कथितः एषः माम् स्मरणं न भवतिस्म। परं

श्रोतागणः भूयोभूयः प्रशंसां कुर्वन्तिस्म। माम अनुमीयते यत् मम विश्लेषणस्य क्षमता प्रवर्धिता। मम विचाराः सुस्पष्टा जाताः तथा च मम कथन शैली सहजा अभवत्।

चेन्माम् नेत्रयोः दुर्बलता एवञ्च उदर शूलः आसीत्। तथापि साधनायाः कारणेन अस्मात् मम मनसि कोऽपि प्रभावः न जातः। सांसारिक गति विधयः माम् प्रभावितं न कर्तुं शक्यते। पूर्वमहं अतीव वाचालः आसम् परं साम्प्रतं शातं स्थिते सति अति आनन्दः आगतः। मम सांसारिकेच्छाः मृता जाताः। अथ चसंतोषः शान्ति आगमनेन च एतादृशः प्रतीयते यत् मम् आध्यात्मिक उन्नतिः भवति। माम् प्रतीयते यत् ब्रह्मः जीवश्च एकैव वर्तते। अथ चास्यानुभवाः गुरूणोक्त संबोधित ध्यान योगेन आत्मसाक्षात्कारेणैव संभाव्यते।

मम संपूर्ण परिवारस्य जीवनं प्रति दृष्टिकोणः विवेकपूर्णं जातः। यस्य कृते पू0 गुरूदेवं कोटिशः धन्यवादं अस्ति। तं प्रति वयम् कृतज्ञास्मः। ते एव मम मार्ग दर्शकः अस्ति। यस्तु जीवनस्य कथानकं तर्क विज्ञान संगत रूपेण बोधयति। माम् प्रसन्नतास्ति यत् पू0 गुरूदेव सदैव मया सहवर्तते।

20– श्री के0 एन् देशपांडे

मम धर्म पत्नी अथ चाहं एकः परिचित सज्जनस्य गृहे आदरणीय गुरूणा मिलितः अहं तत् सज्जनस्य गृहेगच्छति/ आवागमनं करोतिस्म। तत्र गुरूदेवः कदापि सप्ताहं यदा कदा मासं यावत् वसतिस्म। माम् ज्ञातं एव न आसीत्। गुरोः उद्देश्यः किं वर्तते अथ चतस्य पार्श्वे अस्मभ्यम् कल्याणार्थं किञ्चिदपि वर्ततेनवा। एकदा यदा परिचित मित्राः मम गृहे आगताः तदा तु अहं अपृच्छम् यत् किनाम गुरूदेवः अथ च किमुपदेशंददाति। सः बोधयति यत् आदरणीय गुरूदेवः वेदान्तस्य शिक्षकः अस्ति। अथ च स्व मित्रः तकवाले पांडेयश्च तस्य शिष्यः पूर्वतः एव अभवत्। तथा च अतीव लाभान्वितः जातः।

अनेनोत्साहितं भूत्वाहं सपत्नीकः तस्यां सायं पू0 गुरोः पार्श्वे गतः। वेदान्ते पू0 गुरोः प्रवचनः श्रुतः। येन वयं तस्य आशीर्वाद प्राप्त्यर्थं प्रेरितोऽभवत्। दिवस चतुष्टयं अनवरतं आदरणीय गुरोः प्रवचनं श्रुतः परं गुरूणा अस्मिन् विषये वार्तालापस्य आरम्भः केन प्रकारेण कुर्मः एषः न निर्मीयतेस्म परं आदरणीय गुरूदेवः एताः समस्याः समाधानःकृतः अथ च अस्मान् द्वितीय दिवसे महा शिवरात्रिं आहूय तस्मिन्नेवदिने आशीषं दत्तः। तथा च नियमित साधना करणस्य निर्देशो दत्तः।

अहं प्रतिदिनं एकबारं विशति मिनटं किंवा तस्मादपि अल्प समयार्थं ध्यानं करोतिस्म। अनुमानतः द्विमासं यावत् कोऽपि अनुभवः न अभवत् तस्य अनन्तरे माम् एतादृशः अनुभव अभवत् यथा यथा कण्ठ पृष्ठे उपरि किञ्ित् प्रचलति। एषा एका विलक्षणानुभूतिः आसीत्। यथा मंद वायुः केशान् संस्पृशन् उपरि प्रति प्रवहति।

एषः अनुभवः कियत् बारमंभवत्। एतत्तु कथितुं न शक्यते परं साधना पथे संवर्धने एषः अनुभवः उपरि मस्तिष्कं प्रति आरोहते। एतेषु चर्तुषु वर्षेषु एषा अनुभूतिः भृकुटि मध्ये आगत्य स्थिरं अभवत्।

साधनाकाले तथा च साधारण अवस्थायांमपि भृकुटि मध्ये दीप्त प्रकाशस्यानुभवः भवति। यथा विद्युत शीघ्रं शीघ्रं प्रज्वलति अस्तं च भवति अहं एषोऽपि प्रबोधयिष्यामि यत् साधनायां यदा कदा विद्युत सम तीव्रः प्रकाशः प्रगटं भवति अथ च माम् विवशतया नेत्रं उन्मील्यते एव।

गुरोः आशीर्वादस्य एषः प्रत्यक्ष फलं अभवत् यत्तु माम् मानसिक स्थिरता प्राप्ता जाता। यया अहं वर्षैः अपरिचितं आसीत् तस्य कृपा प्रसादेन प्रतिकूल परिस्थितयः अनुकूलं गताः।

21– श्री मती मीनीक्षी देशपाण्डेय

अहं पू0 गुरूणा 1977 –78 वर्षे दीक्षा गृहीता। पू0 गुरोः निर्देशानुसारं अहं साधना करोमि आरम्भे ध्याने व्यवधानं भवतिस्म परं गुरू कृपया उत्तमं अभवत्। अहं पूर्वं विशति मिनटं ध्यानं करोतिस्म यः शनैः–शनैः वर्धयन् चत्वारिशति मिनटं अभवत्। ध्याने स्थिते सति एकदा भगवतः एवञ्च भगवत्याः दिव्य युगल युग्मस्य दर्शनमभवत् एकदा गुरोः शब्दं अश्रृणोत्। स्वप्नेवारमेकं कीर्तने गता। तत्रतः गुरूदेवः मम मार्ग दर्शनं कृत्वा एकं मंत्र अददत्। तथा च एका हरित् वर्णस्य सोपानं प्रेष्य अवदत् यत् अत्रतः त्वम् सरलतया गृहं प्राप्स्यसि।

कतिचिद्दिवसतः गुरोः आज्ञानुसारं ध्यानः स्थगितं वर्तते परं ध्याननियम समये भ्रुवोर्मध्यो कानिचित् अनुभूतयः भवन्ति। यदा कदा कार्येरतस्थितेसत्यपि मम् दृष्टिः स्थिरंभवति। तथा च समस्त दृश्यः लुप्तं भवति।

इदानीं माम् पूर्ण मानसिक शाति प्राप्ता जाता। एकदा मध्याह्ने विश्राम काले श्वसन क्रिया एकतानतया प्रवर्धिता। शरीरतः रक्त गुलालस्य लघु–लघु वृत्तः यः पीत स्वर्णिम् वृत्तैः आवृत्तः। वृत्त इव भ्रमन् एकस्यां गुफायां परिवर्तितः अभवत्। आभ्यान्तरे एकः साधुः स्थितः अपश्यत् परमहं तं उत्तम रूपेण द्रष्टुं शक्नोमि एतत् पूर्वएव एकः तीव्रस्य आघातः लागितः अथ चनिद्रा समाप्ता जाता। अस्य कतिचिद्दिदनानन्तरं पुनः मध्याह्ने एकः स्वप्नः अपश्यम्। तस्मिन् काले तले गमनस्य एकं पथं दृश्यते। मयाविचारितं चेत् कोऽपि अन्तः गन्तारः भवति तर्हितु किमेव उत्तमं भवति अथ चाश्चर्यमिदं यत् कस्यापि माम् उत्थाय अथ चान्तः नीतवान् गच्छन् अहं वर्षया स्नायते। किञ्चित् कालानन्तरं सहसा शैत्यं प्रतीयते। मया पृष्टम् किमेषः उत्तरं प्राप्तः वर्षाकारणेनाहं शीते शैत्ये आगतः। अस्य किञ्चित् कालानन्तरं माम् उष्णता प्रतीयते।

पृच्छणात् पूर्वमेव उत्तरं प्राप्तः शैत्यं गतः अधुना वयं ग्रीष्म ऋतौ प्राप्तः। अतोऽनन्तरे माम् अधः अवतारितः। निरीक्षणे सति एतादृशः अनुभूयते यथा एषा स्त्रीणामेव देशः अस्तु। किञ्चित् कालानन्तरं एकः तीक्ष्ण रक्त वर्णस्य शाटिका परिधाय गौरवर्ण कृशाग्ड़ी अलंकृता नारी आगता अपश्यत्। तया सह एकः व्यक्तिः आसीत् यः चेन्माम् वीक्ष्य अथ च या शक्तिः माम् अत्र आनीता तां वीक्ष्य मर्यादया सह बहिर्गतः। अहं महिलयात द्रक्षकस्य गमनस्य कारणं अपृच्छत्। तदा तु सा अवदत्। सः तव समक्षे कदापि न आगमिष्यति। माम् मात्र तव दुग्धं पिवेयम्। अतोऽननतरेव निद्रा भग्ना जाता।

22– श्री मती शीला पाण्ड़ेय

मम पतिः यं प0 पू0 गुरूदेवः प्रभुजी इति कथयन्ति। पू0 गुरोः शिष्यः अस्ति। तस्य कारणेनैव गुरोः मम गृहे आवागमनं आसीत्। मम रूचिः आध्यात्मिकतां प्रति बाल्यादेव आसीत्। सहैव पतिदेवं ध्यान धारणा कर्तारन् वीक्ष्य ममापि इच्छा जागृता अभवंत्। एकदा पू0 गुरूं भोजनाय आमत्रितः कृतः। तस्य आगमने सति अहं स्व इच्छां प्रदर्शिता पू0 गुरूदेवः अतीव हर्षेण सह अनुमति दत्तः। एकः उत्तम दिवसं दृष्ट्वाहं मध्याह्ने तस्य पार्श्वे गता तस्मिन् काले सः अतीव प्रसन्नः आसीत् यतः तस्य कस्यापि शिष्यस्य एकं पत्रं किञ्चिदेव पूर्वं प्राप्तमभवत्। यस्मिन् शिष्येण कुण्डलिनी जागृते अनुभवस्य वर्णनं आसीत्।

पू0 गुरूदेवः मम तत्र प्राप्ते एव अवदत् भवती अतीव भाग्ववान् अस्ति। तद पत्रं सः माम् अध्ययनाय दत्तः। तदनन्तरं सः माम् दीक्षितः कृतः। अहं तस्य निर्देशानुसारं साधना नियमित रूपेण कर्तुं आरभत्। अथ च कानिचिदेव दिवसेषु दिव्यानुभूतयः प्राप्ता जाता।

एकदा मया दृश्यते यत् एकः दीर्घ इव कृष्णः सर्पः मम सन्मुखेन गच्छति। माम् तेन् किञ्चिदपि भयं न प्रतीयते। मया कथितं भो नागराजः माम् आशीर्वादं ददातु। सः फणं प्रसार्य आशीर्वादो दत्तः। पू0 गुरोः अपि दर्शनं माम् भवन्ति। एकदा दृष्टः यन्मममूल बंधे एकः प्रज्वलित यज्ञ कुण्डः अस्ति। तेन निः सृता ज्वाला अनाहते आगत्य निरूद्धः जातः।

कानिचित् दिवसानन्तरं वयम् स्व श्री निवास कालोनी स्थाने नूतन गृहे आगतः। अत्र एकस्मिन् दिने स्वप्ने माम् दृष्टः यत् वयम् प्रांग्ड़णे अतिष्ठम्। अहं यदा उपरि आकाशं प्रति दृष्टि पातः कृतः। तदा तु अदभुत दृश्यः दर्शितः। श्री कृष्णः गोपिभि; सह रासक्रीड़ा कर्तारन् द्ष्टवान्। संपूर्ण आकाशे गोपीनां अथ च श्री कृष्णस्य रासक्रीड़ीयाः सम्मर्दः आसीत्। नीलवर्णस्य कृष्णः पीताम्बर वस्त्रम् , मयूर मुकुटः हस्ते कण्ठे च मालाः धारितः। किञ्चित् क्षणानन्तरं असौ दृश्यः लुप्तं गतः। अनेन प्रकारेण एकदा इत्थं प्रतीयते यथा एकस्य राजपथस्य उभयोः तटे उन्नतोन्नताः भवनाः स्थिताः। एकस्य भवनस्य क्षते अहं स्थितः तथा चान्य भवने श्री कृष्णः सः माम् किञ्चित् वदतिस्म परं ज्ञातुं न समर्थासीत्।

एकदा मया दृष्टम् यत् सर्वदा इव पू0 गुरूदेवः मम गृहस्य बृहद् सदनस्य एकस्मिन् आसन्दिकायां विराजमानः अस्ति। अहं प्रणामार्थं यथैव शिरः नम्रंगतः तदा तु तस्य दक्षागुड.ष्ठेन. प्रकाशपुंजः निःसृत्य मम मस्तष्के सुषुम्ना मार्गे च पूरितो जातः। अहं पुरतः स्थिता एतदेव दृष्यं पश्यतिस्म मम सुषुम्ना मार्गे अनेन सहैव स्पन्दनं उत्पन्ना जाता।

बारमेकं दृष्टः यदहं एकं एतादृशं कक्षे स्थितोऽसिम यत् यस्य छतः अति उन्नतं वर्तते तथा च परितः गवाक्षः अनावृताः सन्ति। यत्रापि दृष्टिः गच्छति तीव्र प्रकाश स्त्रोतं दृश्यते। अहं चकितं भूत्वा तारस्वरेण शब्दं कृतः। अहं अर्ध विक्षिप्तो भविष्यामि, अहं अर्धविक्षिप्तोभविष्यामि।

एते समस्ताः अनुभवाः किं वर्तन्ते कथं सन्ति च। एतत्वहं न जानामि परं एतत् सर्वं पू0 गुरोः कृपायाः प्रसादः अस्ति। पू0 गुरूदेवोपरिपूर्ण श्रद्धास्ति तथा च तस्य आशीर्वादेन मार्ग दर्शनेन च सांसारिक सुख दुःख सहनस्य आत्मिक बलं प्राप्तः अभवत् असौ सदृशः पिता तुल्य गुरूः अस्मभ्यम् प्राप्तः। एतं वयम् सौभाग्यः एव मानन्ति । प0 पू0 गुरोः चरण कमलेषु प्रणामं करोमि।

23– डा0 व्ही0 ए0 शिन्दे

अहं स्वकीय एक मित्रस्य गृहे विवाह समारोहे सम्मिलितुम् अगच्छम्। अत्राहं आदरणीयः श्री गुरू देवस्य सम्पर्के आगतः। अल्प वार्तालापेनैव मां तस्य भव्य आध्यात्मिक व्यक्तित्व तथा वेदान्त ज्ञानेन अत्यधिकं प्रभावितः। द्वितीय दिवसें 6/6/1969 ईस्वीं तेन मां तथा अस्मत् धर्म पत्नीं दीक्षितः तथा सुनिश्चित काले साधनां कर्तुं निर्दिष्टः।

दीक्षांप्राप्य द्विदिनानन्तरेण नया अनुभवं प्रारभ्यते। तृतीय दिवसे मां मेरूदण्ड़स्य अधो भागे मूलबंधोपरि उभयो आसनास्थि गण्डकयोर्मध्ये अनुभूतिः प्रारम्भं जातः। मया प्रातः एवं संध्या काले ध्यानं प्रारम्भः कृतः। एक मासानन्तरं मया गुरू पूर्णिमायाः रात्रौ आदरणीयः श्री गुरूदेवस्य दर्शनार्थ बिलासपुरं प्राप्तः। अपरे दिवसे गुरूदेवेन मां '' प्रातः काले'' ध्यानं कर्तुं आज्ञापितः। तस्य निर्देशानुसारेण किञ्चिद् काल पर्यन्तमेव ध्यानांवस्थिते सति आश्चर्यजनक रूपेण मां स्वर्णिम् ओमस्य दर्शनं जातम्। त्रिमासानन्तरं यदा यत् श्रद्धेय गुरूदेवः मम सार्द्धमेव आसीत् तदा मया एक तप्तपात्रे प्रज्जवलितः रक्ताभ अग्नेः दर्शनं जातम्। किञ्चिद् दिवानन्तरं पुनः मां इदृशः अनुभवः कृतः। अस्मिन्नवसरे मां तप्त पात्रे नीली श्वेतज्वा लतया युक्तः अग्निः तथा तप्त पात्रस्य मध्ये एकः श्वेत चक्रस्य दर्शनमभवत्। एकः अन्यस्मिन्नवसरे मया विस्मयपूर्वकं

स्वां पाषाण चूर्णेन निर्मितः एका संकीर्णः गुहायां प्रवेशयन् दृष्टः। अहमस्यां श्रेण्यां एताननुभवान् स्पष्टं करणे असमर्थोऽस्मि। बहुधा ध्यानावसरे भृकुटि मध्ये मां तीव्र अनुभूतिर्जायते।

सर्वाधिकमुल्लेखनीयो तथा च असाधारणानुभवः मां अनायासेनैव भवितारः उड्डीयान् , मूल, जालंधर बंधयोश्च भवति। एषा प्रक्रिया तु क्रमशः आरभ्यते, तथा आरम्भे अस्याः अनुभवः एव न भवति। असौ सागरस्य बीचि प्रकार इव उदरेण शनैः शनैः प्रस्फुटति, शीघ्रमेव उदरस्य अग्रवर्ती भित्तिकायाः मांस समूहानां संकुचनः बोधगम्यो लय बद्धश्च क्रम बद्धोऽभिजायते। संकुचितारः मांस समवायो इदृशः सन्ति। तिर्यक, बाह्य, औदरी (External Oblique) तिर्यक, आभ्यन्तरः औदरी (Internal Oblique) अनुप्रस्थः उदरिका (Transversus Abdominis) तथा समोदरिकाः (Recti Abdominis) ।

प्रथमो जालंधर बंधो लगति, येन चिबुक कण्ठकूपे प्रापयन् दृढो भवति। तथा मूल बंधो समायोजयते यस्मिन् मूलाधारः मांसपेशेयः समुदायः संकुचितो भूत्वा गुदां स्थिरः करोति। परस्परे सम्मिलताः अग्डुलयः कूर्पूरे प्रभावः करोति। उड्डीयान् बन्धे उच्छ्वासस्थितौ उदरमासं समुदायानां संकुचनं चरम सीमायां प्राप्नोति। तस्मिन् काले श्वसन् अवरूाद्धो भवति मनः शाम्यते च। उड्डीयान्, मूल, जालन्धर बंधस्य च पूर्णा स्थितिः किञ्चिद् काल पर्यन्तं तिष्ठति पुनः बंधो अपावृत्तो भवति तथा श्वसनं भवितुमर्हति यदा–कदा एषां त्रयाणां बंधानां प्रारम्भः गुदा, मूलाधारस्य च मांस पेशिनां आंकुंचनेन भवति यां अश्विनी मुद्रा कथ्यते। इदृशः प्रतीयते यत् समस्त सुषुम्नायाः सर्वाः दैहिक प्रेरक नाड्यः ; (somatic efferent column) क्रियाशीलो जायन्ते, यया ग्रीवायाः पृष्ठस्य च मांस पेशयः तथा मध्यच्छदः (Diaphragm) बल पूर्वकं संकोच्यते। अनेन उदरस्य अवयवेषु भारो वर्द्धयते मेरूदण्डः दृढयते च।

चर्वणिकायाः /Masseter संकुचनः तथा ओष्ठयोः आननस्य च मांस पेशिनां /Facial Muscles स्फुरणेन विदितो भवति यत् मस्तिष्क स्तम्भः (अतस्था, सेतु एव मध्य मस्तिष्के) स्थित गिलस्य प्रेरक नाड़्योऽपि/Brachial Effrent column उद्दीप्यते। यद्यपिइमाः मांसपेशयः ऐच्छिकाः सन्ति परं बन्धस्य काले स्वयमेव अनायासेन आंकुंच्यते।

यस्मिन् दिवसेऽ हम् श्रद्धेय गुरूदेवस्य पुस्तकस्याध्यायः शरीर रचना एवं योगं लिपिबद्धः करोतिस्मः मां कुण्डलिनी तथा मूलाधार चक्रस्य वास्तविक स्थानस्य ज्ञानं करणे क्लिष्टता भवतिस्मः कथं यत् पुस्तकेषु अस्य स्पष्ट उल्लेखो नास्ति। अहं अत्यन्तमेव उद्विग्नं अभवम्। परं रात्रेः ध्यानावस्थायां मां कन्दस्य /Perineal body भागस्य एकाविशिष्टा अनुभूतिर्जाता, तथा गुदा अवरोधन्यां/Anal sphincter स्फुरणो जातः यां अष्विनी मुद्रा कथ्यते। गुरू देवस्य असीम अनुकम्पायाः फलमिदम्।

ध्यानावस्थायां कदा–कदा अल्प कालाय उज्जवल श्वेत प्रकाशः प्रसरति। यद्यपि अहं प्रार्थना जपादि कतिभिः वर्षैः करोतिस्मः परं उपर्रोक्तः तथा कति अन्यानुभवः मां श्रद्धेय गुरूदेवेन सम्पर्कानन्तरमेव प्राप्तः।

24– डा0 श्री मती सईदा शिन्दे

आदरणीयः गुरूदेवेन मम प्रथमो सम्पर्कः संयोगवशात् एव मदीय एक मित्रस्य गृहे जातः। तमवलोक्यांह तम्प्रति आदरेण विहव्लोऽभवत्। कारणं तु प्रकटयितुमसमर्थोऽहम् , किन्तु तस्य ओजस्वी व्यक्तित्व तथा नेत्रयोः दिव्यप्रकाशः मां

तस्य समक्षे शीशं नमयितुं विवश कृतः। तेन वार्तालापस्य अवसरं प्रापयितुं इच्छा प्रकटिता जाता।

तमवलोक्य मम मस्तिष्के सर्वप्रथम विचारोऽयम् उत्पन्नो जातः यत् गुरूदेवः आध्यात्मिक उच्चता प्राप्त असाधारण व्यक्तिरस्ति। कथं यत् तमवलोक्य एव मम हृदयः ईश्वरम्प्रति श्रद्धया आपूरितः तथा नियमित रूपेण प्रार्थयितुमिच्छा जागृता। अस्य सम्पर्कस्य अन्येद्युरेव गुरूदेवेन मां दीक्षा प्रदतवान्।.मां कति अनुभवाः उत्पन्नः। एकदा प्रत्यूष काले अहं आदरणीयः गुरूदेवेन वार्तालापो अकुर्वम अयं तु न स्वप्नः आसीत् नैव निद्रा। यद्यपि गुरूदेवः मम निवास स्थानस्य अति दूरे आसीत्, किन्तु अहं तस्य शब्दान् स्पष्ट रूपेण श्रोतुं शक्नुमः। आसम् तेन मां कुरान शरीफात् किञ्चिद् आयतान् पठितुं कथितः। एषः एकोऽसाधारणः वार्तासीत्। एकस्मिन् दिने यदाहं ध्यानावस्थितः तदा मामनुभवोः जातः यथा विद्युत धारा मम शिरेण भूत्वा समस्त शरीरे प्रसरितः। येंनाहं मूर्च्छितो जातः। अस्मिन् काले केनापि मदीय पृष्ठभागे सहयोगं कृतः तथा चाहं सामान्यों जातः।

आरम्भे ध्यानावसरे काचिद् अज्ञात शक्तिः मम शरीरं विभिन्न दुःसाध्य मुद्राषु संचालितवती। सामान्यावस्थायां अस्याः कापि कल्पनापि न कर्तु क्षमः। मया अनुभूति कृता यत् कः मां पतनात् रक्षयति। मया स्वस्य मृत्योः त्रिवारं अनुभवं कृतोऽस्ति। मया एतादृश अनुभवः जातः यत् काचिद् वस्तु शरीरस्य अधो भागेन उपरि भागे उत्तिष्ठत् कठं अवरूद्धोऽभवन् सः वस्तुश्च मम नेत्रयोः पर्यन्तं प्राप्तः। अहं पलकेषु गुरूतायाः अनुभवः कृतवती। अस्मिन्नवसरे एतादृशः अलगत् यत् अहम् अस्मात् संसारात् प्रस्थातुं उद्यतोऽस्मि। पुनश्च जीवन् प्रापयितुं लालसा जागृतवती अस्मिन् काले मया आदरणीय गुरूदेवस्य स्मरणं कृतः अहञ्च सामान्या जाता। बहुधा ध्यानावस्थायां मां चन्द्राकारः किन्तु चन्द्रमसोऽधिकः आकर्षकःप्रकाशस्य दर्शनाः भवन्ति। तत् पश्चात् मम

नेत्रौः प्रस्फुरितः तथा च अश्रु धाराः प्रवहन्ति। एकदा मया उज्जवलः स्वर्णिमःसूर्यमपश्यम् कदा–कदा ध्यान स्थितौ अहं पूर्ण शून्यो भवामि।

श्रद्धेय गुरूदेवस्य साहाय्येन कुरान शरीफस्य गम्भीर गूढ़ अर्थान्। प्राप्तुं क्षमोऽस्मि। मया ईश्वरेण प्रार्थयते यत् मां गुरूदेवः स्नेह योग्यः तथा अपेक्षानुकूलो निर्मायतु।

25– डा0 एम0 एस0 पंधेर

प्रथमावसरे अहं पू0 गुरूदेवेनं तस्य शिष्यः डा0 गिरीश एवं डा0 सुधायाः विवाहावसरे प्राप्तः। ममपत्न्याः विद्यार्थी भवितुं कारणात् यदा नव दम्पतयोः मया भोजनार्थं आमन्त्रितवान् तदा मम आग्रहोपरि तेन साकं गुरूदेवोऽपि मत्गेहे विराजितः। ते मां अत्यधिकमेव सौम्य व्यक्तिः प्रतीतो जातः। तं बिलासपुरं प्रस्थानानन्तरं तेषां सम्बन्धे मां अधिकञ्च परिचयो अमिलत्। अयमपि ज्ञातः यत् डा0 गिरीशः व डा0 श्री मती सुधायाः उपरि गुरूदेवस्य विशेष कृपा अस्ति तथा द्वयोऽपि गुरूदेवेन यौगिक साधना कर्तुमिच्छुक जनान् दीक्षा प्रदानाय आज्ञापितोऽस्ति।

तस्मिन् दिवसे एक सायं अहं डा0 गिरीशजीवेन प्राप्तः तथा ध्यानस्य विषये चर्चितवान् तथा तस्मिन्नवसरे स आवश्यक ज्ञापनं दत्वा मां दीक्षितवान्।

अहं आदरणीयः डा0 गिरीशस्य निर्देशानुसारेण ध्यानं प्रारब्धवान्। प्रथम दिवसे मया भ्रूवोर्मध्ये विद्युतस्य प्रकाशः दृष्टवान्। सार्द्धं तड़ितस्य /कडकडाहट ध्वनिरपि आकर्ण्याभासः जातः। द्वितीय दिवसे तस्मिन् स्थाने एका ज्वाला उत्पद्यते यत् शनैः शनैः वृहदाकृतिः जाता अथ च तस्मिनाभ्यन्तरे स्वर्णिम आकृते दीर्घकायः भगवान् शंकर प्रकटितवान्। तदनन्तरे मां एकं शुभ्रप्रकाशस्य दर्शन जातः यः अनन्तपर्यन्तं विस्तृतो भवति। तस्यांज्योत्स्नायां मामादरणीयः गिरीश जीवः एवं पू0 गुरूदेवश्च एका

अत्यन्त दीप्तिमानासने उपविशन् अवलोकितः। मयातौ परस्परे प्रविशत् अथ च स्वयं तस्मिन् प्रविशन् अपश्यम्।

इदानीमहं स्व स्वां वृहद्कायं भवन् अनु भवम् तथा कदा लघु रन्ध्रेण निसृतः जातः कदा स्वकीयं अहं अग्नौ अथ च समुद्रोपरि प्रचलन् दृष्टवान् अथ च कदा आकाशे उडडीयन् इव। कदाअहंस्वकीयं कदा–कदा ध्यानस्थितौ गुरूदेवेन सार्द्धं विचरन्, गुरूदेवस्य र्निदेशान् पालयन् जनानां समस्याः साधितवान् अथ च दुःखं अपहृतवान्। कतिवारं ध्यानावस्थिते एव श्रद्धेय गुरूदेवस्य सार्द्धं मया अज्ञातावस्थायां वा अदृष्ट संसारे वृहद्–वृहद् यात्राः सम्पादितवान्। एकः दीप्तिमान् चक्रः सर्वदा पू0 गुरू जीवस्य मस्तकस्य पृष्ठ भागे अवश्य पश्यन् आसीत्। कदा–कदा मात्र सः चक्र एव मया साकं साकं भवतिस्मः। इमाः यात्राः एक वृहद् समय पर्यन्तं यापितवान्। द्वि बारं अहं स्वां ध्याने समापयन् अनुभवम्।

प्रथमावसरे मया दृष्टः यत् अहं लघु भवन्– भवन् एको बिन्दुः निर्मितोऽस्मि च। तदनन्तरं अदृष्टोऽभवम्। जनान् अहं वदन् अश्रृणवम् यदहं पञ्च तत्वेषु मिलितोऽस्मि। किञ्चिद् क्षणानन्तरं सः बिन्दुः पुनः प्रकटितवान् अथ च शनैः–शनैः मम स्वरूपे निर्मितः।

द्वितीयावसरे मया दृष्टः यत् अहं क्षेत्रे प्रलेटितोऽस्मि। मत्शरीरस्य एकः एकः अगंः शरीरात् पृथक भूत्वा पवने अदृष्टो भवनस्ति। अनन्तरेषु ते अग्ड.ाः प्रत्यावर्तितः आगताः अथ च पार्श्वे मिलित्वा मम शरीरस्य निर्माणं कृतवान्। कतिबारं मां देदीप्यमान प्रकाशपुञ्जे ओमस्य दर्शनं जातम्। कति बारं मया स्वां पू0 गुरूदेवने अथवा ऊँकारे समाहितोऽभवन् दृष्टः। ध्यानावस्थायां बाह्यंविश्वं अहं पूर्णतः विस्मरामि। स्वप्ने मया श्री गुरूनानक देवं अनुमानतः षोड़श वर्षस्यावस्थायाम पश्यम्। तस्य रूपस्य सौन्दर्यं एवमाकर्षणं यत् मया दृष्टः तस्य वर्णयितुमसमर्थोऽहम्। ध्यानस्य समये

भवन् अनुभवानां तथा स्वप्ने भवन् सतंजनानां वा अवताराणां दर्शनानाम् अतिरिक्त दैनिक जीवने कति चमत्कारिकाः घटनाः घटिताः।

एकाः सायं यदाहं लूना याने गच्छतिस्मः (पृष्ठेन) पश्चातेन आगता ट्रक यानस्य विद्युत प्रकाशे स्वकीय छायां सम्मुखे गच्छती ट्रक यानस्य पृष्ठ भागे दृष्टा मया दृष्टा यत् तस्याः छायायाः शिरो नास्ति। मया त्वरितमेव स्व मस्तके हसतं धारितः। मया दृष्टं यत् हस्तस्य छाया तु दृश्यते , परन्तु शिरस्य नैव। किञ्चिद् क्षणानन्तरे मया स्वां राजमार्गस्य तटे आवृतः लूना याने प्राप्तः तथा द्वयोः ट्रक यानयोः पार्श्वे संघर्षस्य शब्दं श्रुतः। समीपे उपस्थिताः जनाः मम समक्षे समागताः अथ च मां सुरक्षितोऽवलोक्य साश्चर्यं चकिताः जाताः। मांमलगत् यत् केन गृहित्वा मां राजमार्गस्य तटे कृतवानस्ति। स्वकीय वाम स्कन्धे कस्यचिद् हस्तस्य स्पर्शं मया सम्यक् रूपेण अनुभवतिस्मः। मया विश्वसितः यत् इयं गुरूः कृपा एव आसीत्।

27 जुलाई 1979 ईस्वीं यदा वयं गुरू पूर्णिमायै बिलासपुरं गतवन्तः आसन् तदा माढ़र ग्राम समीपे लौहपथ गन्त्री यान् अवरूद्धः आसीत्। सुरक्षा पालकेन कथितः यत् मुख्य संयंत्र दुर्गतिं प्राप्ते सति तं अन्यः संयंत्रं रायपुरतः वा बिलासपुरतः आगमनपर्यन्तं अवरोधिष्यते। तत्र मया एक वृक्षस्य नीचैः उपविश्य गुरूदेवस्य ध्यानं कृतश्च प्रार्थितः यत् अहं समयानुसारं प्राप्य गुरू पूर्णिमायाः कार्यक्रमे सम्मिलितो भवेयम्। किञ्चिद् क्षणानन्तरमेव ज्ञातं यत् सयंत्रं कार्यं कर्तुं क्षमोऽस्ति अथ च तस्मिन् लौह शकटयानेनाहं गुरू कृपया समयानुसारेण प्राप्तः।

मां स्वकीय व्यक्तित्वेऽपि परिवर्तनं प्रतीयते काठिन्यावसरेऽपि शान्तमनुभवामि तथा अर्वणनीयः आत्मिकशान्तेरानन्दश्च प्राप्ते क्षमोऽस्मि। अधुनाहं उविश्य अत्यन्ताल्पं ध्यानं करोमि। मात्र गुरूदेवस्य वातस्य कृपया ईश्वरं चिन्तयामि।

अन्तिमेऽहमयं विवक्षामि यत् तस्य माध्यमः केषामपि धर्मानुयायिनः मार्गे बाधको न भविष्यति कथं यत् सः तु आत्म वा ब्रम्हस्वरूपोऽस्ति अथ च अस्मान् आत्म साक्षात्कारस्य समीपे एव नयन्ति।

यदा कदा विश्रामावसरे गुरूदेवम् स्मरामि तदा एतादृगनुमीयते यत् मया काचिद्वस्तु पृथक् भूत्वा गच्छति, पुनः अहं गुरूदेवस्य समीपे प्राप्तुं शक्नोमि तथा प्रणमामि। किञ्चिद् क्षणानन्तरमेतादृक प्रतीयते यदहं प्रत्यागच्छामि तथा स्वकीये शरीरे समाहितो भवामि। मध्येऽस्मिन् व्यवधाने जाते एक बारं मां प्रत्यागमन समये मस्तके महदाधातः सञ्जातः।

26 – डा0 श्रीमती कुलवतं कौर

अहं स्वकीय पतिः डा0 एम0 एस0 पंधेरस्य प्रारम्भिक अनुभवैः अत्यन्त प्रभावितो जाता। डा0 गिरीश पाण्डेयेन दीक्षा ग्रहणानन्तरं ध्यानं प्रारभ्य तेन यस्य मानसिक शान्तेरानन्दं प्राप्नुवन् दृष्टः। तैः प्रेरितो भूत्वा दि0 18/7/79 ईस्वीं अहमपि डा0 श्रीमती सुधा पाण्डेयेन दीक्षा गृहीता।

तस्य निर्देशानुसारेणाहं ध्यानं करणेरताः। तथा पू0 गुरूदेवस्य दर्शनं व सत्संगस्य लाभं प्राप्तुमहं समये–समये बिलासपुरमगच्छम्। प्रारम्भस्य किञ्चिद् दिनानि पर्यन्तं मां शरीरे एका लघवी प्रकम्पना गतेरनुभवोजातः, या पादाभ्यां प्रारभ्य मस्तकस्य सम्मुखे गतवती अथ च मां मुख मण्डले आतपः समः अनुभवोऽभवत्। तदनन्तरं किञ्चिद् ((चक्करः) भ्रममिव अथ च स्वस्थ कायस्य अनुभवो जातः।

तत्पश्चात् ध्यानावस्थिते मां स्वकीय हृदयस्य कम्पनरमनुमीयते। एवं समस्त शरीरे स्पंदनम् भवति। तस्य सार्द्ध–सार्द्ध मां स्वकीयाभ्यन्तरे किञ्चिद् भ्रमन्निव प्रतीतो जातः।

किञ्चिद् दिनानन्तरं पृष्ठस्य मध्ये नीचैः भागात् उपरिपर्यन्तं श्वेत विद्युत प्रकाशः प्रकटितः यः उपरि शिखरे सम कोणः निर्मायन् सम्मुखे भ्रम्य भ्रूमध्ये पर्यन्त प्राप्नोतिस्म।

अति सुदीर्घ समयपर्यन्त मां अनुभूतिर्जाता यत् स्थित धुरायां किञ्चिद् मम आभ्यन्तरे भ्रमति, कदा एकस्यां दिशायां कदा द्वितीयस्यां दिशायाम् अपि च सहैव मत्रिकुटौ किञ्चिद् स्फुरितमिति प्रतीतिर्जायते। कदाचित् यदा चतुस्पादिकायां विश्रम्य शान्तं चेतर्हि सशरीरं चतुष्पादिका स्तरे वृतमिव भ्रमणशीलं प्रतीतः। 19/8/79 इ0 यदाहं खट्वाड.ोपरि अविश्रम तदा मां इत्थं प्रतीतं जातं यथा मम मेरूदण्डः नलिकायां किञ्चित् शनैः–शनैः उत्प्लुत्य उत्फुल्लमिवोर्ध्वं प्रतिगच्छन्ति। यः ग्रीवापर्यन्तंगत्वावरूद्धयत्। ततश्च द्वितीय दिनमपि तथैवमनुभूतिं जातं, परञ्चाधुना तद् स्पर्शः शिरमतिक्रम्य भ्रकुटि पर्यन्तंमनुभूयत्। पुनश्चायं एकः परिभ्रमन् दिव्यं चक्रमिव रूपं धृतम्। अमावश्यायाः एक रात्रौ ध्यानं कुर्बन् भृकुटौ दिप्तयांशः शिखा प्रकटिता तथा च मस्तकस्य एकं परिक्रम्य तत्रैव समाप्तिर्जात।

एकदा मां ज्ञातं यत् अहं गुरूदेवस्य चरणयो नतोस्मि तथा गुरूदेवस्य वामपदं कनिष्ठ अङ्.गुलौ विराजमान् एकोनेत्रं दैवी दृष्टया मत्समक्षे अवलोकयति।

एकदा ध्यानं कुर्बन् समये किञ्चिद् क्षण पर्यन्तंरक्तसूर्यस्य अण्ड़ाकृतिः अदृश्यत् अनन्तर कतिबारं सूर्यस्य केन्द्रिय रन्ध्रे एकां पीतबिन्दुभपश्यम् कदा–कदा तस्य रन्ध्रस्य भित्तिकया संपृक्त द्वित्रि बिन्दवः अपश्यम्। यस्य केन्द्र एकोरंध्रः आसीत तत् क्षणानन्तरं एको स्वर्णिम् पूर्णचन्द्रः किञ्चिक्षणे अपश्यत् कदा–कदा इन्द्र धनुषी वर्णेषु पूर्ण चन्द्रः एकानन्तरमेक भृकुटौ उद्यन् अथ च शनैः शनैः दूरगमयत्। प्रायशोऽहं स्वकीयान्तरभागे किञ्चिद् परिभ्रमन् इवानुभवं करोमि तथा मेरूदण्डस्य नलिकायां किञ्चिदुपरि अधः गमन् स्पर्शयति। कदा–कदा नेत्रयोः आवृते कति आकृतयः यथा बिन्दुः वृत रेखाः स्वर्णिम वर्णे दृश्यन्ति यत् आभ्यन्तरतः वाह्यस्य भागे क्रमशः रक्तः

नीलः, हरितम्, पीतः पाटलाकृतिः रग्डै.ः आवृताः सन्ति। ध्यानावस्थायां भवितारः स्पर्शान् अतिरिक्तः जीवने किञ्चिद्वसरोचापि आगच्छत् येनाहं प्रभावितः। एकबारं मम उदरे बहुदिन पर्यन्तं तीव्र वेदना जाता। केनापि प्रकारेण निरीक्षण कार्येऽपि किञ्चिदपि असामान्यता नैव लक्षिता। एकदा श्रद्धेय गुरूदेव जीवेन कथितं यत् तेन एको शब्दं श्रुतः यस्मिन् मम सामीप्यवर्तीय मित्रः यस्येदानींमृत्युः जाता काचिद् पूजायाः कामना कृता। गुरूदेवस्यादेशानुसारं मया एकां स्त्रीं भोजनं कारितवान्। तदनन्तरेण माम् अधिको विश्रामो प्राप्तः।

एकदा डा0 शिन्दस्य गेहेऽहं गुरूदेवस्य समीपे उपविष्टाः। माम् इच्छोत्पन्नाः जाता यत् एक बारं श्री गुरूनानक देवस्य दर्शनं करोमि तत् क्षणेव गुरूदेवेन अकथयत् यत् बाढम् गुरूनानक देवस्य विषये किञ्चिद् कथय। तस्मिन् समये यदाहं तस्मिन् समक्षे अपश्यम् तदातु मां तस्य नेत्रयोः तस्याः खुमारस्य खुमारीके। दर्शनो जातः यः गुरूनानक देवस्य प्रत्येक छाया चित्रस्य नेत्रयोः आच्छादितोऽस्ति।

ध्यानेन मां स्व स्वकीये निश्चित् परिवर्तनमनुभूयते। इदानीं मां पूर्वस्यापेक्षा मानसिक शान्तिरधिकं वर्तते तथा क्रोधः न्यूनतमागच्छति।

ईश्वरस्य कृपयाः अहमात्मस्वरूपं एवं ब्रम्हस्वरूप गुरू देवस्य तथा तस्य प्रियः डा0 गिरीशः, डा0 सुधा एवमन्य शिष्यानां सम्पर्के आगताऽस्मि। तेन संप्राप्तेन व तां श्रवणानन्तरं इदानीमहं यदापि श्री गुरू ग्रन्थ साहिबस्य पाठं करोमि तदा लगति यत् शब्दानामर्थः किञ्चिद्– किञ्चिद् ज्ञातुं सक्षमास्मि। मां विश्वासोऽस्ति यत् तस्यैव आर्शीवादात् अहं अवताराणां वा सदभिः उच्चारितवाण्याः गम्भीर तत्वस्य अनुभवं कृत्वा ईश्वरं तथा महाशक्तेरनुभूतौ वसित्वा स्व जीवनं साफल्यं प्राप्स्यामि। प्रथमोऽहं सर्वदैव स्वकीय अरदासः प्रार्थनायामवदम् यत् कोऽपि जनः। कोई जन हरि सौं देवैं जोर। गुरूदेवस्य स्वरूपे मां सः जनः प्राप्ताः। इदानीं कामयते मया–'' मो कहु कर संतन की धूरे।

27– डा0 सी0 के0 शुक्ला

अहं स्वकीय एक आदरणीय शिक्षकेन प्रेरितो भूत्वा श्री मान् गिरीश जीवस्य चरणयोः प्रति आकर्षितः अभवत् यस्तु पू0 गुरूदेवस्याभिन्नो पट्ट शिष्योऽस्ति। आरम्भे पू0 गुरूदेवः मां दीक्षा दानेन अयमुक्त्वा वर्जितो कृतवान् यत् एषः किञ्चित् चणकः भूर्ज तण्डुलो नास्ति यः सर्वान् वितरितुं भवेत् तेनोक्तं यत् प्रथमं गायत्र्याः नियमित जपं कुरू। ममाबोधने अस्मै कृतवानासीत् यदहं अनेन मानसिक एवं आध्यात्मिक रूपेण दीक्षायै उपयुक्तो भवेयम्। किञ्चिद् दिनानन्तरं मां पू0 गुरूदेवस्य चरणयोः दीक्षार्थं यथा प्रेरितो कृतवान् अस्ति।

मया गुरू मंत्रस्याभ्यासः आरम्भे कृते सति मां परिसरेण भृकुटिः आगच्छती विद्युत्याः दीप्तेरनुभूतिः जाता। पुनश्चतस्य स्थाने दाडिमबीजस्य स्फुलिंगाः दृष्टिगोचरोऽभवत्। सार्द्धमेव पुच्छास्थेः ऊपरिभागे विचित्र प्रकम्पनायाः सनसनायाः अनुभवो कृतवान् यः किञ्चिद् दिवसेषु ग्रीवाप्रदेश पर्यन्तमुपरि प्रसरितो जातः। किञ्चिद् दिनानन्तरं भृकुटौ मंद मण्डलाकारः प्रकाशः दृष्टिगोचरोऽभवत्। तदनन्तरमीदृशः समयः आगतः यत् किञ्चिद् अपि अनुभवो भवितुं अवरूद्धो जातः। कौतूहलवशात् मया गुरूदेवेनपृष्टस्तु यत् अनुभूतीनामभावो भवितुं किचित् अव्यवस्थितेः सूचको तु नैवास्ति। तेनोक्तं कापि वार्ता नैव सर्व कुशलमस्ति। किञ्चिद् दिनानन्तरं पुनः यदा मया कथित यत् प्रकाशस्यानुभवः इदानीं पर्यन्त नैव भवन्ति तदा तु गुरूदेवेनोक्तं ''गच्छ त्वां प्रकाशस्य दर्शनं भविष्यति'' तथा च पुनः मां प्रकाशस्य दर्शनं भवितुमारब्धवान्। पुनः भृकुटौ जघनस्य बाह्य प्रदेशे तथा उरोस्थेः निम्नतम भागात् उच्चतम भागस्य वाम प्रदेशात् भूत्वा कैरोटिधधमन्याः सार्द्धं–सार्द्धं ग्रीवायाः मध्य पर्यन्तं अदभुतः अनुभूतिः जाता तथा उदर मध्यस्य दक्ष भागे पीड़ा अभवत्।

धर्म ग्रन्थाः कथयन्ति यत् परमेश्वरः प्रकाश स्वरूपोऽस्ति। मां विश्वासोऽस्ति यत् मया यः पथोग्रहणं क्रियते, सः मां आत्मसाक्षात्कारस्य चरम लक्ष्यपर्यन्तं प्रापयिष्यति। एतद् सर्व कैवल्य रूपः गुरूदेवस्य आशीषेणैव संभाव्यते।

28– श्रीमती शशि शुक्ला

मां मम पत्यादीक्षां ग्रहण कर्तुमवदत्। अत्रेदं कथितुमसंगतो न भविष्यति यत् विवाहात् पूर्वमपि मया गिरीशजीवम् कथितमासीत् यत् सः मां पू0 गुरूदेवस्य समक्षे नयतु। परन्तु तेनोक्तं यत् इदानीं समयो नागतोऽस्ति तथा भविष्य वाणी कृता यदहं पूज्य गुरूदेवेनैव दीक्षां ग्रहणं करिष्यामि। एतदनन्तरे सत्यसिद्धो जातः।

स्वकीय सम्माननीयः योगपरिजनानां सहयोगेन अहं पू0 गुरूदेवेन दीक्षां प्राप्ता एवं साधना प्रारब्द्धा। मां पू0 गुरूदेवस्य दर्शनं भवितुं जातम्। आश्चर्यजनक रूपेणायं ज्ञातः यत् यदा पू0 गुरूदेवस्य दर्शनं मां न भवितुं स्यात् तस्मिन्नवसरे सः अस्वस्थ युक्तः निवसति। मया शिवदर्शनोऽपि जातः। एकदा ध्यान कुर्वन्नवसरे सुषुप्त अवस्थायां मांमेकं सुन्दरं सरलास्त्रियाः दर्शनं अभवत्। पू0 गुरूदेवेन तां कुंडलिनीशक्तिरवदत्।

अस्यातिरिक्तः भृकृटौ भवितुमनुभूतिः शिरस्योपरि भूत्वा ग्रीवा प्रदेशः तथा च एक द्विवारं गृच्छास्थिरंतपर्यन्तं प्राप्तुमभवत्। अस्याः प्रकाशानुभूतिः कदा–कदा सह कार्यं कुर्वन् समयेऽपि भवितुं आरम्भते। शनैः–शनैः समय व्यतीतो भवितुं जातश्च दुर्गां नवम्याः पवित्रः त्यौहारं आगतः। पू0 गुरूदेवेनाहं दुर्गां द्रष्टुं प्रार्थना कृता। काचिद् द्विविधानन्तरं गुरूदेवेन कथितः यत वाढम् शोभनोऽस्ति च। नवम्याः दिने भृकुटौ मया तीव्र प्रकाशो दृष्टः यस्मिन्मां चामुण्डा देव्याः दर्शनं जातम्। अहमवगतोऽस्मि यत् क्षणमात्र पर्यन्तमेव स्यात् शून्यं भवितुंमेव सर्वोत्तमा उपलब्धिरस्ति।

एतद् सर्वं पू0 आत्म स्वरूपः गुरूदेवस्य प्रियः स्नेहः एवं आशीर्वादस्य कारणेनैव सम्भवोऽस्ति।

29– श्रीमती डा0 छाया बैनर्जी

एम0 एस0 व्याख्याता शरीर रचना विभाग चिकित्सा महाविद्यालय रायपुर छ0 ग0, अहं पू0 गुरूदेवेन 1979 ईस्वीमगस्त मासे अहं प्राध्यापकः डा0 शिन्दे महोदयस्य निवास स्थाने अमिलत्। अहं तस्य आध्यात्मिक विषयान् अवबोध्यमान नियमेन अत्यधिकांप्रभाविता जाता। द्विमासानन्तरं महाष्टम्याः दिवसे तस्य शिष्याऽभवत्। कश्चिदेव दिनानामभ्यासानन्तरं मानसिक शान्तिः तथा कुशलतायारनुभवस्य आनन्दं भवितुमारभेत्। द्विवात्रि मासानामभ्यासानन्तरं एकदा प्रातः काले यदाहं ध्यानानन्तरं शरीरं शिथिलं कृत्वा विश्रामो कृतवती यत् सहसा मांमेकं पलकाय कम्पनो सदृश आगतः। अहं हस्तंपादौ चसञ्चालयितुं न समर्थः एतादृशः प्रतीतो जातः यत् मस्तिष्कः शून्योऽभवत्। तदनन्तरं द्विवारमपि च अनेन प्रकारेणानुभवो जातः। कतिवारं मांमेतादृशः प्रतीतः यत् येन काचिद् वस्तुः मेरूदण्ड़स्य कटि प्रदेशे स्फुरति ध्यानकर्तुं समये मां किञ्चिद् बारं पलकान् नासिकां तथा स्वरूपस्य मांसपेशिनां स्फुरणं वा ग्रीवा तथा कश्चिद् पृष्ठ भागे संकुचनस्य सम भवितुं आभासो जातः अनुमानतः सार्द्धं एक वर्षंपश्चात् मां सुषुम्नायाः ग्रीवा प्रदेशे तडितस्यानुभवो जातः। कदा–कदा ध्यानस्थितौ ज्योतिबिन्दुः क्षणिक रूपेण दृष्टिगोचराः भवन्ति।

30– श्री प्रकाश काशीकरः

दीक्षा ग्रहणानन्तरेण मम साधना सततं प्रचलति। दीक्षा ग्रहणानन्तरं सम्भवतः सार्द्धमेक वर्षानन्तरेण मां विशेषानुभूतयः प्रारम्भाः जाताः। मां शून्यत्वस्याभासः भवितुमारभत्। एकदा हनुमान जीवस्य तेन सार्द्धं एकश्च देवताइव व्यक्तेः यस्तु

आकाशस्याधिकारी आसीत्। दर्शनं जातम् ते देवाः मामवोचद् –श्रृणु मा भैषीः। वयं त्वया सार्द्धम् सन्ति। त्वं याभ्यः काठिन्यभ्यः व्यतीतोऽस्ति, योग मार्गेण–भूत्वा गमन शीलः प्रत्येक व्यक्तिः अनेन प्रविश्य गच्छति। अस्यानन्तरस्य दिनेषु मां ध्यानावस्थायामेतादृशः ज्ञातः येनाहं स्वयमेवातीव दूरपर्यन्तं प्रसृतोऽस्मि। मां स्वयमेवास्तित्वभवनपि नैवास्ति इदृशः प्रतीतो जातः। सर्वत्र आरक्त वर्णस्य –केशरीरंगस्य च प्रकाशो दृष्टिगोचरोऽभूत् अथ च एतादृशः प्रतीतो जातः यत् स्वयमेवाहं तत्र समाहितोऽस्मि। मम साधना पूर्ण निष्ठया प्रारम्भोऽस्ति।

31– श्री रामकिकंर त्रिपाठी

गुरूभ्राता श्री गुरू प्रसाद जी श्री भैयालालजी महोदयस्य कृपयाऽहं पू0 गुरूदेवस्य सम्पर्के आगतः। सन् 1977 ईस्वयाः ग्रीष्मकाले पू0 गुरूदेवः रीवा मण्डलस्य शाहपुर ग्रामे श्री गुरू प्रसाद जीवस्य प्रयासेन प्रथम बारं पं0 केसरी प्रसाद मिश्रस्य गृहे पदापर्णं कृतवान् संयोग वशादहमपि अस्मिन्नवसरे तत्र उपस्थितोऽआसम्। एकदा सायंकाले पू0 गुरूदेवस्य आध्यात्मिका गोष्ठी जाता। तदनन्तरेण मम ह्रदयः तस्य चरणयोः प्रसादं प्राप्ति हेतुः विह्वलोऽभवत्। अग्रिम दिवसेऽपि पू0 गुरूदेवेन मनो विनोदः अन्प वार्तालापः व ध्यान संबंधी वहवः वार्तालापः सञ्जाताः। मम निवेदनानन्तरं पू0 गुरूदेवः मामपि साधना संबधी कश्चिद् सरल नियमं अवबोध्य मम नामः स्वकीय अन्य शिष्यैः सार्द्धं अयोजयत् अग्रिम दिने पू0 गुरूदेवेन माम् स्वकीय पार्श्वेउपविश्य प्रायोगिकाः क्रियाः कारयितः। अस्मिन् समये ध्यानावस्थायां मां ललाटस्य मध्य भागे ओंकारस्याकृतेः दिव्य प्रकाशः परिभ्रमन् दृष्टिगोचरोऽभवत्। अहं स्तब्धो सदृशः मिनटद्वयपर्यन्तमिमां पश्यनासम् ध्यान भंगावसरेऽहं गुरू चरणयोः सम्पृक्तः। पू0 गुरूदेवः मां इमांसाधनांमग्रे वार्द्धयितुं निर्दिष्टः तथा तत्रतः प्रस्थानं कृतवान्।

तृतीय वर्षे सन् 1980 ईस्व्यां पुनः तस्मिनेव स्थाने पू0 गुरूदेवस्य दृष्टुं संयोगो समुत्पन्नः। मम ह्रदयः आनन्देन प्रफुल्लितो जातः। पू0 गुरूदेवेन साधना मार्गात् अग्रसर भवितुं निर्दिष्टः। अस्मिन् वर्षे गुरू पूर्णिमायाः पुण्यपर्वे सपरिवाराः बिलासपुरमगच्छम्। मम ज्येष्ठ पुत्रः चि0 ओमप्रकाशः अथ च पुत्र वधुः सौभाग्यवती माययाऽपि गुरू दीक्षा गृहीतवान्। अनेन प्रकारेण इदानीं मम परिजनाः गुरूकृपया भौतिकः अथ च आध्यात्मिकः लाभः वा आनन्दमनुभूयते।

पू0 गुरूदेवस्य सम्पर्के आगमनात् पूर्वमहं एको अव्यवस्थितो व्यक्तिः आसम्। किन्तु पू0 गुरूदेवेन मनुष्यत्वस्य प्रेरणा तथा जीवनस्य सफलता पूर्वकं जीवितुं मार्गं प्रदत्तः। अस्यां वार्तायां किञ्चिदपि नात्र संदेह लेशः। गुरू सान्निध्येन माम् क्रोधः मोह लोभादयश्च क्रमशः न्यूनत्वं गच्छन्ति। भौतिक वस्तुभ्यः घृणा तथा आध्यात्मस्य समीपे आकर्षणं वर्धयते। पूर्ण रूपेण सुव्यवस्थितो व्यक्तिः तु न निर्मितोऽस्मि परन्तु सुव्यवस्थितस्यप्रति प्रेमः वर्द्धयते। कदा–कदा मां स्व शरीरोऽपि स्व सदृशो न ज्ञायते। अस्य विपरीतः कदा सर्वे स्वकीयः प्रतीयते। सर्वत्रैव परमसत्तायाः आभासो प्रतीयते। किञ्चिद् त्रुटिः भवन् कारणे ज्ञायते सति यत् कश्चिद् मामवलोकयति। अथ च तं शिष्टाचरणं कर्तुं निर्देशयति अस्मिन्मार्गे पादार्पणानन्तरेण मां सहसा संयोगवशात् एतादृशः साहित्यः प्राप्तारः यै साधनांमग्रे वर्द्धयितुं सहयोगाः प्रदीयन्ते। भौतिकतायाः दृष्टया लघु महदश्चभेदः मम मनसः निःसृतोऽस्ति।

एकदा पू0 गुरूदेवः रीवायाः गुप्ता लाजे तिष्ठनासीत्। अहमपि तेन सार्द्धमासम्। तस्मिन्नवसरे मम मर्मस्थाने एक ब्रणः /फोड़ा अभवत् यः अत्यन्त कष्टो ददातिस्म। पू0 गुरूदेवस्य चरण सेवा कर्तुं ब्याजेन मया तस्य पाद तलेषु स्वकीय हस्तेन समर्दनं कृतम्,वा अस्यानन्तरं स्नान गृहम् गत्वा गुरूदेवस्य ंस्मरणं कृत्वा ताभिः अगुड़्लिभिः ब्रणं स्पर्शम् कृतः बिना अन्य औषधिभिः मम ब्रण शीघ्रमेव शोभनोजातः। अनेन प्रकारेण एकदा मम बलीवर्दः अत्यधिको रूग्णः भवनासीत्। रात्रावहमतीव चिन्तितोऽभवम्

शयनात् पूर्वं मया गुरूदेवं स्मारं बलीवर्दोपरि पृष्ठ भागे त्रि चतुर्वारं हस्त सञ्चालनं कृतम्। प्रत्यूषे दृष्टः यस्तु बलीवर्दः स्वस्थ्योआसीत् अथ च स्वस्थाने उत्तिष्ठितो भूत्वा गोधूमसस्य चूर्णम् खादतिस्म। अहं सम्यग् प्रकारेण ज्ञातवान् आसम् यत् औषध्याऽपि सः अति शीघ्रं स्वास्थ्य लाभो न कर्तुं पारयतेः। अहं गुरू चरणानां वन्दनां करोमि।

32– श्री रामवदन मिश्र

श्री भैयालाल तिवारी महोदयस्य माध्यमेन अहं पू0 गुरू देवस्य सम्पर्के आगतः। अस्य पूर्वमहमनेन प्रकारेण दैवी शक्तिः देवी , देवता अथवा महात्मा पुरूषेषु विश्वासो नैव कुर्वनासम्। परं गुरूदेवस्य सान्निध्यप्राप्तानन्तरं मानवात् परे काचिद् दिव्य शक्तिरपि भवति एतादृशः विश्वासो उतपन्नो जातः। मां गुरू चरणेषु दृढ़ विश्वासो अथ च पूर्णनिष्ठा वर्तते। दीक्षा ग्रहणानन्तरस्य पश्चात् साधना हेतु उपवेशने पिप्पलिकायाःचलन सदृशः शरीरस्य आभ्यान्तरभागे काचिद् वस्तोः कूर्दनं, सूर्य सदृशः स्वर्णिममण्डलाकार दृष्टि आदि अनुभवाः प्रारम्भाजाताः। कदा पू0 गुरूजीवस्य चरणः कदा सः स्वयं तथा कदा शंकरः भगवतः जीवस्यापि दर्शनं भवति। एकदा ध्यान स्थितौ दृष्टं यत् स्वर्णिम् द्वारः उद्घाटयति यस्याभ्यन्तरे लघु –लघु सुन्दरः / रम्यः मुकुटधारी बालकाः दृष्टिगोचराः जाताः। एकदा पालनायां यस्यां मखमलस्य उपधानं प्रसृतमासीत् रेशमस्य रज्जुना प्रवहमान दृष्टिगोचरोऽभवत्। पू0 गुरूदेवस्य कृपयाः लोभः तथा क्रोधोपरि काचिद् सीमापर्यन्तं नियन्त्रणो सञ्जातः। संसारस्य काठिन्यानां शान्तिपूर्वकं धैर्येण साहऐन च सार्द्धं कर्तुं शक्तिः प्राप्ता। कुत्रापि आवागमन/गमनागमनसमये च गुरूदेवोऽपि मम पृष्ठे–पृष्ठे आगच्छन्ति एतादृशः आभासो भवति गुरूदेवः अस्मिन् मार्गे मामगतिवर्धयन्ति, अथ च कुमार्गात् दूरं कुर्यात् ; इयमेव प्रार्थनाऽस्ति।

33– श्रीमती रमा मिश्र

अहमपि भैयालालजी तिवारी माध्यमेन श्री गुरूदेवस्य संपर्के समागच्छम्। गेहस्यान्य सदस्यानां न वाञ्छितेऽपि अहं गोपनीय रूपेण पू0 गुरूदेवेन दीक्षां गृहीता। अस्मिन् विषये मां कटु आलोचनाऽपि सहनीयमभवत्। परं मम समस्तध्यानात्मिक शान्तेः प्राप्तिउपरिएव केन्द्रितोऽआसीत्। ध्याने पू0 गुरूदेवस्य दर्शनं प्राप्यते तथा मम लघु रूपंतं प्रणमनपि अवलोक्यते। सूर्योदस्य रक्तिमा तथा स्वर्णिम किरणानां प्रकटयन् स्वर्णिम मुकुटः दिव्यमूर्तिः अथवा देवालये पुष्पै आच्छादितः भगवतः शंकरस्य स्वर्णिम घंटिका, लक्ष्मणेन सार्द्धं धनुषबाणं धारयन् भगवान रामः माला धारितः भगवान शंकरः तथा सर्पादेः दर्शनं ध्यानावस्थायां भवन्ति। श्री कृष्णः कदा बंशी वादयन्, कदा गोपीभिः सार्द्धं क्रीडयन् तथा कदा राधया सार्द्धंमपि दृश्यन्ते।

बद्रीनाथस्य मूर्तेरपि दर्शनं जातम्। मम कोऽपि संतानो नैवास्ति परं ध्याने कदा–कदा लघु बालकः हसन् क्रीडन् क्रोडे उपविशति एतादृशः प्रतीयते। ध्यान कुर्बन्नवसरे शरीरे स्फुरन् सदृशः तथा भारं स्थापयन् तुल्यः प्रतीयते। कदा–कदा गुरूदेवस्य दर्शनं कृते सति ओष्ठे तथा मस्तके कंपनेः इव अनुभूयते। कदा सांसारिक कारणैः संत्रस्तो भूत्वा रूदामि तदा एतादृशः प्रतीयते यथा पू0 गुरूदेवः सांत्वना प्रददाति वा किञ्चिद् अवबोधयन्ति। प्रतिक्षण पू0 गुरूदेवस्य सामीप्यमेव भवितुमाभासो विनिर्मीयते।

34– श्री प्रेमचन्द्रजी पारिख

एकदा आदरणीय गुरूदेवः मुंगेली समागतश्च डा0 गिरीश पाण्डेयस्य गेहे प्रतिष्ठितः। कौतूहल वशादहं स्वकीय मित्रः जोशीजीवेन सार्द्धं गुरूदेवेन मिलितुमगच्छम्। अहं तस्याकर्षक व्यक्तित्वेनाधिको प्रभावितो जातः। मया अनुभवो

कृतः यत् मात्र तस्य उपस्थितया अधिकाः शान्तिः प्राप्नोति। गुरूदेवस्या ज्ञानुसारेणाहं तस्य समक्षे भगवतः महावीरस्य विषये एकं पुस्तकमंनीत्वा तं पुस्तकमवाप्य स अधिको प्रसन्नो जातः।

अस्यानन्तरमहमेकमासस्य तीर्थ यात्रायां निसृतः। मुंगेली समागते सति अवगतः यत् गुरूदेवः रायपुरं डा0 शिन्दे महोदयस्य गेहे विराजमानाः सन्ति। अहं स्वमित्रैः सार्द्धं रायपुरं गत्वा तस्य दर्शनं कृतवान् अथ च तं मुंगेल्यामानीतः अस्मिन्नवसरे मम मनसि तीव्रइच्छा समुत्पन्ना यदहमादरणीयः गुरूदेवेन दीक्षां ग्राहयेयम। प्रारम्भे दीक्षार्थमनुरोधं कृते सति मां वहु/संकोचः जातः, पुनरपि 18 दिस0 1980 ईस्वीं पू0 गुरूदेवः दीक्षां दत्वा मदीया इच्छा पूरितः कृतः। तदनन्तरं यावद् पर्यन्तं पू0 गुरूदेवः मुंगेली आश्रमे अतिष्ठत् तदाहं प्रत्येक दिवसं दर्शनार्थं गतवानासम्।

गुरू जीवस्य र्निदेशानुसारेणाहं प्रत्येक दिवसं ध्याने निरतो शक्तुंमलगम्। मां आनन्ददायकाः नूतन नूतनानुभवः प्राप्तवान्। प्रथमं किञ्चिद् दिनं तु ईदृशः प्रकाशो दृष्टः यत् धूम्राकारेण प्रसृतः आसीत्। यथा–यथा दिनं व्यतीतं प्रकाशः स्वच्छः स्पष्टः दृष्टि गोचरो अभवत्। कदा–कदा प्रकाशस्य वर्णः नीलां भवनासीत् तु कदा धूम्राकारः श्वेतः कदा चन्द्रोऽपि पश्यन्नासीत। मां गुरूदेवस्य चरणः अथ च मण्डलाकारः रक्तिम् वर्णस्य स्थालीव दृष्टिगोचरो भवतिस्मः। तारागणैः आच्छादित आकाशः पश्यतिस्म यत्र तारागणाः सधनः अथ च देदीप्यमानः हरित वर्णस्य भावयनासन्। कदा–कदा एतादृशः अलगत् नूनं प्रकाशस्य वर्षा भवति। एते अनुभवाः मह्यं नितांत नवीनः कल्पनातीताः एवं अवर्णनीयो आसीत् सार्द्धमेव आनन्ददायकापि आसन्।

साधनायाः प्रारम्भिकस्थितौ मूलाधरेण वेदना आरभ्य सुषुम्ना मार्गात् पृष्ठस्य मध्य भाग पर्यन्तंभवतिस्म् यद् शनैः शनैः तीव्रतरं भवतिस्मः। अस्मिन्नवसरे सिरः भारयुक्तः भवतिस्मश्च अधिकाः स्वेदजलापि निःसृतो आसीत्। ध्यानंसमाप्यन्तरं सर्वे पुनः सामान्यः भवनासीत्।

मनसि या अशान्तिः वा वेदना निवसतिस्मः सः दीक्षानन्तरं समाप्तिः सञ्जाताः। मां यदापि समयः मिलति, अहं ध्यायामि यदापि अहं किञ्चिद् कार्यं प्रारम्भं करोमि पू0 गुरूदेवस्य ध्यानं करोमि येन मामात्मविश्वासो वर्द्धयते च अहं स्वकीये कार्ये सफलो भवामि। अधुना स्वकीये पारीवारिक जीवने अधिक संतुष्टः वा सुखी अस्मि। मामेतादृशः अनुभवो भवति यथा गुरूदेवः सदा मत्समक्षे अस्ति।

35– श्रीमती तारा देवी पारेख

मम पतिदेवेन गुरू दीक्षा ग्रहणानन्तरं मम मनस्यापि दीक्षां गृहीतुं वलवती इच्छा जागृतवती, एकदा यदा गुरूदेवः मम गृहे समागतः तदाहं तेन दीक्षां गृहीता। दीक्षा ग्रहणानंतरेणाहं प्रतिदिनं द्विवारं 20–25 मिनटाय ध्यानं कर्तुं उपविष्टः आसम्।

एकदा प्रातः ध्यानावसरे मया एको काकः अवलोकितः। मया तेन स्वकीयस्य/देवरस्य विवाहस्य विषये पृष्टः। तत्कालः सः काकः मनुष्यस्वरूपे परिवर्तितः प्रकटितः। मया तेन पृष्टः यत् सः कुत्र निवसति। तेन उत्तरितवान्– अहं तु सर्वदा तव गेहे एव निवसामि। कथं त्वं मां कदापि न अवलोकितः देवरस्य विवाह विषये तेनोक्तः यदिदानीमेक वर्ष पर्यन्तं एतद् संभवो नास्ति।

अस्यानन्तरं गुरूदेवः किञ्चिद् दिनाय मुगेंलीतः रायपुरं गतवान्। अहं गुरूदेवस्य दर्शनार्थं रायपुरमगच्छम्। ततः प्रत्यावर्तनानन्तरं मां ध्यान कुर्वन् काले पू0 गुरूदेवस्य दर्शनं जातम्। आनन्देन मम् नेत्रावापूरितौ जातः। अस्यानन्तरेण मां विभिन्न देवी देवानां दर्शनस्य लाभ मिलितुमलगत्। भगवान महावीरः, लक्ष्मी देवीः, ब्रम्हा, विष्णुः, महेशः तथा स्वयं गुरूदेवस्य दर्शनमभवत् कियत् बारं ध्यानावस्थायां सूर्यसदृशः देदीप्यमानः प्रकाशः अवलोकितः। एकदा भोजन निर्माण काले सुन्दरेभ्यो पुष्पेभ्यो

निर्मितः आसनोपरि एकः बालकः अवलोकितः। एकबारं अंगूष्ठ्याः नगे श्रीकृष्णस्य दिव्य स्वरूपस्य दर्शनं जातम्।

अन्याः अनुभवाः एतादृशाः सन्ति भगवतः श्वेत धातोः खग्ङः प्रदानं कृतः स्थारूढः श्री कृष्णम्वलोकितः। श्रीगणेशजी, स्वयमेव माल्यार्पणं कृतवती महालक्ष्मीः धन वर्षा कुर्वती तत् पश्चात् स्वकीय वाहने प्रत्यावर्त्य स्वस्थाने आकाश मार्गेण गच्छन्ती अवलोकिता। एक बारं रात्रौ काचिद् अज्ञात वृद्धा महिलया हसत रेखाणामध्ययनं कृत्वा आशीर्वादं प्राप्तः। एकदा युद्ध दृश्यं दृष्टिगोचरोऽभवत्। विभिन्नाः शस्त्राः मद् समक्षे आगच्छन्तः आसन् अकस्मादेवतीव्रः प्रकाशः दृष्टः तथा च युद्धः शान्तं अभवत् तदनन्तरं तत्रैव रक्ताभ मोतिया अथ च केसरी वर्णस्य पुष्पं तथा बाबा रामदेवः अथ च गणेशस्य दर्शनम् अभवत्। भगवान पारस नाथ तथा शेष नागस्यापि दर्शनं जातम्।

चैत्र मासस्य नवरात्रेः दिवसेषु ध्यान समये अनेक देवीनां दर्शनं प्राप्तम्। तथा ताभिः मां कम्बलं प्रदत्ता। मां प्रस्फुटित नेत्राभ्यामपि चक्रस्य दर्शनं भवन्तः सन्ति। अनेन प्रकारेण मां प्रायः अद्भुतः अनुभवाः भवन्ति तथा च ध्यानं कुर्वन्त्याः इच्छा तीव्रतरा भवति।

36– सतीश पारेख

सर्व प्रथमं श्री जोशी जीवः यस्तु मुंगेल्यामेव एकः विद्यालये शिक्षकोऽस्ति। तेन मां पू0 गुरूदेवस्य तस्याध्यात्मिक उच्चतम् शक्तीनां ज्ञानमभवत्। तस्मिन् समयेऽहं जोशी जीवस्य वार्तायां ध्यानं न दत्तः। तदनन्तरमहं पू0 गुरूदेवस्य मिलितुं वा तं कस्यचिद् आध्यात्मिक विषये प्रवचनं कुर्वन् श्रोतुमवसरं प्राप्तः। अहं तेन अति अधिक प्रभावितो जातः यत् त्वरितं दीक्षां गृहीतः।

सप्ताहस्य आभ्यान्तरमेव मयि अदभुत परिवर्तनं जातम्। विशेषतः मम आचरणे वा व्यक्तित्वे च दीक्षायाः पूर्वं मां लघ्वी–लघ्वी वार्तायां एवं मूर्खतापूर्ण कारणेषु अपि क्रोधं आगच्छतिस्म। अहमपरान् तुच्छोऽपि जानातिस्मः। इयं प्रवृत्तिः शनैः शनैः समाप्तिर्जाता। प्रथमहं ऊनघण्टायाः एक घण्टा पर्यन्तं ध्याने अवस्थितो आसम् परं इदानीं तस्याः अवधेः न्यूनता जाता। किञ्चिद् दिनपूर्वं एक रात्रौ स्वप्नस्य स्थितौ न ज्ञातं मम इच्छा उत्पन्ना यत् अहं ध्यानाय अतिष्ठम्। यदाहं अनेन प्रकारेण स्वप्ने ध्यानं कुर्वन् आसम् तदा तु मम शरीरः अधिक गुरूतरा जाता अथ च लक्ष्मी मातुः दर्शनं सञ्जातम्। सा रंक्तिमा वर्णायाः शाटिका धारिता आसीत् एवं विभिन्नालंकारैः सुशोभिता आसीत्। किञ्चिद् समयानन्तरमहं यदा अपश्यम् तदा तु दृश्यः लुप्तो जातः।

37– श्री ज्ञानशंकर शुक्ला

व्यक्तेः जीवने किञ्चिद् एतादृशः अवसरः अवश्यं समागच्छति यः जीवन धारां परिभ्रामयति। मम मतानुसारेण मम पू0 गुरूदेवस्य सम्पर्के समागच्छन् अपि एका एतादृशी एव संघटना वर्तते। अहं पू0 गुरूदेवस्य विषये पूर्वमेव श्रुतः। एकदा डा0 गिरीश पाण्डेंयस्य गृहे प्रत्यक्ष दर्शनो सञ्जातः। तेन मित्रता भावनायाः अहं अस्य गृहे आवागमन कुर्वनासम् परं अस्यानन्तरमहं पू0 गुरूदेवस्य दर्शनार्थ नियमित रूपणे गच्छतिस्मः। पू0 गुरूदेवः अत्यन्तमेव सरलश्च मधुर भाषी तथा सरलतया संमिश्रण इव बृद्धः आभासितः वार्तालापस्य परिप्रेक्ष्ये यदा सः अवदत् ततु मामलगम् यत् एषः महदेव विद्वान् किंवा प्रायसः प्रत्येक प्रकारविषयानां ज्ञाताऽस्ति। अस्य व्यक्तिवे आकर्षणो आसीत्।

प्रभावितो भूत्वाऽहं दीक्षां गृहीतः तथा नियमित ध्यानं प्रारब्धवान्। ध्यानावस्थायां भवितारः अनुभवः तथा कल्पना विषये मां किञ्चिदपि नैव मार्गदर्शितोऽआसीत्। प्रथम

द्वि दिवसेषु कथमपि विशेषानुभवो नाभवत्। तृतीयेऽह्नि मां वह्वी तीव्र शक्तिशाली टार्चस्य प्रकाश इव प्रकाशो संदृष्टः यः नेत्र उन्मीलने सति तेनैव प्रकारेण निर्मितोऽआसीत्। डा0 गिरीश पाण्डेयमिदं कथने सति तेनोक्तम् यत् एते शुभ लक्षणाः सन्ति तेन मां गेहस्य अशांत वातावरणं बिना एकान्तेन अन्वेषयन्नपि ध्यानं कर्तुमवदत्। मया अनेन प्रकारेणैवकृतः। एकदाहं ध्यानं समाप्य शयितुं गच्छतिस्म मया शय्यासने विश्रम्य येनैव उपाधानम् ऊपरि आकृष्टः एकः चतुष्कोणः तेजस्य प्रकाशः उपधानम् आविन्ध्यन् मां पर्यन्तमागच्छन् दृष्टिपातोऽभवत्। शनैः शनैः प्रकाशोऽयं मण्डलाकारः सञ्जातः अथ च तस्मिन् महावीर स्वामी किंवा गौतम बुद्ध सदृशः आकृतिमपश्यम् त्वरितमेव आकृतिरियं लुप्तो जातः तथा चतुष्कोण प्रकाशः अवशिष्टः। अस्य स्फुलिंगमय प्रकाशेन सर्वविध रक्षणायाहं स्वयमेव स्वकीयं उपधानेन आवृतः परन्तु पुनरपि सः प्रकाशः मां दृष्टिगोचरोऽभवत् किंवा तस्याकारस्य मम सामीप्यम् एव भवितुमाभासः स्थितः। अस्याम्स्थितौ मां निद्रा समायाता। एकदा मध्याह्ने अहं शय्यासने विश्राम्यतिस्म। मम हस्तौः नेत्रयोः स्थापितो आसीत्। अकस्मात् हरित वर्णस्य चतुष्कोण प्रकाशः दृष्टिगोचरो जातः। प्रकाशोऽयं दिशायां परितः प्रसृतोजातः तथा मध्ये अन्धकारेण युक्त मण्डलाकृतिः निर्मितोऽभवत्। कियत् वारं ध्यानावस्थायां मां कण्ठस्य पृष्ठभागें तीव्र अवरोधः वक्रवेदना जाता। पू0 गुरूदेवस्याकारः मां कदापि इच्छा करणेऽपि दृष्टिगोचरो न भवति, अपितु अस्य विरूद्धः स्वयमेव अकस्मादेव् कदा–कदा गुरूदेवः मम नेत्रयोः अग्रभागे समागच्छन्ति।

दीक्षा प्राप्तयननतरं एतदनुभवान् अतिरिक्तः किञ्चिद् अन्य परिवर्तनोऽपि मया अनुभवो कृतः। दीक्षा प्राप्ति काले मया द्विवार्तयोः विशेष ध्यानमाकृष्टः–

1– पू0 गुरूदेवेन निर्दिष्टमार्ग एव मुक्ति प्रति नेतारः भविष्यति।

2– गुरू देवः सदा मम सार्द्धमस्ति। अस्याः वार्तायाः संस्मरणं सदैव निर्मितेन मां समस्त कार्ये स्वकीया पूर्णक्षमतायाः सम्पादने सहायता मिलति। सफलता या

असफलता पू0 गुरू जीवोपरि समर्पयामि। दूषित कार्यान् करणार्थं मम संदेहं वर्धयति। यदि कश्चिद् दुष्कार्यं भवनेसति लज्जितो भवामि तथा द्विवारं न कर्तुं दृढः निश्चयो करोमि। दीक्षा प्राप्तानन्तरणे मानसिक अवरोधः तथा चिन्ताभिः मुक्तिः अवकाशो मिलति। चिन्ता व्याप्यमानेऽपि तु तस्याः तीव्रतायाः गतिः न्यूनतां याति।

38– एक ईसाई की स्वीकारोक्ति ए. के. कुरियान

अहं सीरिया मूलस्य परम्परा निष्ठः ईसाई परिवारे जन्मं अलभम् अपालयञ्च, अहमेक ईसाई अस्मि। कस्यापि सत्यनिष्ठ ईसाई सदृशः मम ईसामसीह एवं च तस्य शिक्षायाम् तथा एकेश्वर वादः शाश्वत् जीवने श्रद्धा युक्तः पूर्णः विश्वासोऽस्ति। अहं गुरू देवस्याऽपि विनम्रः शिष्योऽस्मि यस्यजीवनी तथा शिक्षायामुल्लेख अस्मिन् पुस्तकेऽस्ति सः प्रकटरूपे एको हिन्दू अस्ति। कथं अनयोः असंगति नास्तिः नैव मम दृष्टौ नास्ति।

विविधता तथा असमानतायाः अस्तित्व प्रत्येक क्षेत्रे सर्वत्रैवास्ति अथ च एष एव द्वन्द्वः विविधता एकतायाश्च पर्याप्त प्रमाणोऽस्ति एकतः एव अनेकाः सन्ति। यदि एकत्वैव नास्ति तर्हि तु अनेकत्वं भवितुं असम्भवः वर्तते।

विभिन्नाः धर्माः सर्व शक्तिमान् ईश्वरस्य बोधः तथा प्राप्त्यर्थं विभिन्नः मार्गाणां शिक्षयन्ति। मनुष्य मात्राणां स्वभावः तथा तस्याः आध्यात्मिकता आवश्यकताः भिन्न–भिन्नः भवितुं कारणेन धर्मेष्वपि विविधता भवितुं सर्वथोचितः एवं न्याय संगतोऽस्ति। वास्तविकेषु को धर्मोऽस्ति। एकः विद्वान् तथा प्रारम्भिकः ईसाई गिरिजा गेहानां संतेषु एक संतस्य कथनानुसारेणः–––

धर्मः एव मनुष्यं तथा ईश्वरं सम्मिलितुं श्रृङ्खलास्ति अयमेव सत्योऽस्ति। अहं गुरूदेवस्य संपर्के आगत्य अति प्रसन्नोऽस्मि कथं यत् मामेकः सुयोग्यः ईसाई भवितुं

तथा बाइबिलं सम्यक् प्रकारेण अवबोधने हेतु शिक्षां प्रदत्तोऽस्ति मम गुरूदेवः मां शिक्षतोऽस्ति यत् बाइबिलः ज्ञानस्य भण्डागारः अस्ति तथा च मणेरपि अधिकः बहुमूल्योऽस्ति अथ च एषा एव ईश्वरीय कृपा तथा शाश्वत जीवनं प्राप्तुं कुञ्जिकास्ति। गुरूदेवः अत्यल्प समये एव मां बाइबिलस्य गुप्त रहस्यान् ज्ञातुं योग्यः अवबोधितः यमहं स्वकीय जीवनः तथा अध्ययनस्य गत पञ्चत्रिंशति 35 वर्षेषु अपि ज्ञातुमक्षमो आसम्। तेन मां बाइबिल संबंधी मार्गेण एव दीक्षाप्रदत्तः गुरूदेवेन सार्द्ध एकान्तेऽहं बाइबिलं पठन् आसम् अथ च सः मां गुह्य अर्थान् स्पष्टं कुर्वनासीत्। एकदा संत मैथ्योः सिद्धान्तान् पठन् कुर्वनवसरे मया षष्ठाध्यायस्य 22–23 पदान अपठम् नेत्रः शरीरस्य प्रकाशः अस्ति अतश्चेद्यदि तव नेत्रः '' नेत्रः एकैवस्यात् तर्हितु तव सम्पूर्णः शरीरं प्रकाशमयो भवयिष्यति। किन्तु यदि तवनेत्रे पापोऽस्ति तर्हितु सम्पूर्ण शरीरं अधंकारमयो भविष्यति '' मामेषां पंक्तीनां गूढार्थः स्पष्टं करणे गुरूदेव किञ्चिदपि समयो न अलगत्।

अन्य दिवसे मया पठितः शाश्वत जीवनं प्रति नीयमान द्वारसंकीर्णः तथा च समक्षे प्रापयितुं द्वारस्य मार्ग अत्यन्त क्षीणो वर्तते। अत्रापि गुरूदेवेन मां रहस्यमयः संकुचित द्वारः तथा संकीर्ण मार्गं स्पष्टं कृतः। अहमत्यन्तं विस्मितो एवं प्रभावितो जातः। '' दस्तकंददातु सः तुभ्यं उद्घाटितो भविष्यति अन्वेषणं कुरू त्वंतं प्रापयिष्यसि। ईसा मसीहस्य एषां शब्दानां अर्थः अनायासनैव मम अवबोधने समागतः। गुरूदेवनेमां शिक्षितः यत् कुत्र एवं कथं च दस्तकंददामि कुत्र व अन्वेषणं कुर्वेयम्। तेन मां विश्वासो दत्तः यत् उचित समये द्वारं उद्घाटितो भविष्यति। अनेन आश्वासनेनाहं प्रसन्नः एवं संतुष्टोऽस्मि।

एकदा ईसाई धर्मस्य शिक्षासु चर्चा कुर्वन् समये मया तं कथितं यत् बाल्यावस्थायां मां शिक्षयितः '' चर्चात् बाह्य मुक्तिर्नास्ति'' मया इमं सदैव साम्प्रदायिकः धर्मान्धता अथ च अज्ञानता एव मन्यते अस्मिन् विषये मां कोऽपि विश्वसो नास्ति।

गुरूदेवेन बलं दत्वा कथितः यत् इयं शिक्षा ''पूर्णतया सत्योऽस्ति।'' अहं स्तम्भितो उपविष्टाः आसम् यथा मदुपरि सहस्त्राणि विस्फोटकाः/बम एकेनैव सार्द्धं विस्फोटिताः जाताः। गुरू जीवेन तत्कालः एव मम आश्चर्य एवं अविश्वासं ज्ञात्वा मां अवबोधितः तथा तस्य चर्चस्य दर्शनं कारितः यस्य बाह्ये मोक्षो नास्ति।

गुरूदेवेन सममेलनात् दर्शनात् पूर्वंमहं नियमित रूपेण चर्चे न गच्छनासम्। एकदा संयोगवशात् तेन मां रविवारस्य कार्यक्रमेषु विषये अपृच्छत्। मया तमवोचद् यदहं चर्च गमनस्य विषये उदासीनोऽस्मि। तेन मां चर्चे नियमित रूपेण उपस्थितः भवितुं परामर्शो दत्तः तथा फलदायी उपासना हेतवे एका विधिरपि उक्तः तावदहं चर्चस्य धर्म क्रियायां सर्वदैव समत्वेन आनन्दितोऽस्मि। यदाप्यहं गुरूदेवेन मिलितुं गच्छामि अभिवादनस्योतरे सः संकुचित द्वार एवं संकीर्णः मार्गः अस्या सूक्तेः प्रयुज्यते। मम विश्वासोऽस्ति यत् ईसाई धर्म निष्ठयाः सहैव कस्यापि सद्गुरोः निद्रेशे आध्यात्मिकः योग विधीनामपि अभ्यासो कारर्येत् ततु अयं ईसाई समुदायानां तथा ईसाई धर्मस्य कृते अत्यधिकाः लाभकारी भविष्यति।

39– श्री पी. एस. झकेरिया

श्री झकेरिया केरल प्रान्तस्य एक उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयस्य सेवा निवृत्त अध्यापकोऽस्ति। एषः पू0 गुरूदेवस्य जीवनी विषये आंग्ल पुस्तकस्य लेखकः श्री कुरियनस्य घनिष्ट मित्रेषु वर्तते। अनेन स्वकीय एक पत्रे श्री कुरियनं तस्य पुस्तके स्वकीया प्रतिक्रियां व्यक्तयन् काचिदनेन प्रकारेण अलिखत्।

मया तं पुस्तकं त्रिवारं पठितः। पुस्तकमिदंमुत्तर भारतीय जनानां दृष्टया तु प्रशंसनीयोऽस्ति। कथं यत् ते गुरूणां तथा संन्यासीनां प्रभावेण सान्निध्यस्याभ्यस्ताः सन्ति। ज्ञानी जनाः यस्तु धार्मिक प्रवृत्तीनां सन्ति तेऽपि अस्य पुस्तकस्य मूल्यं करिष्यन्ति परन्तु यावद् पर्यन्तं केरलस्य प्रश्नोऽस्ति भीतोऽस्म्यहम् यत् एनमुताधिकं

स्वागतो न स्यात् ? अत्रत्याः किश्चियन् सम्प्रदायानां मतोऽस्ति यद् मात्र ईसाई धर्म एव सत्य धर्मोऽस्ति इतरे सम्पूर्ण धर्माः काल्पनिक कथासु आधारितः सन्ति तथा शैतानैः निर्मिताः सन्ति। पुनरपि केचिद् किस्तानाः एतादृशाः सन्ति यत् पर धर्मस्य सारतत्वान् स्वीकारयितुं साहसिक प्रयासं कर्तुं शक्नुवन्ति। केरलस्य नाम राशिः किस्तानः स्वतस्तु धर्मस्य विषये किञ्चिदपि न शोचति एवं पुजारी पादरीणांमन्धानुकरणं कुर्वन्ति। एतादृशः मनुष्यः पुस्तके वर्णितः अनुभवानां समक्षे किञ्चिदपि ध्यानं न दाष्यन्ति।

भवतः गुरूदेवः दृढ़ निश्चयी अस्ति सत्यस्य अन्वेषण करतारं सर्वदैव कष्टं सह्यते वार्ता इयं भवदीय गुरूदेवेन सार्द्धंमपि वर्त्तते। ख्वाजा साहबस्य दरगाहे गुरूदेवेन स्वर्णखण्डः अस्वीकार करणेन समानान्तरमामपि अनुभवो जातः। कोऽपि मम समक्षे हीरकाणां प्रभूत पुंजः लगयतिस्मः अथ च मां नेतुं कथयतिस्मः। परन्तु मया अस्वीकारः कुर्वन् कथितः ईश्वरस्य नामं जयतुं , मामयं न वाञ्छनीयम्। रामायणस्य प्रवचन काले एतादृशः प्रतीतोभवतिस्मः यत् वासुदेव स्वतः न ब्रबीति परन्तु कश्चिदन्यः एतैः अस्य मुखेन प्रवदति, सत्योऽयम्। कथं यत् मया कियतकिस्तान धर्मोपदेशकान् अवलोकितोऽस्ति, यः भाषणंदान् काले विद्वतायाः शब्दः हावभावः एवं स्वरूपस्य दृष्टौ महान संत सदृशः अवलोकयन्ति। संभवतः संतोऽयमेव तस्य मुखेन प्रवचनं करोति। यज्ञोपवीत समारोहे किञ्चिचद् मात्रायाः सामग्रया एव षष्ठ शतकानां जनानां भोजनं सम्पन्नोऽभवत् ईसा मसीहस्य कैनायां कृतः चमत्कारस्य सदृशोऽस्ति, यत्र तेन पञ्च सहस जनानां भोजनं कारितः।

मजहर खानस्य बिना पृष्टेन तस्य शंकायाः समाधानः करणम् अपि सत्योऽस्ति। अहमपि यदा पेंटा कास्टल चर्चस्य एक सदस्यस्यसमीपे किञ्चिचद् प्रश्नं नीत्वा अगच्छम् तदा तु तेन मम बिना प्रष्टेनैव प्रश्नानामुत्तरं दत्तवान् तस्मिन् काले तस्य स्वरूपः सतं विशप मूरस्य सदृशः भासितो भवतिस्मः। अहं तु सम्पूर्ण हृदयेन

गुरूदेवस्य अनुभवान् सत्यं मन्ये, ईश्वरः कुर्यात् तस्य आयुः दीर्घी भूयात्। योग अथ च एनाटामी अध्यायः सामान्य जनाय दुरूहोऽस्ति।

शिष्यानामनुभवाः अति महत्वपूर्णाः सन्ति। यतः गुरूदेवस्य जीवनः एवमनुभवस्य विषये प्रसारण करणे एते परम सहायकाः भविष्यन्ति।

40– श्री भालचन्द्र शंकर भटजी वाले

श्री गुरूदेवः गालवपुरें ममाभिन्नमित्रः श्री बुआ साहब शिन्दे नामकस्य गृहे समागतः आसीत्। मम धर्मपत्नीमस्मिन्नवसरे गुरूदेवेनदर्शनस्य सौभाग्यः प्राप्तः अहं कियत् वर्षैः साधना कुर्वन्नासम्, किन्तु सा फलदायको सिद्धः न जाता। श्री बुआ साहबस्य पत्रं अथ च गुरूदेवस्य विषये चर्चया मम हृदये तेन मिलितुमुत्कण्ठा जागृता जाता। मया स्व धमपत्न्या सार्द्धं 6 जुलाई 1982 ईस्वीं गुरू पूर्णिमाया शुभावसरे वर्धायां श्री गुरूदेवेन दीक्षां गृहीतवान्।

दीक्षा ग्रहणात् पूर्वं साधनावसरे मां शरीरे यत् कम्पन्नः अभवत्। सः दीक्षायाः पश्चात् अधुनापूर्णतः शान्तोऽस्ति। अहं प्रातः पञ्च वादनेः मानस पूजां कृत्वा ध्यानं प्रारम्भः करोमि , यत् प्रायशः एक घन्टा भवति। गुरूदेवस्य कृपया इदानीं अष्ट दस मिनटेषु एव असीम तन्मयता आगच्छति तथा बहुतेज प्रकाशः सम्मुखे विराजयते। मम परितः तथा अनन्त पर्यन्तं ईषत् प्रकाशः एव प्रकाशो दृश्यते कदा–कदा स्वकीया ज्योतिः टार्च सदृशः भवति तथा यत्र मुखं भ्रामयामि तत्र एव प्रकाशः अवलोकयति। अस्य ध्यानस्य स्थितौ क्रमशः पञ्चदश अथा विंशति मिनट पर्यन्तं स्थिरताऽपि आगताः अस्ति। अस्याधिक समयाय स्थिरता अधुना न आगता अस्ति इदानीं पर्यन्तं ध्यानावस्थायां कदापि इष्ट देवी गायत्री मातुः दर्शनं न जातम्। ध्यानं कुर्वन् काले असीम तल्लीनता तथा समाधि अवस्था सदृशी स्थितिः भवति। एतादृशः लगति यत् प्राणः अथवा सम्पूर्णा शक्तिः एव मस्तिष्के समागताः अस्ति। मस्तिष्कः आरूढः ,

सदृशःलगति। ध्यानावस्थायां मनः एव मनः गुरू मंत्रस्य जपं भवति यस्तु कदा–कदा स्वयमेव अवरूद्धो भवति अथ च कदा पुनः प्रारम्भो भवति। ध्याने असीम अवर्णनीयः आनन्दस्य अनुभवो भवति। ध्यानात् उत्थितेसति '' नूनं '' चैतन्यो आगच्छति।

मम धर्मपत्निरपि प्रतिदिनं साधनां करोति। तामपि प्रकाशस्य दर्शनं भवति तथा पूर्ण तल्लीनता प्राप्नोति। साअपि असीमानन्दस्यानुभवं करोति। एतत् सर्वं गुरूदेवस्य कृपा वा आर्शीवादः एव अस्ति।

41– कु0 अंजूषा दिवान

पू0 गुरूदेवेन 14 मार्च 1982 ईस्वीं मां दीक्षां प्रदत्तवान्। मां ध्यानकुर्वन् काले इदानीं पर्यन्तं रक्तिम वर्णस्य ऊॅकारस्य आकृतिः वा पीतवर्णसूर्यस्य दर्शनमभवत्। एकदा गुरूदेवः आर्शीवादं प्रददन् अपि अवलोकितः। कदा–कदा ध्यान कुर्वन् काले हस्त पादयोः इषत् कम्पनः इव भवति। रक्तः श्वेतः नीलः वा पीत वर्णस्य प्रकाशोअवलोकयति।

42– डा0 भानू गुप्ता *(भूत पूर्व राज्य मंत्री लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, मुंगेली, म. प्र.)*

मई सन् 1980 ईस्व्यां विधान सभायां/चुनाव पराजिते सति किञ्चिद् अन्यमनस्कता आसीत्। जून मासे डा0 गिरीश पाण्डेयेन यः मम कनिष्ठ भ्राता श्री प्रेम प्रकाश गुप्ता, एस. डी. ओ. सिचाई विभागस्य हितैषी अस्ति दुर्गे मिलितः। विभिन्न प्रकारस्य चर्चायाः स्थितौ तेन मया पृष्टः यदधुनाहं किं कर्तुमिच्छामि। मम मुखेन निः सृतः अहं मुक्तिं कामये। अकस्मात् आभ्यन्तरेण निःसृता वार्तां तेन ज्ञातः। तेन परम पू0 गुरूदेवस्य विषये चर्चितवान्। किञ्चिद् ज्ञाते सति गुरूदेवस्य दर्शनस्य उत्सुकता जागृता। अयं संयोग एव आसीत् यत् डा0 गिरीश पाण्डेयस्य स्थानन्तरण जुलाई मासे एव मुंगेल्यामभवत्। सः परिवारेण सह मम निवासे एव अवसत्। अत्र नियमित रूपेण अध्यात्म व गुरू देवस्य विषये एव चर्चा भवतिस्मः। सितम्बर मासे वयं परम पू0

गुरूदेवं मुंगेली आनेतुं रायपुरं अगच्छामः। तत्र प0 पू0 गुरूदेवेन मया पृष्टः किं कर्तुं मम समक्षे आगतोऽसि मम उत्तरः आसीत–मौतस्य आनन्दं नेतुम्। प0 पू0 गुरूदेवः मुंगेल्यां समागतः। वयं सह परिवारैः दीक्षां गृहीताः। विभिन्न प्रकारस्यानुभवै पारयन्, सत्यस्य प्राप्तौ सफलतां प्राप्ताः। मौतस्यापि आनन्दं प्राप्तः। समस्त परिवाराः तस्य निर्दिष्टः मार्गे गत्वा आनन्दितोस्मः। परमात्मा स्वरूपः प0 पू0 गुरू देवः मम ह्रदये सदैव निवसतु।

43– श्री मती चन्द्रकान्ता गुप्ता, (धर्म पत्नी डा0 भानू गुप्ता)

स्व पतिदेवेन तथा डा0 गिरीश पाण्डेयेन वा श्रीमती डा0 सुधा पाण्डेयेन मां व परम पू0 गुरू देवस्य परिचयो अमिलत्। तेषां निर्देशित मार्गे चलित्वा मया आभ्यान्तर संसारः कियत् विशालोऽस्ति अस्य परिचयो प्राप्तः। आत्मज्योतेः दर्शनं कृतः। मृत्योरपि अनुभवो कृता। मामिदानीं कस्यापि प्रकारस्य भयस्य प्रतीतिः न भवति। संन्निकटे एव 2–4 मासैः नाना प्रकारस्य चित्र–विचित्र प्रकाशः दिव्यजनानां दर्शनमादिनित्यं भवन् सन्ति। परन्तु स्थिति गम्भीरा भवन्ति। अत्र पर्यन्तं यत् शरीर वा बाह्य जगतः व्यापारः शिथिलेन प्रतीयते। कदा–कदा अकस्मादवे एतादृशी स्थिति भवति यत् देहस्य स्मृति आदि भोजन जलपानं अपि विस्मरामि अथ च एक घट्या नीत्वा 5–6 घण्टा पर्यन्तं समयः बिना केनापि सुध–बुधस्य निःसरति। इमां स्थितिं समाधि अपि कथ्यते वार्ता सत्यास्ति। प0 पूज्य गुरूदेवस्य अस्याः महती कृपा व अनुग्रहः वा मार्ग दर्शनेन मम समस्ताः चिन्ताः समाप्ताः जाता। अहं सदा प्रसन्नोऽस्मि। सानन्देन मम सर्वाणि कार्याणि प्रचलन्ति। सुख– दुखात् दूरं तथा आकाक्षां रहित भावेन समस्तानि कार्याणि भवन्ति। एतादृशः अनुभवो भवति। मनसि असीम शान्तिरस्ति।

44– कु0 सीमा गुप्ता

सन् 1982 ईस्वीये पू0 गुरूदेवेन दीक्षा ग्रहणानन्तरं मां ध्यानावस्थितौ सर्व प्रथमं प्रकाशस्य दर्शनं जातम्। रक्त वा नीलाद्युतिः अवलोकयामास। सूर्यस्य तीव्रः किरणः अपश्यम्। ध्यान कुर्वन्नवसरे पादः तल भागः उष्णो भवति तथा हस्त पादयोः ईषत् कम्पनः भवति।

45– कु0 सुनीता गुप्ता

परम पू0 गुरूदेवेन 9/3/ 1982 ईस्वीं दीक्षा ग्रहणानन्तरं मांध्यानावसरे रामः, कृष्णः, संतोषी माता, शंकरः, गणेशः वा ब्रह्मदेवः तथा ओंकारस्य दर्शनं प्राप्तम्। अस्य किञ्चिद् दिनान्तरंमहांत्रि चत्वारि दिनानि पर्यन्तं ध्यान कुर्वन्नवसरे पृष्ठे कीटस्य चलन् सदृशः अनुभवो जातः। एकदा ध्यानावस्थायां एकः श्वेत वर्णस्य रिक्तः रथस्य दर्शनं अभवत्। तस्यां रात्रौ शरीरं शून्यो भूत्वा मस्तकः विदीर्णो सदृशरनुभवोऽभवत् तथा अस्यानन्तरं एका दिव्या ज्योतिः अवलोकयामास। इदानीं यदापि ध्याने उपविशामि तदा तु ग्रीवायां ईषत् कम्पनः समुत्पद्यते।

46–श्रीमती शान्ता बाई जोशी

परम आदरणीयः गुरूदेवस्य कृपया पूर्णिमा दिवसे प्रातः चतुर्वादनतः षष्ठ वादनस्य मध्ये ध्यानाभ्यासस्य स्थितौ तस्य सुन्दरं दर्शनं जातम्। अस्य वर्णनं किञ्चिदनेन प्रकारेण वर्तते। सर्व प्रथमं भीमा शंकरदेव साधनायां निरतो दृष्टिगोचरोऽभवत्। तस्य स्वरूपः भयावहः सदृशः अलगत्। किञ्चिद् क्षणानन्तरं सुदर्शन चक्रः भ्रमन्निव दृष्टः यस्य मध्ये नेत्रः अवलोकिता एतेननेत्रेण नीलवर्णस्य ज्योतिः निःसृत्य मम भृकुटयोः मध्य भागेन पुनः नेत्रे समाहिता। पुनः चक्रे नेत्रस्य

स्थाने साक्षात् पू0 गुरूदेवस्य अति सुन्दरदर्शनं जातम्। मम मनः अत्यन्तः प्रफुल्लितोऽभवत्। हृदये अत्यधिकाः शान्तिः प्राप्ता। पू0 गुरूदेवः अनेन प्रकारेण बारम्बारं दर्शनं ददातु, एषा एव तेन मम नम्र प्रार्थना अस्ति।

47– श्री वसंत खोत *अधिवक्ता, लश्कर, ग्वालियर, म0 प्र0*

मम परम सौभाग्यो अस्ति यत् श्री मद् सत् गुरोः दर्शनस्य अलभ्य लाभः सर्व प्रथम मां ग्वालियरे एव प्राप्तः। श्री सत् गुरूदेवः माह अप्रैल 1982 ईस्वींये ग्वालियरे मम परम मित्रः एवं ज्येष्ठ बन्धुः सरदार शिन्दे साहबस्य गृहे विराजमानो आसीत्। तथा 24 अप्रैल 1982 ईस्वीपर्यन्तं ग्वलियरे वासः आसीत्। अस्य मध्ये मां श्री सत् गुरोः सान्निध्ये वासस्य पूर्ण अवसरः प्राप्तः तथा च श्री सद्गुरोः कृपया एव अनायासमां दीक्षां ग्रहण कर्तुं सौभाग्यमपि प्राप्तः। 4 जुलाई 1982 ईस्वीं गुरू पूर्णिमायाः आयोजनः वर्धायां भवितुमासीत्। यस्यार्थं मामपि निमंत्रणः प्राप्तः आसीत्। अस्य निमंत्रणस्य पूर्वं मया स्वकीय ध्यानावस्थायामनेकः अपरिचित व्यक्तीनां स्वरूपं दृष्टः। परं यदाहं गुरू पूर्णिमायाः पर्वोत्सवे वर्धां प्राप्तः तदा तु अनुभवो कृतः यत् येषां व्यक्तीनां सवरूपाणि मया पूर्वं दृष्टम् आसीत् ते मम एव बन्धु वर्गानां स्वरूपमासीत्, तथा च इयं वार्ता मया मम वरिष्ठ बन्धुः श्री शिन्दे साहबं तथा परम पूज्यनीयः श्री सत् गुरूदेवमपि उक्तम्।

माह जूनस्य वार्तास्ति यदा न्यायालयीन ग्रीष्मावकाशो भवति। अहं मध्याहन्स्य समये विश्रम्य पठन्–पठन् गहन् निद्रायां अधिगतः तथा स्वप्नावस्थायां दृष्टं यत् मम स्पाईनल कार्डे हरित वर्णस्य विद्युत धारा तीव्र वेगेन चकासते। तदनन्तरं मम व्यावसायिकः वरिष्ठ मित्रः मम समक्षे वृहद पुस्तकानि नीत्वा आगताः सन्ति, तथा मां कथयन्ति यद् एभ्यः एकं पुस्तकं यस्मिन् संत एकनाथ महाराजस्य छाया चित्रमासीत्,

त्वां वर्धां नेतुं वर्तते। मम निद्रा तत्काल भंगो जाता, तथाहं विस्मयात् शोचितवानासम् यत् एतत् सर्वं किमासीत्। द्वित्रि दिवानन्तरं मया स्वकीय वरिष्ठ अभिभावकः उक्त समस्त वृतान्तमकथयम् तदा तु तेनोक्तं यत् मया तव सत् गुरवे एकनाथ महाराजस्य भागवतस्य पुस्तकमानीतवानस्मि तं त्वं वर्धां नय। स्वप्नावस्थायांप्राप्तादेशः तव श्री सत् गुरूदेवस्यैवास्ति। त्वां तं पुस्तकं वर्धां नेतुं वर्तते। गुरू पूर्णिमायां पर्वे वर्धां प्राप्तानन्तरं मया श्री सत् गुरू देवमिदं वृतान्तं कथितम्। तदा तु तेनोक्तं यद् अस्य पुस्तकस्य मां यथाशीघ्रमावश्यकता आसीत्। शोभनं जातं यत् त्वया आनीतः। अस्यानन्तरमिदानीं माह दिसम्बरस्य वार्तास्ति। मम शीतकालीनवकाशो आसीत्। मया तथा च मत् वरिष्ठ बन्धुः श्री शिन्दे साहबः श्री सत् गुरूदेवस्य दर्शनार्थं रीवां गतुं कार्यक्रममुक्तवान् एवञ्चारक्षणोऽपि कारयितः। दिनांक 24/12/1982 ईस्वीं ममोदरे अकस्मात् पीड़ा प्रारम्भो जाता तथा अग्रिम द्वि दिन पर्यन्तं सर्वदा स्थिरा जाता। अतः मया अपर दिवसे श्री शिन्दे साहबं रीवां गन्तुं स्वकीय कार्यक्रम समापयितुमवदम्। रात्रौ यदा मया शयितः तदा तु स्वप्नेऽहं श्री सत् गुरोः दर्शनं कृतः तथा श्री सत् गुरूः मयायंआदिष्टः यत् श्वः रात्रेः यानेन त्वां रीवा अवश्यमेव गन्तुं वर्तते। अहं प्रतीक्षिष्यामि आश्चर्यस्य वार्ताइयं यत् रात्रेः यानस्यैव मम आरक्षितः आसीत्, तदनुसारं आवां रीवां गन्तुं अपर दिने रात्रेः लौहपथगामिनी याने उपविष्टौ चरीवां प्राप्तानन्तरं आश्चर्येण मनः प्रसन्नो जातः यत् श्री गुरूदेवः आवयोः प्रतीक्षायांरताः आसन्, तथा च ममोदर पीड़ाअपि अकस्मादेव शान्तो जातः। अनेन प्रकारेण यावत ममोपरि श्री सदगुरूदेवस्य कृपा जाता तथा मां आशिर्वादो प्राप्तः तावत् मां प्रत्येक विशिष्ट घटना भवितुं पूर्वं संकेतो प्राप्नुवन्ति। प्रत्येकदिनं रात्रौ यदाहं शय्यां विश्रमामि मम स्पाईने एको विचित्रः किन्तु आह्लादकारकः स्फुरणो भवति तथा तस्यानन्दे श्री सत् गुरूदेवस्य नामजपं कुर्वन् सुखेन स्वपामि।

अस्य समस्त श्रेयः श्री सत् गुरोः आर्शीर्वादः एवं नियमित अभ्यासस्यैवास्ति, अनेन प्रकारेण मम दृढ़ः विश्वासोऽस्ति। श्री सत् गुरोः कृपा अनेन प्रकारेण प्रत्येक जिज्ञासुः मानवोपरि भवतात्।

48–श्री हिदायत अली कमलाकर *पत्रकार,पी. टी.आई. शास. अभियांत्रिकी महाविद्या, बिलासपुर,छ.ग.*

एष मम न मम आंतरिक मनसः अनुभवोऽस्ति। अहं पू0 गुरूदेवस्य सम्पर्के तस्य शिष्यः श्री आर0 डी0 कुपटकरेण समागतः। मया स्वकीय जीवने अनेक साधु –सन्यासीनां दर्शनं कृतम्। परन्तु आन्तरिक मनसि कदापि तेषां वास्तविकतां न स्वीकृतः। सत्यं यावत् आभ्यन्तर मनः न स्वीकरोतु सत्यस्य परिधौ न समागच्छति। दर्शयितुं अनुकरणे छद्मतः क्रोशपर्यन्तं दूरं गुरूदेवः एक एतादृशी दिव्या ज्योतिः वर्तते यस्य सत्यापनं मनुष्य मात्रं बुद्धेः परमस्ति। तेन प्रकारेण तु सत्संगस्यावसरः मम जीवेन अनेक बारं समागतः किन्तु कदापि अन्धानुकरणं मया न स्वीकृतः। मानव मस्तिष्के अनन्तकालाद् असंख्य प्रश्नाः तस्य दिव्यज्योत्यै निर्मीयते यः सदैव मानवस्य बाह्य दृष्टयाः परस्तादस्ति एवं भविष्यति च परन्तु तया अदृश्य ज्योतया समस्त प्राणिषु मात्र मानवोपरि सापि कस्मिंश्चित् मानव विशिष्टे स्वकीय विशेषउपहृतोऽस्ति। एष उपहारः पू0 गुरू देवस्य भागे समागतोऽस्ति। सः कस्यापि जाति विशेषस्य न सः कस्यापि संस्कार विशेषस्य नैवः सः कस्यापि मानव विशेषस्य न अपितु ते एतादृश अपूर्वः व्यक्तिः अस्ति, यस्मिन् तस्यादिव्यज्योतयाः उत्तराधिकारी भवितुं समस्ताः गुणाः विद्यमानाः सन्ति। अनया दयया जीवने संतोषः एवं शान्तिः प्राप्नोति।

एकदा गुरूदेवस्य कृपायाः मां प्रत्यक्ष अनुभवो जातः। ग्वालियरं गमन् बीनारेलवे स्थानके मां ज्वरः समागतः। अहं तत्रैव प्रतीक्षालये अवतरितः। परन्तु ज्वरस्य गतिः सवंर्धितः एव। मया बहुभिः वयोवृद्धान् स्मरणं कृतम् किन्तु किञ्चिदपि लाभो न प्राप्तः,

पुनः मया तिवारी गुरूदेवं स्मरणं कृतम् स्मरन्नेव श्वेदः निःसृत्य ज्वरः अवतरितुं प्रारम्भो जातः अथ च अहं स्वास्थ्य लाभं प्राप्यस्वस्थं जातः। इयं घटना मया श्री कुपटकरं ततः लिखित्वा प्रेषितः आसम्।

एषः मम मात्र अनुभवो नास्ति किन्तु सत्योऽस्ति यत् गुरूदेवस्य जीवन यात्रा शताब्दिभिः संतजनानां सान्निध्येन सम्मिल्लितोऽस्ति यं गुरूदेवः स्वयं न अस्वीकुर्वन्ति। वर्तमाने गुरूदेवः केन प्रकारेण यत्कमपि स्याद् परं व्यक्तिगतमापस्थितौ मया यावद् पर्यन्तं वास्तविकतां अल्पकाल एव तेन सार्द्धं निवसन् अवगतः सोऽयमस्ति यत् गुरूदेवस्य वंश परम्परा कस्मिश्श्चिद् / सूफी संतेन, सम्मिलितः सम्बद्धश्च सोऽस्ति काचिद् ईरानी संतः बुल्लेशाहः मया इमं रहस्यं स्वयं तेन अवबोधितुमिच्छितः अथ च तस्य वाणीं किश्ञ्चिद् न कथितः परन्तु मधुर हास्यः अस्वीकारोऽपि न कृतः। अहमेकः प्राचीनः मजारे गत्वा पुष्प मालिका/उद्वती, धूंप अथ च /शीरनी, आदि अर्पितवानस्मि। एकदा तिवारी गुरूदेवः तत्र दृष्टिगोचरोऽभवत्। तेन मां मम अंगुलीं धृत्वा मजारस्य समीपे नीतः। आश्चर्यस्य वार्ताअस्ति इयं यत् तत्र मजारस्य अन्तः भागेऽपि गुरूदेवं अपश्यम्। आश्चर्य चकितोऽहम्। द्विविधामधिगतः इदानीं तु यदापि तत्र गच्छामि मजारे मां तिवारी गुरूदेवः एव दृष्टिगोचरो भवति। मम विश्वासोऽस्ति् यत् गुरूदेवस्य परम्परा रामकृष्णपरमहंसः तथा सांई बाबा महोदयेनापि सम्मिलितोऽस्ति। मया इमं सत्यं स्वकीय नग्न नयनैः अवलोकितम् यः सजीव रूपे अद्यापि मम नयनानां लघु सरोवरे कमलंविनिर्मित्य प्रस्फुटितोऽस्ति। मया पूर्वमेवं कथितं यत् अहं गुरूदेवस्य अन्धानुसरणकर्तानास्मि। अंद्याावधि अहं तस्य सम्पर्कस्य न्यनूमेव लाभं प्राप्तवानस्मि परं यावदपि गृहीतोऽस्मि, सः सर्वदा अमरः जातः। मात्रः। सत्यस्य आगन्तुमवशिष्टोऽस्ति।

49– श्रीधर केशव राव काण्णव (*शिक्षक, न्यू ई0 हाई स्कूल, वर्धा,)*

अह किञ्चिद् जनानां मार्ग दर्शने ध्यान धारणां कुर्वन् आगतोऽस्मि। परन्तु समये–समये मध्ये–मध्ये अवरूद्धता आगता आसन्। इदानीं किञ्चिद्दिनैः अहं नियमित रूपेण ध्यानं कुर्वन्नासम्। मां पृष्ठे नीचैः भागात् नीत्वा उपरि पर्यन्तं कम्पन्नाः आगतवान् आसन् अथ च, ते एतादृशाः भयानकाः आसन् यत् एतादृशः अलगत् यथा चित्कारस्य शब्दः मुखात् निःसरिष्यति, परन्तु एतादृशः भवन्नासीत्। अहमंनेन अधिकं व्यग्रो सदृशः आसम्। अस्मिन् मध्ये व्यापारिक व्यवहारे मम सम्पर्कः श्री उमाकान्त जीवः कुटेमाटे महोदयेन अभवत्। सः वर्धायां मार्क्सिसस्ट कम्युनिस्टः नेता किन्तु निरीश्वरवादी आसीत्। किञ्चिद् दिनैः तस्मिन् परिवर्तनः परिलक्षितो जातः। तस्य उन्मुखता ध्यान मार्गे एव आसीत्। तेन मां कर्नाटकस्य ज्योतिषी श्री भीमा शंकर शास्त्री महोदयस्य नामं अवबोधितः अथ च, ध्याने आगन्तांर कम्पनानां सम्बन्धे विचारंनेतुमवादीत। श्री भीमाशंकर शास्त्री जी जीवने मां बाबासाहब तकवाले अधिवक्ता महोदयं प्रतिै गन्तुं कथितः। मां तेन मार्गदर्शनं प्रदत्तः। तद्दिवसेन कम्पनः आगमनं अवरूद्धो जातः।

शीघ्रमेव एक सप्ताहस्य मध्ये परम पू0 गुरूदेवस्य वर्धायामागमनमभवत्। अहं गुरूदेवेन दीक्षां अप्राप्नुवम् अथ च तस्य समक्षे ध्यानं प्रारम्भं कृतवान्। मां ध्याने सूर्यस्य दर्शनं भवितुमारब्धवान् यस्तु पूर्वं कदापि न जातः। इदानीं सूर्यस्य दर्शनं नियमितरूपेण ध्याने भवितुमलगत्। सुरम्यः सुगंधस्य अनुभवः कियत् वारं समुत्पन्नः। इदानीं ध्यानावस्थायां मम दृष्टिरूभयोःभृकुटि मध्ये काचिद् चुम्बकीय शक्त्या आकर्षिता भवति सदृशी प्रतीयते तथा तत्रैव स्थिरनिर्मिता प्रतीयते। द्वि वारस्य संकटैः गुरूदेवस्य स्मरण मात्रेण अथ च तस्य कृपया सुरक्षितोऽस्मि। मम पिता श्री केशव राव जी काण्णवः अधिवक्ता त्रयाशीतिवर्षस्य सन्ति। एषः गतविंशति वर्षैः मूलाधार चक्रे

अवरूद्धो आसीत्। तस्य कुंडलिनी शक्तिः पू0 गुरूदेवस्य दर्शनं वा तस्य मुखात् '' सच्चिदानंदस्य ध्वनिः श्रृण्वन्नेव ऊर्ध्वं अधिगताः इदानीं सः आनन्दावस्थायांमस्ति।

50–कु0 ललिता काण्णव *(काण्णव परिवार, वर्धा, महाराष्ट)*

दीक्षाप्राप्तिकुन्नवसरे मां सूर्यस्य दर्शनं जातम्। ओमः आकारस्य वा जलेरक्तः ज्योतेः र्दर्शनं जातम्। ध्याने मां प्रत्येक दिवसे पू0 गुरूदेवस्य चरणः तथा नेत्रयोः दर्शनं भवतः, सूर्य दर्शनमपि भवति।

51– श्री मती शालिनी काण्णव *(धर्म पत्नी श्रीधर, केशवराव काण्णवः, वर्धा)*

दीक्षा ग्रहणावसरे मां नीलवर्णस्य प्रकाशः अथ च सप्त वर्णयुक्तः इन्द्र धनुषं दृष्टः। एको श्वेतवर्णस्य बिन्दुः तथा अन्ते सूर्यस्य दर्शनं जातम्। ध्यानावस्थायां प्रतिदिनंमां सूर्यदर्शनं तथा कदा–कदा मां गुरूदेवस्य दर्शनानि भवन्ति। दिनांकः 26/5/1982 ईस्वींमहंचिन्ताग्रस्ता आसीत्। अभवदयं यत् दिनांक 27/5/1982 ईस्वीं मम पुत्रस्य यज्ञोपवीत संस्कारः भवितुमासीत्। तस्मिन् दिवसे वर्षा भवितुं सम्भावना आसीत् तथा समस्त कार्य प्रबन्धः गृहाद् बहिः भागे अनावृतः स्थले एवं करणार्थमासीत्। प्रातः प्रातर्मां गुरूदेवस्य ध्वनिं श्रुतः–'' चिन्ता मां कुरू, सर्वं सम्पन्नं भविष्यति ''। मम् प्रसन्नतायाः सीमा नासीत्, यदा सप्तविंशतिः तारिकां समस्त कार्यक्रमः निर्विघ्नः सम्पन्नो जातः। पू0 गुरूदेवः स्वयमेव कार्यक्रमे समायातः अथ च मया पृष्टःकिं जलं तु नैवागतः न ? सर्वं शोभनमभवत् ? धन्योऽस्ति गुरूदेवः भवताम् महिमा।

52– श्री राजू श्रीधर काण्णव

बाल्यावस्थया एव धार्मिक संस्काराणां मध्ये निवसन् अधुनाहं गायत्री मंत्रः तथा ध्याने अपि अतीव रूचिः नेतुंम् शक्नुवम् यदकसमात् मां परम पू0 गुरूदेवस्य पुस्तकं

पठनार्थं प्राप्तम्। प्रभावितो भूत्वाहं स्वकीय पिता जीवः श्री केशवराव जीवः काण्णवेन साकं तस्य दर्शनार्थं अगच्छम्। मया गुरूदेवेन दीक्षां प्रदातुं प्रार्थितः यं तेन स्वीकृतः। मम साष्टॉग्ङस्य करणानन्तरं गुरूदेवेनोक्तम्, —''भवतः ज्योतिः अमिलत्, भवतः कार्यमपि सुसम्पन्नः''। एक मासानन्तरमेव गुरूदेवस्य कृपया अवर्णनीया अनुभूतयः प्रारम्भो जातः। दीक्षा ग्रहणानन्तरं प्रत्येक दिवसे एव ध्यान कुर्वन् काले मां रक्तिम वृत्ताकारस्य रूपे सूर्य वा तस्मिन् ''ऊँ'' तथा पुनः गुरूदेवस्य दर्शनं भवितुमारभत्। एकदा संध्यायां यदाहं ध्यान मग्नो आसम् तदा तु मां विद्युतस्य द्युतिमान सदृशः देदीप्यमान प्रकाशस्य मध्ये अवलोकितः, यत् श्री कृष्णः स्वकीय सहगामिभिः सार्द्धं माखनं चोरयित्वा खादन्ति किञ्चिद् क्षणानन्तरमवलोकितः यत् श्री कृष्णः अंगुङलीषु घनघोरः वर्षायां गोवर्धनपर्वतं उत्थापितअहं पर्वतस्य नीचै भागे ध्यानं कुर्वन्नासम्। परम पू0 गुरूदेवोऽपि तत्र उपस्थितोऽआसीत्। परम पू0 गुरूदेवः श्री कृष्णमुक्तं यत् मां कुत्रापि ध्यानं करणस्य स्वभावोऽस्ति। परम पू0 गुरूदेवः स्वकीय दण्डेन यदा मम हस्तौ स्पशं कृतः, तदा मम ध्यानं भंगो जातः। तदनन्तरं किञ्चिद् दिनानां प्श्चात् प्रतिदिनं मां दुर्गा व्याघ्रारूढाः दृष्टिपातोऽभवत्। एकदा तेन मां पृष्टवान् —''किं बाःञ्छसि ? वरं ब्रूहि''। मया मात्र परम पू0 गुरूदेवस्य दर्शनस्याभिलाषा प्रकटितश्च ध्याने मां परम पू0 गुरूदेवस्य दर्शनं जातम्। मया स्वकीय मृत्योरनुभवः कृतः। एतादृशरलगत् यत् मम शवः काष्ठेषु स्थापयित्वा प्रज्वलति। सामीप्यमेव परम पू0 गुरूदेवः गुरू परिवारोऽपि विराजमानाः सन्ति। परम पू0 गुरूदेवेनोक्तं '' अयं मुक्तो जातः''। किञ्चिद् दिनानन्तरं मां चतुर्थश्च दिनानि पर्यन्तं कर्णयाः पृष्ठ भागेन नादस्य ध्वनिः श्रावितः। एकदा ध्याने मया स्वकीय मेरूदण्ड़ः अवलोकितः यदग्निः सदृशः रक्तवर्णस्यासीत्। ध्याने मां अनेक बारं सुगन्धस्यानुभवो जातः। परम पू0 गुरूदेवः मम गृहं न आगच्छतिस्म् पुनरपि तेन मां पृष्टं यत् त्वमुपरि किं करोषि तदा मया तमुक्तम् यत् अहं गायत्री मंत्रस्य जपं करोमि। तदा तेनोक्तं यत् तवकार्यः सम्पन्नाः। इदानीं

त्वां किञ्चिद् कर्तुमावश्यकतानैव। एकदाहं प्रातः चतुर वादनावसरे ध्यानं कुर्वनासम् तदा मां शिरसि गुरूदेवस्य हस्तं स्पर्शस्य अनुभवो जातः। मम मस्तकः भृकुटि व कण्ठस्य भागः अतीव वेगेन भ्रमन्निव अलगत्। मम दन्ताः अकर्षितोः जाताः। जिह्वा तालुकया संपृक्तो जातः। अहम् अतीव कम्पितो व्याकुलो जातः। परम पू0 गुरूदेवं स्मरन्नेव सर्वम् शान्तो जातः।

एकदा ध्याने मामलगत् यत् परम पू0 गुरूदेवः गृहे समागताः सन्ति। सर्वानन्तरमन्ते मया यदा तं नमस्कृतः तदा तेन मस्तके हस्तंमरक्षत् अनेन मम मस्तके अतिवेगन कोलाहलो प्रारम्भो जातः। एकदा बहुदूरपर्यन्तं प्रातः समये भ्रमित्वा आगमनकाले स्वकीय वेगेन राजमार्गस्य मध्ये अगच्छम्, तादृशेव केन मां बलं दत्तः अथ च तत्काल एव एको ट्रकयानं मम सामीप्येन निःसृतः। मया परितः दृष्टिपातो कृतः, तत्र कोऽपि नासीत्। परम पू0 गुरू देवस्य दयया मम प्राणस्य रक्षा अभवत्।

पूर्वमहं मात्र 20 मिनटं एव ध्यानं कर्तुमुपविशतिस्म, परं इदानीं गुरूकृपया त्रिघटिकापि एकाग्रतया उपवेशने सक्षमोऽस्मि। मम पूर्ण विश्वासोऽस्ति। यत् परम पू0 गुरूदेवस्य असीम कृपया भविष्येऽपि मम जीवनः सफलं वा पुण्यभयो भविष्यति।

53–श्रीमती सत्यवती खरे

श्री जानकी प्रसादजी मिश्रस्य गेहेऽहं होम्योपैथी नामकस्य व्यावहारिक ज्ञानम् प्राप्तुं तस्य औषधालये गतवती आसम्, सः अस्मिन् मध्ये परम पू0 गुरू देवस्य विषयेपरिचर्चां कुर्वन्नासन्। अत एव मम मनसिअपि परम पू0 गुरू जीवस्य दर्शनं प्राप्तु अभिलाषा जागृता।

सौभाग्यवशात् तस्मिन् दिवसे परम पू0 गुरूदेवः शहडोल श्री मिश्रस्य गृहे विराजमानाः जाताः। अनेन प्रकारेण मां गुरूदेवस्य दर्शनस्य परम सौभाग्यंप्राप्तः। तेषा दर्शनं कृत्वा मम सिरः श्रद्धया तस्य चरणेषु प्रणतो जातः। अहं प्रतिदिनं तस्य दर्शनार्थं

गतवती आसीत्। एकदा अवसरं प्राप्य मया दीक्षां प्राप्तुं अभिलाषा प्रकटिता, यां तेन स्वीकृतः। अनेन प्रकारेण 1 अक्टूबर 1981 तदनुसारः गुरूवासरमष्टमीं परम पू0 गुरूदेवेन मां दीक्षां प्रदत्तः, दीक्षाप्राप्त्यनन्तरं मामवर्णनीयः आनन्दस्य प्राप्तिर्जाताः। ममोपरि मादकता सदृशरावृत्तो जातः। परम पू0 गुरूदेवस्य मार्गदर्शने मया साधना प्रारम्भो जातः। अपर दिवसेन साधनायां मां इयत् आनन्दमागन्तुमलगत् यत् नेत्रं उद्घाटयितुं मम इच्छा एव न भवतिस्म। पञ्चदश दिनानां पश्चात् एव मामद्भुत अनुभवो भवितुमलगत् यः एतादृशः अस्ति। सिरः मस्तकः तथा कण्ठस्य मांसपेशि समुदायेषु अत्यधिको भारयुत शुष्कः रूक्षः प्रभावः भवितुंमनुभवो जातः। समस्त शरीरे विशेष उष्णता सदृशः लगतिआसीत्। पादतलैर्नीत्वा शरीरे यत्र कुत्रापि पिप्पलिकायाः चलन्निव अनुभूतिः भवतिस्म। साधना कर्तुमिच्छा एभिरनुभवैः सार्द्धं प्रबलतरा वृद्धिर्गता। पुनश्तु गुरूदेवस्य स्मरण मात्रेणैव पिप्पलिकानां गमनस्य अनुभूति भवितुमलगत् आसीत्। एकदा रात्रिकाले शवासने यदाहं ध्यानं कुर्वन्नासम् मम पाद तलेषु ईषत् कमपनःभवितुमारभत्। किञ्चिद् क्षणानन्तरं पादाः गतिहीनाः जाताः। उदरे नाभि स्थाने कठोरता जाता। वायुः तीव्र गत्या नाभेः नीचैः तथा नीचैर्भागात् नाभि पर्यन्तं सार्द्धंमागच्छति गच्छतीव प्रतीता जाता। एतादृशरलगत् यथा कम्पनः ह्रदये न भूत्वा कण्ठेषु भवति तथा कण्ठमपि क्रमशरवरूद्धः भवतिस्म गच्छति च नेत्रेषु अंधकारः वा धूम्र सदृशरावृतः आसीत् तथा मुखः विकृतइव संकुचिता भवन्नासीत्। मांमतीव व्याकुलता भवन्नासीत् परं अनवरत परम पू0 गुरूदेवस्य स्मरणं कुर्वन्यासम्। अकस्मादेव गेहस्य केन व्यक्तिना प्रकोष्ठस्य विद्युत प्रज्वलनेन कारणात् मम ध्यानः भंगो जातः, परं अस्यानन्तरमहं पूर्णः स्वस्थो आसम्।

अनेन प्रकारेण किञ्चिद् दिनानन्तरं एकदा मध्याह्नेऽहं नेत्रयारावृत्तो कृत्वा गुरूदेवस्य स्मरणं कुर्वन्नासम् तदाद्योतमानः वृतः अधस्तात् ऊपरि गच्छन् दृष्टिगोचरोऽभवत्। तदुपरान्त चन्द्रमायाः प्रकाशस्य दर्शनं जातम्। परम पू0 गुरूदेवः

प्रत्यक्षरूपेण मामाशिर्वादः ददाति एतादृशरनुभवो जातः। अस्य अनुमानतः एक सप्ताहं पश्चात् ध्यानावस्थायां मामेतादृशरलगत् यथा कश्चिद् बीचि इव मेखलायाः कटिप्रदेशात्ः नीचैः उतिष्ठो भूत्वा रीढ़स्तम्भस्य साहाय्येन सिरोपरिभागात् आगच्छन्निव भ्रूमध्ये अवरूद्धो जातः। एतादृशरनुभवो मां कियत् वारमभवत्। चन्द्रमायाः प्रकाशश्चापि स्पष्टं जातम्। अण्डाकाररूपे ज्योतिः कदा ऊपरितः नीचैः तथा कदासमीपतः गच्छन्निव दृष्टिगोचरो जातः। एकदा ध्यानंकुर्वन् काले मामलगत् यत् अकस्मात् मस्तकाद् प्रकाशस्य किरणानि निःसृतोऽलगन्। तदनन्तरं प्रकाशस्य एकोद्युतिमान अण्डाकारः प्रकटितः यस्याः भूमिः पीतवर्णस्यासीत् तथा श्वेताक्षरैः द्वित्रिपङि.क्तषु किञ्चिद् प्रलेखितो आसीत्। यमहं न पठितुं सक्षमा। असयानन्तरें प्रकाशस्य वृहद्—वृहद् अण्डाकृतिः प्रस्फुटिता। एको दीर्घाकास्य वृतः अस्यानंतरं प्रकटिता जाता। यस्यां कापि आकृतिः न निर्मिता भवन् आसीत्, परं कस्यापि आह्वानेन मम ध्यानः भंगो जातः। अस्यानुभवस्य सप्ताह पर्यन्तं पश्चात् स्वास्थ्यं समीचीनं न भवितुं कारणात् मस्तकाद् पाद पर्यन्तं कम्बलमावृत्य लेटिता आसम् नेत्रयोर्निमीलिता पू0 गुरूदेवस्य स्मरणं प्रारभत्। अस्यानन्तरं प्रकाशस्य वृत्ताः प्रस्फुटनं समारभत् पुनः एकः बृहदाकार.—वृत्तस्य मध्ये एकः पुरूषाकृतिः उत्थितो जातः।

एषः एकगौरवर्णस्य वृद्धो महापुरूषः आसीत्। येन श्वेत धौत वस्त्रं अथ च ऊर्ध्व वस्त्रम् कंचुकी धरितो आसीत्। श्मश्रूः वा (चिबुकः) कर्तितो आसीत्। तस्य अतीव सौम्य रूपमासीत्। तस्य दर्शनेन मां आश्चर्य वा अलौकिक आनन्दस्यानुभूतिः जाता। मया नेत्रयो उन्मील्यापि द्वि—त्रि मिनट पर्यन्तं तस्य दर्शनं कृतम् पश्चात स अन्तर्धानो अभवत्। मया परमपूज्यगुरूदेवस्य श्री चरणयोः प्रणामं कृता। एतद्तेषां आशीर्वादस्य फलमस्ति।

अस्याः घटनायाः किञ्चिद् दिनानन्तरं एकारात्रावहं विश्रम्य ध्याने निमग्नो आसीत्, यत् दृष्टिगोचरोऽभवत् , परम पू0 गुरूदेवः उपविष्टोऽस्ति अथ च अहं

चरणस्पर्शः कुर्वन्नस्मि्। मया तस्य चरणद्वयोः धृत्वा स्वकीय शिरसिसमर्पितः कृतः। मां शिरंउत्थापयितुमिच्छा नासीत् चरणेन मां ज्योतिः निःसृता दृष्टिगोचरो अभवत्। स्वर्णिम् वर्णस्य गोलायां स्वर्णिम् ट ऊॅकारस्य दर्शनं जातम्। पुनः सीता रामस्य चित्रं प्रकटितोऽभवत् अथ च सर्वोअन्तर्धानो जातः। एकदा उपविश्य साधना कुर्वन्त्वसरे मामेतादृशरलगत् यथा पृष्ठे प्रकम्पनम् इव भवति। नेत्रयाः अग्रे प्रकाशस्य पिण्ड़गमनागमनं जातम्। किञ्चिद् पश्चात् पादतलभागेषु ईषत् कम्पनः भवितुमलगत्, पुनः कटि पर्यन्तं भागः शून्यो जातः। समस्त शरीरे गहन शान्तिः आच्छादिता (सन्नाटा) तथा शरीरमेकं मांस पिण्डस्य सदृशः लगितुमलगत्। एतादृशरलगत् यथा शरीरं ऊपरितः अधरेस्थितोऽस्ति। मां व्याकुलता भवितुमारभत्। परन्तु पू0 गुरूदेवस्य स्मरणं कुर्वती आसम्। ध्यान समाप्ति अवसरे पूर्णतः स्वस्थ्योऽआसम्। एकदा ध्यानकुर्वन् काले परितः (गुलाबी वर्ण) ईषत्रक्तिम्वर्णस्य प्रसृतस्य अनुभूतिः जाता। अस्यानन्तरं पीतः ***तथा*** *पुनः गहनरक्तिम् वर्णेन आच्छादितो जातः। अस्यां गौर वर्णस्य पीत वस्त्रधारी स्त्रीपुरूषयोराकृतिः प्रकटिता जाता। उभयो स्वरूपं अस्पष्टः आसीत्। अस्यानन्तरं भारतस्य मानचित्रमध्ये पीत ऊॅकारस्य दर्शनं जातम्।*

गुरू पूर्णिमा सन् 1982 ईस्वीं पू0 गुरूदेवस्य चरणेषु दर्शनं जातम्। दक्षिण चरणात् प्रकाशस्य रेखा निःसृतो दृष्टिगोचरोऽभवत्। पुनः समारोहस्य मध्ये केन व्यक्तिना गुरूदेवस्य तिलकं कर्तुं दृष्टिगोचरोऽभवत्। अस्यानन्तरं हरतालिकायाः दिवसे कस्मात् कारणात् मम मनः दुःखितो आसीत्। साधनायाः समये कस्मिंश्चितस्य शब्दं श्रुतः। साधना सर्वेषुव्रतेषूत्तमोऽस्ति अस्यां रात्रौ यदा गुरूदेवस्य स्मरणं कुर्वती आसम् तदा तु किञ्चिद् क्षणानन्तरमेव एका मूर्तिः सम्मुखे समुपस्थिता जाता। नेत्राणि बृहद्–बृहद् तथा नासिकायां नाथआभूषणं धारण कृतासीत्। मामलगत् यत् कस्यायाः देव्यारेवमूर्तिरस्ति। तदा मस्तके तृतीय नेत्रोऽपि दृष्टिगोचरो जातः। द्वि नेत्राभ्यां ज्योतिः निःसृतो आसीत्। तदनन्तरं तृतीय नेत्रमपावृता जातम्। अथ च तेन नेत्रेणापि

ज्योतिः निःसृता पुनः सर्वे अन्तर्धानाः जाताः। मध्ये –मध्ये पू0 गुरूदेवः कदा आकाशे चन्द्रमा वा तारकाः अथ च कदा विभिन्न वर्णस्य पिण्डाः दृष्टिगोचराः भवन्ति।

मम साधना सततं प्रचलति। मां पू0 गुरूदेवेषु पूर्ण आस्था वा विश्वासोऽस्ति। कष्ट काले तस्य स्मरण मात्रेण कष्टानि दूरी भवन्ति। सः मम माता –पिता व गुरूः अस्ति। मां प्रतिपलं परम पू0 गुरूदेवस्य सार्द्धं भवितुमाभासो निर्मितो भवति। साधनायां उत्तरोत्तरः प्रगत्याः तीव्रा लालसाऽस्ति। परम पू0 गुरूदेवस्य श्री चरणेषु प्रणामः।

54– श्री उमाकान्त कुटेमाटे, *पुलिस स्टेशन वर्धाके पास ,महाराष्ट्र*

अहं वर्धायाः प्रमुख मार्क्सवादी कार्यकर्तासु एकः आसम्। कम्युनिस्ट पाट्र्यां प्रवेश प्राप्त करणेन पूर्ण रूपेणाध्यात्मिक प्रवृत्तेरासम् पूजन पाठ कुर्वन्नासम्। वास्तविक रूपेण मूर्तिपूजया कस्यापि प्रकारस्य लाभे न मिलतिस्म। माम् कति अन्यायानां वा काठिन्यानां संघर्षं कृतम्। अतः मूर्तिपूजां त्यक्तवानहं पूर्ण निरीश्वरवादी भूत्वा कम्युनिष्ट पाट्र्यां सम्मिलितो जातः। मम विचारणे एका वार्ता तु आगतासीत् यत् पेस्तरस्य देवता पूजनेन किमपि न भविष्यति। आत्मारूपी शालिग्राम एव वास्तविके देवतास्ति। मया निःस्वार्थ भावेन दरिद्राणां सेवा प्रारम्भं कृतम्। मम त्रि पुत्रीणां विवाहोऽपि बिनां विशेष काठिन्येन सम्पन्नो जातः। अस्यानन्तरं मया कम्युनिष्ट पार्टीमपि परित्यक्तः। इदानींमहं निराशो भवन्नासम्। बाबा साहेब तकवालेन मम पूर्व परिचयोऽआसीत्। श्री भीमा शंकर शास्त्री जीवस्य यः मम स्नेही आसीत्, कथनानन्तरं पुनः श्री तकवाले महोदयस्य पार्श्वे स्वकीय काठिन्यं नीत्वा गतः। अहं श्री तकवाले महोदयेन दीक्षा ग्रहणं कृतवान् परम पू0 सद्गुरौ असीमा निष्ठा समर्पयन् मया साधना आरम्भं कृतम्। तस्यैव परम कृपया मां दिव्यानुभूतयः प्राप्ताः जाताः।

एकदा ब्रम्ह मुहूर्तकाले अनुमानतः त्रि वादनेऽहं उत्तानं सुप्तः आसम्। मम दृष्टिः आकाशे स्थिता आसीत्। मां गोलाकारः प्रकाश पिण्डः दृष्टिगोचरोऽभूत्, यः द्वि भागेषु विभक्तो भूत्वा पुनः संमिल्य, लुप्तो भूत्वा पुनः प्रकटितोभवतिस्मः। यदा सः प्रकटितो भवतिस्म तदा तु प्रकाशः नेत्रेषु आक्षिप्तेन भारः सदृशः अनुभूयतेस्मः। क्रमोऽयं त्रि चतुर्थ मिनट पर्यन्तमचलत्। अनुमानतः द्विसप्ताहानन्तरं पुनः एकारात्रि त्रि या चतुर्थ वा वादने मम निद्राभंगो जाता। आकाशे दृष्टिपातः अभवन एव अकस्मात् श्वेतद्युतिमान् चन्द्रमावलोकितः यः दृष्टः वालुप्तो भवति स्म। क्रमोऽयं किञ्चिद् क्षण पर्यन्तमचलत्।

एका विचित्रा घटना मया सह घटिता दि0 30–1–1982 तिथौ मम अनुजेन आत्महत्या कृतवानासीत्। रात्रावेकादशवादनावसरे तस्य मृत्योरनन्तरं तस्य प्रेतात्मा मम भगिन्याः गृहे गता। यः यवतमाल मण्डलस्य रालेगॉव नामक ग्रामे निवसतिस्मः। तत्र गत्वा तेन भगिन्योक्तम्। अहं त्वां नेतुमागतोऽस्मि दिनाकं 7/5/1982 ईस्वीं मम भगिन्याः अपि मृत्युः जाता। दिनांक 15/5/1982 ईस्वींमहं स्वकीय मित्रस्य पुत्रस्य विवाहे सम्मिलितुं नागपुरं गतवान्नासम्। तत्र मामाश्चर्यस्य सीमा नासीत् यदा मां स्वकीय तस्य भ्रातुः प्रेतात्मा दृष्टिपातोऽभवत्। तेन मां स्वकीयेन सार्द्धं नेतुमिच्छा प्रकटिता। मात्र इयतीनैव अपितु सः हस्तं धृत्वा आकर्षितुमारभत्। तत्कालः मया सद्गुरोः स्मरणं कृतम् , येन अविलम्ब सा प्रेतात्मा अपलायत्। अस्यानन्तरं एतादृशस्य काऽपि अप्रियः घटना नाभवत्। मम पुत्री सौभाग्यवती विजया वाढेकरः कल्याणस्य समीपे उल्हास नगरे निवसति। मत्कनिष्ठ पुत्रस्य नामः रमेशः आयुः 21 वर्षस्य स्वकीय भगिन्याः गेहे निवसति। दिनांक 20–11–1982 ईस्वीं सायं काले सार्द्धं पञ्च वादनावसरे मत्पुत्र्या सप्त वर्षायुः बालिकायाः नामः कु0 वर्षा प्राग्ङणे क्रीडतिस्म। कश्चिदज्ञात् व्यक्तिना तं नीत्वा पलायितः। सा चत्वारि दिनानि पर्यन्तं अज्ञातः आसीत् मन्नत मान्यता देवाराधनां कृतासीत्, किन्तु क्वापि संकेङतो नामिलत। मत्कनिष्ठ पुत्र

रमेशः यः पू0 गुरूदेवं पूजनीयो मन्यते तेन उत्तेजनापूर्वकं अवहेल्य पू0 गुरू जीवस्य छाया चित्रस्य समीपे उपविश्य गुरूदेवेन कथितम् यत् द्वि दिवस्य मध्ये मम भगिनी पुत्र्याः अन्वेषणं कारयतु। मया भवन्तअस्माकं रक्षार्थमेवात्र संस्थापितोऽस्ति। आश्चर्यस्य वार्तेयं यत् दिनॉकः 24/11/1982 ईस्वीं अपरदिवसे एव सायं कालस्य अष्ट वादनावसरे समाचारं नीत्वा एको व्यक्तिः समायातश्चावदत् यत् भवतः वालिका मम मातरं कर्जन लौहपथगामी रेलस्थानके चिटिका गृह समीपे रूदनमिलत्। सा वालिका मम गेहं ग्राम नेरले (यस्तु उल्लास नगरस्य पञ्चाशत् कि0 मी0) दूरमस्ति सुरक्षितोऽस्ति। भवान् तां आनेतव्यम् अथ च सा वालिकामिलत्। संयोगवशादहं वर्धायाः पूना अन्य कार्येण गत्वानासम् मत्पुत्रीं मिलितुमुद्देश्येनाहं दिनांकः 30/11/1982 ईस्वीं मुल्हास्नगरे प्राप्तानन्तरं मामुपरोक्त घटनायाः संकेङतोऽमिलत्। दिनांकः 30/11/1982 ईस्व्याः रात्रौ सौभाग्यवती विजया वाढेकर यस्तु पू0 गुरूदेवं न दृष्टा, यां स्वप्ने दृष्टान्तो जातः। पू0 गुरूदेवः स्वप्ने आगत्य मत्पुत्रीमवदत्–'' पुत्री त्वं परदेशे निवससि, इयत व्याकुलो भूत्वा किं करिष्यसि । इदानींमहमत्रागतोऽस्मि, मम संरक्षणस्य कार्यं तव गेहे भविष्यति, तव बालिका मम कृपया मिलिता। अस्यानन्तरमपि तव गेहस्य जनाः रूष्टाः भवन्ति इदानीमग्रेऽपि यदा चावश्यकता भविष्यति तु मामुपरि क्रोधितो भूत्वा एव मामाहूयाहंमवश्यमेवागमिष्यामि ''।

द्वितीय दिवसे मत्पुत्र्यामयापृष्टः यत् कथं भवतः गुरूदेवः हिन्द्यां वदति ? मया आम् कथने तया पूज्य गुरूदेवस्य रंगरूपस्य पूर्णः वर्णयन् उपरोक्तः स्वप्न दृष्टान्त श्राविता।

दिनांकः 31/11/1982 ईस्व्याः सायंकाले भोजनान्तरमहं पुत्र रमेशः तथा पुत्री चि0 सौभाग्यवती विजया वार्तालापं कुर्वन् गृहे उपविष्टा आस्मः। मत्पुत्री चि0 सौ0 विजया रात्र्याः नव वादने उत्थित्वा लघु शक्ङालये गता। गेहस्यानुभागे अनावृतः क्षेत्रे आंग्लदेशीय अम्लिकायाः वृक्षमस्ति। मम पुत्री गेहस्य पृष्ठभागेऽवस्थिता, एव यत्

तस्मिन् वृक्षे एका मानवी आकृतिः अवलोकिता। सा आकृति मत्कनिष्ठ भ्राता यस्तु एक वर्ष पूर्वं कूपे आत्महत्या कृत्वा मृतः आसीत्। तस्य प्रेतात्मासीत्। मत्पुत्री भयभीतो भूत्वा कम्पितुमलगत् तथा च तस्याः मुखादकस्मात् निःसृतः यत् गुरूदेवः मां रक्षय, तस्मिन् क्षणे एव सा प्रेतात्मादृश्यो जाता।

तस्मिन् दिवसे रात्र्याः मत्पुत्री अर्द्ध निद्रायामासीत् तदा तु तां भूमौ काष्ठ ताडनस्य ध्वनिरागच्छतिस्मः। मम पुत्रीः शोचतिस्म यस्तु गोरखा संरक्षयति तस्य लगुऽस्य ध्वनिरस्ति किन्तु किञ्चिद् क्षणानन्तरमेव पू0 गुरूदेवः आगत्य काष्ठं भूमौ धृत्वावस्थितो जातः—'' तेन पुत्र्या कथितुमारभत् कथितः, मया त्वां ह्यः एव कथितः यत व्याकुलतायाः कापि आवश्कता नैव''। इयती व्याकुलतायाः कथं भविष्यति अत्रास्म्यहम् त्वां व्याकुलतायाः कापि आवश्यकता नैव अथ च हसित्वा हस्तमुपरिउत्थापयन् आशीषं प्रदत्वा गन्तुमलगत् गमन काले पू0 गुरूदेवः अम्लिकायाः वृक्षस्य समक्षे अवलोकयन् अवस्थितः अथ च हस्तमुपरि कृत्वा वृक्षमवबोधितः। आश्चर्यस्य वार्तेयं यत् गुरूदेवस्य हस्तास्यागुङलिभिरग्निः निःसृत्य पूर्णवृक्षमग्न्या प्रज्वलितुमारब्धत् अथ च ज्वाला निःसृतुमलगत्। सः प्रातः पञ्च वादनस्य समयः आसीत्। दिनांकः 1/12/1982 ईस्वी मत्पुत्रीमर्द्धनिद्रायां स्थितौ भवतः अतीव विशाल रूपस्य दर्शनं जातम्। वर्धायां मम ज्येष्ठ पुत्रः चि0 मदनं पुत्री उत्पन्ना जाता। यदा सा त्रि दिवसस्या भवत् तदा तस्याः मल—मूत्रं अष्टविशतिं घण्टावरूद्धा जातम् आसीत्। सूतिका गृहे चिकत्सकेन पूर्ण रूपेण चिकित्सा कृता, किन्तु मल मूत्रं प्रारम्भं नाभवत्। मम कथनोपरिचिकित्सकेनोक्तं मयां पूर्ण रूपेण चिकित्सा कृतास्ति। इदानीं किं करणीयम्, भवान् विचारयताम्। अन्ततः मया पू0 गुरूदेवस्य गुरू पूजायाःऽचरणामृतं तथा छायाचित्रस्य पुरतः धूपवत्याः भस्मः प्रेषित। चरणामृतस्य द्विबिन्दवः नव जात बालिकायाः उदरे गमनस्य पञ्च निमेषस्यानन्तरं मेव मलमूत्रं प्रारम्भं जातम्। अद्य

जननी शिशुश्चउभौ, पू0 गुरूदेवस्यासीम कृपया ते स्वस्थ्यौ स्तः। अनेन सार्द्धंमेव मां किञ्चिदाध्यात्मिकः दृष्टान्ताः समागताः सन्ति। ते निम्नलिखिताः सन्ति––

दिनांकः 27/1/1983 ईस्वीं स्वप्नेऽवलोकितः, यत् पू0 गुरूदेवः श्री बाबा साहेबतकवाले महोदयस्य गेहे विश्रामः कृतोऽस्ति अथ च, अहं पू0 गुरूदेवस्य हस्त चरणयोः सेवा करोमि। अकस्माद् पू0 गुरूदेवोत्थितश्च तेन शिरसि चरणेन प्रहारः कृतः। अस्य समत्वं षष्ठदिनानन्तरं दिनांक 3/2/1983 ईस्वीमपरः स्वप्नदृष्टान्तः अभवत् यत् अहं बाबा साहेब तकवाले जीवस्य गृहे गतः, तत्र कस्चिद् कार्यक्रमः आसीत्। बहबः स्त्री पुरूषाः एकत्रिताः जाताः आसन्। श्री बाबा साहेब तकवाले जीवः मां महालक्ष्म्याः प्रसादः प्रदत्तः। प्रसाद ग्रहणोपरान्तेः बहिर्भागे समागतः। मया आकाशस्य समक्षे आकाशंप्रति अवलोकितः यत् आकाशे एको वृहद् कृष्णाकृतेः मेघः समागतश्च तस्य कोणेन विद्युतः प्रद्योतितः सः द्युतयन् विद्युतः एको प्रज्जवलितः तारं निर्मित्य बहिसमागतः अथ च चक्राकारः निर्मितः। स्वर्णिम वर्णस्य सः चकः आकाशात् तीव्रगत्याः भ्रमन् समागतश्च, मम नाभ्यादधः भागे उदरेण संश्लेश्य लुप्तो जातः। तस्मिन् दिवसे मम मनः शान्तः प्रशन्नश्चासीत्।

द्वितीय दिवसे दिनांकः 4/2/ 1983 ईस्वींमहं नित्यनियमानुसारेण प्रातः पञ्च वादनावसरे साधनायामासम् यदकस्मात् ध्याने सूर्यस्य दर्शनं जातम्। तद्दर्शनं मात्रः एको अर्द्धं पलस्य आसीत्। तत्तु इयत् प्रखरः प्रकाशमानः आसीत् यत् मां तद्ः प्रकाशं द्रष्टुमशक्योऽभवत्। तेन प्रकाशेन नेत्रौ अवरोधितौ। ध्यानावस्थायां मां प्रतिदिनं सूर्यस्य दर्शनं भवति। सद्गुरोः कृपया चिन्ता वा निराशाभ्यः दूरं मम मनः नितातं शान्तो जातोऽस्ति। ममाचलः विश्वासोऽस्ति यत् सद्गुरोः परम कृपया ध्यानमार्गेऽहं प्रगतिं प्राप्स्यामि।

55–श्रीमती शान्ता उमाकांत कुटेमाटे *(धर्म पत्नी, श्री उमाकांत कुटेमाटे , वर्धा)*

मम पतिः श्री बाबा साहेब तकवाले महोदस्य गृहे पू0 गुरूदेवेन दीक्षां प्राप्त आसीत्। पू0 गुरूदेवः यदापि वर्धायां विराजमानः भवन्नासीत्, अहमपि स्वपत्या सार्द्धं तस्य दर्शनार्थं गतवती आसीत्। दीक्षितः भवनानन्तरं मम पत्याः स्वभावे मां किञ्चिदन्तरो परिलक्षितुमभवन्। अस्मिन् मध्ये मम सम्पर्कः श्री काण्णवस्य परिवारेण अभवत् यस्य सम्पूर्ण परिवारः दीक्षितः आसीत्। इमानवलोक्य मम मनस्यपि अस्य कल्याण मार्गे चलितुमिच्छा जागृता जाता। मया परम पूज्य गुरूदेवस्य समक्षे स्वकीय इच्छा प्रकटिता फलस्वरूपः तेन सहर्षतापूर्वकं मामपि दीक्षां प्रदत्तवान्। प0 पू0 गुरूदेवस्य उपदेशानुसारेणाहं नियमित रूपेण साधना करोमि। किञ्चिद् दिवसान् मभ्यासानन्तरं भृकुटयो मध्य भागे मां चन्द्रमसः प्रभा मण्डलः अवलोकितः अस्य मध्ये पू0 गुरूदेवस्य चरण कमलः अवलोकितः। कदा–कदा स्टोपस्य अकस्मात् प्रज्वलनेन उत्थिवती ज्वाला सदृशः दृष्टिपातोऽभवत्। जीवने एतत् पूर्वमस्य प्रकारस्य कोऽपि अनुभव' न भवितुं कारणात् पूर्व–पूर्वमहं काचिद् व्याकुलताइव जाता। पत्या अस्मिन् विषये प्रष्टव्येन ज्ञातो जातः। यास्तुदिव्यानुभूतयः सन्ति। अस्यां व्याकुलतायाः कापि वार्ता नैवास्ति।

दीक्षा ग्रहणानन्तरेण मम मनः पूर्ण रूपेण शान्तः वा निश्चिन्तोऽस्ति। मम श्रद्धा युक्तः पूर्णः विश्चासोऽस्ति यत् पू0 गुरूदेवस्य कृपाशीर्वादेन साधनायां मां प्रगति प्राप्स्यति। गुरू चरणेषु नत मस्तक एव मम साधना प्रचलति।

56–श्रीमती रतन कोराने *धर्म पत्नी, डा0 के0 डी0 कोराने,*

एग्रामामी विभागाध्यक्ष वन विभाग देहरादून, उ0 प्र0

वर्धायां मम मातृभूमिः वर्तते। तत्र मम गृहे पू0 गुरूदेवः आगच्छतिस्म। एकदा सन् 1977 ईस्व्यां मम माता अस्वस्था जाता। अतः तया मिलितुमहं देहरादूनतः वर्धो आगतवती। अस्यां स्थितौ एकदा सन् 1977 ईस्व्यां मम माता अस्वस्था जाता। अतः

तया मिलितुमहं देहरादूनतः वर्धा आगतवती। अस्यां स्थितौ एकदा पू0 गुरूदेवः गृहे विराजितवान्। आध्यात्मिकः चर्चा प्रचलतिस्मः, यस्यामन्यजनाः स्व–स्व शंक्ङायां समाधानः पू0 गुरूदेवेन प्राप्नुवन्ति स्मः। मामपिलगतिस्म यदहमपि किञ्चिद् पृच्छानि किन्तु मया प्रश्नं कृतैव गुरूदेवः मां ऊँकारस्य विषये अवबोधितः। अस्मिन् विषये पू0 गुरूदेवेन यः अवबोधितः तस्य सारोऽयमासीत् यदस्यार्थः वाण्या नैव अवबोध्यते यस्तु अनुभवं कृत्वा द्रष्टुं वा अवबोधितुं विषयोऽस्ति। पू0 गुरूदेवस्य गमनानन्तरं तस्यां रात्रौ गृहस्य सर्वेजनाः निद्राधीनाः सञ्जाताः। निद्रायाः किञ्चिद् क्षणानन्तरं मां बहिर्भागस्य प्रकोष्ठस्य कपाटमपावृतस्य ध्वनिरभवत्। कुक्कुराः वेगेन बुकतुमलगत्। अन्तः भागे आगतः व्यक्तेः प्रकोष्ठे स्थितः झूलायां अवतिष्ठनानन्तरं मां बोधो जातः यस्तु गुरूदेवैव सन्ति, यः अद्य सायंमत्र आगतवानासीत्। मामधिको आश्चर्यो जातः यत् एषः इयतीरात्र्याः व्यतीते अत्र कथं समायातः। इदानीं अहं शोचति स्मः यत् अनेन मेलनीयम् न वा यत् सः पुनः परावर्तितो जातः। मां प्रकोष्ठस्य कपाटयोरवरूद्धस्य ध्वनिर्समागता। प्रातरूत्थित्वाहं यदेयं घटनावर्णनं स्वकीय भ्राता भास्करेण अकथयम् तदा तु सः चकितो जातः। तेन गत्वा पू0 गुरू देवेन अस्या सत्यमेव सत्यता परिक्षितः। अयं मम पू0 गुरूदेवस्य विषये प्रथममनुभवोऽस्ति। एषः कथमभवत् किमभवत् मात्र मयासार्द्धमेव कथमभवत्। पूज्य गुरूदेवः सत्यं सत्यमेव सुरक्षितः अयं प्रश्नः अद्यापि अनुत्तरितोऽस्ति। सत्योऽयमस्ति यत् पू0 श्री गुरूदेवाय मम मनसि श्रृद्धायुक्तः समादरोऽस्ति तस्य दर्शनेन मामसीमानन्दो प्राप्नोति यमहंशब्दांकितो न कर्तु समर्था। पू0 गुरूदेव द्वितीय दिवसे पुनः गृहे विराजमानः आसीत्। तस्मिन् दिवसे प्रणामकरणे तेन मां भगवती कथयित्वा सम्बोधितः। तस्यां रात्रौ शयनानन्तरं मया अनुभवो कृत यत् दूरे घण्टिकाः वादयन्ति अथ चाहं ओंकारस्य ध्वनिं श्रृणोमि। एषः सुखद वा मधुर अनुभवैः सार्द्धं पुनः देहरादूनं समागतवती।

57– श्री बाबूराव लोणकर *(लिपिक, वर्धा)*

श्री प्रभाकार राव पाण्डेयस्य माध्यमेन दिनांक 17/7/1981 ईस्वीमहं पू0 गुरू देवस्य संपर्के समागतः। किञ्चिदेवदिनानि पर्यन्तं तेषां नियमित दर्शनं कर्तुं अथ च तेषां पुस्तकं पठनानन्तरं दिनांकः 25/7/1981 ईस्वीमहं दीक्षां ग्रहणमकरोम्। दीक्षां प्राप्तस्य त्रय मासाभ्यन्तरे मां नेत्रौ निमीलने चित्रपटापरि आगमन्–गमन् दृश्यानामिव किञ्चिद् दृश्यो द्रष्टुमलगत्। ध्यानकुर्वन्नवसरे कदा सिंहः, कदा गुरूदेवस्य समीपे लक्ष्मी देवीः, कदा देवी गुरूदेवस्य मालामर्पयन , कदा मम सूक्ष्म प्रतिकृतिः पू0 गुरूदेवं नमन कुर्वन् दृष्टिगोचरो भवति स्मः। मध्ये–मध्ये रक्त वर्णस्य पञ्च वा सप्त मुखेन युक्तः व्याघ्रः दृष्टिपातोऽभवत्। कदा एतादृशोऽपि अनुभवो भवतिस्मः। यद् मम शरीरं लघु भूत्वा ऊपरि–ऊपरि उत्थितो गच्छति। ध्यानावस्थायां मां विभिन्न प्रकारस्य मोहक वर्णः यथा कदापि नावलोकित दृष्टिगोचरो भवतिस्मः। वर्षप्रतिपदायामहं स्वकीय ग्रामे अगच्छम्। तत्र रात्रौ दस वादनावसरे यदाहं अर्द्ध निद्रायाम् एवासम् तदा एकः अतिशय सुन्दरः तेजस्वी मनुष्यस्याकृतिः दृष्टिगोचरोऽभवत्। परन्तु तस्य शरीरस्य अर्द्ध भाग एव अवलोकयतिस्मः। तेन व्याकुलो भूत्वाहं गुरूदेवस्यास्मरण् कृतः। त्वरितमेव सा आकृतिः लुप्तो जाता तथा तस्य ध्यानानन्तरं मम निद्रा समायाता। अपरदिवसे प्रातः मां विभिन्न वर्णानां पट्टिका अवलोकिताः सूर्यस्य समक्षे अवलोकने सति सोऽपि मोहक वर्णस्य दृष्टिगोचरो भवतिस्मः। मध्याह्ने भवन्–भवन् एते लुप्ताः जाताः। मां सतत् गुरूदेवस्योपस्थितेः आभासो निर्मितः प्रतीयते। ध्यानकुर्वन् समये कदा–कदा पू0 गुरूदेवः दर्शनं ददाति। दीक्षा ग्रहणानन्तरे मम मनसः चञ्चलता शान्तोजातास्ति। समाधान एवमानन्दस्य वृत्तिः निर्मितास्ति। प0 पू0 गुरूदेवस्य शक्तिः मम रक्षिष्यति, अस्याः दृढ़श्रद्धापूर्ण विश्वासस्य कारणेनाहं स्वकीयजीवनं सुखपूर्वकेण यापयामि।

58– श्री चद्रिका प्रसाद मिश्रः *शहापुर, रीवा, म0 प्र0*

पू0 गुरूदेवः बिलासपुरतः शहडोलं विराजयति स्मः। मम भगिनीपतिः श्री भैयालालतिवार्या अवबोधितः यत् तं नेतुं चिटिकागृहे गमिष्यामि। मामपि तेषां दर्शनार्थं जिज्ञासा समुत्पन्ना। आवां चिटिका गेहात् पू0 गुरूदेवं श्री जानकी प्रसाद मिश्रस्य गृहे आनयावः। अस्मिन् मध्ये तस्य सम्पूर्णः व्यक्तित्व अथ च तस्य वार्तालापेन मम ह्रदयः अनेन प्रकारेण तस्य समक्षे आकृष्टो जातः मयासंकल्पः कृतः यद्धुनाहं पू0 गुरूदेवेन दीक्षां ग्रहणं करिष्याम्येव। मम अनुरोधे पू0 गुरूदेवः श्री गुरू प्रसाद पाण्डेयेन सार्द्धं शाह पुरमागतः। दीक्षा ग्रहणस्य पूर्वं धर्मं कर्ममहं किञ्चिदपि महत्वं न ददाति स्मः। दीक्षोपरान्त मम ह्रदये यत् परिवर्तनं जातम्, सः किं वा कथंमभवत् इदं मम ज्ञानस्य परमस्ति। लौकिक सुखानामपेक्षा दिनानुदिनं घटयति स्म। शारीरिकः वा आर्थिक समस्यायामपि क्रमशः निवारणमभवत्। गुरू सान्निध्येन मां (साइटिका) कष्टात् मुक्तिः प्राप्ता जाता। साधनायामवतिष्ठनेन पूर्वमुद्वर्त्तं प्रज्वलन्मेव ममोपरि नशा सदृशः आच्छादितोऽस्ति। साधना प्रारम्भ कर्तुं स्थितौ सद्गुरोः स्वरूपं तथा सूर्यस्य प्रभामण्डलः आगमन–गमन् सदृशः प्रतीयते। नेत्रौ अपावृतस्य प्रयत्नकरणेऽपि नेत्रौ उत्मिलितुं न शक्नोमि। स्व– स्वं विस्मरामि। कदा–कदा मस्तिष्के ध्वनिरपि श्रावयति। इयं नशामामचेतावस्थायां नीत्वा त्यजयति। किञ्चिद् समयानन्तरं अचेतनता समाप्त्यवसरे सर्वं सामान्यो भूयते अथ च सम्मुखे गुरूदेवः संस्थितः दृष्टिगोचरो भवति।

59– श्री उपेन्द्र मिश्रा *(सुपुत्र श्री मुद्रिका प्रसाद मिश्र, सतना ,म0 प्र0)*

अहं श्री चन्द्रिका प्रसाद मिश्रस्य माध्यमेन् पू0 गुरूदेवस्य सम्पर्के समागतः। पू0 गुरूदेवः शाहपुरं समागतवानासीत्। त्रिदिनानि दर्शनान्तरमात्म विभोर भूत्वा मया स्वयं

गुरू चरणेषु अर्पितवान्। दीक्षाग्रहणानन्तरं पू0 गुरूदेवस्य निर्देशानुसारः नियमितरूपेण साधनां करोमि। अनयापूर्वकेष्वपि देवी–देवतासु विश्वासा नासीत्। गुरू चरणेषु समर्पितानन्तरं सर्वप्रकाराणां कष्टानां बिना विचलिते भूत्वा प्रत्यक्षी कर्तुं समर्थो भवामि। कमलवत्चरणानां कृपया आपत्तयः स्वयमेव दूरंपलायते। गुरोः स्मरणाद् एकोहरित वर्णस्य रेखा नेत्राणां सम्मुखे प्रकटयति स्मः। यः पश्चात हरित गोलाकार रूपे परिवर्ततो भवति भूयतेस्मः। ध्यानावस्थायां पृष्ठे प्रकम्पनाः अनुभूयतेस्म। गुरू चरणानां दर्शनं ध्यान कुर्वन्नवसरे कियद्बारं भवन्ति। लोभस्तथा क्रोधे नियन्त्रितुं समर्थोऽस्मि, तथा मानसिक शान्तेरनुभवं करोमि। साधना कुर्वन्नवसरे पिप्पलिकानां गमनस्य तथा आभ्यन्तरे वानरः सदृश कूर्दनस्य व शरीरे गहनतायाः आभासो भवति। स्वर्णिम प्रकाशः किञ्चिद् समयं स्थिरीभूय अदृश्यो भवति।

एकदाहं विभत्सतापूर्वकं प्लीहा रोगेणग्रस्तोऽजातः आसीत्। अकस्माद् पू0 गुरूदेवः शहडोलं समागतः। मया तत्र गत्वा तमुक्तम् यत् मम स्थितिः एतादृशी अस्ति, वाचिकित्सकः मां चिकित्सा गृहे प्रवेष्टुं विचारयन्ति। तेन मामाशीषः प्रदत्तवान् अथ च बिना कस्यापित् औषध्या मम रोगोदूरगतः। गुरू कृपया इदानीमहं स्वस्थं एवं आत्मबलेन परिपूर्णोऽस्मि।

60– श्री मुद्रिका प्रसाद मिश्रः *(शिक्षक वेकंट हायर सेकंडरी स्कूल न0 1, सतना म0 प्र0)*

पू0 गुरूदेवस्य चर्चामहं स्वकीय भगिनी पतिः श्री भैयालाल तिवार्या सन् 1974 ईस्वीतः श्रृण्वन्नागच्छतिस्म। तस्यकृपयासन् 1976 ईस्व्यां गुरूवरस्य दर्शनमपि जातम्। अस्मिन् वर्षे एव द्वौ अनुजौ दीक्षां गृहीतौ किन्त्वहंजड़अस्य समर्थनं न कृत्वा विरोधः एव कुर्वन्नासम्। सन् 1980 ईस्व्यां सर्प दंशस्य विषेणाहं मृत्योः समीपे एव

प्राप्तवान्नासम्, किन्तु पू0 गुरूदेवस्य तस्वीरस्य चरणामृतं मां प्रदतवान्। येनमां जीवन दानं प्राप्तः। अस्याः महतीघटनानन्तरमपि मम मनसि किमपिपरिवर्तनं नाभवत्।

सन् 1980 ईस्व्यामहं शासकीय वेकंट आदर्श उच्च्त्तर माध्यमिक विद्याालये लेखा प्रभार्याः सामर्थ्येन कार्यकरणस्य कारणात् ग्रीष्मावकाशे गृहं गन्तुं नाशक्नोम्। अस्मिन् समयेऽहं (पेप्टिक अल्सर) पेप्टिक अल्सरेण विशेषः पीडितो आसम्। जीवनेनखिन्नो भूत्वा मृत्योः प्रतीक्षां करोतिस्मः। 6 जूनः 1980 ईस्वीं रूग्णावस्थायामेवाहं गृहमागच्छम्। अस्मिन् समये अकस्मात् लघु भ्रातृणा सार्द्धं पू0 गुरूदेवोऽपि गृहे समागतः। इमंसंयोगंमया हस्तैः न गन्तुं दत्तः वा 8 जून 1980 ईस्वीमेकादश्यावसरे मयापि दीक्षां गृहीतवान्। दीक्षोपरान्तंमया साधना तु प्रारम्भं कृतवान्नेव सार्द्धं मया तेषां चरणानां चरणामृतस्य पानकर्तुमपि प्रारब्धवान्। मां अल्सरस्य रोगेण पूर्णरूपेण मुक्तिः अमिलत्। गुरूदेवस्य सान्निध्ये आगमनानन्तरेण मूर्ति पूजायाः मम विश्वसो दूरं गतः। भौतिकता असार सदृशः प्रतीयते, प्रयासेन सर्वेषामुद्धारः सम्भवोऽस्ति, एतादृशी भावना जागृता भवितुमलगत्। येन विशेषः मानसिक बल प्राप्तो जातः। क्रोधः लोभः वा अविश्वासस्य प्रवृतयः नाशं भवितुमलगत्। गुरू स्मरणं कृत्वा प्रारम्भं कुर्वन् कार्येषु मां कीदृशी प्रकारस्य बाधा आगन्तुमाशंक्ङा न भवति। एकदा ध्यानावस्थायां मां ब्रम्हाण्डे अपूर्व ज्योतेः दर्शनं जातम्। पूर्वंज्योतिषिषु विश्वासः आसीत् किन्त्वधुना गुरूदेवस्यापेक्षा केष्वपिविश्वासोनास्ति, अन्ते श्रीगुरू चरणेषु जीवनार्पणम्।

61– श्री मती मनोरमा मिश्रः *(पुत्र वधु जानकी प्रसाद मिश्र,शहडोल म0 प्र0)*

मम परिवारस्यान्यसदस्यानां माध्यमेन पू0 गुरूदेवः मम गृहे दस वर्षेभ्य आगच्छतिस्मः। तस्य आगमनानन्तरमहं तस्य समीपे उपविश्य स्वोद्धारस्य चर्चा श्रुतवत्यासम्। सन् 1981 ईस्व्याः वार्तास्ति एकदा सायंक्ङाले मां विचित्र प्रकारस्य

शून्यतायाः अनुभवो भवितुमलगत्। एकान्ते उपवेशने सुन्दरं लगतिस्मः। पू0 गुरूदेवस्य स्मरणं कृत्वा शयितुमपुक्रमः प्रारम्भं कृतवती, किन्तु नेत्रेषु निद्रायाः अभावे आसीत्। नेत्रौ पिहितवती अपवृता सम्मुखे गुरूदेवस्यैवप्रतिमूर्तिः दृष्टा आसीत् सम्पूणा रात्रिंअस्यां स्थितावेव व्यतीता। अकस्माद् अग्रिम दिवसे गुरूदेव प्रातरेव पू0 गुरूदेवः विराजितवान्। मया व्यतितायाः रात्र्याः समस्त वृतान्त कथितवती अथ च दीक्षां ग्रहण कर्तुमिच्छां प्रकटिता। पू0 गुरूदेवेन निर्देशित मार्गेगत्वाहं सम्प्रतिस्वांसमस्त कष्टेभ्यो दूरमस्मि। ध्याना वस्थायां प्रतिदिनमहंमेकालौकिकानन्दस्यानुभूतिं करोमि। शरीरं प्रायः चेतना शून्यो भवति। ध्यानमग्ने गतेसति प्रकाशस्य महत बृहत् पिण्डः कदा अनेकानां बल्बानां एकैः सार्द्धं प्रज्वलनस्य सदृशः प्रकाशः कदा अस्मिन् प्रकाशे दिव्य पुरूषः किंवा कदा रजत सदृशः द्योतयन् सर्पः अथवा विभिन्न वर्णानां प्रकाशस्यापूरितः मणिआदयः दृष्टिगोचराः भवन्ति। कदा–कदा जाली इव सुरंगः परितः प्रकाशितः दृश्यते। एक बारं प्रकाशित पिण्डस्य आभ्यान्तरे ऊँ वा अस्य किञ्चिद् समयानन्तरं पू0 गुरूदेवस्य दर्शनं जातम्। अस्यानन्तरं तत्र प्रकाशितो विवरः प्रकटितो जातः वा पू0 गुरूदेवः द्विकराभ्यां तस्य विवरस्य समक्षे इगिंङतयन् अवलोकितः। यदापि नेत्रौनिमील्य पू0 गुरूदेवस्य स्मरणं करोमि, एकाश्वेतछाया उत्पन्नो भवति वा आनन्दानुभवो भवति। एक नशा सदृशः निर्मीयते।

मम ज्येष्ठ पुत्र्याः विवाहः निश्चित करणे मामतीव कष्टं भवतिस्मः। एकदा सर्वेभ्यः कार्येभ्यः निवृत्तो भूत्वा मया निश्चयो कृत्वा ध्यानं कर्तुमवतिष्ठम् यत् अद्य यावद् गुरूदेवः मम साहाय्यं न करिष्यति, तावदहं न उत्स्थाष्यामि। मात्र 40–45 मिनटः व्यतीतो जातः यत् मया अवलोकितः यत् मम सूक्ष्म शरीरः पू0 गुरूदेवस्य चरणेषु पतितोऽस्ति व ते मामशीर्वादं प्रददाति, अस्य द्विदिनान्तरमेव एकसम्पन्न परिवारस्य सुशील बालकेन सार्द्धं मम पुत्र्याः विवाहो सुनिश्चित जातः, सम्पूर्ण विवाहे कुत्रापि केषाञ्चिद् बाधा न समुपस्थिता। सम्पूर्ण समये मामेकः अज्ञात शक्तयाः पूज्य

गुरूदेवस्य एव आसीत् संयोगोऽमिलत्। कतिवर्षैः अहं सिरदर्दः व साइटिका नामक रोगस्य वेदनया पीडिंत आसीत्। श्री सद्गुरोः कृपया इदानीमहं पूर्णः स्वस्थोऽस्मि् मम पत्याः पदोन्नतिः गत क्रमशः दस वर्षैः अवरूद्धा आसीत्। सद्गुरोः सान्निध्येन इदमवरूद्धं कार्यमपि सुसम्पन्ना जातम्।

62– श्री प्रभाकर निलकण्ठ पाण्डेयः, *एडवोकेट, वर्धा*

मम मित्रः श्री तकवाले आपातकालीन स्थितौ शाही अतिथि रूपे नासिकस्य कारागारगृहे विश्रम्यतिस्म। तत्रतः तस्य पत्रं मम पार्श्वे आगच्छतिस्मः। एकपत्रे तेन प्रलेखितं यत् सः मुक्त्यर्थं पू0 गुरूदेंवेन मिलिष्यति। मामलगत् यत् तं कारागृहात् मुक्तिः प्राप्तव्यम्, किन्तु वर्धायां यदाहं प्रथमावसरे श्री तकवाले महोदयेन सार्द्धं पू0 गुरूदेवस्य समक्षे अगच्छम् तदा तु ज्ञाते सति प्राप्तं यत् तमाध्यात्मिकः मुक्तिः वाञ्छनीयम् कारागृहात् परित्यज्य आगमनानन्तरं श्री तकवाले प्रतिदिनं पू0 गुरूदेवस्य पार्श्वे समागच्छतिस्म। कदा–कदा अहमपि तेन सार्द्धं गच्छतिस्म। मया तदः ज्ञातुमिच्छा आसीत्। यत् सः एषः कथमाडम्बरं स्थापितोऽस्ति किञ्चिद् दिनानंतरं माम श्री तकवाले महोदयस्य स्थितौ परिवर्तनमवलोकितः। सः कदा–कदा अचेत सदृशः भूयतेस्मः। पुनस्तु मां इयं स्थितिः अन्य च शोभनमलगत् तथाहं तेन सार्द्धं नियमित–रूपेण गन्तुमारभत्। पू0 गुरूदेवेन मामपि ध्यानस्य प्रक्रियामवबोधितः। अनुमानतः: सार्धएक वर्षानन्तरं पू0 गुरूदेवेन ममानुभवं ज्ञातुमैच्छत्। मया कथितं यत् मां तु किञ्चिदपि अनुभवो न जातः। तर्हि तेनोक्तम्, तेन कथं किञ्चिद्पि अनुभवो न जातः। एतदुक्त्वा तेन उपविष्टुं कथितः। आश्चर्यवार्ता इयम् यदहं पूर्ण रूपेण एक घण्टां यावत् अचेत सदृशः अवस्थायामासम् अथ च मया शून्यावस्थायाः अनुभवो कृतः। तस्यानन्तरेणाहं ध्यान धारणा नियमित रूपेण कर्तुमारभत्। मम परिचिताः जनाः पृच्छन्तिस्म यद् अस्माभिः कै–कैः चमत्कारिकाः अनुभवाः प्राप्ताः जाताः। ममोत्तरोऽयं

यत् ममसदृशः कट्टरः साम्यवदी विचार धारयायुक्तः व्यक्तिः यदि सत्यं शिवं सुन्दरंस्य अन्वेषणे संलग्नश्चेत्, एतेन वर्धित्वाचमत्कारः अथ च किं भवितुं शक्नोति। यत् अद्य मनुष्यः संसारं जेतुं निरर्थकः प्रयासेषु निमग्नः अस्ति। स्वकीय अनेकाः सहयोगी निर्मित्य सः प्रयत्ने लगितोऽस्ति। अस्मिन् मार्गे गमनानन्तरं मया एष अनुभवो कृतः, यत् मानवः यदि स्वां जयतु तर्हि समस्त विश्वः विजयेनापिवर्द्धितोऽस्ति। अस्य जेतुं प्राप्तकरणार्थं तमेक विंदौस्थितो भवितुमावश्यकता वर्तते। इयं बिन्दुः कुत्रापि नैव अपितु स्वयं तस्यैवाभ्यन्तरेऽस्ति।

63– कु0 अर्चना प्रभाकर पाण्डेयः *(आत्मज श्री प्रभाकर पाण्डेय, एडवोकेट वर्धा)*

मातापितृभ्यां पू0 गुरूदेवेन दीक्षाग्रहणानन्तरमहमपि गुरू दीक्षामगृह्णाम्। एकदा प्रत्येक दिवसस्यानुसारेणाहं यदा साधना कर्तुमुपविष्टा तर्हि मया दृष्टा यत् प0 पू0 गुरूदेवः सम्मुखे उपविष्टोऽस्ति अथ च तस्य नेत्राभ्यां तेजस्वी प्रकाशस्य किरणाः निः सरन्ति। किञ्चिद् क्षणानन्तरं सः प्रकाशकिरणः एका ज्योतिः निर्मिता अथ च मम भृकुटयोर्मध्ये आगत्य स्थिरो जातः। तस्मिन् स्थाने मांकिञ्चित् स्फुरणमिव प्रतीतोऽभवत्। ध्यानं पूर्णं कृत्वा यदाहं उत्तिष्ठम् तर्हि मम मनः अतीव प्रफुल्ल आसीत्। तस्मिन् दिवसे पू0 गुरूदेवः अस्माकं सम्मुखेसमीपेव वा श्री तकवाले पितृव्यस्य गृहे स्थितो आसीत्। अतः मयाअत्र गत्वा तेन आशिर्वादंप्राप्तवती।

64– कु0 शोभा पारिख *(आत्मज श्री प्रेमचंद्र पारिख, मुंगेली, बिलासपुर छ0 ग0)*

दीक्षा ग्रहणानन्तरं मां ध्यानावस्थायां ॐ अर्द्धचन्द्रः गुरूदेवः महावीर स्वामी अथवा अनेक प्रकाराणां सुंदरं सुंदरं वर्णानि दृश्यंते। सूर्य ज्योतिरपि बारं–बारं दर्शनानि भवन्ति। एभि मां शारीरिक स्वास्थ्य लाभो जातोऽस्ति। मनः अतीव प्रसन्नो

भवति। दीक्षा ग्रहण पूर्वं मां भयं लगतिस्म:, किन्त्बधुना एतादृशः किञ्चिद् न भवति। अनेन प्रकारेण इदानीमहं शारीरिकः किं वा मानसिकः द्विरूपेण पूर्णः स्वस्थ्योऽस्मि।

65– कु0 अलका प्रभाकर पाण्डेय *(आत्मज श्री प्रभाकर पाण्डेय, एडवोकेट, वर्धा)*

मम परिवारस्य सर्वैः सदस्यैः पू0 गुरूदेवेन दीक्षा गृहीतवन्तः। प्रतिदिनं सायंकाले वयं साधना कर्तुं उपविशामः। ध्यान कुर्वन्नवसरे कदा–कदा मां एतादृशः लगति यथा मूलाधारेण काऽपि शक्तिः मां धक्का बल ददाति तथा च अपसारणः कृतः। भृकुटिर्मध्ये कदा–कदा बिहसन्निव ,स्फुरणमिव अनुभवो भवति। तर्हि कदा मस्तके भारपनतायाः वा ऊष्मता सदृशः प्रतीयते।

66– कु0 आशा पारेख *(आत्मज श्री प्रेमचंद्र पारिख, मुंगेली बिलासपुर छ0 ग0)*

मुंगेल्यां पू0 गुरूदेवः डा0 सुधा पाण्डेयस्य गृहे समागतः। मममाता व पितृणा तेन दीक्षा गृहीतः तौ अवलोक्य मममनस्यपि प्रबलाकाङक्षा जाता। मया पू0 गुरूदेवेन प्रार्थना कृता यत् मामपि किञ्चिद निर्दिश्यताम् येन तस्मिन् मार्गे मनुसृत्याहमपि किञ्चिद् अनुभवम प्राप्नुवम् अथ च भवतः कृपापात्रं निर्मितो भवामि। पू0 गुरूदेवेन मामपि दीक्षितवान्। तेन निर्दिष्ट विधिना अभ्यासं कर्तुमलगम्। ध्यान कुर्वन्नवसरे नेत्रौ निमीलयन्नेव माम पू0 गुरूदेवस्य दर्शनं भवति। सूर्योदयस्यदृश्यः विभिन्न वर्णेषु दृश्यते। एतादृशः लगति यत् यथा जले सूर्योदयो भवति। सूर्यस्यान्तर भागे कदा ''ऊँ'' वा कदा पू0 गुरूदेवस्य दर्शनं भवति। मध्ये–मध्ये गुरूदेवः तस्य चरणः, भगवान शंकरः, महावीर, दुर्गा देवी वा रामदेवजीवस्य दर्शनं भूयते। अगस्त 1982 ईस्व्यां मां सरस्वती देव्याः दर्शनं जातम्। तयामया किञ्चिदुक्तम्। मया तया मां प्रत्येक कलायां निपुणता प्राप्त्यर्थं वरदानस्य याचना कृता। एकदा बाबा रामदेवेनापि अश्वे आरूहय

दर्शनं दत्तः। मया तस्य समक्षे एकदृष्टया पश्यतिस्म। तेनापि त्रिशूलं भूमौ आरोपयन् किञ्चित् मम समक्षे अवलोकितः। कदा ध्यान कुर्वन्नवसरे आभ्यन्तरे पू0 गुरूदेवस्य शब्दोऽपि श्रूयते।

67—श्री प्रकाशचंद्र पारिख

मया पू0 गुरूदेवेन मुंगेल्यां दीक्षां गृहीतवान्। तेन निर्दिष्ट पद्धतयाहं नियमित रूपेण ध्यायामि। पू0 गुरूदेव मया भगवतःस्वरूपेण प्राप्तः अस्ति। पू0 गुरू देवस्य ममुपरि वा मम परिवारेषु च पूर्णरूपेण छत्र छाया वर्तते। तस्य आशिर्वादः सदा मया सार्द्धंमस्ति। ध्यानावस्थायां मां किञ्चिदनुभवो जातः यः एतादृशोऽस्ति। दीक्षाग्रहणस्य पञ्चदश दिनानन्तरं मां स्वकीय मृत्योरनुभवो जातः। दिनांकः 18/8/1981 ईस्वीं ध्यान कुर्वन् काले रात्रौ बारत्रयं तीब्र प्रकाशोऽवलोकितः। अस्य द्वि दिनानन्तरमेव भोजन कक्षे कस्यचिद् व्यक्तेः वार्तायाः अस्पष्ट शब्दंमश्रृणोम् जून 82 ईस्व्यां एकस्यां रात्रौ स्वप्नावस्थायां मया दृष्टा यत् एको पीत वर्णस्य सर्पः शय्यायां मम पार्श्वे अवस्थितोऽस्ति। सः मां बन्धनाय आवर्तयितुं मम समीपे समक्षे आगच्छति। अस्य अग्रिमदिने शयनकाले क्रमशः त्रिचतुर घण्टा पर्यन्तं कटकट—कटकटस्य ध्वनिः अश्रृणोम् , या ममाभ्यन्तरेण एव आगच्छतिस्मः अग्रिमारात्रिः मांमेकं तीव्र अपसारणं अलगत्, येनाहं खट्वायाः नीचैः अपतम्। द्विदिनानन्तरं प्रत्यूषे गुरूवाणीं श्रुतः— प्रकाशचन्द्रः त्वं नशायां भव, तव नशा कदापि न विच्छिन्नोभवेत्। एतेषामतिरिक्तः एकः विचित्रअनुभवः मां अक्टूबर 82 ईस्व्यां दुर्गाष्टमी दिवसे जातः। मया मध्याह्न काले विपणिकायां आसनेषु उपविश्य ध्याने मग्नः आसम्। अकस्माद् भारीपनः लगितुं प्रारम्भोऽभवत्। येनाहं तत्रैव विश्रमितः। अस्यानन्तरं किमभवत् किञ्चिद् ज्ञातं नास्ति, किन्तु यर्हि चेतना जागृता जाता तर्हि लघु भ्रातृणा उक्तंयद् भृत्या अर्द्ध घण्टा पर्यन्तं चायं पातुं भ्राता चायं, भ्राता चायस्य शब्दायतिस्मः। तं श्रुत्वा मामाश्चर्यो

जातः कथं यत् किञ्चिद् शब्दं श्रवणेन मम निद्रा भंगो भवति। इयती नैव स्वयं भ्रातृणा मां नोत्थिते पादागुष्ठां धृत्वा इगिंङतः। तेनोक्तं अस्यानन्तरमपि, अतीव प्रयासेन विंशतिपञ्चत्रिंशति मिनटः पश्चादहंमुत्थितः मुत्थित्वा लघूः शिशून् गम्भीरनिद्रयासंजागृत्य जागरित्वा उपविश्यन् सदृशः मुद्रायाभवतिष्ठम्। सर्वान् सामान्य भूते सति यर्हि मया एषः श्रुतः तर्ह्यहमतीव प्रशन्नः अभवम्। मदीयाक्रांङवक्षा सदा अस्मिन् मार्गे विशिष्ट स्थानंप्रापयितुमस्ति। अस्याः समाधयाः अवस्थां प्राप्त्यर्थं मया सदैव गुरूदेवेन प्रार्थना कृतासीत्।

68– श्री मती शान्ति बाई पारिख. *(धर्मपत्नी, श्री प्रकाशचन्द्र पारिख, मुंगेली)*

परम पू0 प्रातः स्मरणीयः महायोगीराज अन्तर्यामी पू0 गुरूदेवस्य कृपायाः मामसीमा शान्तिः प्राप्ता जाता। मया दीक्षोपरान्त नियमितरूपेण ध्यानं क्रियते। मयि श्री गुरूदेवस्य पूर्णा कृपास्ति। ध्यान कुर्वन्नवसरे मां पू0 गुरूदेवः वा कदा–कदा आबुनिवासी शान्तिविजयजीवस्य दर्शनं भवति। दिपावली सन् 1982 ईस्व्याः 8–10 दिनानि पूर्वतः एव ध्यानस्य नशा आरोहतिस्मः। दिपावल्याः रात्रिमामेतादृशः अलगत् यथामयि मस्तके कश्चिद् हस्तेन स्पर्शयति भीत्वाहं शब्दमाकार्षीः यत् कोऽस्ति। किन्तुविद्युतं प्रज्वाल्य अवलोकनेन ज्ञातो जातः यदन्यः कोऽपि तत्र नासीत्। मां त्वरितं आभासो जातः यत् सः तु गुरूदेव एव आसीत् येन मामाशीर्वादं प्रदत्तः। अस्यानन्तरमहं पूर्णतः स्वस्थ्यो जाता। क्रोधः, मोह, व अन्य विकाराः अतीवन्यूनताः जाताः सन्ति। मम परिवारः सदैव श्री सद्गुरोः वन्दनां करिष्यसि। एषः अस्माकं संकल्पोऽस्ति।

69–सौ0 कांति पाण्डेयः *(धर्मपत्नी, डा0 रघुनाथ प्रसाद पाण्डेय,प्रोफेसर,रीवा म0 प्र0)*

पू0 गुरूदेवस्य सान्निध्ये अहं रायपुरे सन् 1980 ईस्व्यां स्वकीय पति डा0 रघुनाथ पाण्डेयेन सार्द्धं समागतवती। किञ्चिद् दिनानि पर्यन्तं तस्य सत्संगः एवं कृपायाः भौतिक तथा आध्यात्मिक लाभं लब्ध्वा तस्य कृपया शिष्यायाः रूपे प्राप्तुमिच्छाजाता। अतः वर्ष प्रतिपद्याः शुभ दिवसे 17 मार्चः 1980 ईस्वीं तेन कृपा पूर्वकं मां वा मम पतिदेवं गुरू परिवारे सम्मिलितः कृतवान् दशहरायां शुभ पर्वे 8 अक्टू0ः 1981 ईस्वीं तेन डा0 पाण्डेयं एवं मां दीक्षितः कृतः यस्यानुसारेण आवां साधनायां प्रयासरतौ स्तः। मां गुरूदेवस्य कृपायाः सतत् आभासो निर्मितः वर्तते, तथा सांसारिक कष्टआदिसहनकरणे पूर्वात् स्वामधिकः सक्षम् प्राप्नोमि। अस्मिन् मध्ये काचिदालौकिकाः अनुभूतयः जाताः। ध्यान कुर्वन्नवसरे गोलाकृतयाः प्रकाश पुञ्जोदृश्यते। गुरूदेवस्य चरणानां सम्मुखे प्रज्वलितः अग्निपुञ्जः एकदा स्पष्ट रूपेण दृष्टि गोचरोऽभवत्। एकदा प्रकाशस्य गोलायाः मध्ये एकः गवाक्षः अवलोकिता। यस्य मध्ये एकः सुन्दरः लौयुक्तः दीपकः दृष्टि गोचरोऽभवत्। एकदा ध्याने गुरूदेवस्य चरणानां अगुङ्ठायां नखाः तारा वा मणेः सदृशः प्रकाशमयाः अवलोकिताः। एकदा प्रकाशस्य मध्ये श्याम वर्णेन युक्तः सार्द्धं एक वर्षस्य बालकः मयूरस्य पक्षं धारयन् तथा दक्षिण हस्ते काचिद् गोलाकारः वस्तुः घृत्वाबिहसन्नवलोकितः। अनेन प्रकारेण असंख्य सिक्कोपरि विराजितः श्री गुरू चरणानामपि दर्शनं जातम्। गुरू कृपया अद्वितीय दर्शने जाते सति सघनः आनन्दानुभूतिः भवति ।

70—डा0 रघुनाथ प्रसाद पाण्डेय(*प्रोफे0 फिजियॉलाजी, मेडि0 कालेज,रीवा, म0प्र0)*

किञ्चिद् पारिवारिककष्टैः अभिभूतोभूत्वाहं सपत्नीकः गुरूदेवस्य शरणमगच्छम्। तेन कृपा पूर्वकंभावांदीक्षा प्रदत्तः। गुरूदेवस्य कृपया एषां कष्टानां निवारणमभवत्। मम ज्येष्ठ पुत्रीं विवाहस्य कियत्वर्षेभ्यः सन्तानः प्राप्तिः न जातासीत् तथा अन्य

पारिवारिक क्लेशोऽपि आसीत्। गुरूदेवेन आशीषं प्रदत्तः यत् पुत्रो भविष्यति अथ च शनैः– शनैः क्लेशस्य निवारणं भविष्यति तेषां आशीर्वचन एवं कृपया अद्य मम पुत्र्याः क्रोडे सुन्दरं बालकः क्रीडति तथा क्लेश निवारणमपि शनैः शनैः भवति।

नियमेन प्रतिदिनं गुरूपदिष्ट विधिना ध्यान कुर्वन्नवसरे शान्तिः प्राप्नोति तथा नेत्रौ निमीलनः पश्चादपि दृश्याः दृश्यन्ते। मां चन्द्रमसः वर्णस्य प्रकाशस्य गोलायाः वलयं दृष्टिगोचरो भवति। कदा–कदा सुन्दरं नीलवर्णस्य प्रकाशोदृश्यते यः कदा लघु भवति, कदा बृहद। कदा–कदा प्रकाशः समीपे आगत्य मामाच्छादयति।

नागपुरमेकदा स्वप्न एवं जागरणस्य संधौ अवलोकितः यत् मां पाशं (फॉसी) जातमस्ति। अहं कारागारस्य अनावृत प्रकोष्ठे उपविष्टोऽस्मि, किन्तु पलायनस्य प्रवृत्तिः न भवति। राम नामं जपामि। मस्तके कृष्णवर्णस्य उष्णीयः स्थापयित्वा यथैव पातितः एक अप्रतिम पीत वर्णस्य दृश्य दृष्यते य : मधु मक्षिकायाः छत्रस्य सदृशः छिद्रमयोऽस्ति अथवा वृत्त जालीकमिव। तस्य पारेण एका परम सुन्दरी स्त्रियाः मुखं दृष्टिगोचरो भवति। या शान्त एवं कृपापूर्णोप्रतीयते ममभयं अस्तंगतः निद्राया जागृतेऽपि सोदृश्यः किञ्चिद् क्षणं निर्मितोऽस्ति पुनः तिरोहितो भवति।

संयोगस्य वार्ता इयं यत् तस्यां रात्रौ मम धर्मपत्नीं रीवायां स्वप्नो जातः यत् एका अर्द्धावस्थायाः बिन्दीं धारयन् महिला आगत्य बदति यत् तव पतिदेव मृत्युं प्राप्तोऽस्ति, त्वं बिन्दीं कथं धारितास्ति। अस्यानन्तरं श्री मत्याः निद्रा अपावृता तथा अधिका व्यथा निर्मिता जाता। एताः आश्चर्यजनकाः अनुभूतयः काः सन्ति, इमाः पू0 गुरूदेव एव जानन्तु।

71– श्री मती शारदा राव

गुरू पूर्णिमायाः अवसरे दि0 6/7/1982 ईस्वीमहं बंगलोरतः वर्धात्र्आगलवती आसम् तत्रैव मया गुरू दीक्षाप्राप्ता। अस्यानन्तरं गृहमागत्य मया नियमित रूपेण

अभ्यासं प्रारम्भं कृता किञ्चिद् दिनानन्तरं एकदा मध्याह्ने मया विश्रामं क्रियते स्मः। अकस्माद् मां गर्जनस्य ध्वनिः समायाता वा मस्तके विद्युत सदृशाः प्रवाहितो भवन् प्रतीतो जातः। भृकुटयोर्मध्ये मां आकाशीय नील वर्णस्य वृत्ताकार प्रकाशः दृष्टिगोचरोऽभवत्।वृत्ता कारस्य मध्य भागं किञ्चिद् अवनतो आसीत्, यत्रतः बीचयः उत्थितवत्यः प्रतीतो भवतिस्मः। ध्वनिः संवेदनायाः तीव्रता च उत्तरोत्तरं वर्धितासीत् गम्यतेस्मः। येन मामेतादृशेनालगत् यथा मस्तकः विदीर्णो भविष्यति। पूर्व तु अनेन व्याकुलो भूत्वा मया नेत्रयोः उन्मीलिताः किन्तु त्वरितं पुनरयं विचार्य निमीलिता यत् अवलोकनीयम् अन्ततः किं भवति। नीला वलयः व स्पन्दनः तादृश एव निर्मितो आसीत्। मया पू0 गुरू देवस्य स्मरणं कृतम्। त्वरितमेव पू0 गुरूदेवस्य वलयस्य मध्य भागेन मुखाकृतिः प्रकटिता। मया स्वां तस्य समक्षे धावित्वा गच्छन्ती अवलोकिता पू0 गुरूदेवेन द्वौ हस्तौ मम समक्षे वर्द्धितौ। अस्यानन्तरं नील वर्णस्य स्थाने स्वर्णिम हरित वर्ण तस्यागोलाकृतौ दृष्टिगोचरो जातः। अस्यापि स्थानं तत्रैव भृकुटयोः मध्ये एव आसीत्। इयं मेक बारं किञ्चिद् क्षण पर्यन्तंदृश्यो भूत्वा पुनः स्थापितो जाताः अन्ते सर्वं शान्तो जातः।

72– डा0 श्री मती ओमबाला शिन्दे, *(धर्मपत्नी श्री बुआ सा0 शिन्दे,ग्वालियर,म0प्र0)*

जून 1979 ईस्व्यां मम परम प्रिय सहेली डा0 सईदा शिन्दे तथा तस्याः पतिः डा0 श्री व्ही0 ए0 शिन्दे मातुलेन यदा सः ग्रीष्मावकाशे ग्वालियरं समागतः आसीत्, मां सर्वप्रथमं परम पू0 गुरूदेवस्य परिचयो प्राप्तः किन्तु सोऽपि अपरोक्षरीत्या। तस्मिन् दिवसेऽहं स्वकीय चिकित्सा व्यवसाये अत्यन्त व्यस्ता आसम्। तथा मात्र स्वकीय कार्यमेव पूजा साधना मानिता आसम्। अतः तस्यातिरिक्तः अन्यकस्यापि प्रकारस्य पूजा साधना कर्तुंमिच्छानआसीत् नैवाहं तांमावश्यकता मानिता आसम् मम पतिदेवं

पूजा तथा योग साधनायां प्रारम्भेनैव अतीव रूचिरासीत् तथा नियमित रूपेण जपादि कार्यंकुर्वन्तिस्मः। अस्मात् कारणात् सौभाग्यवती सईदा तथा श्री मातुल महोदयेनमम पतिदेवं परम पू0 गुरूदेवमवबोधयत् अथ च सः तत्कालमेव गुरूदेवेन दीक्षांनेतुं तत्परो जातः। पुनः त्रिभिर्मामपि अवबोधयितः तथाआग्रहं कृतं मया यदहमपि गुरूदेवेन दीक्षां गृह्णनि किन्तु यथा यत् मया ऊपरि कथितास्ति। मया तस्मिन् समये मात्र स्वकीय कार्यमेव पूजा साधना मन्यते स्मः। अस्मात् कारणात् तस्याग्रहं हसित्वा दूरीकृता । अस्यानन्तरं यदा पू0 गुरूदेवः सित0 1979 ईस्व्यां सौ0 सईदा मया श्री मातुल महोदयस्य रायपुरं स्थित निवासे विराजमानाः आसन् तदा सौ0 सईदया तेन अनुमतिं प्राप्य मम पतिदेवं दीक्षा नेतुं रायपुरमाहूतवान्। तदनुसारेण मम पतिदेवः रायपुरमगच्छत् तथा तेन पू0 गुरूदेवेन दीक्षां गृहीत्वा साधना प्रारम्भः कृतः तस्मिन् समये मां किञ्चिद् कौतुहलं तु अवश्यमेवाभवत् किन्त्विच्छा पुनरपि न जाता अहं स्वकीय चिकित्सा व्यवसायस्य कार्यैः मग्नः आसम्। मार्च 1980 ईस्व्यां मां हार्ट अटैक जातः। अस्मात् कारणात् मां प्रारम्भे तु अनुमानतः कार्यं पिनद्धः शान्तकृता । पश्चादहं मया बहुदिन पर्यन्तं कार्यस्य मात्रा अतीवं न्यूनता कृता। कार्याभावेन हठात् विश्रामस्य कारणात् मांमन्य वार्तायां विचारं कर्तुं अतीव समयो प्राप्तः। अस्मिन् तारतम्ये मम पतिदेवः पुनः गुरूदेवस्य दर्शनार्थं रायपुरं गतवन्तः आसन्। मयापि विचारितः यत् कथंनाहमपि गच्छामि किञ्चिद् जलवायोः परिवर्तनं भविष्यति। अनया विचारधारयामया रायपुरं गतवती च तत्रैव सर्वप्रथमं मया पू0 गुरूदेवस्य दर्शनं प्राप्तम्। अनुमानतः एक सप्ताहस्य प्रवासे प्रायः प्रतिदिनं त्रिचत्वारः घण्टाः पू0 गुरूदेवस्य सान्निध्यहं प्राप्नोतिस्मः। तस्य श्री मुखेन मौलिक उपदेशस्य लाभः प्राप्नोति स्मः। मयापि स्वशंक्ङाः कुशंक्ङाः तथा कियत् प्रश्नाः पू0 गुरूदेवस्य समक्षे प्रस्तुताः कृताः तथा अतीव चर्चा क्रियतेस्मः। अस्मिन् तारतम्ये श्री मातुल महोदयः तथा सौः सईदायाः सहगामिनी सौ. उषयापि मां चर्चा जाता। अस्मिन् तारतम्येऽपि मामिच्छा नाभवत्

यदहमपि पू0 गुरूदेवन दीक्षां ग्रहणं करवाणि। अहं स्वकीय मनः सन्नद्ध कर्तुमसमर्थ अभवत् अन्ततः पू0 गुरूदेवेन मामयमेव उपदिष्टः यद् मां स्वयं वास्तविक रूपेण इच्छा उत्पन्ना स्याद् तदा एव साधना प्रारम्भं करवाणि, तस्याः पूर्वम् नैव अद्य मां मेतादृशः लगति यद् यदि दीक्षां नीत्वा साधना प्रारम्भं कर्तुं अतीव इच्छा तु आसीत् किन्तु विचित्र भयं आसीत्। रायपुरतः आगमनस्य अनुमानतः एक मासानन्तरं मम पतया मां श्री मातुल महोदयस्य पत्रं पठितुं प्रदत्तः, यस्मिन् पू0 गुरूदेवेन मम पतये एषः आदेशः प्रेषितः आसीत् यत् सः मां साधना प्रारम्भं कर्तुं विवशो न कुर्यात् किन्तु यदापि मम इच्छा भवतु तदा तु सः मां तेन प्रकारेण दीक्षां प्रददातुः येन प्रकारेण पू0 गुरूदेवेन तं प्रदत्तः। मया तत् पत्रंपठितम् अथ च तस्य समक्षेः प्रत्यावर्तितः तस्मिन् समये तु मयि तस्य कोऽपि प्रभावो न जातः किन्तु किञ्चिद् दिनानन्तरं मामनुभूतिः जाता यत् पू0 गुरूदेवेन ममाशकंङा अवबोधितोऽस्ति अस्मात् कारणाद् मम पतिमुपरोक्तानुसारेणादिष्टोऽस्ति। वास्तविक रूपेण मां मम पतिं गुरोः रूपे स्वीकृत्य तेन दीक्षां ग्रहणे कापि आशंक्ङा वा संकोचो नासीत्। पुनरपि एक मानवं तस्य स्वभावः एवं व्यक्तित्वस्य सशक्तता एवं दुर्बलताः अवबोधयन् गुरू अथवा भगवतः रूपे द्रष्टुं मॉमतीव मानसिक यंत्रणा सहनं कृतवती तथा तद्धेतुः कियत् दिनमीश्वरेण प्रार्थना कारिता। एतादृशी प्रार्थनायाः स्थितौ भगवतः शिवस्य दर्शनं जातम्, एवं तत्पश्चात् श्री रामः तथा श्री कृष्णः एवं भगवान् ब्रम्हा, विष्णुः एवं महेशस्य त्रिमूर्तेः सुन्दरतायाः दर्शनं जातम् अथ च तेन प्रोत्साहनं प्राप्तं जातम् तथा मम निश्चयः दृढ़ो जातः। तस्यानन्तरमेव मया स्वपत्या मां साधनायाः दीक्षा प्रदातुमनुरोधिता, येन तेन सहर्ष स्वीकृत्य पू0 गुरूदेवस्यादेशानुसारेण मां दीक्षां प्रदत्तः।

पू0 गुरूदेवस्यासीमानुकम्पया साधनायाः प्रथम सप्ताहे एव मां पूर्ण एकाग्रतयासार्द्धमेव शोभनाः अनुभूतयः जाताः। प्रारम्भे एव मां दिव्य प्रकाशस्य कदा सूर्यस्य रूपे कदा प्रकाशमयः लम्बः मार्गस्य रूपे तथा कदा दीपकस्य ज्योतेः रूपे

दर्शनं जातम्। अस्य द्विदिनानन्तरं मां पुनः दिव्य प्रकाशस्य दर्शनं जातम्। सः प्रकाशः तेजोमयो भवन् गतवान्। तस्मिन् स्वप्निलः दृश्यो दृष्टिगोचरोऽभवत्। सर्व प्रथमं मां सुन्दर युगल पक्षिणोः रूपमदर्शयत् यस्याः कण्ठ रक्तः तथा पक्षाः नील वर्णस्यासीत्। किञ्चिद् क्षणानन्तरं ते अदृश्योः जाताः तस्याः स्थाने एकं वृक्षस्य शाखा समागता यस्याः पर्णानि हरित वर्णस्यासन् तथा तस्यां सुन्दर पुष्पाणि फलानि लगितानि आसन्। मया शाखा एव दृश्यते स्मः किन्तु वृक्षं दृष्टिगोचरं नभवति स्मः। पुनश्च दृष्टा एकं सघनं वनं यस्तु ऊच्चैः पर्वतस्य तथा गहरीघाटीनां मध्ये आसीत्। तस्यां श्वेत शाटिका धारयन् एका महिला अवलोकिता या मां अपलक पश्यति स्मः। मां तस्याः अपलक अवलोकनेनाहं भयभीता जाता। पुनरग्रे एको भयकारक मनुष्योऽपि अपश्यम् मया वेगेन अग्रे निःसरितः तत्र मामेको कृषकः अपश्यत्, तस्यानन्तरं मां हिमाच्छादित पर्वतस्य श्रेणयः अवलोकिताः यस्यां भगवान शिवः प्रथमं उपविश्यन् तत् पश्चात् उत्तिष्ठन् इव अवलोकितः। किञ्चिद् क्षणानन्तरे एव सः भगवतः दतात्रेयस्य रूपे परिवर्तितो जातः। पुनः एकदा दिव्यः तथा तेजोमयः प्रकाश समायातः तस्मिन् प्रकाशेन् एकं सुन्दरं मार्गं यस्याः उभयतः सुरम्य वृक्षाणि आसन् दृष्टिगोचराः जाताः। त्रस्मिन्मार्गे हरितवर्णस्य धौत वस्त्राणि धारयन् तथा मस्तके पुष्पाणां गुम्फनं गुम्फितः द्वौ सुन्दरौ बालकौ अवलोकितौ पुनः दिव्य तथा तेजोमय प्रकाशः समागतः तस्मिन् भगवान शिवः उपविश्यन् मुद्रायां दृष्टिगोचरो जातः तस्मिन् समयेऽहं थकिता आसीत् अस्मात् कारणात् लेटिता जाता प्रलेटयन् अपि भगवतः शिवस्य छविः सुन्दरता बहुसमय पर्यन्तं यथावत् निर्मिता आसीत्।

उपरोक्तानुभूतेः द्वितीय एव दिवसे मया एकाक्येव पुनः तस्मिन् स्थाने साधना हेतु गता। मया एकः स्वकीयाय तथा मम पतिदेवस्य हेतवे द्वौ आसनौ स्थापितौ। ध्यान लगन्नेव मां स्वकीय पत्याः दर्शनं जातम्। सः एको पर्वतश्रेण्यां ध्यान मग्नोपविष्टः आसीत्। पर्वते एकां बृहद् क्षेत्रमासीत् यत् आकाश पर्यन्त विस्तृतमासीत्

यत्र सूर्योदयः भवति स्मः। मम पतिदेवस्य मुखमण्डल शान्तः किनतु तेजोमयः आसीत् अथ च परितः अपार शान्तिः आच्छादिता आसीत्। किञ्चिद् क्षणानन्तरमेकः तेजोमय प्रकाशः समागतः। मया गायत्री मंत्रं प्रारम्भं कृतम् अथ च प्रत्येक ऊँकारस्य उच्चारणेन सार्द्धं सः प्रकाशश्चाधिकः तेजोमयं भवन् गतः तथा मम मस्तके मस्तिष्क तथा नासिकायाः ऊपरि भागे समाहितो जातः।

अस्यानन्तरं द्विदिनं निरन्तरं मां भगवतः शिवस्य दर्शनं जातम्। द्वितीय अवसरे भगवतः सस्मित मुद्रायां आशीर्वादं प्रददन् दर्शनं जातम् दि0 2..4कृ81 तिथो एकाविशेषनुभूतिर्जाता प्रारम्भे एव पूर्णा एकाग्रता जाता अथ च एको दिव्य प्रकाशःसमायातश्च तस्मिन् दूरे उपविशन् भगवान शिवः दृष्टिगोचरो जातः। एक एव क्षणानन्तरं तस्य छविः लुप्तो जातश्च मम स्वरूप तस्य तेजोमय प्रकाशेन परिपूर्णो जातः पुनः मम समस्त मस्तकोऽपि तेन प्रकाशेन अनेन प्रकारेण पूरिपूर्णो जातः यत् मां मम मस्तकस्य (लांगी टयूडनल सेक्सन) स्पष्टः दृष्टिगोचर अद्दन् अलगत्। तस्मिन् समये मां सुषुम्नायां स्फुरणस्यानुभूतिः जाता या सर्वतः अधो भागस्य कशेरूकातः प्रारम्भा जाता तथा क्रियास्थि क्षेत्रे तीव्रा जाता अथ च ऊपरि भागे आरूहती जाता। स्फुरणस्य एषानुभूतिः यथा–यथा ऊपरि भागे आरोहतिस्मः सः दिव्य तेजोमय प्रकाशः अधः वर्धयन् गच्छतिस्मः। मां मम ग्रीवा एतादृशी दृष्टिगोचरा भवतिस्मः यथाहं तस्य एकसरे पश्यामि। सः प्रकाशश्चतेजः तथा सघना भवन् गतः। पुनः तेन मम समस्त ह्रदयस्य क्षेत्रमेतादृशः प्रकाशमानः कृतवान् यत् माम एतादृशः अनुभूतः यत् अहं सूर्यस्य समक्षे पश्यामि। मम ह्रदयः प्रकाशेन परिपूर्णः तथा स्पन्दनं कुर्वन् दीप्तिमान् दृष्टिगोचरो भवतिस्मः। पुनः सः प्रकाशः इयती अधिकः तेजोमयोऽभवत् यदहंमधिकं द्रष्टुं न सक्षमा तथा मया ध्यानं समाप्ता कृता।

अनेन किञ्चिद् दिवसं पश्चात् मया एकदा ध्यान कुर्वन्नवसरे शिवलिंग्ङस्य दर्शनं जातम् तत् प्रकाशेन परिपूर्णः आसीत् तथा तस्मिन् प्रकाशस्य किरणानि निः सरन्ति स्मः ।

अस्यानन्तरंमुष्णतायाः अत्यधिक कारणेन मम स्वास्थ्यः शोभनं न भवति स्मः, अस्मात् कारणात् तस्मिन् दिवसे साधना अनुमानतः अवरूद्धा जाता। तस्मिन् तारतम्ये पू0 गुरूदेवः रायपुरतः श्री मातुलः महोदयः तथा सौ0 सईदया सार्द्धं कश्मीर गमन काले गालबपुरस्य मार्गेण भूत्वा अगच्छन्। तेषां दर्शनार्थं मम पतिः व बालकाः स्टेशने गतवन्तः आसन्। किन्तु स्वास्थम् अशोभनेन मया तत्र न गता। गुरूदेवेन मम विषये प्रष्टव्ये सतिे पति देवेनोक्तम् यत् स्वास्थ्यम शोभनोन ध्यानं न्यूनतया अवरूद्धा कृतासीत्। तस्मिन् विषये पू0 गुरूदेवेन आदिष्टं प्रेषितः यत् ध्यानं कर्तुभवरोधयतु न। यावत् स्याद् स्वल्पं कुर्याद्। अतःमया स्वल्पं–स्वल्पं ध्यानं पुनः प्रारम्भमकरोम। अस्मिन् तारतम्ये एकदा प्रातः काले मम हृदये पीड़ा सञ्जाता या अतीव कष्टकारका आसीत्। मया पीड़ा निवारणाय औषधीमपि खादिता एवं शान्ति पूर्वकेन विश्रमितः। मम पतिदेवः जानातिस्मः यत् मां निद्रा समागता किन्तु विश्रामावस्थायामनुमानतः मम ध्यानं लगितमासीत् अथ च मामेतादृशः अलगत् यद् अहं स्वकीया शरीराद् बहिःनिःसृत्य गृहस्य अधो भागे प्राप्तास्मि तथा प्रत्येक प्रकोष्ठेन भूत्वा बहिः राज मार्गस्य सम्बन्धी प्रकोष्ठे प्राप्तास्मि। तत्र कश्चिद् शयितः आसीत् अस्मात् कारणात् अहं सामीप्यं प्रकोष्ठेयातुमलगत्। एतादृशः अनुभवो जातः यदहं भित्तिकया निःसृत्य गच्छामि। तस्मिन् प्रकोष्ठे प्राप्तेसति मया अवलोकिता यत् तस्मिन् अतीव समस्तानि काष्ठानि स्थापयित्वा स्थापितानि सन्ति। मामिच्छा जाता यत् तेषु काष्ठेषु शयितुं गच्छामि, किन्तु तत्र प्रसारणम्य विच्छादयितुं किमपि नासीत् अतः ऊपरि स्वकीय प्रकोष्ठे समक्षे गतवती। सोपानेषु आरूह्य ऊपरि समागच्छत्। तस्यानन्तरमेतादृशः अलगत् यत् निद्रया शयित्वा उत्तिष्ठोऽस्मि। कानिचिद् अनुभूतयः अन्यमपि अभवत् एकदा वयं

भोजनस्यउत्पेठिकायां भोजनं कुर्वन्तिस्मः भोजन समाप्तिरनन्तरेऽपि किञ्चिद् क्षणं आसन्दिकायां उपविष्टाआस्मः। यत् एतादृशः अनुभूयते यत् शरीरस्य विस्मरणं जातः अथ च यत् मस्तिष्कतः ग्रीवा पर्यन्तस्य भागः नैवास्ति एतादृशी स्थितिः स्वल्प समय पर्यन्तं निर्मिता आसीत्।

किञ्चिद् दिनानन्तरं साधनायाः पश्चात् श्वासन् कुर्वन् समयेऽपि एतादृशः अनुभूयते यत् मम सम्पूर्णं शरीरमस्ति एव न अथ च सः एक प्रकाशमान्पिण्डे परिवर्तनो जातः। कदा–कदा पृष्ठ प्रदेशे कट्याः त्रिकास्थितः नीत्वा पृष्ठं वा ग्रीवा पर्यन्तं कठिनतायाः प्रतीयते। एतादृशः लगति यद् अयम्भागः जड़त्वं प्राप्तमस्ति तथा शरीरात् पृथकत्वं वर्तते। अस्मात् कारणात् बृहद् व्यग्रता लगति। एषः किञ्चिद् दिनं पर्यन्तं चलित्वा पुनः अवरूद्धो भवति बिना ओषधया किञ्चिदन्तराल पश्चाद् पुनः प्रारम्भ्यते। अयमनुभवः यदि रात्रौ भवति तदा निद्रायां व्यवधानोत्पद्यते।

एकदा मामियंमनुभूतिः जाता यत् कट्याः ऊपरि उतिष्ठन् दिव्य प्रकाशः मम हृदयस्य समीपे आगत्य सुस्थिरो जातः तथा हृदयः तस्य कमल रूपी प्रकाशे समाहितो जातः अस्ति तस्यानन्तरं दिनांकः 6/12/ 1982 ईस्वींरात्रांवहं साधनायामुपविष्टा। उपविशन्नेव किञ्चिद् समये मां स्पष्टा अनुभूतिः याता यत् मूलाधारतः ऊपरि उत्तिष्ठवती काचिद् वस्तुः अनाहतं यावत् पुनश्च अनाहते पुरतः पक्षतः अर्थात् उपरिगतवती नासिका तथा ललाटे भवन् मस्तकाद् तालुका पर्यन्तं समागतवती तथा तत्र स्थितो भूत्वा उपविष्टा आसीत् ताभिः वस्तुभिः साकं प्रकाशमपि आसीत्तद् वस्तुः एतादृशः संस्थित्य अवस्थितः यत् मस्तकः कम्पनमपि सम्भवो नासीत्। तया मस्तकमावद्धो आसीत्। अस्मिन् विषये मामयमवबोधने न आगच्छतिस्मः यत् किं करणीयम्। अतः मया भवतः नाम स्मरणं प्रारम्भं कृतम्। किञ्चिद् समय पर्यन्तं नाम स्मरेणेन शरीरमियद्रिक्तं जातमभूत् आसीत् यत् वणयितुम सम्भवो आसीत्। एषा स्थितिः अपर दिवसे रात्रिपर्यन्तमासीत्।

अपरे दिवसे अर्थात दिनांकः 7/12/1982 ईस्व्याः रात्रौ चि0 बब्बू पाठयन्–पाठयन् मां तीव्रा इच्छा जाता यत् साधनायै उपवेशनीयम्। अतः मया न्यूनतया एकादशवादने उपविष्टा। उपविशन्नेव अर्थात् गुरूपूजा पूर्णतायाः पूर्वमेव मां स्पष्टानुभूतिः जाता यद् मूलाधारतः ऊपरि उत्तिष्ठती काचिद् वस्तुः तीव्र गतया आरूह्यः मस्तके समागता अस्ति। नागस्य फणस्य सदृशः काचिद् वस्तु तस्यां वस्तौ मस्तके स्थापिता अस्ति। एषा प्रक्रिया इयती त्वरिता जाता यत् किञ्चिद् क्षणं लगितः किन्तु अस्मिन् तारतम्ये नेत्र सम्मुखे सुस्पष्टः प्रकाशः विद्यमान आसीत्। तस्मिन् प्रकाशे अनेका जनाः उत्तिष्ठन्तः दृश्यन्ते स्मः। यथा कस्मिन् मंदिरे दर्शनार्थीनां समूहः एकस्य पश्चात् एकः मयि समाहिताः गच्छन्ति स्मः। किञ्चित् कालं किंकरोमि एतदेव ज्ञानेन न आगच्छतिस्म। परं पुनः स्मरणं आगतः यत् गुरूदेवस्य नामं स्मरतव्यम्। अथ च गुरूदेवः भवतः नाम स्मरणः कृतः तर्हितु किञ्चित् कालानन्तरं सामान्य इव प्रतीयते। साधनानन्तरे रात्रिं यावत् निद्रानागता परं इत्थं उत्साहितः अथ च लघुत्वं प्रतीयतेस्म यत् सुप्तस्य आवश्यकता एव न आभासतेस्म। एतावतारात्रिं यावत् जागृता परं आगामि दिवसेऽपि कोऽपि कष्टं न प्रतीयते। अपितु अतीवोत्साहित लघुत्वं प्रतीयते।

आगामि दिवसेऽपि साधनायाः मध्ये पुनः हृदयस्य प्रकाशेन सहकोऽपि वस्तुः नासिका तथा च मस्तकतः भूत्वा शिरौ जाता अथ च स्थिरं भूत्वा अवस्थिता परं पूर्वानुभूतेः कारणेन कोऽपि भयावह स्थितिर्नासीत्। अथ च भवान् नामस्मरणे सति किञ्चित् कालानन्तरं सर्वं सामान्य अभवत्। तस्य आगामि दिवसे रात्रौ प्रसुप्तकाले मूलाधारः, अथ च स्वाधिष्ठानस्य च मध्ये एतादृशः लगितः यत् कोऽपि वस्तुः तत्र स्थिास्ति। तथा च स्फुरणः करोति। इत्थं रात्रिं यावत् लगितः यस्य कारणेन उत्तमेन गहननिद्राऽपि न आगता। परं तस्य कारणेंन द्वितीय दिवसे कोऽपि कष्टं नाभवत् अपितु उत्तमं उत्साहितः अथ च लघुत्वं लगितः।

73–श्री जगदीश प्रसाद शर्मा

दिस0 सन् 1976 षष्ठ सप्ततिः वर्षे लघुभ्राता गुरू प्रसाद पाण्डेयेन सह पू0 गुरोः मम गृहे पदापर्णः अभवत्। तस्य अत्र आगमनात् पूर्वं मम् तस्य विषये किञ्चिदपि ज्ञातं न आसीत्। अहं चकितं आसम्। पुनः मम भ्राता माम् पूर्ण ज्ञानं दत्तः। पू0 गुरूदेवः कृपापूर्वकं किञ्चित् दिवसान् अस्माकं गृहे वासः स्वीकारः कृतः। मध्येऽस्मिन् मम समस्त परिवारः गुरूणा दीक्षा ग्रहणं कृतः। अतोऽनन्तरे मई 78 वर्षे द्वितीय बारं गुरूदेवः आगतः। अस्मिन् क्रमे अस्मान् ध्यान धारणायाः विषये विस्तृत ज्ञानं तेन दत्तः। अतोऽनन्तरतःअहं अनवरतं पू0 गुरूणा प्रदत्त निर्देशानुसारं ध्यानं कुर्वन् आगतः।

वातव्याधिना अतीव पीड़ितः भवितुं कारणेन आरम्भे किञ्चित कालं स्थितम् एव (अवस्थित) एव असंम्भवं लगतिस्म। सहैव 15–20 मिनटं तु कः कथयति 5–मिनटमपि एकाग्रचित्तं भूत्वा न अवस्थितुं शक्तः। अतीव अकुलाहटः प्रतीतं भवतिस्म्। परं गुरू चरणानां ध्यानं कुर्वन् एतत् सर्वं समाप्तमभवत् अथ च चित्तः स्थिरं अभवत्। आरम्भे नेत्रनिंमील्य अवस्थिते सति अंधकारेवान्धकारः दृश्यतेस्म्। कानिचित् दिवसानन्तरं अस्मिन् अधंकारे एकः बिन्दु रूपे प्रकाशः उदितः लुप्तं च जातः दर्शितः। अस्य बिन्दोः रूपं क्रमशः वर्धितो गतः। तथा च कानिचित् दिवसानन्तरं अस्य परितः सामान्यमिव धवलवर्णः प्रकटितो जातः। कदापि मध्य भागः आकाश इव नीलवर्णस्य अथ च तस्य परितः प्रकाशः दृश्यते।

एतं दृश्यं विकृताकारस्य धवल वर्णस्य मेघाः बारं–बारं आच्छादयन्ति। तथा च पुनः अनावृतं करोति। कदापि एते एव धवलमेघाः वृत्तरूपे प्रकटं भवन्ति यस्य मध्ये श्वेत वस्त्र धारी परम पू0 गुरोः दर्शनं प्राप्ताः भवति। इच्छते मया यत् एषः दृश्यः

किञ्चित् कालं यावत् स्थितं भवति परं इत्थं न भवतिस्म। गुरू सान्निध्ये आगमनानन्तरतः स्वयमेव मम वात व्याधेः कष्टं दूरं अधिगच्छन्ति। साम्प्रतमहं सुदीर्घकालं यावत् ध्यानाय अवस्थातुं शक्तः। 7 सप्त नवम्बरं 81 वर्षम् मया सह एका अति आश्चर्य जनकः घटना संघटिता। मम पुत्री माधुरी मम स्व घरट्टस्य पार्श्ववाटिकया टमाटरं गृहयतिस्म। तेषां वृक्षाणां मध्ये एकः अतीव महत् कृष्णभयंकरः वृश्चिकः आसीत्। यः बालिकायाः पदेडंकं अमारयत्। सा अचानकं घोरशब्दं कृत्वा दूरं गत्वा अपतत् अथ च अतीव रूदनांरभः कृतः। पीडया व्यथितः सा तीव्रेण रूदतिस्म। अहं धावित्वा तत्र गतः तर्हितु अपश्यत् यत् तस्य शरीरेण अतीव स्वेदः निःसरतिस्म अथ च तां अर्धविस्मृतमिव शरीरे आरोहते। तस्याः एतां स्थितिं वीक्ष्य अहमपि भीतो जातः। तां उत्थापयित्वा घरट्टहा भवनस्य आभ्यन्तरे आनीतः। मम दृष्टिः पू0 गुरोः प्रतिमां प्रति उत्थितः या तस्मिन् कक्षे संलग्नासीत्। अहं पू0 गुरोः स्मरणः अथ च ध्यानं प्रारभ्य बालिकायाः पादान् स्व हस्तेन संमर्दनारंभ कृतः। अनेन प्रकारेण हस्त संचालनेन तस्य शरीरेण स्वेद निस्सरणं अवरूध्यतेस्म। अथ च सा शनैः–शनैः रूदनमपि समाप्तः कृतः। कतिचिदेवक्षणांनन्तरं बालिकां सहसा विश्रामः प्राप्तः अथ च सा हसितवती पद यात्रया एव गृहं प्रस्थितवती। अहं एतत्तु न ज्ञापयितुं शक्तः यत् एतादृशः कथं अभवत् एषः पू0 गुरूदेवः एव ज्ञातुं शक्तः। अहं मात्र इत्थमेव जानामि यत् यदापि ममोपरिकोऽपि संकटः आगच्छति तर्हितु गुरू कृपया सः तत्कालं दूरं भवति। माम् पू0 गुरूदेवोपरिपूर्णः आस्थास्ति। अनन्य भावः अस्ति।

74– श्री विजय त्रिवेदी

डा0 गिरीश पाण्डेयः, श्रीमती डा0 सुधा पाण्डेयस्य कृपा प्रसादेनाहं पू0 गुरोः सान्निध्ये आगतः। मया अहं ध्यानांरभः कृतः ध्याने माम् अतीव आनन्दः आगतः। अनुभूयते च स्वकीयं अहं अतीव लघुत्वं अनुभूयते। केनापि वार्ताकरणस्य इच्छा

नभवति। स्व स्वकीयेएव निमग्नस्य मनः अभवत्। ध्यान काले माम् प्रकाशः दर्शितः। कतिचिद्दिवसेषु ध्यानावस्थायां झींगुरस्य् शब्द इव ध्वनिः श्रुतः एकदा ध्यान काले माम् एतादृशः प्रतीयते यथाहं पवने उड्डीये। सहसा अत्यधिकं उन्नत स्थलतः निम्नतलस्य पतनस्य इव प्रतीयते। मया नेत्रोन्मीलितः अहं अत्यधिकं भीतो जात। डा0 भानू गुप्ता अथ च पाण्डेयेन संबोधनानंतरे पुनः अहं साधनारंभं कृतः।

अस्य कानिचित् दिवसानन्तरं एकदा माम् ध्यानावस्थायां गुदाद्वारोपरि तीव्रस्य भारः प्रतीतो जातः। मम मुखे स्वादिष्टः द्रवः आगतः तथा च एका स्वर्णस्य स्थाली इव प्रकाश पुंजः नेत्र सन्मुखे आगतः। एषा स्थितिः पर्याप्त समयं निर्मितः। ध्यान भंगे गते सति अपश्यम् रात्रेः एक वादनः आसीत्। कानिचित् दिवसाननतरं प्रकाशस्य निर्झरः प्रवह्न् अपश्यत्। एकदा डा0 भानू गुप्तायाः आसन्दिकोपरिस्थितः ध्यानं करोतिस्म। तर्हितु सहसा तस्मात् अधः पतनस्य प्रतीतिः अभवत्। पुनः कानिचित् दिवसानन्तरं रात्रौ प्रसुप्तकाले शय्या ऊर्ध्वं प्रति उत्थिताइव प्रतीतोऽभवत्। अस्मिन् मार्गे आगमनान्तरतः मम दुर्विचारः न्यूनता दूरी भवन्ति। माम् विश्वासः अस्ति यदहं उत्तरोत्तर प्रगतिं पथं वर्धयिष्यामि।

75– श्रीमती अन्नपूर्णा तिवारी

पू0 गुरूणा गुरूदीक्षा ग्रहणानन्तरे गुरूणोपदिष्ट विधिना नित्य 20–25 मिनटं यावत् ध्यानाभ्यासायतिष्ठामि दीक्षा ग्रहणस्य तृतीय चतुर्थ दिवसे एव एतादृशः प्रतीयते यत् हृदयः भ्रमति। समस्त शरीरः स्वेदेन पूरितो जातः। हृदयः विपरीतोभविष्यति एतादृशः अनुमीयते एव अहं भीत्वा उत्थितः। प्रकम्पनः वर्धते। अथ चातीवभयाक्रान्तः भवतिस्म। परं एतस्याः घटनायाः अनन्तरमपि अभ्यासः नियमितं आरम्भे। एकदा ध्यान काले एकः महदिवः प्रज्वलितः बल्वः दृश्यतेस्म। किञ्चित् कालानन्तरं अति तीव्रस्य

ध्वनिनासहतद् स्फुटयतेस्म। भयभीतं भूत्वाहं उत्तिष्ठामि। अधिकतरं ध्याने वृत्त प्रकाशितः वृत्तः दर्शितः।

76– कु0 मंदा वसंत तकवाले

परम पू0 गुरूदेवः यदा कदा आगत्य मम गृहे निवसति तर्हितु समस्त वातावरणः गुरूमयः भवति। अनेकाः शिष्याः आगच्छन्ति अथ च सर्वे उपविश्य पू0 गुरूदेवस्यः प्रवचनः श्रृणुवन्ति। एतत् सर्वं वीक्ष्य माम् पू0 गुरूदेवेन दीक्षा ग्रहणस्य इच्छा उत्पन्ना जाता। एषा इच्छा पू0 गुरोः समक्षं प्रगटे कृते एव शीघ्रं सः माम् दीक्षा दत्तः अथ च तद्दिवसानन्तरतः अहं नियमित साधना प्रारम्भं कृतः। एकदा संध्याकालं अहं ध्यान कर्तुं अवस्थिता तर्हितु मम नेत्र सम्मुखे एकः रक्तवर्णस्य वृत्तः दर्शितः यस्मिन् ऊँ अंकितः आसीत्। एतं दृश्यं दर्शनकाले माम् अतिशयानंदानुभवः अभवत्।

एकदा प्रातः सार्ध चतुर्थ वादने ध्याने अवस्थिते सति माम असहनीयः दुर्गन्धस्यानुभवः अभवत्। मध्ये–मध्ये एक द्वि बारं ततोधिकं वा अस्य दुर्गन्धस्य अनुभूतिः अभवत्। द्वि दिवसानन्तरे पुनः प्रातः सार्ध चतुर्थ वादने ध्यान काले कस्यापि अतीव उत्तम धूप प्रज्वलनस्य इव सुगंधानुभवः अभवत्। माम अतीव प्रसन्नता जाता। ध्याने समाप्ते सति अहं द्वितीय कक्षे गत्वा पुस्तकं अपठम्। अस्मिन्नेव काले गवाक्षतः पाटलस्य अतीव मधुर सुगंधः आगता। अधुनापि मध्ये–मध्ये पाटलस्य किंवा धूपस्य सुगंन्धिः आगच्छति।

एकदा सायंकाले अहं बहिः द्वारे स्थिता अथ च पुरतः संलग्नन् वृक्षान् पश्यतिस्म। सहसा 6–7 षष्ठ सप्त इन्द्र धनुषः दृष्टः निरीक्षण काले नेत्रौ जडत्वं गता।

ध्याने यदा कदा परितः ताम्रवर्ण प्रसृतादर्शितः तु कदापि नीलवर्णः दृश्यते। कदापि ताम्रवर्णी वृत्तः दृश्यते। कदापि एतादृशः लगति यथा परितः प्रसारयन् आकाश

मध्ये अति तीव्र प्रकाशः उपस्थितो जातः। तं प्रतिदर्शने सति नेत्रौ ज्वलितः इव लगति। यदा कदानीलवर्णस्य बिन्दुभिः आगतः प्रकाशः भृकुटीनां मध्ये पूरितः इव प्रतीतः भवति। यदा कदा कर्णेषु अति ध्वनिः श्रूयते। तथा च सिरसि पिपीलिकाः पूरयन्ति अथ च सम्पूर्ण शरीरे अत्यधिका शक्तिः समाविष्टा जाता एतादृशः लगति। अस्यां स्थितौ देहभानः न स्थिरं भवति।

एकदा स्वप्ने माम दृष्टः यत् एकस्यां प्रसूतिका गृहे लंगरस्यायोजनः कृतः। तस्मिन् विविध परिवारस्य जनाः आगताः। भोजनस्य पंक्तिः आयोजिता अथ च जनाः अतीवानन्देन भोजन ग्रहणं कुर्वन्ति। अहं सर्वेभ्यः जलदानस्य कार्यं करोमि। कस्यापि व्यक्तिं जलदाने सति तस्मिन् स्थाने निर्मितः जायते। मध्येऽस्मिन् माम् एतादृशः आभासः अभवत् यथा सन्मुखस्य एकस्मिन् कक्षे कोऽपि आगतः। अहं गत्वा अपश्यत् यत् तत्र खट्वा पार्श्वे एकः 25–30 वर्षस्य अति शोभना अपरिचिता महिला हरित वर्णस्य साटिका धारिता स्थिता। माम् दृश्यते एव साहसिता। माम आशीर्वादं दत्वा पुनः जल वितरणाय कथयित्वा गता।

77– श्री कृष्णराव ऊॅबलकर, *प्रयोगशाला सहायक वर्धा*

काण्णव परिवारेण मम अत्यधिकं घनिष्ठता वर्तते यत् स्वकीयं अहं तस्यैव परिवारस्य एकः सदस्यः मन्ये तस्य गृहे भवितारः भजनेषु अहं प्रतिदिनं उपस्थितं भवामि। काण्णव परिवारस्य सदस्याः यदा गुरू दीक्षा गृहीतः तदा तु स्वभावतः एषः सौभाग्यः मामपि प्राप्तमभवत्। अहमपि पू0 गुरूणादीक्षितोऽभवत्। अहं श्री बाबा साहब तकवाले महोदयस्य गृहे पू0 गुरोः एव कक्षे ध्यानाभ्यासं कर्तुं गच्छतिस्म। एकदा अनुमानतः एक घटिकां यावत् माम् ध्यानावस्थायां स्वकीयास्तित्वस्य भानं न भवति।

अहं पूर्णरूपेण निमग्नः जातः। माम् विविध वर्णानां दर्शनः प्रायः ध्यान काले अभवत्। यदा कदा लगति। यथा बाह्य जगतः परे गतोऽस्मि स्थानं परिवर्त्य–परिवर्त्य ध्यानाभ्यास करणस्य प्रयत्नः कृतः। परं साफल्यं न प्राप्ता। एकाग्रतातुमाम् पू0 गुरोः कक्षे एव भवतिस्म। स्व एषा काठिन्यं यदाहं पू0 गुरूणा ज्ञापयत् तदा तु सः अवदत् यत् एताः अनुभूतयः माम् अन्य स्थानेष्वपि प्राप्ताः भवितुं शक्यते। अतोऽनन्तरतः एतादृशः एव जातः।

78– कु0 ऊषा द्विवेदी, *(सुपुत्री श्री रामाशीष द्विवेदी, बासा, रीवा म0 प्र0)*

पू0 गुरूदेवेन 5 जन0 1982 ईस्वीं मां दीक्षा प्राप्ता। साधनायामुपविश्य पू0 गुरूदेवस्य मानस पूजायाः पश्चात् ध्यायामि द्वयोः भ्रुवयोर्मध्ये श्वेत प्रकाशस्य मध्ये पू0 गुरूदेवस्य दर्शनं भवति। अतोऽनन्तरे एक दीर्घमिव अंधकारः भवति पर्वतानां एवं खात मध्ये एको विशालः वटवृक्षं तथा अन्धकारस्य मध्ये नीलो प्रकाशस्यानुभवो भवति। पू0 गुरूदेवस्य स्मरणाद् मां सफलता प्राप्तास्ति।

79– श्री श्याम गुप्ता, *(मैन रोड मुंगेली, बिलासपुर , छ0 ग0)*

दीक्षा प्राप्तेः षष्ठ मासानन्तरं ध्यानं कुर्वन्नवसरे एतादृशः अद्भुत प्रकाशो दृष्टिगोचरो जातः, यस्य वर्णनमसम्भवमस्ति। एषा अनुभूतिः किञ्चिद् क्षणं निर्मिता आसीत्। शरद पूर्णिमायाः रात्रौः सपत्नीकः ध्याने अवतिष्ठने आवयोः एका सदृशा अनुभूतिः जाता, यस्यामनेकाः सर्पाः अपश्यावः। अनुमानतः पञ्चदश दिनं पूर्वं प्रलेटयन् एव मया शून्य स्थितौ प्राप्तः। अनया मां भयोत्पन्नः परन्तु एको मिनटे अहं पूर्व स्थितौ समागच्छम्। पू0 गुरूदेवस्य आशिर्वादस्य छत्र–छाया सर्वदैव निर्मितो भवतु।

80– डा0 किरण वासुदेव देवरस, *एम.बी.बी.एस. तिलकनगर, बिलासपुर, छ0 ग0*

पू0 गुरूदेवस्य सम्पर्के सन् 1975 ईस्व्यां अतीव रोचक प्रकारेण समागतः। मम पिता स्व0 डा0 वा0 जे0 देवरसः बारम्बारं मां गुरूदेंवस्य दर्शनार्थं गन्तुं कथयतिसम तस्मिन् दिवसे दिवसे बिलासपुरे आगच्छन्त्:, प्रत्येकाः साधु महात्मानः गृहे समागत्य पितृणा आध्यात्मिका चर्चाः कुर्वन्तः आसन्। गृहस्य अन्ये सर्वे जनाः आसु कोऽपि विश्वासो न कुर्वन्तिस्मः। मामलगत् यत् अस्मिन्नवसरे केषांश्चित् एतादृश एव साधुना सम्मिलितुं मां वाध्यते स्म। तस्मिन् दिवसे पू0 गुरूदेवः राम खिलावन मिश्रः अधिवक्तायाः गृहमधिष्ठितः। मया बिना कया इच्छया मात्र पिता जीवस्याज्ञापालनार्थं मिलितुं गतः। मिलनानन्तरं पू0 गुरूदेवस्य तेजः वा व्यक्तित्वेनाहमाकर्षितो भवमगच्छम् 1975 ईस्व्याः गुरू पूर्णिमायां मया दीक्षां गृहीतः। ममानन्तरे संक्ङेतो जातः यत् मम पितृणापि दीक्षां गृहीतोऽस्ति।

मया कदापि किमपि ध्यानं जपादि न कृतः, मात्र पू0 गुरूदेवस्य सेवा तथा तस्य नामस्य स्मरण कार्यं स्वकीयं कर्त्तव्यममन्यम्। अद्य तस्य नाम–स्मरण मात्रेण तथा कृपया च मम आर्थिका स्थितिः एवं मानसिक स्तरे परिवर्तनो जातोऽस्ति। मां मात्र स्मरणमेवगुरू सेवया एव अथाह आनन्दस्य प्राप्तिः भवति।

स्वकीय चिकित्सा व्यवसाये अहमेक ग्रामे पदस्थोऽस्मि। तत्र कियत्बारं एतादृशः अभवत् यद् भयंकर रूग्णस्य रोगी आगमने मात्र गुरूदेवस्य नामंनीत्वा मया तेभ्यः औषधयः प्रदत्तः एवं रोगि जनान् लाभं प्राप्तम्। तस्यानुकूले न औषधयः कतिभिः चिकित्सकैः तेभ्यः पूर्वमेव प्रदत्ताः किन्तु स्वास्थ्य लाभो न जातः आसीत्।

ग्रामे भूत प्रेत बाधा युक्ताः रोगि जनान् अपि मया पू0 गुरूदेवस्य स्मरण मात्रेण शोभनो कृतः अस्ति। अद्य स्थितिरेषास्ति यत् गुरू कृपया मम सर्वाणि कार्यणि सुचारू

रूपेणैव सम्पन्नानि भवन्ति। अवरूद्ध आगमने सति स्मरण मात्रेण केनापि प्रकारेण सहायता प्राप्नोति। येनाहं मिलितुमिच्छामि ते स्वयमेव आगच्छन्ति। गुरू सेवा वा स्मरणेनैव सर्वेभ्यः दुःखेभ्यः मुक्तिः मिलति। एकदा मया मोटर साइकिल यानेन रतन पुरतः बिलासपुर गम्यते स्मः। अकस्माद् एक ट्रक चालकेन पुरत एव मां प्रहारितः । एषा गुरूः कृपा एव आसीत् येन मया ट्रक यानस्य अधो भागे न पतित्वा बहिः दूरे पातितः। अनेन प्रकारेण गुरूदेवस्य कृपया मां द्विवारं जीवनं सम्प्राप्तं जातम्।

अद्य मम समसत परिवारः दीक्षां नीतोऽस्ति। गुरूदेवस्य कृपा सदा अस्मासु विनिर्मितोऽस्तु एषा मम प्रार्थनास्ति।

81—कु0 भारती पाण्डेय,

सुपुत्री डा.**रघु**नाथ प्रसाद पाण्डेय प्रोफे0 फिजियॉलाजी,रीवा

पूर्वं स्वयमेव सदृशः कस्यचिद् मानवं गुरू मानयित्वा पूजा करणाय मां मात्रं पाखण्डः लगति स्मः। सन् 1979 ईस्व्यां मम पिता डा0 रघुनाथ प्रसादजी पाण्डेय गुरू देवेन मिलितुं गच्छन्नासीत्। तेन मया सार्द्धं चलितुमवदत्, किन्तु मया बारम्बार उल्लङधनं कृता। एकदा मात्र उत्सुकतावशाद् अयं द्रष्टुं प्राप्ता यत् एषः को मानवः ? येन मम पिता सदृशः व्यावहारिक व्यक्तिरपि अत्यधिकाः प्रभावितः जाताः सन्ति। गुरूदेवेन मिलने सति मया प्राप्ता यत् इयत् अत्यधिकः प्रभावशाली व्यक्तिना मया पूर्वं कदापि न मिलिता आसम्। तावत् अस्यानुभवस्य लेखन् पर्यन्तं पू0 गुरूदेवस्य ओज एवं स्नेह पूर्ण व्यक्तित्वस्य छाया गम्भीराद् गम्भीरं भावयते।

सप्त सित0 1979 ईस्वीं पू0 गुरूदेवेन दीक्षां प्राप्तानन्तरं विभिन्नाः ध्यानानुभवाः जाताः सन्ति। एकदा रक्तिम् पृष्ठ भूमौ कृष्ण वर्णस्य वृतस्य आभ्यन्तर भागे वस्त्रेणावृता एकं शवमवलोकिता।

एकदा ध्याने उपविशन्नेव गहन एकाग्रतायाभावृतो जाता। तीव्र प्रकाशेन युक्तः एकः दीर्घः विवरः अवलोकिता। यस्य एक भागः मम मस्तकाद् किञ्चिद् ऊपरि आसीत् तथा द्वितीयः आकाशस्य समीपे गत्वा अदृश्यो जातः आसीत्। अस्य विवरस्य मुखाद् द्योतितगोलः लघु स्थाल्यः निः सृत्य एकस्य पश्चादेकः तीव्र गतया मम भ्रकुटयो र्मध्ये समाहिताः जाताः।

एकदा गृहस्य सम्मुखे क्षेत्रे गोः शवं कुक्कुराः गृधाश्च खादन्ति स्मः। प्रातः–प्रातरहं ध्याने स्थिता आसम्। मया आभासो जातः यत् एक गृद्धः व्याकुलो भूत्वा अचेता स्थितौ मम समीपे आगत्य उपविशत्। मया भीत्वा – भीत्वा तस्मिन् मन्द गत्या हस्तेन स्पर्शितः किञ्चिद् क्षणानन्तर एव सः स्वस्थ्यो भूत्वा उड्डीयतः। ध्यानं समाप्य गृहस्योपरि भागे छत्रे उत्तिष्ठ्य मया तस्याः गोः सम्मुखे अवलोकिता। गृद्धः एवं कुक्कुराणां समूहः क्रम –क्रमेण एक अपरान् पलायित्वा स्वकीय आहारे सम्मिलिताः जाताः आसन्। अकस्माद् एक गृद्धं कुक्कुरेण खादित्वान्। मम आश्चर्यस्य सीमा नासीत्, यदा सः गृद्धः उड्डयितुमसफल प्रयासं कुर्वन् मम निवासस्य मुख्य द्वारेण आहत्य अपतत। यदा तस्य समीपे मया अधो भागे प्राप्ता तदा तु सः मन्द क्रमेण पक्षं संकुच्य अवतिष्ठत्।

किञ्चिद् दूरं फुदक–फुदकं उत्प्लुत्य कृत्वा अगच्छत्। किञ्चिद् क्षणानन्तरं तस्य समक्षे उड्डयितः यस्मिन् स्थले मया ध्याने तमुड्डीयन् अवलोकिता आसम्।

ध्यानकुर्वन्नवसरे शरीरे आतपः पादेषु शून्य सदृशः तथा शरीरे वायोः आपूरयन् यादृशः अनुभवो भवति। कर्णेषु सीटिका शब्द विशेषः व मस्तकस्य पृष्ठ भागे कट–कट सदृशः ध्वनिः श्राव्यते। विभिन्न आसनेषु पू0 गुरूदेवस्य तथा ऊँ कारस्य दर्शनानि जातानि सन्ति।

ध्यानाभ्यासानन्तरं विचारेषु स्पष्टता वर्द्धिवती प्रतीता भवति। प्रत्येक दायित्वपूर्णकार्यंकरणस्य पूर्वं पू0 गुरूदेवस्य स्मरणं करणेन मिलिता सफलता वा

असफलतायाः नीत्वा मनसि ऊहापोहो न तिष्ठति। निश्चितमेव एतादृश्यां स्थितौ कार्यमधिका क्षमतया कर्तुं शक्नोमि। एषा कामनास्ति यत् पू0 गुरूदेवस्य कृपया अस्मिन् आत्म कल्याण मार्गे अग्रसरो भवेयम्।

82– डा0 विद्याकान्त त्रिपाठी, प्रोफेसर/ व्याकरण विभागाध्यक्ष

दिव्याम्बुनिमज्जनस्य संस्कृत अनुवादं प्रति किञ्चिद् निवेदनम्। पुस्तकस्यास्य संस्कृत अनुवादस्य प्रमुख कारणमिदमस्ति यद् सद्गुरोः कृतः स्वकीय जीवनस्य अनुभूत सांसारिक वृत्तीनां अनुभव जन्य ज्ञानस्य सर्वासुभाषायु अनुवादः सज्जानानां सुगमतया ज्ञानार्जनानुभवाय च शास्त्र सिद्ध वेदोपनिषद् वेदान्तादि वाक्यालक्ङारैः विविध मानव मूल्यानां अनुभव पथ प्राप्तये एषः सद्गुरोः दिव्य सदग्रन्थः सत्येन परिपूरितोवर्तते संस्कृत अनुवादस्य प्रमुख कारणमस्ति यत् आधुनिके युगेऽस्मिन् संस्कृत भाषायाः लोके व्यवहारे चाल्पता वर्तते। पुस्तकमिदं मात्र पुस्तकं नास्ति अपितु भगवता वासुदेवेन मुखाद् विनिःसृतमिदं वासुदेव गीता वर्तते।

संस्कृतविद्या पूर्वे समस्त लोकव्यवहारे शास्त्रानुमोदित संस्कृतजनन्याः आसने प्रतिष्ठिता आसीत्। सम्प्रति संस्कृत भाषायाः व्यवहारः अतीव अल्पेन परिदृश्यते। मम सद् गुरू बान्धवाः सर्वेऽपि इत्थं जिज्ञासा प्रकटिता कृतायत् दिव्याम्बुनिमज्जनस्य संस्कृत अनुवादो सरल संस्कृतेन भवति तर्हि अस्माकीनामपि रूचिः संस्कृत ज्ञानाय जागृता भविष्यति ये जनाः अन्य भाषा विशेषज्ञाः सन्ति तेषामपि गुरूबन्धु जनानां अभिमतं वर्तन्ते यद् संस्कृत भाषा ज्ञानं मानव मूल्य आचरणाय अतीव आवश्यकः वर्तते। पू0 सद्गुरोः आशीषः अस्मिन् कार्याय 1989 वर्घा पर्वे विशेष रूपेण प्रदत्तः यत् त्वम् संस्कृतानुवादं कुरू मया स्वीकृतः। गुरूबन्धु जनानां अभिमत वर्तते यत् व्याकरण जन्य भाषायाः काठिन्य प्रयोगं विहाय भवान् अतीव सरलतया हिन्दी भाषानिष्ठ संस्कृत

भाषायाम् सरलानुवादः करोतु यः संस्कृतानुवादः स्वयमेव सरलत्वेन सर्व जनहिताय बोधगम्यो भविष्यति।

विविध भावमनुसृत्य अतीव सरलतया मया अनुवादः क्रियते अनुवाद कार्ये पञ्च वर्षम् व्यतीतअभवत् अधुना पूर्णतां अधिगतः। डा0 जगदीश पाठकस्य उत्तम सहयोगः प्राप्तः। अनुवादे व्याकरणजन्य विविध त्रुटयः सन्ति येषां त्रुटीनां हेतवे पूर्णतया विद्वज्जनानां कोपभाजनो भविष्यामः परं स्व अल्पमत्यानुसारं यथा गुरोः आदेशः तद् आदेशस्य आज्ञा गुरूणां ह्य विचारणीया एतावता आदेश पालन मात्र मेवमया कृतम् संस्कृत भाषायाः प्रचार प्रसारार्थं शुद्धं वा अशुद्धं वा यथा तथा संस्कृत भाषां लोक भाषायाः पदे पुनः प्रतिष्ठायनार्थं शब्दशः अनुवादः मया कृतः साहित्य लेखन क्षेत्रे प्रथम अनुवाद कार्ये गुरूणा प्रेरितोऽहं संलग्नोऽभवम्। यल्लिखितं तस्य पृष्ठे श्री सद्गुरोः अमोघः आशीषः वर्तते। गुरोरेव कृपा प्रसादेन यल्लिखितः तल्लिखितः मम तु कश्चिदपि सामर्थ्यं नास्ति।

लेखनारभं काले एकदा किं कर्तव्य विमूढो भूत्वा यदा चिन्तितो जातः। यत् अनुवाद कार्यं कर्तुं अक्षमोऽस्मि तदैव मया दृष्टम् यत् मम हस्तोपरि एकः अन्य हस्तः दृश्यते लेखन्युपरि एका अन्या लेखनी दृष्टा तदा मया विचारितं यत् अन्यः हस्तः अन्या लेखनी कस्य भवितुमर्हति तदा अन्तर्मनसि विचारः आगतः यत् त्वम् अनवरतं मम स्मरणं कृत्वा लिखतु प्रत्यक्षं परोक्षे च अहं त्वया सहैवास्मि इत्थं श्री सद्गुरूणा उक्तम् पञ्च षष्ठ मिनट अनन्तरे अन्यः हस्तः अन्या लेखनी लुप्ता जाता तद्दिवसादारभ्य अनुवादकार्यं सततं प्रवर्धितः एष सद्गुरोरेवाशीषः शिष्याः यदुत्कर्ष मवाप्नुवन्ति प्रभाव एवैष गुरोरमोघः।

श्री सद्गुरू चरण कमलेभ्यो नमः

संस्कृत –अनुवादकः

डा0 विद्याकान्त त्रिपाठी, प्रोफेसर/ व्याकरणविभागाध्यक्षश्च

यू .जी. सी. अनुदानित आवासीय– संस्कृत महाविद्यालयः सामरवार, जशपुर, छ0 ग0

संस्थापकोऽध्यक्षश्च
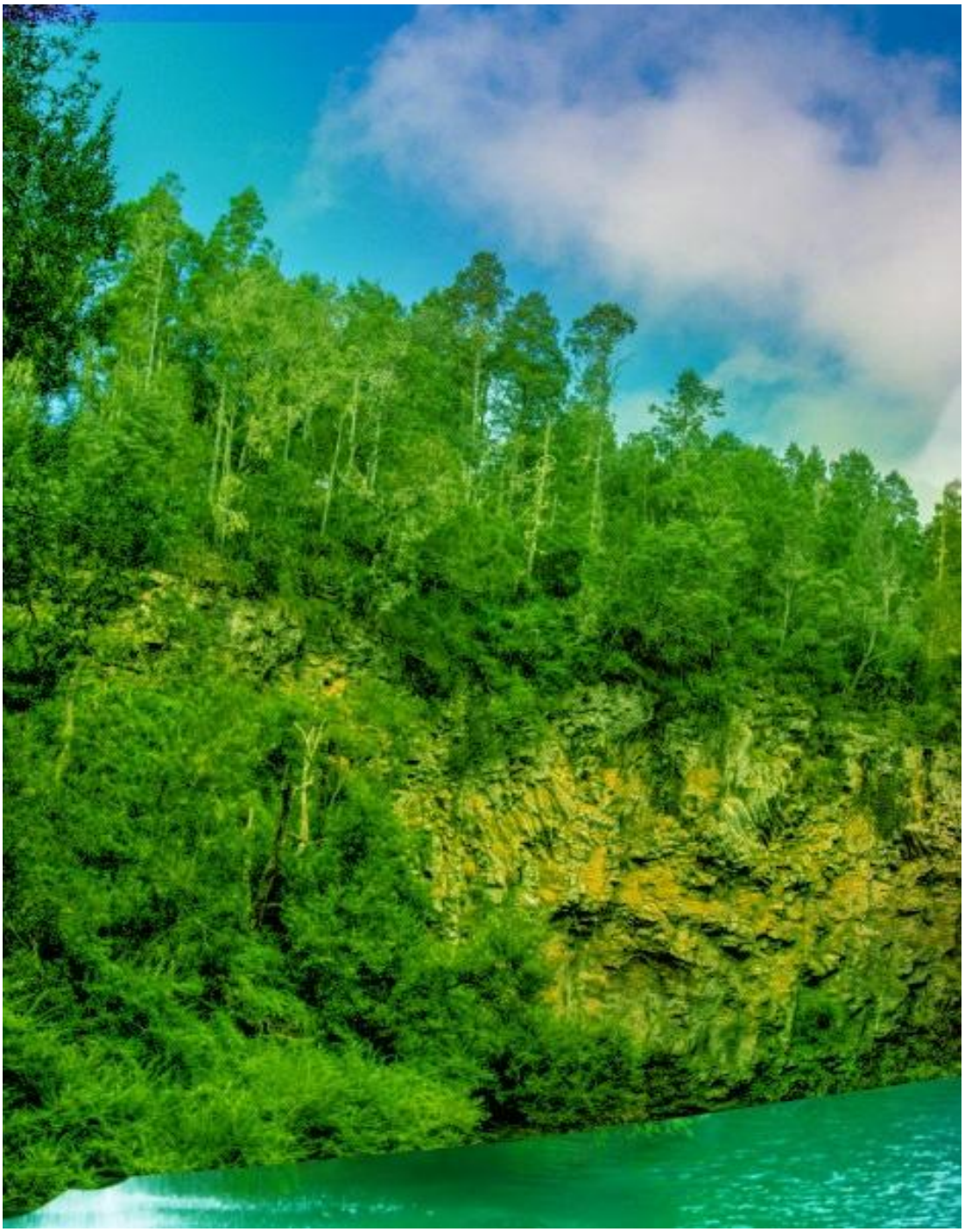
श्री वासुदेव वैदिक संस्कृत विद्यापीठ अड़भार, पेन्ड्रा जिला बिलासपुर छ0 ग0